मनोरंजन पुस्तकमाला-१८

संपादक

श्यामसुंदर दास, बी० ए०

नेपोलियन बोनापार्ट

लेखक

राधामोहन गोकुलजी,

प्रकाशक

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

मनोरंजन पुस्तकमाला-१८



संपादक 

श्यामसुंदरदास बी० ए०

प्रकाशक 

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

नेपोलियन बोनापार्ट

लेखक

राधामोहन गोकुलजी

१९२३.

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

भारतजीवन प्रेस, बनारस में मुद्रित।

मूल्य १)

भूमिका ।

ग्रंथों के प्रारंभ में भूमिका लिखने की चाल बहुत पुरानी है। लेकिन आज कल तो यह एक अत्याज्य प्रथा सी पड़ गई है। यदि भूमिका वास्तविक उपयोगिता को समझ कर लिखी जाय तो इसमें संदेह नहीं कि इससे लाभ के सिवा हानि नहीं हो सकती।

भूमिका लिखने के कई उद्देश्य हुआ करते हैं, जैसे—

(क) पाठकों को ग्रंथ पढ़ने के पहले ही उसके विषय का दिग्दर्शन करा देना।

(ख) ग्रंथ लिखने का मुख्य उद्देश्य बतला देना, क्योंकि एक ही बात कई उद्देश्यों से लिखी जा सकती है और तदनुसार ही कुछ बातों का अधिक समावेश कर के अन्यों की उपेक्षा की जाती है, जैसे एक ही देश का इतिहास नैतिक, धार्म्मिक सामाजिक, राजनैतिक, साँपत्तिक इत्यादि कई भांति का हो सकता हैं।

(ग) प्रधान निबंध संबंधी अनेक बाहरी अंगों का बतला देना; जिनके जानने से विषय अधिक स्पष्ट और रुचिकर हो जाता है, इत्यादि।

अनेक लोग भूमिका ही से छोटे छोटे परिशिष्टों का काम भी ले लेते हैं। कई रस्किन (Ruskin) जैसे सुप्रसिद्ध महान् लेखक और वक्ता अपने ग्रंथ का दो तिहाई, कभी कभी तीन चौथाई अंश परिचय वा भूमिका में ही लगा देते हैं, और अपना मूल सिद्धांत सूत्रवत् गंभीर शब्दों में थोड़े से पृष्ठों में समाप्त करते हैं।

मैं छोटी सी टीटप्पी भूमिका में नेपोलियन का सूक्ष्म जीवन चरित्र एकश्लोकी रामायण की भांति देने की चेष्टा करता हूँ।

नेपोलियन के अनेक जीवनचरित्र हैं, बहुतेरे इसके शत्रुओं द्वारा लिखे गए हैं और बहुतेरे इसके मित्रों या भक्तों के हाथों से।

कांसटां (Constant नेपोलियन का Valet-de chamber) नामक फरासीसी ने तीन भागों में केवल इसके घरू जीवन, खानपान, आचार व्यवहार, दिनचर्य्या, रात्रिचर्य्या आदि ही दिखलाई है। सर एडवर्ड कस्ट (Cust) ने केवल इसके युद्धों का ही वर्णन किया है। इसके विरोधियों का कथन न कर के, मैं इसके भक्त चरित्रलेखक जे० एस० सी० एबट का नाम प्रधानता के साथ यहाँ पर लेता हूँ, क्योंकि वर्तमान समय में इस से अच्छा नेपोलियन चरित्र अंगरेजी भाषा में नहीं मिलता, अतः मैंने भी इसीका प्रधान आश्रय लिया है। जहाँ मैंने इसके शत्रुओं के अनुचित दोषारोपणों पर ध्यान नहीं दिया, वहाँ वश पड़ते मैंने एबट की अनुचित प्रशंसा को भी स्थान नहीं दिया; तो भी भूल करना मनुष्य का स्वभाव है, सुतराम् पाठक इन दोषों से बच कर नेपोलियन के संबंध में अपना मत स्थिर करेंगे तो अधिक अच्छा होगा।

नेपोलियन १५ अगस्त सन् १७६९ को अजक्शियो (Ajaccio in Corsica) में भूमिष्ठ हुआ। ५ वर्ष तक अपने देश में ही पढ़ता रहा। इसके जन्म लेने से दो सप्ताह पूर्व यह टापू फ्रांस ने हस्तगत कर लिया था। अतः दस वर्ष की अवस्था को पहुँचने पर यह ब्राइनी (Brienne) के (फरासीसी) सैनिक विद्यालय में विद्याध्ययन के

लिये भेजा गया। सन १७८५ पर्यंत यहाँ विद्या पढ़ता रहा। अतःसोलह वर्ष की अवस्था में लेफ्टनेंट नियत किया गया। यह ऐसा मेधावी था कि सोलह वर्ष की ही अवस्था में गणित आदि विद्याओं में असाधारण पंडित हो गया। इसके उपरांत इसे लगातार बहुत काल तक आस्ट्रि-या के साथ आत्मरक्षा (फ्रांस की मर्य्यादा तथा भूमि की रक्षा) के लिये लड़ते रहना पड़ा। यही युद्ध इस ग्रंथ का मध्य और प्रधान स्थल है जिनमें चरित्रनायक की असाधारण बुद्धि तथा उसके बाहुबल का पता चलता है, विद्वत्ता और मनुष्य भक्ति का प्रमाण पाया जाता हैं, और इसे संसार के समक्ष बड़प्पन प्रदान करता है। विपक्ष में प्रायः सभी युरोप की प्रधान शक्तियाँ थीं, किंतु रूस, आस्ट्रिया और इंगलैंड मुख्य थे। यह लगातार विजयी होने के कारण, सन १७९८ में दिग्विजय की आकांक्षा से मिस्र (*Egypt*) पर चढ़ा, वहाँ से भारत में आ कर अंगरेजों को दबाने का भी इसने विचार कर लिया था। लेकिन नौ सैन्य, रणतरी पोत सहित अंग-रेजों के हाथ से विध्वंस होने के कारण इसे यहाँ से लौटना पड़ा। इस अभिनिर्य्याण में इसे बड़ी हानि हुई। इसी प्रकार १८१२ में कई कारणों से यह रूस पर चढ़ा और दुर्भाग्यवशात् विजयी हो कर भी कुछ लाभ न उठा सका, उलटा धन और जन दोनों से हीन हो गया, यहाँ इसके अधःपात का मानों अग्रयान हुआ।

सन् १८१४ में इंगलैंड, रूस और आस्ट्रिया की सम्मिलित सेना के हाथों बरबाद हो कर इसे एल्बा में जा कर रहना पड़ा। ६ अगस्त सन १८१४ से २६ फरवरी सन १८१५ तक यह एल्बा में रहा। २५

को यहां से निकल कर फिर फ्रांस पर इसने अधिकार कर लिया। इसी कारण सन १८१५ में फिर समस्त युरोप के सम्मिलित दल से इसे सामना करना पड़ा। इस बार इसके साथी राजाओं ने और कई सेनापतियों ने इसे धोखा दिया। अंत में इसे वाटरलू के सुप्रसिद्ध युद्ध में रहना पड़ा। यह भाग कर अमेरिका जाना चाहता था, पर जा न सका और अंगरेजी झंडे तले उनके रणपोत पर इसने शरण ली।

२९ जून को इसी रणपोत पर यह बंदी किया गया और इंगलैंड हो कर संट हेलना में निर्वासित जीवन व्यतीत करने को यह भेजा गया। १० दिसंबर को सेंट हेलना के लांगउड (L ngwood) नामक स्थान में यह रखा गया। पांच वर्ष पर्य्यंत नेपोलियन यहाँ अंगरेजों का बर्ताव इसके साथ बहुत ही नीचता का हुआ। ५ मई सन् १८२१ ई० को नेपोलियन रुग्नावस्था में अत्यंत निर्बल हो कर स्वर्गवासी हुआ।

दस वर्ष पीछे फ्रांसवालों ने अंगरेजों से माँग कर इसके शव का अवशिष्ट (समाधि खोद कर जो हड्डियां निकलीं) फ्रांसस्थ इनवेलाइड्स (Invalides) में घूमधाम से गाड़ कर उस पर समाधि बनाई।

यद्यपि नेपोलियन का चरित्र दुखांत गाथा है, परंतु निस्संदेह विचारशील पाठक इससे कई प्रकार से लाभ उठ सकते हैं, और अनुमान कर सकते हैं कि यद्यपि नेपोलियन को अंत समय बहुत कष्ट सहना पड़ा—एक भांति इसका सारा ही जीवन कष्ट उठाते बीता —तो क्या, अब सारे जगत को अपनी प्रतिष्ठा करते देख स्वर्ग में

उसकी आत्मा अत्यंत आनंद संभोग न करती होगी ?

मैं नहीं कह सकता कि इसमें दोष न थे, परंतु याद रखना चाहिए कि नेपोलियन अपने समय का बड़ा भारी मनुष्य-हितकर्ता स्वतँत्रता का पक्षपाती और मानव मात्र का प्रेमी था। यह जहाँ बड़ा साहसी वीर था, वहाँ राजकाज का प्रबध करनेवाला, शांतिस्थापक नियमों का संगठन करनेवाला, दृढ़ और प्रजाप्रिय शासक भी था। यह सेंट हेलना में कहा करता था—'मैं सदा ६० लाख मनुष्यों की सम्मति से समर्थित काम करता रहता था'।

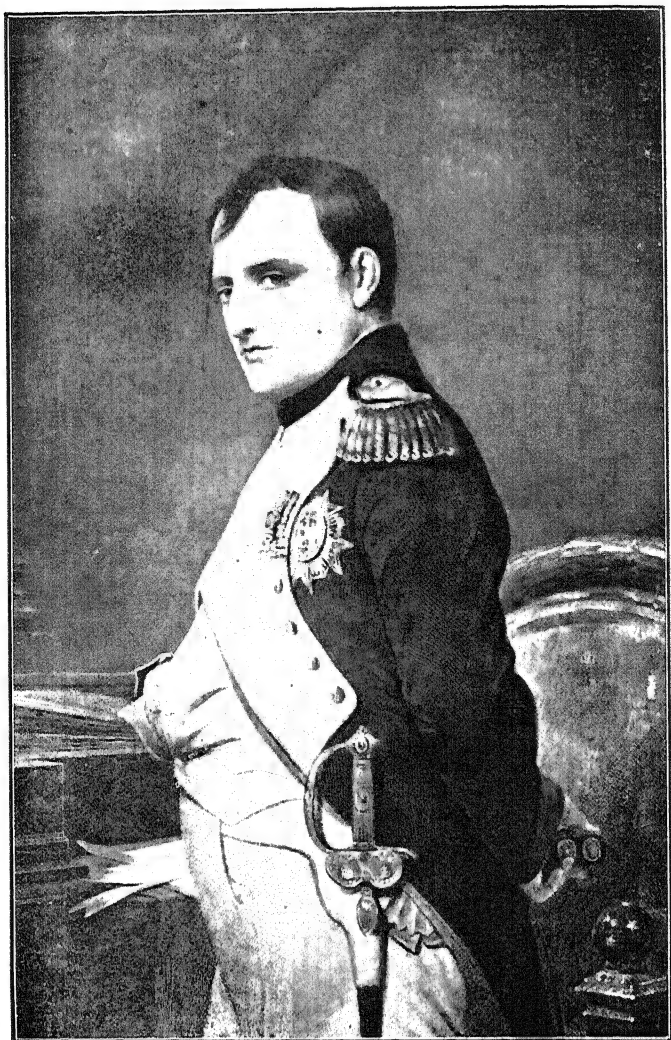
अंत में, जनपद को यह इतना प्यारा हो गया था कि एक दिन इसने एक अनजान स्त्री से परीक्षा के लिये कहा—"नेपोलियन भी औरों की भांति बड़ा ही अत्याचारी है।" उस स्त्री ने उत्तर दिया-—"होगा, किंतु और लोग तो अमीरों और उच्चवंशजों के राजा हैं, लेकिन हमारा नेपोलियन हमारा है, हममें से एक है, जनपद का व्यक्ति है।"

राधामोहन गोकुलजी (राधे)



विषय-सूची।





नेपोलियन बोनापार्ट।



पहला अध्याय

नेपोलियन का जन्म और शैशव

भूमध्य महासागर के स्वच्छ विशाल वक्षस्थल पर खेलते हुए दो सहोदर द्वीपों में से एक का नाम कार्सिका तथा दूसरे का नाम सार्डिनिया है। ये दोनों इतिहासप्रसिद्ध, राजनैतिक रंगमंच के सुप्रसिद्ध अभिनेतृ विक्रम संवत् १८२४ पर्य्यंत स्वतंत्रता के भावों को जन्म देनेवाली सुनामधन्य नगरी रोम (इटाली) के ही शासन में थे और इटाली के ही समीपस्थ पश्चिम की ओर ये हैं भी। कार्सिका से फ्रांस देश अनुमान ५० कोस के अंतर पर है। कार्सिका की रीति नीति, सभ्यता मर्य्यादा, चाल ढाल, सब इटालियन है, यहाँ तक कि भाषा भी इटालियन से ही मिलती है। किंतु इस परिवर्तनशील संसार में कोई वस्तु भी एक रूप में स्थिर नहीं रहती। सार्डिनिया तो इटाली में ही रहा, परंतु कार्सिका उससे जुदा हो गया। इसी कारण नेपोलियन की जीवनी लिखनेवालों में बहुतों ने उसे फरासीसी

लिखा है। संवत् १८२४ में फरासीसी सेना ने कार्सिका पर आक्रमण किया, दो वर्ष तक युद्ध होता रहा, अंत में कार्सिका को बार्बोन साम्राज्य के अधीन होना पड़ा।

इसी समय में, जब कि कार्सिका का भाग्य इटाली के हाथ से बार्बोन के हाथ में जानेवाला था, यहाँ (कार्सिका में) एक नौजवान वकील चार्ल्स बोनापार्ट रहते थे। ये घर के अच्छे संपन्न पुरुष थे, लेकिन भाग्यवशात् कुछ दिन से लक्ष्मी ने इनका साथ छोड़ दिया था। चार्ल्स बोनापार्ट ने लेटीशिया रामोलिनो नाम्नी एक वीरहृदया सुंदरी से विवाह किया था। इनके तेरह बालक बालिका हुए, उनमें से दो तो बालकपन में ही मरे, शेष संतति सहित कुटुम्ब का भार सहन करने के लिये चार्ल्स की आय काफी थी। कार्सिका की राजधानी अजेक्सिया नामक नगर में थी। यह स्थान बहुत ही सुंदर और मनोहर था। यहाँ एक निज के गगनभेदी सुंदर निकेतन में चार्ल्स सपत्नीक रहा करते थे। इसके अतिरिक्त एक छोटे से ग्राम में समुद्र की तरल तरंगों से ताड़ित भूमि पर इनका एक और सुंदर सदन था। गर्मियों में पुत्र कलत्र सहित चार्ल्स यहाँ ही निवास किया करते थे। कार्सिका के फ्रांस के हस्तगत होने के पहले ही चार्ल्स ने अपना विवाह किया था। ये स्वदेश रक्षा के निमित्त समर में मरनेवालों की महती सेवा को समझते थे। अपने देश की स्वाधीनता विनष्ट होते देख, इनसे न रहा गया और खड्गहस्त हो मातृभूमि की सेवा में वे दत्तचित्त हुए। किंतु समय का फेर विचित्र होता है। सबल के सामने निर्बल को माथा झुकाना

ही पड़ता है। जब धर्माधर्म का विचार खड्ग पर छोड़ दिया जाता है, तो सबल निर्दय ही विजयी होता है।

जब कार्सिका की स्वतंत्र राज-श्री भ्रष्ट हुई, वीर लोग भाग भाग कर इधर उधर गिरिकंदराओं में छिपने लगे, चार्ल्स को भी स्थान परित्याग करके भागना पड़ा। घोड़े पर सवार दुर्गम जंगल पहाड़ों को तय करके प्रचंड शत्रुओं की दृष्टि से बचना खेल नहीं है, परंतु अन्य उपाय न था। पतिप्रेमानुरक्ता पत्नी को भी पति का ही अनुकरण करना था। पाठक समझ सकते हैं कि सिवा वीरांगनाओं के ऐसा साहस सामान्य भीरू स्त्री कदाचित नहीं कर सकती थी। अंततः कार्सिका का पतन होने के उपरांत १८२६ विक्रमीय (१५ अगस्त १७६८) में प्रसवकाल समीप होने पर अजेक्सिया-वाले घर में दांपत्य-प्रेम-परिपूर्ण जोड़े ने आश्रय लिया।

कौन जानता था कि इस दुर्दशा में जब कि देश की स्वतंत्रता नाश हो चुकी थी, घर छोड़ कर लोग भागे भागे फिरते थे, कार्सिका की स्वर्णमयी भूमि भयंकर बन सी दिखाई देती थी, आज वीर ललना लेटीशिया और देशभक्त योद्धा चार्ल्स के घर जगत्‌विजयी नेपोलियन जन्म धारण कर रहा है। कौन जानता था कि यह नव-प्रसूत बच्चा वह नेपोलियन होगा, जिसकी हांक से धरती हिल जायगी, दिग्गज डोल जायंगे, जिसकी तलवार की चमक देखकर पाश्चात्य मुकुटधारियों के मुकुट सहसा भूमि चूमने लगेंगे। जो कहीं हमारा चरित्रनायक आज से दो ही मास पहले जन्मा होता तो जिन लोगों ने उसे फरासीसी लिखा है, भूल से भी वे ऐसा न

करते और उसे इटालियन बतलाने में ही अपनी लेखनी का गौरव समझते।

नेपोलियन बाल-काल से ही विचित्र स्वभाव का बालक था। यह सिवाय घोड़ों पर चढ़ने, लड़ने, चढ़ाई करने के खेलों के अतिरिक्त और खेल शायद ही खेला हो। नेतृत्व इसमें स्वभाव से ही था। यद्यपि यह छोटा था पर अपने सब भाइयों का नेता बन गया था। इसका स्वभाव इतना तेज़ और स्वातंत्र्यप्रिय था कि इसने सिवा अपनी माता के कभी किसीका शासन पसंद ही नहीं किया; क्या मजाल जो इसे इसके विचारों से सिवा मां के कोई दूसरा हटा तो दे। चार्ल्स बोनापार्ट अपने अनुपम प्रतापी और प्रतिभाशाली पुत्र की जवानी देख न सका। नेपोलियन पाँच वर्ष का भी न होने पाया था कि चर्ल्स ने स्वर्गवास किया और इस भारी कुटुम्ब और कच्ची गृहस्थी का बोझ विधवा किंतु साहसी दृढ़हृदया लेटीशिया पर पड़ा।

छत्रपति शिवाजी के समान नेपोलियन भी अपनी माता का अटल भक्त था। इसे अपनी माता का सीमातीत और असाधारण विश्वास था। यद्यपि बाल बच्चों की कमी न थी, किंतु नेपोलियन के समान माता की आज्ञापालन करनेवाली दूसरी संतति न थी, इसी भक्ति के कारण लेटीशिया का भी प्रेम नेपोलियन पर और बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक था। नेपोलियन ने सेंट हेलना में अपने पासवालोंसे कई बार कहा भी था, कि जो सद्गुण, जो वीरता, जो धर्मानुराग, जो सदाचार मेरे में हैं, उन सब के लिये मैं अपनी माता

का ऋणी हूं। यदि मेरी माता की सद्शिक्षा तो मैं कदन होती। चित पुरुष न बन सकता। वह कई बार अपनी माता का अनुपम प्रेम स्मरण करके नेत्र मूंद लेता, मानो अपनी माता की प्रतिमूर्ति का दर्शन कर रहा हो। नेपोलियन को माता की शिक्षा से ही पुत्रों के सुपात्र बनने का इतना निश्चय था कि अधिकार प्राप्त होने पर सब से पहले और पुष्कल धन से इसने स्त्री-शिक्षा का ही प्रबंध फ्रांस देश के सब स्थानों में किया। वह कहा करता था कि फ्रांस की समुन्नति के निमित्त जितनी आवश्यकता सुमाताओं की है उतनी और किसी चीज की नहीं है।

बिधवा हो जाने पर लेटीशिया ने अपना अजेक्सियावाला घर छोड़ दिया और वह एक छोटे से ग्राम के साधारण घर में रहने लगी। यह घर सजावट बनावट से शून्य था। इसके आस पास अनेक प्रकार के वृक्ष और पौधे लगे हुए थे; लताएँ छत पर चढ़ी हुई थीं। घर के सामने एक खासा लंबा चौड़ा खुला मैदान था, इसीमें सब लड़के खेला कूदा करते थे। इसीकी अट्टालिका के सामने एक छोटी सी पहाड़ी थी। इस पहाड़ी की जड़ में एक गुफा आज तक विद्यमान है, जिसे लोग अब भी नेपोलियन की गुफा कहते हैं। नेपोलियन बहुत खिलाड़ी, बक्को या उधमी नहीं था। बाल काल से ही इसका बुड्ढों की तरह घंटों चुप चाप बैठे सोचने बिचारने का स्वभाव था। यह गुफा इसके बिचार करने की प्रधान जगह थी। जब लड़के हल्ला दंगा करते, जब इसके भाई बहिन खेल में मस्त हो कर धमचक मचाते, तब यह इसी एकांत गुफा में जा कर शांति

प्राप्त करता और हाथ में पुस्तक लेकर पत्थर के सहारे पीठ लगा कर पढ़ने बैठ जाता और सामने भूमध्य सागर की तरह तरंगों का भी आनंद लिया करता।

नेपोलियन स्वभाव से ही कड़ा था। कोई भी यह न कहता कि नेपोलियन का स्वभाव सरल और सीधा है। कम बोलना तथा एकांत में बैठना तो इसने मानो पालने में ही सीखा था। यह कड़ा और चिड़चिड़ा तो था ही, पर हठी भी बड़ा था, अपनी बात पर अड़ जाता तो किसीकी भी न सुनता। वृद्ध पड़ोसी कहा करते थे कि आयु में तो जोजेफ तू बड़ा है परंतु बुद्धि में नेपोलियन बड़ा है और यही तुम्हारा नेता और शासक होगा। नेपोलियन इतना कड़ा था, कि चाहे कैसी भी चोट लगे, कैसा भी कठोर दंड गुरु या माता से मिले, सब सरल मन से सहन कर लेता; क्या मजाल आँख से एक बूंद आँसू गिरे या मुँह से एक बार दुःख वा कष्टसूचक कोई शब्द निकले। एक बार एक दूसरे लड़के का अपराध नेपोलियन के सिर पड़ा; इस अपराध का दंड भी नेपोलियन ने सरल मन से चुपचाप सहन कर लिया, किंतु यह नहीं कहा कि मैंने यह अपराध नहीं किया, न आँसू निकले न और किसी प्रकार से इसके मुख पर दुःख या कातरता का चिन्ह देखा गया। दूसरों का भला करना, औरों के लिये कष्ट उठाना, इसे बचपन से ही प्रिय था। इसी निराश्रय, अनाथ किंतु परहितचिंतक दृढ़ स्वभाववाले नेपोलियन ने एक बार सारा युरोप हिला दिया और जिस देश ने इसका देश लिया था वह उसीका राजा हो गया।

नेपोलियन के बाल काल के आमोद की एक प्रधान चीज पीतल की बृहन्नालिका (तोप) थी। इसका तौल अनुमान तीन पसेरी के है और कार्सिका में अब तक नेपोलियन की यह निशानी देखने को मिलती है। नेपोलियन बालपन से ही वीरताप्रेमी था, बीर चरित्रों के सुनने में बड़ा प्रेम प्रगट करता था। अपनी माता की गोद में बैठ कर यह प्रायः कार्सिका और फ्रांस के युद्ध का हाल सुनने के लिये हठ किया करता और जब इसकी माता मीठे वचनों में अतीत कहानियाँ सुनाती कि कैसे पराजित वीर कार्सिकन गाँव गाँव में भागे फिरते थे, किस किस तरह कहाँ कहाँ घोर युद्ध हुए; तो चुपचाप ऐसे गंभीर भाव से सुनता, मानों हृदय में लिखता जाता हो। उसकी माता क्या जानती थी कि यह सुकुमार छोटा सा बालक मेरी बात महामंत्र की भांति सुनकर हृदय में अंकित करता जाता है और एक दिन इसी महामंत्र को कठोर रण-भूमि में उपस्थित होकर काम में लावेगा। बालपन से मृत्यु पर्यंत कभी किसीने वीर नेपोलियन को संयमहीन, आमोद प्रमोद निरत और शौकीनी करते नहीं देखा। पिछले दिनों इसकी मां के पास पैसे की कमी थी। यद्यपि खान पान आदि का प्रबंध ठीक हो जाता था परंतु बच्चों के हाथ खिलौना देने और खेलकूद की अनावश्यक सामग्री इकट्ठा करने को पैसा न मिलता था। इस दशा में भी नेपोलियन कभी अपने अन्य भाई बहिनों की तरह दुःखी न होता था।

एक बार नेपोलियन राजमुकुट से विभूषित अमात्यों के साथ सेंट क्लाउड में जा रहा था कि भाग्यवशात् अचानक माता से भेंट

हो गई। नेपोलियन ने माता के चुंबन करने के लिये आगे बढ़ कर प्रसन्न वदन हो माथा झुकाया। माता ने उत्तर में कहा—"हे वत्स! ऐसा नहीं, देखो जिसके गर्भ से भूमिष्ठ हो कर तुमने संसार देखा है, उसका कर चुंबन करके कर्तव्य पालन द्वारा उसका सम्मान दिखाओ।" माता ने पद्मपाणि फैलाए और नेपोलियन ने श्रद्धा भक्तिपूर्वक उन्हें चुंबन कर प्रणाम किया। इतने से ही नेपोलियन की माता के हृदय का भाव प्रकट होता है। नेपोलियन का जो प्रेम, उसकी जो भक्ति माता के प्रति थी उसका परिचय भी थोड़े शब्दों में हम करा देते हैं। जिस समय नेपोलियन सेंट हेलना में अंग्रेजों का बंदी था, कई बार ठंढी सांस भर कर वह कह उठता—"हा माता, आप मुझे न जाने कितना प्यार करती थीं। मेरे निमित्त आपने अपना सर्वस्व—यहाँ तक कि अपने वस्त्र भी—बेच डाले थे।" कभी कभी माता का प्रेम स्मरण करके वह पुलिकत हो जाता, आँखों में आँसू भर कर कहने लगता—"हे मा! सब प्रकार से सहाय्यहीन होने पर भी हम लोगों के पालन पोषण का महत् भार आपने सरल मन से अपने ऊपर उठा रखा था। आप का सा साहस, आपकी सी बुद्धि, आपकी सी चरित्र-गठन-शक्ति बिरली ही नारी में होती होगी, मैंने तो नहीं देखी। इस संसार में जो कुछ महत, उन्नत तथा उदार वस्तु है उस सब के आपने हम सब बालकों के हृदय में प्रतिष्ठित करने के लिये प्राणपण से चेष्टा की थी। मिथ्या से तो आपको हार्दिक घृणा थी, उच्छृंखलता देखने की आप में सामर्थ्य ही न थी। चाहे जितने कष्ट आप पर

पड़ते पर आप विचलित मन होना तो जानती ही न थीं। पुरुषों का सा साहस, वीरों की सी शक्ति और स्त्रियों की सी कोमलता, दया तथा कमनीयता आप में ही एकत्र देखी जाती है।"

धनाभाव के कारण प्रायः नेपोलियन के भाई बहिन अपने चचा को जा कर घेरते।। चचा के पास धन तो खूब था और वे आबाल ब्रह्मचारी भी थे, परन्तु वे कंजूस परले सिरे के थे, कभी किसीको एक अद्धी न देते और अपनी निर्धनता का राग गा गा कर सुना देते। एक दिन लड़कों ने सलाह करके, इनसे पैसा मांगा, जब इन्होंने अपनी गरीबी झलकाई, तो नेपोलियन की छोटी बहिन ने अल्मारी से अशर्फी की थैली मेज पर गिरा दी। चचा लज्जित हो हँसने लगे, परंतु इसी समय लेटीशिया देवी आ गईं; इन्होंने बच्चों को बहुत धमकाया और अशर्फी की थैली ठीक बाँध कर यथास्थान धरवा दी। श्रीमती लेटीशिया का शासन इतना कठोर था कि कोई बालक उसके भय से चूं न कर सकता। परंतु नेपोलियन माता का आज्ञापालन, और बच्चों की भाँति भय से नहीं, किंतु सच्चे हार्दिक प्रेम से करता था।

पाँच वर्ष की अवस्था में नेपोलियन पाठशाला में बैठाया गया। पाँच वर्ष और बीतने पर जब नेपोलियन दस वर्ष का हुआ, तब उसे पढ़ने के निमित्त उसकी माता ने फ्रांस की राजधानी पैरिस में भेजा। यद्यपि यह वीरहृदय कभी आँसू गिराना नहीं जानता था, तथापि माता की प्रेममयी गोद से पृथक् होते समय इसकी आँख में आँसू आ गए। इटाली हो कर नेपोलियन पैरिस पहुँचा।

विद्याप्रेमी, मननशील, श्रमी और उद्यमी बालक नेपोलियन विद्यालय में प्रविष्ट हुआ। पैरिस के धनाढ्या के सुखी बच्चे, इस विदेशी ठिंगने से निर्धन बालक को देख कर घृणा करने लगे। घृणा का विशेष कारण यह था कि नेपोलियन इटालियन भाषा में वार्तालाप करता, दूसरे संपन्न घरों के बालकों की भाँति अपव्यय करने को इसके पास धन भी न था और न यह इन धनिकों के बिगड़े लड़कों के समान बातून, खिलाड़ी, भोगी और विलासी था। एक ओर विलासिता के क्रीत दास दूसरी ओर श्रमशील निर्धन कार्सिकन। इन बच्चों के बुरे बर्ताव नेपोलियन के हृदय पर ऐसे खटके कि वह मरण पर्य्यंत उन्हें नहीं भूला। ब्रायन के छात्र इसे कार्सिका के एक वकील का पुत्र कह कर हँसी उड़ाते। एक दिन क्रुद्ध हो कर नेपोलियन ने कह डाला—"मैं इन फ्रांसीसियों के लड़कों को फूटी आँखों नहीं देख सकता, मेरा वश चला तो इसका बदला लूंगा और वश रहते इनका अपकार करूंगा।" इस बात के तीस वर्ष बीत जाने पर नेपोलियन ने अपने मन का भाव एक बार इन शब्दों में प्रकट किया था "जब समस्त फारसीसियों ने मुझे उच्च स्वर से राजसिंहासन पर आमंत्रित किया था, उस समय भी मेरा मूलमंत्र यही था कि प्रतिभा का मार्ग सब के लिये एक समान खुला रहता है, वंशगौरव कोई चीज नहीं है और न वंशगौरव का कुछ फल ही होता है।"

नेपोलियन स्वभाव से ही एकांतप्रेमी था, वह सदा ही एकाकी अपने पाठागार में पुस्तक ले कर पढ़ना पसंद करता और सहा-

ध्यायियों के साथ कभी न बैठता, न इनके साथ मिलता जुलता। जब दूसरे लड़के आमोद प्रमोद में लगे रहते, तब यह विविध विषयों के ज्ञानोपार्जन में दत्तचित्त होता। थोड़े ही दिनों में यह अपने सह-पाठियों से आगे निकल गया और अपने पांडित्य के कारण सब का श्रद्धाभाजन बन गया। अब तो लोग इसे विद्यालय का अलंकार मानने लगे और सारी घृणा भूल कर इसका आदर सत्कार करने लग गए। इस पर भी नेपोलियन को कभी अपने पांडित्य का अभिमान नहीं हुआ। गणित से इसे अधिक प्रेम था। यद्यपि यह राजनीति, विज्ञान, इतिहास में भी कुशल होने की भरपूर चेष्टा करता था और होता जाता था, किंतु गणित और इंजिनियरिंग उसके प्रधान प्रेम के विषय थे। होमर प्रभृति प्रसिद्ध महाकवियों के रसास्वादन में इसके अवकाश का समय बीतता। इसी समय इसने अपनी माता को एक पत्र लिखा था, उसमें इसने लिखा—'हे मा ? कमर में तलवार और हाथ में होमर की कविता ले कर मैं भूमंडल में अपनी राह निकाल सकता हूँ।"

उस समय की प्रथा के अनुसार सब छात्रों को थोड़ी सी जमीन विद्यालय से मिला करती थी। इसमें जिसका जी चाहे वह कृषि, वनस्पति आदि विद्याओं में व्यवहारिक कौशल प्राप्त करे। नेपोलियन ने अपनी जमीन को अपने बुद्धिबल और गणित तथा इंजिनियरिंग विद्या के सहारे स्वर्ग भूमि बना दिया था। चारों ओर इसने ऐसे वृक्ष लगा दिए थे कि कोई प्रवेश न कर सके। भीतर बड़ी चतुरता से क्यारियाँ बना कर नाना प्रकार के पौधे, फूल

पत्ते, लता बेल से सुशोभित स्थान के मध्य एक चबूतरा बना लिया, और इसी चबूतरे पर एकांत में बैठ कर वह पढ़ा करता। इसने इसीको अपनी कासिकावाली गुफा समझ रक्खा था।

विक्रम संवत १८४१ में जब हमारा चरित्रनायक ऊपर कहे अनुसार ब्रायन के विद्यालय में पढ़ा करता था, फ्रांस में बहुत जोर का पाला पड़ा; यहां तक कि लोगों को बाहर निकलना कठिन हो गया। इस समय नेपोलियन ने अपनी बुद्धि से एक आमोद का कारण निकाला और कितने ही सहयोगी छात्रों को साथ ले कर उसने बर्फ का पुल तथा गढ़ बनाया। इस काम में उसकी चातुरी असाधारण बुद्धि, दूरदर्शिता, विज्ञानवेतृत्व और इंजिनियरिंग के ज्ञान का उत्कृष्ट प्रमाण मिलता था तथा वह केवल बालकों को तुच्छ खिलवाड़ ही खिलवाड़ न ज्ञात होता था। नेपोलियन ने अपने विद्यालय के छात्रों को दो दलों में विभक्त किया। एक दल दुर्ग की रक्षा पर नियत किया गया और दूसरा आक्रमण करने पर। नेपोलियन इधर आक्रमण करनेवाले दल को आक्रमण करने का कौशल सिखाता और उधर रक्षकों को रक्षा करने का मार्ग दिखलाता। कई सप्ताहों तक यह दुर्ग जीतने का अभिनय होता रहा। पाठक यह न समझें कि यह केवल तमाशा ही तमाशा था, इसमें बरफ के गोले चलते थे और कइयों को पूरी चोट भी पहुँचती थी। जिस समय इस घोर युद्ध का अभिनय हो रहा था, दोनों ओर से बरफ के गोले ओले की भांति बरस रहे थे, एक सैनिक ने नेपोलियन की आज्ञा उल्लंघन की। इस अधीनस्थ को अपने आदेश का

पालन न करते देख नेपोलियन ने उसकी ऐसी खबर ली कि सारी आयु के लिये उसके ललाट में चिन्हानी पड़ गई। यही युवक नेपोलियन के सामने जब वह राजसिंहासन पर बैठा, आया। नेपोलियन ने उसे इसी चिन्ह से पहचान लिया और उसकी प्रार्थना के अनुसार उसका दारिद्रय दूर किया।

संवत १८३६ से १८४१ पर्य्यंत पांच वर्ष नेपोलियन ने ब्रायन के विद्यालय में शिक्षा पाई। वह लंबी छुट्टियों में कार्सिका जाया करता था। कार्सिका के साथ इसका हार्दिक स्नेह था। अपने देश के पर्व्वतों और उपत्यकाओं में फिरना उसे बहुत ही प्रिय था। अपने देश के वीरों के प्रति इसकी असाधारण भक्ति थी। देश में जा कर ग्राम के किसी न किसी किसान की अंगीठी के पास बैठ कर उसकी बातें सुन सुन वह बड़ा आह्लादित हुआ करता। वीरप्रवर चार्ल्स बोनापार्ट का मित्र पायोली नेपोलियन का बड़ा प्रतिष्ठा तथा प्रेम-भाजन था। एक बार नियमानुसार लंबी छुट्टी के पूर्व एक अध्यापक ने छात्रों को निमंत्रित किया, इसमें दो एक शिक्षक भी सम्मिलित हुए। आमंत्रित एक शिक्षक ने जान बूझ कर नेपोलियन को चिढ़ाने के लिये पायोली की बुराई की। नेपोलियन से यह बात सुनी न गई और वह बोल उठा—"देव! याद रखना, पायोली एक महापुरुष है, वह अपने देश को प्राण से भी अधिक प्रिय समझता है। मेरे पिता ने उसे यह सलाह दी थी कि कार्सिका को फ्रांस के साथ मिला दो, इस कारण मैं उन्हें (पिताजी को) क्षमा नहीं कर सकता, क्योंकि उनका यही कर्तव्य था कि पायोली के साथ

साथ देश के निमित्त लड़ते हुए समरभूमि में प्राण त्याग करते।"

संवत् १८४२ में नेपोलियन को सेना के साथ वेलेस में शांति रक्षा के लिये भेजा गया, क्योंकि यहां की प्रजा में कुछ अशांति फैलने लगी थी। कुछ ही दिन यहां रहने से इसका प्रगाढ़ प्रेम संबंध मेडम डी कोलंबिया की पुत्री से हो गया था। राजशासन प्राप्त होने पर इसका भः उपकार नेपोलियन के हाथ से हुआ। इसके कुछ दिन पीछे लियंस में विद्रोह फूट उठा और नेपोलियन को वेलेस छोड़ कर वहां जाना पड़ा। इस समय नेपोलियन की उम्र केवल १७ वर्ष की थी। जिस पद पर यह नियत हुआ था इसका वेतन अधिक न था, नेपोलियन को खर्च का कष्ट रहता, निर्धन विधवा माता से सहायता मिलने की आशा न थी, तो भी नेपोलियन कभी विचलित मन न होता और वह यथासाध्य बड़े मितव्यय के साथ गुजारा करता। जब कभी चिंता भी होती तो पुस्तक पढ़कर अपना मन बहलाता, चिंता को यथाशक्ति पास नहीं फटकने देता था।

कार्सिका पतन के पीछे पायोली इंगलैंड भाग गया था, परंतु अंत में इसे देश में जाने की अनुमति मिल गई थी। यद्यपि पायोली बूढ़ा और नेपोलियन बालक था, परंतु दोनों में प्रगाढ़ सख्य-संबंध हो गया था। नेपोलियन ने पायोली के हृदय में इतना बड़ा स्थान प्राप्त कर लिया था कि बहुधा पायोली कहता—'हे नेपोलियन! आज कल तुम्हारी समता करनेवाला मुझे दूसरा नहीं दिखाई देता, तुम प्लूटार्क के गिनाए हुए वीरों के समकक्ष एक वीर हो।"

नेपोलियन में आत्म-प्रतिष्ठा और कर्तव्य-ज्ञान कूट कूट कर भरा था। एक बार आस्ट्रिया के राजा ने नेपोलियन को अपनी बेटी विवाहने का विचार किया। इस समय इसके देश के अनेक लोग इसे उच्चवंशीय सिद्ध करने के लिये व्यग्र हो उठे। परंतु जब नेपोलियन ने सुना कि मेरा उच्च वंशज प्रमाणित होना इस संबंध के लिये आवश्यक है; यद्यपि उसके मन में इस विवाह की आकांक्षा भी थी, पर नहीं, उसने बड़ी तेजस्विता के साथ उत्तर दिया—"इटली के किसी स्वेच्छाचारी उच्च वंशज धराधारी होने की अपेक्षा मैं किसी साधु व्यक्ति का वंशधर होना अपने लिये अधिक गौरव का कारण समझता हूँ। मेरा गौरब मेरे ही द्वारा होगा और फरांसीसी जाति मुझे उच्च उपाधि से विभूषित करेगी। मैं ही अपने वंश का रेडल्फ हूं (रेडल्फ आस्ट्रिया के राजवंश का आदि पुरुष था)। मेरी कुलीनता मुझे युद्ध के अवसर पर मिली है।" यद्यपि नेपोलियन जातिगौरब को स्वयम् माननेवाला न था, किंतु वह लोगों में इस भाव को सर्वत्र वर्तमान देखता था, इसलिये वह इस ओर नितांत उदासीन भी न था, क्योंकि उसके जीवन में इन दो प्रतिद्वंदो भावों के परस्पर संघर्ष का बहुत सा परिचय मिलता है।

अपने जीवन में सुख के समय से लेकर उस समय तक जब कि समस्त युरोप इसके विरुद्ध खड्गहस्त हो रहा था, इसने न कभी धैर्य्य छोड़ा और न अपने मित्रों, जान पहिचानवालों को, न अपने अतीत काल को विस्मरण किया। इसने एक बूढ़ी स्त्री को, जो

इसकी छात्रावस्था में इसीके विद्यालय में खाने की चीजें बेचा करती थी, देखकर पहिचान लिया और इसे दो हजार मुद्रा यह कह कर दी कि शायद तेरा कुछ नेपोलियन से पावना रह गया हो तो यह उस सब का बदला होगा। इसने अपनी धात्री को पहचान कर उसे बड़े प्रेम से घर में रक्खा, कुशल प्रश्न पूछा और बहुतसा धन देकर उसे देश को बिदा किया। इसी तरह इसने अपने शिक्षक की गरीबी देखकर उसे पास बैठाया और बनावटी क्रोध करके वह बोला—"आप ही मेरे सुलेख शिक्षक हैं न? यह देखिए तो, मैं कैसा अच्छा लिखता हूं, यही आपने सिखलाया है? मेरे लेख की बाबत जो आप मेरी बात न मानें तो जोसेफिन (अपनी पत्नी की ओर देख कर) से पूछ लें।" पाठक जान लें कि नेपोलियन का लिखना बहुत ही खराब था, मास्टर की अटूट चेष्टा पर भी नेपोलियन का लिखना न सुधरा, यह बात नेपोलियन अच्छी तरह जानता था। इसी कारण उसने अपनी प्राण प्यारी की साक्षी दी। क्योंकि वह जानता था कि वह कभी उसकी किसी बात को बुरा नहीं समझती। जब नेपोलियन ने फिर पूछा कि क्यों जोसफिन मेरा लिखना कैसा है? तो जोसेफिन ने हृदयहारिणी मुस्कुराहट के साथ उत्तर दिया—"आप शांत हों, मेरे परम प्रेम का कारण तो आपकी हस्त-लिपि ही है।" सम्राट् भी हँस पड़ा और दरिद्र मास्टर की पेंशन दूनी करके उसने उसे बिदा किया।

नेपोलियन को विलासिता से इतनी चिढ़ थी कि इसने एक बार ब्रायन का विद्यालय, जिसमें यह स्वयं पढ़ा था, निरीक्षण किया

और अमीरों के लड़कों को आरामतलबी का आखेट पाया। अतः इसने देश के शासकमंडल को एक पत्र लिखा—'इन लड़कों को अपने घोड़ों की सेवा आप करनी चाहिए, अपने अस्त्र शस्त्रों को अपने हाथ से साफ करना चाहिए। ऐसे भोग विलास में पड़े नवाबी भोगनेवाले लड़के क्या वीर हो रणक्षेत्र में कुछ काम कर सकते हैं? इनको ऐसा बनाना चाहिए जिसमें ये बीर, कार्यपरायण, और आलस्यहीन हों। आशा है कि उपयुक्त आज्ञा इस संबंध में प्रचलित की जायगी।' एक बार नेपोलियन को मारसेल्स नगर में किसी उत्सव के उपलक्ष में नाच रंग में संमिलित होने का निमंत्रण दिया गया, इसने निमंत्रण अस्वीकार करके यह उत्तर दिया—'क्या कोई नाच गा कर भी मनुष्य बना है?' सारांश यह कि नेपोलियन अपने जीवन में कभी भी उद्देशहीन खेलकूद में शामिल नहीं हुआ। छात्रावस्था में एक दिन एक कठिन समाधान संपादन के लिये वह तीन दिन घर के बाहर नहीं निकला। जब प्रश्न हल कर लिया तब उसने दरवाजे का मुँह देखा।

१६ वर्ष की अवस्था में जब सैनिक विभाग में नियुक्त करने के लिये नेपोलियन की परीक्षा ली गई तो इसके उत्तरों को सुन कर परीक्षक इसका मुँह देखते रह गए। मूसो कारूलायन कहते हैं—'यह बालक चरित्र और वंश में कार्सिकन है, यदि भाग्य अनुकूल हुआ तो यह भूमंडल में अपना नाम करेगा।' पाठक जान लें कि मूसों कारूलायन परीक्षक तथा अध्यापक थे। इसके मरने पर नेपोलियन ने आजन्म के लिये इनकी विधवा के भरण पोषण का

प्रबंध कर दिया। इसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर नेपोलियन को पहले पहल तोपखाने की सेना में द्वितीय लेफ्टिनेंट का पद मिला था।

एक बार लियेंस में यह बीमार हो गया। एक सहृदया रमणी यह सुन कर कि एक युवक सैनिक बीमार है देखने आई, और नेपोलियन को देख कर ऐसी विमोहित हुई कि जब तक वह अच्छा होकर रेजिमेंट में न गया, वह अपने हाथ से उसकी सेवा करती रही। कालचक्र के फेर से यह तो दीन दरिद्र हो गई और नेपोलियन राजसिंहासनासीन हो गया। इसने सम्राट् के पास अभिनंदन पत्र भेजा। सम्राट् ने १० हजार फ्रैंक उसकी सहायता को तत्काल भेज दिए। पाठकों को उपरोक्त कई उदाहरणों से ज्ञात हो गया होगा कि नेपोलियन कृतघ्न कदाचित न था, कृतज्ञता प्रकाश करने में उलटा सीमातीत उदार था।

विक्रमीय संवत् १८४८ के आश्विन मास में नेपोलियन छुट्टी ले कर कुछ दिन के लिये अपने घर (कार्सिका) गया। उस समय यह प्रथम लेफ्टिनेंट के पद पर नियत हो चुका था। यहां पर इसने गांव की सुंदर जल वायु का आनंद तो उपभोग किया, किंतु पढ़ने में उसी तरह लगा रहा जैसे पहले बाल्यावस्था में। न कहीं जाना, न किसीसे मिलना, न बिना आवश्यक काम के किसीको पास आने देना। इस तरह दिन रात पढ़ने लिखने में ही इसने यह समय व्यतीत किया, मानो किसी पूजा अनुष्ठान में लगा पड़ा हो और ईश्वराराधन के सिवाय और काम न रहा हो। इस तरह

समस्त सांसारिक आनंद से मुँह मोड़ अपना यह समय भी इसने एकांतवास में ही बिताया। यही एकांतवास, यही विचारशीलता, यही सदाचार और धर्म्मानुराग था। यही त्याग, यही परचिंता थी, जिसके प्रताप से नेपोलियन एक निर्धन विधवा का पुत्र होकर फ्रांस साम्राज्य का मुकुटधारी सम्राट हो गया।

इन्हीं दिनों फ्रांस में दो दल खड़े हो गए थे। एक राजकीय दूसरा जनपदीय। दोनों ही शासनशक्ति हस्तगत करने के अभिलाषी बन कर परस्पर की कठोरतर होड़ाहोड़ी में प्रवृत्त हो रहे थे। हमारा चरित्रनायक प्रजातंत्र का पक्षपाती था। इसी से वह जनपदीय दल का एक अन्यतम अधिनेता स्वीकृत हो गया। राजकीय शासन के पक्षपाती फ्रांस के उच्चवंशीय, धनाढ्य और अधिकार मदोन्मत्त लोग थे। प्रजातंत्र प्रेम के कारण नेपोलियन इस वर्ग के अनेकों की दृष्टि में खटकने लगा और बहुतेरे उसे दांभिक भी कहने लगे। किंतु नेपोलियन को जो जानते थे, जो उसके गुणों से परिचित थे, जिनको उससे कभी काम पड़ा था, जिन्होंने उसके आचार व्यवहार को शुद्ध मन से मनन किया था, वे सब उसे पूर्ववत् ही प्यार करते थे। सार यह कि अधिकांश प्रजा का मन देश की इस दलादली के समय भी नेपोलियन के प्रेम से परिपूर्ण था। यदि ऐसा न होता तो इस विदेशी नवयुवक को प्रजातंत्र के लोग अपना नेता न चुनते।



दूसरा अध्याय

नेपोलियन की प्रसिद्धि

फ्रांस से सार्वजनिक दल का अन्यतम अधिनेता बन कर कार्सिका जाने पर नेपोलियन ने प्रधानता के साथ राजनीति का पठन पाठन किया था और राजनैतिक विषयों के वादविवाद के लिये एक सभा भी स्थापित की थी। इस सभा में नेपोलियन ने खुले शब्दों में सार्वजनिक दल का पक्ष ले कर अपने भाषणों में आग उगलनी आरंभ कर दी। क्योंकि नेपोलियन वीर पुरुष था, इसे नीति के साथ अंतःकरण के विरुद्ध बातें बनाना नहीं आता था; साथ ही इसे अन्याय और अत्याचार से बड़ी घृणा थी। देश के राजा, रईस, बड़े बड़े कर्म्मचारी जिस विलासिता में पड़े थे उसका अनुमान पाठक इसी बात से कर चुके होंगे कि विद्यालयों में उनके पुत्र छात्र होकर भी विलासिता के पंजे में फँसे रहते थे। जो घोर अराजकता, इस समय सुख-संपत्ति-संपन्न पैरिस नगरी में फैल रही थी, जिस तमोमयी काली यवनिका का पतन पैरिस पर हो रहा था; ❀ जेकोविनो की जो निष्ठुरता, अत्याचार और लोमहर्षण पाशविक व्यवहार चारों ओर हाहाकार मचवा रहा था, वह सब

❀ फ्रांस के १७८९ ई० वाले घोर विभ्राट के समय जो कि कई वर्ष तक चला, यहां जैकोविन, जेरांडिस्ट, कार्डोलियर्स प्रभृति दल बन गए थे। १७८१-८२ ई० में मारा और राबेस्पियर इन दलों के नेता थे।

नेपोलियन सरल हृदय से नहीं देख सकता था। यद्यपि नेपोलियन स्वतंत्रता का पक्षपाती था, परंतु मारकाट, अराजकता और अन्याय इसे पसंद न था, जैसे कि आगे चल कर पाठकों पर प्रकट हो जायगा।

इस समय कासिका में सेलिसेट नाम का एक व्यक्ति था, जो नेपोलियन से शत्रुता रखता था। इसने नेपोलियन की अग्निमयी वक्तृताओं की रिपोर्ट फ्रांस भेज दी। पैरिस से वारंट निकला और नेपोलियन को बँध कर पैरिस जाना पड़ा। लेकिन न्यायालय ने इसे निर्दोषी प्रमाणित कर छोड़ दिया। पीछे नेपोलियन ने सेलिसेट की अच्छी खबर ली।

* सन् १७९२ (विक्रमीय संवत् १८४९) के जून मास की २० वीं तारीख का दिन न केवल फ्रांस के इतिहास का, वरन् भूमंडल के इतिहास का चिरस्मरणीय दिन था। इस दिन की बात नर-रक्त से इतिहास के पृष्ठों पर लिखी गई है। प्रातःकल का समय है। पैरिस नगरी जिस सीन नदी के तट पर विराजमान है उसीके किनारे नेपोलियन अपने मित्र बौरियन के साथ टहलता हुआ देखता है कि सहस्रों अशिक्षित नर-नारी आबाल वृद्ध टेढ़ी नजर किए विविध अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित गगन-

---

* पाठक चाहें तो फ्रांस का इतिहास पढ़ कर देख लें कि उस समय फ्रांस के राजा और धनियों का अत्याचार प्रजा को असह्य होने योग्य ही था।

भेदी चीत्कार करते हुए समुद्र की मेघस्पर्शी तरंगमालाओं की भाँति उछलते कूदते राजधानी के मार्गों को आकीर्ण करते चले जा रहे है। आज पैरिस नगर की खैर नहीं है। नेपोलियन इस भयानक लीला के देखने को, इनकी गति मति जानने के लिये इन्हीं की ओर आगे बढ़ा। कैसा विचित्र दृश्य है, ३० सहस्र विवेकरहित क्रुद्ध और असंतुष्ट नागरिक राजप्रासाद के अलिंद की ओर वायुवेग के साथ लांछित तथा अपमानित भूपाल के निस्तेज कपाल को विचूर्णित करने के लिये बद्धपरिकर अग्रसर हो रहे हैं। जान पड़ता है, यह जेकोबिन दल आज राज तो क्या राजा के नाम का निशान भी संसार से खरगोश के सींग के समान सदा सर्वदा को मिटा कर छोड़ेगा। देश के शासन और न्याय के वक्ष पर देश की शांति के सुमूल पर ऐसा कठोर आघात होते देख, पृथ्वी की श्रेष्ठ संपत्ति, सभ्यता और पांडित्य तथा सर्वश्रेष्ठ साम्राज्य के अधःपतित भूपाल की चिंता कर के वीर नेपोलियन का हृदय काँप उठा, मुख क्रोध से उत्तेजित हो लाल लाल दमकने लगा, भौंहें चढ़ गईं, ओंठ फड़कने लगे और इस दृश्य को अब अधिक देखने की शक्ति उसमें से जाती रही। हमारा चरित्रनायक ललकार कर बोला—"हे अभागे सैनिको! तुमने इन्हें क्यों प्रासाद में प्रवेश करने दिया? ५०० मनुष्यों को पहले ही तुमने महा काली नालिका की भेट क्यों न किया। ऐसा किया होता तो इन्हें भागने को भूमि न मिलती।"

इसके पीछे नेपोलियन पेरिस नगर में नित्य नए अत्याचार देखने लगा, यहां तक कि १० अगस्त को जनता ने राजा और रानी को

भवन से भिक्षुक की तरह खदेड़ दिया और राजप्रसाद लूट लिया। राजा के रक्षकवर्ग को नेपोलियन को आँखों के सामने प्रजा ने मूली की तरह काट डाला। जब उत्तेजित लोग रक्षक वर्ग के सिर बरछे में बाँध कर अपनो विजय पर गौरवान्वित हो नगर की गलियों में फिरने लगे, तब नेपोलियन से न रहा गया, इसका मन फिर गया और यह समझने लगा कि यहां की प्रजा अभी स्वतंत्रता पाने योग्य नहीं है? ऐसे निर्दय अशिक्षितों को शासन भार सौंपना सर्वथा अनुचित है। लेकिन हो क्या? नेपोलियन राजा के लिये जनपद के स्वार्थों को पदलित करना भो घोर पाप समझता था, अतः प्रकाश रूप से उसने कह दिया कि प्रजा का यह पैशाचिक काम बड़ा गर्हित और निंदनीय है, मैं इसका साथी नहीं हूँ।

एक ओर प्रजा के अत्याचारों से घृणा, दूसरी ओर उनके स्वत्वों से प्रेम तथा राजा के असंतोषजनक कामों को याद इस तरह की परस्पर विरोधी चिंता से नेपोलियन धर्म्म संकट में पड़ गया। अंततः नेपोलियन ने मन ही मन में जेकोबिनों की शक्ति तोड़ने का बीड़ा उठाया और निश्चय कर लिया कि एक ऐसा पक्का राज-संगठन करना होगा कि जो शासन के योग्य और समर्थ हो, और जिसकी शीतल छाया में गुणज्ञों तथा प्रतिभाशालियों को आश्रय मिले। जो उच्च जाति सब ही विदलित हो गई तो विद्या तथा बुद्धिबल सभो नष्ट हो जायगा, और बिना इन गुणों के सुप्रबंध दुर्लभ होगा। यही सोच कर नेपोलियन ने उच्च नामधारियों का पक्ष लिया था। इतनी प्रजा बिगड़ी थी कि उसने इस विभ्राट् में

३० सहस्त्र उच्च बंशज गिलोटिन के मुख में हवन किए। इस दशा में नेपोलियन का उक्त विचार बहुत ही ठीक था। विद्वानों के अखिल नाश से केवल मूर्ख प्रजा कदाचित राज्य को सुशासित और सुरक्षित नहीं रख सकती।

फाल्गुन (वि० १८५०) में नेपोलियन फिर कार्सिका गया। इस समय इसके राजनैतिक भाव बहुत बदल गए थे, यह ऊपर की बातों से पाठक जान चुके हैं। कार्सिका पहुंचने पर इसे एडमिरल टारजेटर की अधीनता में दो दल सेना का नायक हो कर सार्डिनिया जाना पड़ा। यहां से अपना काम चातुरी के साथ पूरा करके जब नेपोलियन फिर कार्सिका आया तो इसने उधर तो फ्रांस में विद्रोही प्रजा के हाथों * राजा तथा रानी का मारा जाना सुना, इधर कार्सिका में पायोली को इस धुन में पाया कि कार्सिका द्वीप इंगलैंड को सौंप दिया जाय। नेपोलियन से पायोली ने सम्मति ली; नेपोलियन ने इस विचार का घोर विरोध किया, जिसका फल यह हुआ कि नेपोलियन तथा पायोली की मित्रता शत्रुता में परिणत हो गई। पायोली के पास से नेपोलियन घोड़े पर चढ़ कर जा रहा था कि मार्ग में पर्वत के ऊपर पायोली के दल ने उसे घेर लिया, किंतु नेपोलियन इनके हाथ से अपने कौशल द्वारा निकल गया और इसी समय से वह पायोली से सचेत रहने लगा। छुट-

---

* २१ जनवरी ३९१७ ई० को फ्रांस के राजा लुई को प्रजा ने फांसी दी, पीछे रानी को भी मार डाला।

कारा पा कर नेपोलियन जातीय दल के नाम से संगठित सेना का नायक बना। पहले यह इसी सेना का परिचालक रह चुका था, इस लिये इसके सैनिक इसे प्यार करते थे। अब तो नेपोलियन और पायोली की प्रकट प्रति-द्वंदिता चलने लगी।

पायोली ने अंग्रेजों को बुलाया। अंग्रेज मानो तैयार ही बैठे थे, तुरंत निमंत्रण स्वीकार करके पायोली की सेना के साथ मिल उन्होंने अजेक्सिया के दुर्ग को ले लिया। इधर नेपोलियन को पता चल ही गया था, इसने चार पांच सौ वीरों को ले कर अंधेरी रात में छोटी सी तरणी पर सवार हो दुर्ग के पा डेरा डाला। इसकी सेना का पहुँचना था कि तुमुल युद्ध होने लगा। हवा रात में बहुत प्रचंड हो गई थी, प्रातःकाल देखा तो नेपोलियन की छोटी सी तरणी समुद्र की तरल तरंगों से ताड़ित हो साथ ही हवा के बलिष्ट झोकों की सहायता से समुद्र में बह गई। नेपोलियन को एक मुट्ठी सेना, कार्सिका की सेना से संयुक्त अंग्रेजी बल के सामने कहाँ तक ठहरती। पाँच दिन पर्य्यंत इन लोगों ने वीरता के साथ आत्मरक्षा की। अंत में भूख की मारी हुई शिथिल सेना को ले नेपोलियन ने अपने पोत पर जा शरण ली। यहाँ से हट कर नेपोलियन ने सेना को बिदा कर दिया, क्योंकि उसने न तो पायोली का सामना करना ही इस समय उचित समझा, न अपना सपरिवार कार्सिका रहना ही सुरक्षित जाना। इस लिये उसने कार्सिका छोड़ कर भागने का विचार दृढ़ कर लिया। पायोली ने लेटीशिया से कहा कि तुम कार्सिका में सुख से रहो किंतु इस वीरवामा ने वीरो-

चित उत्तर दिया—"सम्मान और कर्तव्य" दो ही पदार्थ हैं जिनके समक्ष मैं माथा टेक सकती हूं।" इस पर पायोली ने इन्हें कासिका छोड़ने का आदेश किया। प्रातःकाल ही नेपोलियन को मालूम हुआ कि मुझे सपरिवार बंदी करने के लिये पायोली ने किसानों को हथियार बँधवा कर रवाना किया है। ऐसे समय में थोड़ा बहुत जो कुछ आवश्यक सामान लेते बना ले कर माता तथा बहिन भाइयों को साथ नेपोलियन भाग निकला। पीछे से इस कृषक-सेना ने सूने घर को अच्छी तरह लूटा।

दिन भर तो सपरिवार वीर नेपोलियन छिपा रहा, रात को अँधेरे में एक नाव पर कासिका को प्रणाम करके बिदा हुआ। डांडी डांड लगाने लगे, नेपोलियन स्वयम् पतवार पर रहा। जिस दीन दशा में निर्धन नेपोलियन केवल दो तीन बक्स कपड़े तथा थोड़ा सा नक्द रुपया ले कर घर से भागा था, उससे कौन अनुमान कर सकता था कि यही नेपोलियन एक दिन फ्रांस के राजसिंहासन पर बैठ कर अपने आतंक से धरामंडल को हिला देगा. युरोप के बड़े बड़े बली, धराधारी, मुकुटमंडित मस्तक इसके सामने झुकेंगे। लेकिन ईश्वर की अलख गति किसी से लखी नहीं जाती। शोकसंविग्न नेपोलियन परिवार को ले कर रवाना हुआ। अरुणोदय के समय एक जहाज के पास वह पहुँचा, इस पर सपरिवार सवार हो नेपोलियन ने नाइस की राह ली। कई दिन नाइस में रह कर वह फ्रांस की सुप्रसिद्ध नगरी मारसेल्स में पहुँचा।

इधर अंग्रेज लोगों ने कासिका टापू पर अपना झंडा गाड़ा। यहाँ अंग्रेजों का यूनियन जैक दो वर्ष तक स्वतंत्रता के साथ लहराता रहा। इस बीच में समस्त कासिकावासी नवागत शासकों की रीतिनीति, आचार व्यवहार, धर्म्म कर्म्म, भाव भाषा से घबड़ा गए। इस राज के साथ संबंध रखने की उनकी स्पृहा एक दम जाती रही। इसी समय एक दिन फरासीसी सेना ने कासिका को आ घेरा। अंग्रेजों के सारे बलविक्रम पल मारते पानी में मिल गए। समुद्र, पहाड़ और उपत्यकाओं से आग बरसने लगी। फरासीसी सेना के देखते ही समस्त कासिकावासी देश की स्वाधीनता के लिये वदेशियों के विरुद्ध खड्गहस्त हो उठे। चारों ओर से उमड़े हुए प्रजादल ने स्वदेश के शत्रुओं को मार भगाया; पायली को भी सब आशा छोड़ जलती छाती कलुषित मुख भाग कर इंगलैंड में शरण लेनी पड़ी। यदि पायोली वीर दूरदर्शी नेपोलियन की बात सुनता तो आज उसे यह बुरा दिन न देखना पड़ता परंतु—" जाको प्रभु दारुण दुख देहीं। वाकी मति पहले हर लेहीं।"

एक बार फिर नेपोलियन इस घटना के पश्चात् कासिका आया था। यद्यपि कासिकवासियों ने इसके सदुपदेश से लाभ न उठाया और स्वदेश निमित्त जो दुःख इसने उठाया था उसकी कदर वे न कर सके, तथापि " जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी " होती है। नेपोलियन अपने देश के पर्वतों, पहाड़ों, उद्यानों, उपवनों, उपत्यकाओं और नगारण्यों को प्राणवत् प्यार करता था और यावज्जीवन उसकी हृदय-कंदरा में यहाँ की शोभा, यहाँ की प्राकृतिक

सुंदरता देदीप्यमती बनी रही। अभी फ्रांस का विभ्राट परिसमाप्त न हुआ था, विद्रोह अनल धधक ही रहा था। पहले युरोप के रजवाड़े इस विभ्राट के विरुद्ध थे, परंतु जब उन्होंने फ्रांस की श्री का अनुदिन अधःपात होते देखा तो इन मुकुटधारी नरेशों के मुँह में पानी भरने लगा और वे सोचने लगे कि ऐसे में न हो तो हम भी अपनी भाग्य-श्री की वृद्धि का मार्ग अवलंबन करें। इंगलैंड और स्पेन ने इस सुयोग का लाभ उठाने के लिये अपने समवेत रणपोत ले कर समुद्र तटस्थ टूलोन नगर को आ घेरा और उस पर अधिकार कर लिया।

इस समय यहां अविश्वास, विश्वासघातकता की कमी न थी, पर यहां के निवासी गीदड़ के समान धूर्त्त और स्त्रियों की तरह भीरु न थे, इनका हृदय तेजपूर्ण था, इन में हाथी का बल और सिंहों की कड़क बिराजती थी। इसलिये अंग्रेजों को धक्का देने के लिये समस्त प्रजा एक तन तथा एक मन एक प्राण हो कर सामने आ अड़ी। लेकिन अंग्रेजों को हटाना हँसी खेल न था, इनका पैर भी अंगद का पैर है। इनके अजय रणपोतों का हटना टूलोनवालों को दुस्तर हो गया। चालीस हजार फरासीसी सेना दूर खड़ी अंग्रेजों की अग्निमुखी बृहन्नलिकाओं की गर्ज्जन सुनती थी, पर इनके सेनाधिप 'कारटो' को कोई उपाय न दीखता था। कार्टो पैरिस का एक चितेरा था, कभी इसने समर का व्यापार न देखा था न सुना था। कारटो जैसा रणनीति से अनभिज्ञ था वैसा ही वह दांभिक भी था। टूलोनवालों की इस बेबसी का मूल कारण

उनका निकृष्ट तथा रण-विद्या-शून्य सेनापति के अधीन होना था। सौभाग्य से टूलोन के उद्धार के लिये वीर नेपोलियन को ब्रिगेडियर जनरल (उपसेनापति) पद पर नियुक्त करके भेजा गया। इसे रणनीति बहिर्मुख सेनाधिप और सेना की निश्चेष्टता तथा अक्षमता देख कर बड़ा आश्चर्य्य हुआ।

नेपोलियन ने पहुँचते ही समस्त सेना को यथास्थान नियोजित करके युद्ध आरंभ कर दिया। देखते देखते शत्रु के एक गोले ने एक तोप संचालक को भूमिशायी कर दिया। नेपोलियन स्वयम् उसकी जगह खड़ा हो गोलंदाजी करने लगा। युद्ध हो रहा था, तभी इसने एक लेखक को पत्र लिखाना आरंभ किया, इतने में एक गोला आ कर पड़ा लेखक और नेपोलियन दोनों धूल से भर गए। लेखक ने हँस कर कहा-'चलो स्याही सुखने के लिये मिट्टी नहीं डालनी पड़ी।' इस वीरता के वाक्य से प्रसन्न हो नेपोलियन ने उसे धीरे धीरे उच्च पदस्थ कर दिया। इस वीर का नाम जूनो था। १७ दिसंबर (वि० १८५०) ई० १७९३ को दुर्ग पर आक्रमण करना निश्चय हुआ। रात में मूसलधार पानी बरसता था। प्रचंड वायु के झोंके पैर नहीं टिकने देते थे, परंतु नेपोलियन शत्रुदल की ओर सिंह की भांति गरजता हुआ गया और विजय प्राप्त करके सेनापति डुगोमी से बोला, "महाशय अब आप निश्चित हो विश्राम करें, टूलोन तो मैंने ले लिया।"

इसी युद्ध के संबंध में स्काट नामक इतिहासकार कहता है-"इस भयानक रात में चारों ओर आग बरस रही थी, रुधिर की नदी

और आँसुओं के बहते सोतों के भीतर नेपोलियन रूपी शुभ गृह उन दुखियों के सौभाग्य रूपी नभमंडल म उदय हो गया था, जो पड़े पड़े तड़पते और रोते थे।"

अंग्रेज दुम दबा कर भागे। चलते समय कुछ गोला बारूद विनष्ट कर गए और कुछ सामान नेपोलियन के हाथ पड़ा। टूलोन ले लेने पर अब नेपोलियन ने अंग्रेजी जहाजों को भी चूर्ण करना चाहा, परंतु शत्रु दल ने कई जहाज़ छोड़ कर घर का रास्ता लिया था। इस तरह नेपोलियन ने अंग्रेजों तथा स्पेनवालों पर विजय पाई। यह विजय संवाद पैरिस पहुँचा। जेकोबिनों के आनंद की सीमा न रही। परंतु राजकीय पक्षवालों को सेना ने टूलोन में बहुत लूटा मारा। एक वृद्ध के पास अधिक धन (८४००० मुद्रा) देख उसके लेने के लिये ही उन्होंने उसे मारा डाला। परंतु नेपोलियन ने यथाशक्ति कितनों को छिपा कर तथा कितनों को नावों द्वारा बाहर भेज कर बहुतों के प्राण बचाए।

टूलोन से विजयी हो, नेपोलियन सेनापति डुगोमी को साथ ले कर मारसेल्स पहुँचा। यहां उन्हीं अंग्रेजों की तथा स्पेनवालों की सम्मिलित सेना से फ्रांस का दक्षिण उपकूल सुरक्षित रखने के लिये नेपोलियन नियत किया गया। यहाँ भी दो तीन ही सप्ताह में यह काम सिद्ध हो गया। ब्रिगेडियर जनरल के पद पर समुन्नत हो १८५१ वि० के वसंत में नेपोलियन पुनः सेना ले कर नाइस को गया।

यहां फरासीसी सेनापति डुमार्टिन था। सेना सब शिथिल

पड़ी थी। पहले नेपोलियन ने अपनी तथा पराई दोनों सेना की गति विधि देखी और फिर उस स्थान का भौगोलिक ज्ञान रत्ती रत्ती प्राप्त किया। आस्ट्रियन सेना का एक दल रोजा नदी के किनारे सायरोजिया में पड़ा आनंद कर रहा था। इधर तो नेपोलियन ने अपना मोरचा निश्चय कर लिया, उधर सेनापति 'मासेनो' १५००० का बल लेकर रोजा नदी के बराबर वोरेगलिया में आ पहुँचा। इसके पश्चात रोजा पार करके उसने चुपचाप आस्ट्रिया की सेना के पीछे अपना डेरा डाला। इसी समय प्रधान सेनापति डुमार्टिन ने भी दस हजार का बल लेकर शत्रु दल के सामने झंडा गाड़ा। साथ ही नेपोलियन दस हजार का एक दल लेकर भूमध्य सागर के उपकूल पर, शत्रु दल के भागने का मार्ग बंद करने के लिये खड़ा हो गया। तीन सप्ताह में सारी फरासीसी सेना युद्धक्षेत्र में जा उतरी। दोनों ओर से तुमुल युद्ध होने लगा। नेपोलियन ने युद्धक्षेत्र की चप्पे चप्पे धरती दृष्टि में कर रखी थी। शत्रु दल जाता तो जाता किधर। पीडमोंटीस में सहसा बीस हजार शत्रु सैन्य के पैर उखड़े। सायरोजिया में शत्रुओं की गोला बारूद और रसद थी। इस नगर को भी समस्त संचित रसद सहित फरासीसियों ने हस्तगत कर लिया। मई महीना आने के पहले ही मेरी टाइम, मोंट सेनिस, मोंट टें डी और मोंट फिनिस्टो आदि दुर्गों पर फरासीसी विजयपताका फहराने लगीं। बाहर तो डुमार्टिन का नाम तथा सेना में नेपोलियन का नाम, बीरता, चातुरी और रणनीतिज्ञता के लिये प्रसिद्ध हो गया।

इसी समय नेपोलियन ने मारसेल्स में एक राजकीय कारागार का जीर्णोद्धार प्रारंभ कर दिया। पैरिस में हल्ला हो गया कि यह (नेपोलियन) राजकीय पत्त ले कर दूसरा कारागार तैय्यार कर रहा है। इसका अभियोग चला। नेपोलियन यद्यपि निर्दोष प्रमाणित हुआ किंतु अन्यायपूर्वक शासक-मंडल ने इसको पद से अवनत करके पैदल सेना का जनरल कर किया। नेपोलियन को यह अकारण अपमान सह्य न हुआ और उसने पद त्याग किया। इस समय उसकी माता तथा सहोदर सहोदरा सब मारसेल्स में थे, वहीं यह भी चला गया।

इस बेकारी से नेपोलियन का हाथ बहुत तंग हो गया, पहले भी इसके पास कुछ संचित धन न था। थोड़े ही दिन पीछे पेरिस आ कर इसने नौकरी ढूंढ़ी, परंतु कोई ठिकाना न लगा। अंत में इसने विचार किया कि न हो तो टर्की में ही जाकर नौकरी करूं। यह इन्हीं बातों के सोच विचार में था कि इसको एक चिट्ठी आई। इसमें धन की आग्रह के साथ याचना की गई थी। बुढ़िया ने लिखा था, कि यदि खर्च न आया तो मेरा जीवन बड़ा ही बुरा हो जायगा। इस विपत्ति में इस पत्र का मिलना था कि नेपीलियन का जी उड़ गया। यह हताश हो नदी किनारे चला गया और आत्मघात की चिंता करने लगा। इतने में इसका पुराना मित्र डिमासिस अकस्मात् आ गया। इससे बात चीत होने लगी, सारा हाल नेपोलियन ने कह दिया। डिमासिस धनी, पात्र, सज्जन और सच्चा प्रेमी था, इसने १००० सोने के डालर नेपोलियन को दे

दिए। नेपोलियन ने यह धन अपनी माता को भेज कर शांति प्राप्त की।

इस धन के लौटाने के लिये नेपोलियन ने पीछे इसे बहुत खोजा पर पता न लगा। १५ वर्ष पीछे जब अकस्मात् उससे भेंट हुई तो नेपोलिय ने ऋण चुकाना चाहा, परंतु उसने कहा कि मैंने उधार नहीं दिया था, मैं न लूँगा। नेपोलियन ने कहा कि अच्छा, अब मेरी कृतज्ञता के रूप में आपको ६० हजार डालर लेना ही होगा। हार कर यह धन डिमासिस ने राज्यकोष से ले लिया। पीछे से नेपोलियन ने डिमासिस और उसके भाई को उच्च पदों पर पहुँचा दिया था।

नेपोलियन के पद त्याग करने के पश्चात् इटली में फरांसीसियों की सेना की हार पर हार होने लगी, तब कुछ लोगों को सुध आई और उन्होंने (पबलिक सेफ्टी कमिटी) शांति रक्षक समिति के सामने नेपोलियन की नियुक्ति का प्रश्न उठाया। समिति ने पत्र भेजे कर नेपोलियन को बुलाया। समिति के समक्ष उपस्थित होने पर सभ्यों ने इसे अपना सहयोगी सभ्य बना लिया, मानो नेपोलियन की भाग्य-श्री के अभ्युदय का दिन फिर लौटा। यद्यपि नेपोलियन समिति में मंत्र देने के लिये नियुक्त हुआ था, परंतु वह वीर सैनिक था, उसका मन सदा इटली की सैन्य की हार पर ही लगा रहता। जब छुट्टी मिलती पुस्तकालय में जा कर राजनैतिक पुस्तकों और मानचित्रों को ले कर वह मनन किया करता।

एक ओर जर्जर फ्रांस पर विदेशियों के दांत, इटली की ओर रणरंग मचा हुआ, फरासीसी सैन्य की पराजय पर पराजय के

समाचार, दूसरी ओर आभ्यंतरिक अराजकता, आपा थापी ! धर्म्म केवल गिरजे की भीतों के ही भीतर रह गया था। नेपोलियन के हृदय को देश के सुधार और उद्धार की चिंता चैन न लेने देती थी। देश की इस दुर्दशा के समय संवत १८५२ विक्रमीय में फ्रांस की राष्ट्रीय परिषद् ने प्रजातंत्र संचालन के लिये एक नई व्यवस्था की। इस व्यवस्था के अनुसार राजशासन का भार पाँच निर्वाचित प्रधान पंचों के हाथ में सौंपा गया। ये पाँच पंच डाइरेक्टर्स अर्थात् नियमकों के नाम से अभिहित हुए। व्यवस्था आदि के निर्म्माण और परिवर्तन की क्षमता दो सभाओं के हाथ में दी गई। एक का नाम वृद्धसमाज, दूसरे का पंचशती सभा हुआ। वृद्धसमाज में ढाई सौ सदस्यों के रखने का नया विधान हुआ। कोई व्यक्ति चालीस वर्ष से कम की अवस्थावाला इसका सदस्य न हो सकता था, और कोई अविवाहित व्यक्ति राज्य के किसी दायित्व के काम पर विश्वास करने योग्य नहीं समझा जाता और न कोई सदस्य आजन्म ब्रह्मचारी ही रहने पाता। पंचशती सभा की बनावट अमेरिका की प्रतिनिधि सभा के ढंग पर की गई। इसके प्रत्येक सदस्य की आयु तीस वर्ष की होना आवश्यक ठहरा। प्रजातंत्रावलंबी लोग शासनप्रणाली को प्रजातंत्र में परिवर्तित करने की प्रतिज्ञा कर चुके थे, क्योंकि राजकीय संप्रदाय के नेतागण बार्बोन वंशियों को सिंहासन पर फिर स्थापित करना चाहते थे। दूसरी ओर जेकोबिनों के राक्षसी अत्याचारों से भी देश की रक्षा करना परमावश्यक सिद्ध हो चुका था। अधिकांश जिलों के रहनेवाले लोगों ने छाती के

बल इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

इस समय राजधानी पैरिस ९६ वार्डों (हलकों) में विभक्त थी। राज्य-शासन-प्रणाली के परिवर्त्तन का यह प्रस्ताव ४८ हल्कों ने ग्रहण किया। शेष में से ४६ वार्ड इस के विरोध में खड़े हो गए। यद्यपि जेकोविनों और राजकीय दलवालों के स्वार्थ सर्वथा विरुद्ध थे तथापि इस समय दोनों दल एक मन एक प्राण होकर इसके विरोध करने में सिर तोड़ चेष्टा करने लगे। जातीय सभा के प्रजा-तंत्रियों ने कहा कि जब बहुमत हमारे पक्ष में है तो अवश्य ही यह प्रस्ताव निश्चय हो कर कार्य्य में परिणत होगा और किसी के भी रोके हम नहीं रुक सकते। इस बात पर प्रतिपक्षियों ने अस्त्र शस्त्रों की सहायता ली। साधारण अशिक्षित समुदाय कलह-प्रिय और झगड़ालू था ही, इसने उच्च वंशोद्भव नेतृगण का पक्ष लेकर जातीय सभा पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया। इन अशि-क्षितों की उद्दंडता इतनी बढ़ी कि महा नगरी पैरिस की गली गली में अशांति और अराजकता विराजने लगी, घोर प्रजा-विद्रोह से दिशाएँ परिपूर्ण हो गईं।

जातीय सभा ने देखा कि यह केवल २-३ सौ लोगों का गाल बजाना मात्र नहीं है, वरन ४० हजार सुशिक्षित सैन्य भी इनके ही दल में भुक्त है, इस दशा में इनका जातीय सभा के विरुद्ध सिर उठाना निस्सार नहीं कहा जा सकता। इस लिये जातीय सभा ने मेनो नामक सेनाधिप को इस विद्रोह के दमन करने के लिये नि-युक्त किया। मेनो गया तो सही, परंतु न वह इस काम के योग्य

था न उसमें वीरोचित साहस और पराक्रम ही था, उन्मत्त नगर वासियों के सामने से इसे भागना पड़ा। फिर क्या था, विद्रोहियों ने मैदान अपना जान लिया और वे चारों ओर विजयदुंदुभी बजाने लगे।

नेपोलियन ने सारी बातें अपनी आँखों से देखीं। वह चुपचाप ११ बजे रात को जातीय सभा में आकर बैठ गया। सभा ने रात भर में ही अपना अस्त होते देख, मेनो को पदच्युत करके वारास नामक दूसरे सेनापति को उसकी जगह स्थानापन्न किया। वारास घबराया, लेकिन तत्काल उसे नेपोलियन याद आ गया। इसने नेपोलियन की, टूलोन की वीरता का बखान करके इस काम पर उसके नियुक्त किए जाने की सम्मति दी। यद्यपि सभा को क्षुद्र-काय (ठिंगने) नेपोलियन को देख कर एक बार विश्वास न हुआ कि यह हमारे अस्तित्व की रक्षा करने में समर्थ होगा, परंतु वारास के कहने पर भरोसा करके उन्होंने नेपोलियन को सेनापति निर्वाचित कर दिया। नेपोलियन ने कहा कि काम तो बड़ा भारी नहीं है और मैं आशा करता हूँ कि कर भी लूँगा, किंतु मुझे पूरा अधिकार मिलना चाहिए, मैं यह न पसंद करूंगा कि मेरे काम में कोई बाधक हो। इस आपत्तिकाल में रात को एक बजे वाद विवाद का अवसर तो था ही नहीं, सभा ने नेपोलियन की प्रार्थना स्वीकार कर ली और नेपोलियन ने सेनापति हो कर विद्रोह दमन का बीड़ा उठाया। इसने जाते ही पैरिस से पाँच मील पर जो पचास तोपें थीं उन्हें अपने हाथ में कर लिया। सावाल-

निस से तोपें ला कर इसने मोरचाबंदी करके गोलों की झड़ी लगाई थी कि समस्त विद्रोही दल भाग खड़ा हुआ और नगर-निवासी घरों में जा छिपे।

अब तो नेपोलियन ने शांति रक्षा के निमित्त सब नगरनिवासियों के हथियार छीनने आरंभ करा दिए। फिर उसने मुर्दों के ढेर को ठिकाने लगवाया और घायलों को औषधालय भेजवा दिया। इस तरह नेपोलियन की सहायता से एकदम शांति स्थापित हो गई और सब ओर इसकी वीरता की प्रशंसा होने लगी। यद्यपि यह सभा इस समय अधिकार प्राप्त रह गई किंतु थोड़े ही दिन पीछे राज्य-शासन का सूत्र इसके हाथ से निकल कर डायरेक्टरी जातीय शासन का अंत हुआ। यह काम नेपोलियन ने अपने चातुर्य से बिना एक बूँद रक्त पात किए ही कर डाला था। यदि नेपोलियन का हाथ डायरेक्टरी शासन बिगाड़ने में न होता तो संभव था कि यह सभा और भी रहती और नए उत्पात भी खड़े होते। अब समस्त आभ्यंतरिक सेना का सेनापति नेपोलियन हुआ, इसका सम्मान भी असीम हो गया और पैरिस के शासन तथा संरक्षण का भार भी इसी के हाथ में रहा। इस समय नेपोलियन की अवस्था केवल २५ वर्ष की थी।

इस पद पर पहुँच कर नेपोलियन की दरिद्रता मिट गई, इसने अपनी माता के दर्शन किए और उनका सारा अर्थसंकट दूर किया। इस तरह नेपोलियन के घोर दुःख ताथ अंधकारमय

जीवन की रात्रि का नाश हो कर भाग्य-सूर्योदय के प्रकाश से सुप्रकाशित हो, वही जीवन समस्त फरासीसी जाति के सम्मान का पात्र बना।



तीसरा अध्याय

नेपोलियन का जोसेफेनी से विवाह करना और इटली में आस्ट्रिया तथा सार्डिनिया की सेना पर विजय पाना।

हम कह चुके हैं कि नगर के उपद्रवियों को भगा देने पर नेपोलियन ने शांति रक्षा के निमित्त नगर निवासियों के अस्त्र शस्त्र ले कर सब को निहत्था कर दिया था। इस उपद्रव में एक व्यक्ति वाईकाउंट बोहार्नेर नामक भी काम आया था। इस की विधवा, जो एक कन्या और एक पुत्र सहित ग्राम छोड़ कर भाग गई थी, शांति स्थापित होने पर लौट कर फिर पैरिस में आई। यह घर पहले बहुत बड़ा धनी था। यद्यपि सब संपत्ति लुट गई थी, परंतु लौटने पर जो कुछ भी इसके हाथ पड़ा उसे ले कर अपने घर में यह फिर रहने लगी। इस अट्ठाईस वर्षीया विधवा का नाम जोसेफेनी था, और उसके पुत्र कन्या का नाम इयोजिन और हेरतिन था। इसके घर से भी एक तलवार छीनी गई थी। यह तलवार इयोजिन को अपने पिता का स्मारक होने के कारण बड़ी प्यारी थी। इस बालक ने नेपोलियन के पास जा कर और आँखों में आँसू भर कर गद्गद वाणी से प्रार्थना की कि मेरे पिता की तलवार मुझे लौटा दीजिए। नेपोलियन ने इसके पिताभक्ति-पूर्ण सच्चे भाव को देख कर नन्हे से बच्चे पर दया की और तलवार उसे लौटा दी। लड़के

का जी इतना भर आया था कि वह धन्यवाद भी न दे सका; चुपचाप मस्तक झुका कर नमस्कार कर और तरवार ले कर चल दिया। इस उदारता के लिये जोसेफेनी स्वयम् अवसर पा कर कृतज्ञता प्रकाश करने गई। नेपोलियन इसके रूप लावण्य से मुग्ध हो गया और यदा कदा उससे मिलने लगा। धीरे धीरे यह जान पहचान प्रगट मित्रता में परिणत हो गई और सं० १८५३ की वसंत ऋतु के आरंभ में इनका दांपत्य संबंध, उस समय की फरासीसी प्रथा के अनुसार, रजिष्ट्री हो गया। जोसेफेनी दक्षिणस्थ द्वीपपुंज में से मर्तंड का टापू में जन्मी थी। युवा होने के कुछ पूर्व ही इस का विवाह वाईकाउंट बोहार्नर के साथ हो गया था। वाईकाउंट इसे ले कर पैरिस चला आया था। इस स्त्री के पतिप्रेम, गुण, चातुर्य्य एवं रंग रूप, चाल ढाल तथा आचार व्यवहार की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। उस समय पैरिस में इसके समान सर्व गुण संपन्ना उच्च घराने की महिला दूसरी थी ही नहीं। यद्यपि यह दो वर्ष नेपोलियन से बड़ी थी, अर्थात् नेपोलियन २६ वर्ष का था और जोसेफेनी २८ वर्ष की थी, परंतु देखने में यह सुंदरी १६ ही वर्ष की जान पड़ती थी। इसके रूप लावण्य के साथ ही साथ उसके सद्गुणों ने नेपोलियन का हृदय वशीभूत कर लिया था। जोसेफेनी भी नेपोलियन के सद्गुणों के कारण उसकी हृदय से दासी हो गई थी। यह विवाहसंबंध निस्संदेह सच्चा तथा प्रगाढ़ प्रेम-संबंध था। विभव, विलासिता की लालच से या और किसी बनावटी या बाहरी निमित्तों पर ध्यान दे कर यह संबंध नहीं हुआ था।

पैरिस में उपद्रव के पश्चात् घोर अकाल पड़ा और सहस्र सहस्र नर नारी आबाल वृद्ध भूख की ज्वाला से जल गए, अगणित होन-हार नवयुवक अन्नविहीन हो काल के कवल हो गए। इस दशा में नगर निवासियों की नेपोलियन ने इतनी अधिक सहायता तथा सेवा की कि वह प्रत्येक प्राणी की आँखों का तारा हो गया। सत्य है, अत्याचारी के अत्याचार से पीड़ित लोग अपना मस्तक उसके पैरों पर धर देते हैं, खुशामदी धनिकों के आगे और निर्बल बलवान के आगे स्वार्थवश सिर झुका देता है, पशुबल से बनावटी प्रतिष्ठा मनुष्य पा सकता है परंतु मनुष्य हृदय का जितना काम है उस के लिये स्नेह चाहिए, करुणा और दया चाहिए तथा हार्दिक प्रेम चाहिए। ईश्वर ने नेपोलियन को जहाँ बली और चतुर बनाया था वहाँ उसको मनुष्यों के हृदयों पर विजय पाने के भी साधन प्रदान किए थे। इन्हीं सद्गुणों के कारण आज नेपोलियन फ्रांस के हर एक छोटे बड़े का स्नेह-पात्र, प्रतिष्ठा-भाजन, उपास्य-देव बन गया।

विवाह से कई दिन पहले नेपोलियन इटली देशस्थ फरासीसी सैन्यों का प्रधान सेनापति नियुक्त हो चुका था, भूतपूर्व सेनापति पृथक् किया जा चुका था। नेपोलियन को इस बड़े दायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त करने के समय डाइरेक्टरों ने कहा—"तुम बालक हो, इतनी बड़ी जिम्मेदारी के उठाने योग्य अभी तुम्हारी अवस्था नहीं है, तुम कैसे बूढ़े सेनापतियों पर शासन करोगे ?" नेपोलियन ने सरल भाव से उत्तर दिया—"मैं बारह महीने में ही बूढ़ा हो जाऊँगा, अथवा मेरा शरीर पात हो जायगा।" पुनः एक डाइरेक्टर

ने कहा—“हम तुम्हें प्रधान सेनापति ही बनाते हैं, किंतु सैन्य के लिये धन की सहायता हम से कुछ न हो सकेगी। राज-कोष खाली है और उन लोगों के कुव्यवहार की सीमा नहीं है, ये सब बातें सोच लो।” नेपोलियन बोला—“अच्छा यों ही सही, इन सब बातों का भी मैं ही दायी रहा, आप चिंता न करें।”

अब पाठक थोड़े से शब्दों में यह जान लें कि इस युद्ध का कारण क्या था, क्यों इटली की ओर सेना पड़ी थी, जिसके शासन के लिये फ्रांस से नेपोलियन को जाना पड़ा। हम कुछ पहले कह चुके हैं कि फ्रांस का आभ्यंतरिक विद्रोह देख तथा उसे निर्बल जान कुछ तो अन्य युरोपीय राज्यों ने यह सोचा था कि ऐसे समय में जो कुछ फ्रांस से हम लोग छीन सकें छीन लें, फिर ऐसा अवसर मिले या न मिले। दूसरी बात यह थी कि फ्रांस के प्रजातंत्र की धूम युरोप में फैल गई थी, राजाओं के आसन डोल गए थे, वे यह समझते थे कि जो कहीं इस प्रजातंत्र की लहर सारे युरोप में फैली तो हमारा ठिकाना न लगेगा, हम दूसरों के पसीने की गाढ़ी कमाई से भोग विलास में निरत न रह सकेंगे। स्थानांतर में युरोपीय प्रजा ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि फ्रांस का प्रजातंत्र कृतकार्य्यता के मुकुट से मंडित मस्तक हो और ईश्वर हमारी सुनें, हमारा भी दुख दूर हो। आयरलैंड के मृतक शरीर से भी स्वतंत्रता की ध्वनि उठ खड़ी हुई थी। इसी लिये समस्त युरोपीय राज्यों ने फ्रांस की प्रजातंत्र शासन प्रणाली को, जो युनाइटेड स्टेट अमेरिका के ढंग पर बनी थी, मिट्टी में मिलाने का बीड़ा उठाया था।

इस काम में आष्ट्रिया, जो इटली पर घोर अत्याचार कर रहा था, प्रधान बना। इसके साथ इंगलैंड, सार्डिनिया, पोप, सभी सम्मिलित थे। एक शब्द में, सारा युरोप एक ओर और नेपोलियन के आधिपत्य में फरासीसी सैन्य दूसरी ओर। सच तो यह है कि जो कहीं बीच में अटलांटिक महासागर का व्यवधान न होता तो यह कुपित युरोपीय राजमंडल नेपोलियन की भाँति वीर वाशिंगटन को भी पकड़ कर किसी सेंट हेलना में बंदी करने के लिये वश रहते, कोई भी उपाय उठा न रखता।

इस दशा में भूखी प्यासी, कई मास से बिना वेतन पाए, दुखी, कर्तव्य भूली हुई, विदेशस्थ फरासीसी सेना के प्रधानाधिपत्य पर युवक नेपोलियन भेजा गया। लेकिन किसी कवि ने सच कहा है कि—'रागी बागी रतन पारखी नायक और नियाय। इन पांचों के गुरु सही पर उपजें अंग सुभाय।' नेपोलियन जात नेता था कृत नहीं, इसमें आधिपत्य की शक्ति ईश्वरप्रदत्त थी। नेपौलियन 'नाइस' में पहुँचा। यहाँ ३० सहस्र फरासीसी सैन्य क्षुधातुर, हतोत्साह असंतुष्ट पड़ी थी, इसीको ले कर वीर नेपोलियन को समस्त युरोप की सम्मिलित शक्ति के सामने मोरचे पर खड़ा होना था। पहले तो बूढ़े सेनाधिप, बिना मूछ दाढ़ी के बालक को प्रधान सेना परिचालक देख कर आश्चर्यान्वित हो कहने लगे कि क्या इसी के अधीन काम करके हम विजयी होंगे? परंतु मेसानो अगारो आदि इसकी प्रतिभा को जानते थे। उन्होंने कहा "इसे छोटा न समझो, 'मंत्र परम लघु जासु बस बसहिं देव गंधर्व।" तेजवंत लघु गनिए न

भाई ।" नेपोलियन ने जाते ही सेना में एक घोषणापत्र वितरण कराया। वह यह था—"योद्धागण! तुम लोग क्षुधार्त और वस्त्र-हीन हो, शासनमंडल अनेक प्रकार से तुम्हारा ऋणी है और उसके हाथ में इसका बदला देने का कोई भी उपाय नहीं है। निस्संदेह इस पहाड़ी धरती में, इस अगम्य स्थान पर तुम्हारा साहस, तुम्हारी वीरता का कोई प्रमाण नहीं मिलता। मैं तुम्हारा अधिप हो कर आया हूँ और तुमको संपन्न उर्वरा धरती पर ले चलूंगा, अनेक धन धान्य संपन्न स्थान तुम्हारे करतलगत होंगे, और तुमको अन्न, वस्त्र, धन, ऐश्वर्य, सुयश किसी बात की कमी न रहेगी। अब योद्धाओ! यह बताओ कि तुम में इस प्रकार से यश और ऐश्वर्य अपने हाथों प्राप्त करने का साहस है या नहीं! है तो उठ खड़े हो, सब कुछ तुम्हारे हाथ तले है।" इस घोषणा के पढ़ने से सैन्यगण की छाती दूनी हो गई, उनकी नस नस उत्साह से भर उठीं, उनकी भुजाएँ फड़कने लगीं।

नेपोलियन ने पहले इटली में पैर धरना निश्चय किया, क्योंकि सार्डिनिया और आष्ट्रिया में भेद डालना बहुत आवश्यक था। इस में कृतकार्य्य हो कर उसने सोचा कि आष्ट्रिया की सेना को ऐसा दबाना कि आष्ट्रिया को इनकी सहायता के लिये राईन नदी पर तटस्थ सेना को बुलाना ही पड़े। तीसरे उसने पोप की शक्ति और क्षमता का नाश करना अनिवार्य्य जाना, क्योंकि यह बार्बोन वंशजों के हाथ में फ्रांस का सिंहासन देने के लिये सिर तोड़ चेष्टा कर रहा था। पोप प्रजा का घोर शत्रु था, इसने फ्रांस के दूत को मरवा डाला

था, यद्यपि दूत अबध्य होते हैं। यह सब काम कठिन और सेना केवल ३० हजार, सो भी क्षुधा से क्षीण तन, निर्जीव; रण सामग्री भी पूरी नहीं; पर नहीं नेपोलियन के आगे कठिन या असंभव तो कुछ था ही नहीं घोषणापत्र पढ़ने के उपरांत नेपोलियन ने कूच की आज्ञा दे दी।

क्रुद्ध भुजंगिनी की तरह नेपोलियन की विशाल चतुरंगिणी युद्धाभिलाषिणी हो चल पड़ी। नेपोलियन रात दिन घोड़े की पीठ पर बैठे बिना विश्राम आगे बढ़ने लगा। वह सेना के प्रत्येक जन के सुख दुःख को अपनी आँखों से देखता, संवेदना प्रकाश करता, दुःख दूर करनेकी चेष्टा करता हुआ आष्ट्रिया की सेना की ओर चला। सेना-पति बेलीर ने आष्ट्रिया की सेना को तीन भागों में विभक्त किया था। इसमें से बीचवाली १० हजार मडेना नामक छोटे से ग्राम में थी। ११ अप्रैल की अँधेरी रात में हवा सनसना रही थी, वर्षा कहती थी कि आज ही प्रलय करके छोड़ूंगी, पंकीभूत मार्ग दुर्गम हो रहा था। विपक्षी सेना निश्चित, मुँह बंद किए आठ हाथ की रजाई में लम्बी ताने पड़ी थी। नेपोलियन सेना लिए मारो मार धावा कर रहा था। नदी पहाड़ों को चुपके से बिना खटका खुटका किए पैरों ही पार करके प्रभात होते होते मडेना के सामने पहाड़ पर नेपोलियन ससैन्य पहुँच गया। इसने पर्वत पर से अनुसंधान ले लिया, परंतु शत्रु दल के कान में जूँ तक रेंगने का अवसर न दिया। थकी हुई सेना को विश्राम का भी अवसर न दे कर नेपोलियन आस्ट्रिया और सार्डिनिया के सम्मिलित बल दल के ऊपर बिजली

की तरह गिर पड़ा। आगे पीछे दहिने बाएँ चारों ओर से युगपत् आक्रमण से विदलित शत्रु दल भाग उठा। तीन हजार शत्रु दल एकदम खेत रहा और कुछ घायल पड़े रहे, शेष भाग गए। यहाँ बहुत सी रण सामग्री तथा रसद नेपोलियन के हाथ लगी। यही मडेना का युद्ध है जिसकी बाबत नेपोलियन ने कहा था कि मैंने वंशगौरव मडेना के युद्ध में प्राप्त किया है। पाठकों को याद होगा कि आस्ट्रिया नरेश ने अपनी पुत्री का विवाह नेपोलियन से करना चाहा था और इसके उच्च वंशज होने न होने का प्रश्न उठा था। पराजित आस्ट्रियन सेना 'डिगो' की ओर भागी, और वहाँ नई सेना से सम्मिलित हो कर विजयी नेपोलियन की सेना के हाथ से मिलन की रक्षा करने के लिये उद्यत हुई, और सार्डिनिया की सेना मेलिसमों की ओर भागी और राजधानी टूरिन की रक्षा में तत्पर हुई। इस तरह एक उद्देश्य नेपोलियन का सिद्ध हो गया, जैसा ऊपर कहा गया है। इस जीत के पीछे सेना को उसने कुछ विश्राम दिया, लेकिन नेपोलियन स्वयम् शत्रु दल पर फिर आक्रमण करने की आयोजना करने में लगा रहा और उसने कुछ विश्राम न लिया। १३ वीं व १४ वीं अप्रैल को घोर युद्ध होने पर आस्ट्रिया वा सार्डिनिया की सम्मिलित सेना घंटे घंटे पर नई कुमक पाती रही और पर्वत के ऊपर से नेपोलियन की सेना पर पत्थर की चट्टानें लुड़काने लगी। नेपोलियन सेना में फिर फिर कर सिपाहियों को प्रोत्साहित करता हुआ आगे बढ़ता रहा। अंततः उसने डिगो से शत्रु दल को हटाया। यहाँ भी बहुत सी रण और खाद्य सामग्री नेपोलियन के

हाथ लगी। वहाँ २००० आस्ट्रियन सेना नेपोलियन के बंधन में आ गई। मिलेसिमों में सार्डिनिया की १५०० सेना को भी नेपोलियन ने बंदी किया। इस तरह शत्रु दल में बिजली की भाँति द्रुत वेग से नेपोलियन का आक्रमण असह्य हो गया और हाहाकार मच गई। भूखी निर्धन किंतु विजयी सेना लूट आरंभ कर देती पर नेपोलियन इस बात का विरोधी था, विशेषतः वह इटालीवालों की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था, इसलिये उसने अपने कठोर शासन द्वारा लूट की प्रथा बंद कर दी। जो रसद सामग्री उसे शत्रु दल की हाथ लगती उस से ही उसने अपनी सेना की परितृप्ति की।

अतः नेपोलियन जेमोला पर्वत पर होकर इटाली का सौंदर्य्य देखता हुआ ससैन्य तूरिन पर आक्रमण करने के लिये चला। १८ वीं अप्रैल को इसने देखा कि ८ हजार शत्रु दल सिविर बनाए पड़ा हुआ है। नेपोलियन इन पर बाज की तरह टूटा। सारे दिन तुमुल युद्ध हुआ। रात को प्रातःकाल की प्रतीक्षा करते हुए फरासीसी बंदूकें सिरहाने धर कर सोए, किंतु उषःकाल में ही देखा गया कि सार्डिनिया की सेना ने भाग कर समीपवर्ती कारसग्लिया नदी के उस पार जा डेरा डाला है। यहाँ और नई सेना आ कर इनमें मिल गई थी और पीछे की ओर आस्ट्रिया का बड़ा भारी दल इकट्ठा हो रहा था। इस कठिन अवस्था में कर्तव्य कार्य्य के विचार के लिये रात को समर सभा बैठी और निश्चय हुआ कि नदी का सेतु अच्छी तरह अरुणोदय होने के पहले तोड़ दिया

जाय। बस प्रभात होने के कुछ पहले ही फरासीसी सेना पुल पर आ पड़ी और आतंकित सार्डिनीय सेना भाग खड़ी हुई। नेपोलियन को ऐसी कापुरुषता की आशा न थी, प्रत्युत इसी पुल के द्वारा आ कर शत्रु सेना से आक्रमित होने की उसे पूरी आशंका थी। अब क्या था, सानंद फरासीसी सेना पुल के पार हो गई। आगे आगे सार्डिनिया की सेना भागी जाती थी पीछे पीछे नेपोलियन उसे खदेड़ता था। शत्रु सेना मांटोवी पहाड़ पर जा कर निवेशित हुई और संध्या होते ही फरासीसी सेना भी वहाँ जा पहुँची। यहाँ अच्छा युद्ध हुआ, अंत में विजय नेपोलियन की हुई। आठ वृहन्नलिका ग्यारह झंडे और दो सहस्र शत्रु-दल के योद्धा नेपोलियन के हाथ आए, और एक सहस्र खेत रहे। लेकिन अब भी नेपोलियन के हाथ से उन्हें छुटकारा मिलता नहीं दीखा। शत्रुदल भाग भाग कर छिपता था नेपोलियन खोज खोज कर उन्हें मारता था। केरास्को से विजय लाभ करती हुई फरासीसी सेना तूरिन से दस कोस पर आ पड़ी, राजधानी में हलचल मच गई। प्रजातंत्र के पक्षपाती लोग नेपोलियन के स्वागत करने को उत्कंठित हो उठे, वे फ्रांस की जय मनाने लगे। सार यह कि सार्डिनिया नरेश काँप उठा और उसने हाथ बाँध कर क्षमा माँगी। नेपोलियन ने अपने सहयोगियों के मत का तीव्र प्रतिवाद करके सार्डिनिया से संधि कर ली। इस संधि में यही शर्त लिखी गई कि 'अब सार्डिनिया, आष्ट्रिया वा अंग्रेजों से मैत्री न रखेगा।' इस संधि के विधानानुसार नेपोलियन को तीन दुर्ग समस्त रण सामग्री तथा खाद्य द्रव्य सहित सार्डिनिया ने प्रदान

किए। जीते हुए स्थान फरासीसियों के ही पास रहे और फरासीसी सेना को आस्ट्रिया के साथ लड़ने के लिये मार्ग दिया गया।

इस विजय के उपरांत नेपोलियन ने समस्त सेना को एकत्र करके एक सारगर्भित वक्तृता दी, जिसका तत्त्व यह है—"हे सैन्य-गण! तुम्हारी वीरता से २१ झंडे, ६४ तोपें और कई दुर्ग हमारे हाथ आए हैं। तुम्हारे पास अन्न वस्त्र न था उसकी अब कमी नहीं है। तुमने १० सहस्र वीरों को रणभूमि-शायी किया और १५ सहस्र तुम्हारे कारागार में हैं। तुम फ्रांस प्रजातंत्र के विश्वासपात्र वीर हो। एक बात करना कि लूट कर के अपना और अपने देश का नाम कलंकित न करना। जिसे तुम जीतो वह तुम्हें दस्यु, लुटेरा न जान कर अपना उद्धारक मानता हुआ तुम से प्रेम करे यही तुम्हारा धर्म्म है। जो तुम में लुटेरे हैं उन्हें प्राणदंड मिलेगा। उन लुटेरों के कारण तुम सबका उज्ज्वल यश कलुषित न होने पावेगा। अभी काम बहुत सा है। जब तक कार्य्य असंपूर्ण रहेगा तुम्हें चैन नहीं। इटलीवासियो, देखो हम तुम्हें लूटने मारने नहीं आए, जिन स्वत्वा-पहारियों से तुम पीड़ित हो, वे ही हमारे शत्रु हैं। तुम प्रजातंत्र फ्रांस पर विश्वास करो।" इसके अनंतर नेपोलियन ने जीती हुई ध्वजाएँ, संधि पत्र और सारा समाचार अपने विश्वस्त चाकर मुराट के हाथों पेरिस भेजा। अन्य सेनापति चाहते थे कि राजा को पदच्युत करके सार्डिनिया में प्रजातंत्र स्थापित किया जाय, किंतु नेपोलियन ने यह उचित न समझा और उन्हें उसकी बात माननी पड़ी।

इस समाचार से सारा युरोप गूँज उठा, पेरिस में आनंद के बधाए बजने लगे, जगह जगह प्रजा नेपोलियन के लिये सम्मान-सूचक सभाएँ करने लगी। नेपोलियन अपनी प्यारी जोसेफेनी को बार बार संक्षिप्त पत्र इसी बीच में भेजता रहा। यद्यपि उसे खाने पीने सोने तथा कपड़ा बदलने को भी पूरा समय न मिलता था, पर वह कभी अपनी प्रियतमा को न भूलता, न अपने कर्तव्य से हटता। वह फरासीसी विजय के साथ साथ फरासीसी गौरव की रक्षा करना भी अपना प्रधानतम कर्तव्य समझता था।

सार्डिनिया से नेपोलियन पो नदी के उस पार पड़ी हुई आस्ट्रिया की सेना की ओर बढ़ा। मार्ग में पारमा राज्य पड़ा, यहाँ पाँच लाख जनसंख्या संपन्न ड्यूकडम थी। इसके ड्यूक ने देखा कि ३००० सेना से मैं क्या कर सकता हूँ। अतः प्रजातंत्र फ्रांस का हार्दिक शत्रु होते हुए भी उसने पाँच सौ चाँदी के डालर नकद और १६०० घोड़े तथा बहुत सी बारूद नेपोलियन को दी और यहाँ की चित्रशाला से २० चित्र लेकर नेपोलियन ने पैरिस भेजे। इनमें एक चित्र सारे युरोप भर में अद्वितीय था। ड्यूक इसके बदले दो लाख डालर देने को तय्यार था पर नेपोलियन ने कहा—"रुपया दो दिन में व्यय हो जायगा पर यह चित्र फ्रांस में कितने ही सुंदर चित्रकार उत्पन्न करेगा"। फ्रांस का इतना ध्यान नेपोलियन को था। क्यों न हो, नेपोलियन का सा नमक का सच्चा होना दुर्लभ है।

नेपोलियन की सेना पो नदी को पार कर आस्ट्रियन सेना की ओर बढ़ी। शत्रुदल सावधान था और अधिक कुमक की प्रतीक्षा

कर रहा था। पो नदी जैसी बड़ी थी वैसी ही तीव्र वेगवती भी थी। फरासीसी सेना ने ३६ घंटे में ४० कोस का रास्ता काटा और जो नावें मिलीं उन्हीं को धर पकड़ कर वह नदी पार हो गई। लोबार्डी में सारी सेना एकत्र हुई। शत्रु सेनाधिप बोलेंजा में तोपें स्थापित करके सेना को सुरक्षित करने की चेष्टा कर रहा था। जैसे ही उसने बीर नेपोलियन का आगमन सुना वह सेना लेकर युद्ध के लिये सम्मुख चल खड़ा हुआ। फोंबिया नामक स्थान में मुठभेड़ हुई। आस्ट्रियन सेना ने मुँडेरों तथा भीतों पर बैठ कर और राज-प्रासाद के रोशनदानों से फरासीसी सेना पर वार करना आरंभ किया। परंतु फरासीसी सेना के आघात से बचना उन्हें कठिन पड़ गया। बहुत से आस्ट्रियन मारे गए, दो हजार बंदी हुए; शेष भागे और फरासीसी उनका पीछा किए चले गए और दूसरी बार लोदी नदी के किनारे लोदी ग्राम में फिर युद्ध हुआ। यह युद्ध बड़े महत्व का था। लोदी नदी का विस्तार दो सौ गज था, इस पर दस गज चौड़ा काठ का पुल बना हुआ था। शत्रु दल इसी पुल के द्वारा पार होकर इस पार खड़ी फरासीसी सेना पर गोले बरसाने लगा। फरासीसी सेना ग्रामवासियों की भीतों की आड़ में प्राण बचाने लगी। इतने में नेपोलियन पीछे से आ पहुँचा और उसने बरसते हुए गोलों की झड़ी में नदी के पाट और शत्रु-दल-प्रबंध का परियावीक्षण किया, तो देखा कि नदी बड़े वेग से बह रही है, उस पार चार हजार सवार बारह हजार पदाति और तिरसठ वृहन्नलिकाएँ चारों ओर युद्ध के लिये सजी तैयार हैं। पुल की दोनों बाहुओं पर इस तरह

से बृहन्नलिकाएँ लगाई गई हैं कि क्षण मात्र में काम पड़ने पर सेतु आद्योपांत युगपत् गोलों की वृष्टि से अग्निमय हो सके। शत्रु सेनाधिप 'बोली' इस विचार में था कि फ़ारसीसी सेना पुल पर आवेगी तो एक दम चने की तरह भून कर फेंक दी जायगी। नेपोलियन ने शत्रु का हार्दिक अभिप्राय जान लिया और पहले तो उसने अपने हाथों से तोपें भर कर तय्यार कीं, तब ग्राम में जाकर वह सेनापतियों से कहने लगा—"देखो एक महूर्त की भी देर न करके सेतु पर अधिकार करना होगा।" सब सेनापति काँप गए। एक से न रहा गया। उसने कहा—"इतने संकीर्ण सेतु को पार कर बरसती हुई आग के भीतर सेना ले जाना असंभव है"। नेपोलियन ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया—"आं, क्या कहा? फरासीसी भाषा में ऐसा शब्द (असंभव शब्द) है ही नहीं"। यह कह कर नेपोलियन ने छ सहस्र सैन्य एकत्र कर उसे ऐसा प्रोत्साहन दिया कि वह प्राण पण से मरने मारने को दृढ़ हो गई। अधिकांश सेना को डेढ़ कोस परे जा कर नदी उतरने को भेज कर, नेपोलियन ने पास की सेना को सेतु पार करने की आज्ञा दी। पुल पर जाते ही फरासीसी सेना शत्रु प्रेरित गोलों से छिन्नमूल वृक्षों की भांति धराशायी होने लगी। सेना को विचलित होते देख आगे बढ़कर नेपोलियन ने ललकारा कि सेना फिर दृढ़ता से आगे बढ़ी। उधर फरासीसी सेना चांदनी रात में बिना प्रयास और रोक टोक पार उतर गई और शत्रु दल पर वज्र की तरह जा पड़ी। इधर नेपोलियन के ललकार कर आगे बढ़ने पर लेंस और मैसानो सेनापति उसके अनुगत ए। पुल

धुआँधार हो रहा था, चांदनी रात अमावास्या की रात बन गई थीं। एक बार नेपोलियन का कहना था— "वीरो सेनापति का अनुगमन करो" कि सेना धड़धड़ा कर आगे बढ़ी और सेनापति लेंस सब के पहले सेतु पार कर गया। जाते ही इसके घोड़े को गोली लगी। वह गिर गया। उसने आस्ट्रिया की तलवारें सर पर देखीं; पर वाह रे वीर, छलांग भर कर, एक शत्रु सवार का सिर काट, उसे घोड़े से गिरा तथा आप उस पर सवार हो सैन्य संचालन पर आ प्रस्तुत हुआ। इसके पीछे इसकी असाधारण वीरता देखता हुआ नेपोलियन भी पहुँच गया। इसी लोदी युद्ध का वर्णन सेंट हेलना में जब नेपोलियन को सुनाया गया तो उसमें लिखा था, कि पहले नेपोलियन सेतु पार हुआ। यह बात वीर नेपोलियन—वीरों की वीर करणी का सराहनेवाला, यश को यथास्थान देख कर ही हर्षित होनेवाला-न सुन सका और बोला—"न,न, न—लेंस ! लेंस ! लेंस ! इसे काट कर सुधार दो। मैं पीछे था, सब के पहले लेंस पार गया था"। अस्तु। तटस्थ लोदी में घोर संग्राम हुआ, आस्ट्रियन सेना जी तोड़ कर लड़ी, परंतु अंत में विजयिनी, निर्भीक और साहसी फरासीसी सेना का वज्राघात असह्य हो गया। शत्रुदल के पैर उखड़ गए और भागे कर बहुत दूर 'तीरल' ग्राम में जा कर उसके पैर टिके।

नेपोलियन की यहाँ बड़ी प्रतिष्ठा हुई। लोंबार्डी के राज रानी भागे, उनके सौध पर 'मकान भाड़े दिया जायगा, चाभी फरासीसी सेनापति से मिलेगी' लिख कर चिपकाया गया। आहा ! स्वातंत्र्य कैसा प्यारा पदार्थ है। प्रजातंत्र कैसा अनुपम रत्न है।

लोंबार्डी की प्रजा को फरासीसी प्रजातंत्र की शक्ति के प्रेम के आगे अपने देशी राजा का प्रेम भूल गया। १५ मई को मिलन-वासियों ने ध्वजा उड़ाते हुए सड़कों पर पाँवड़े डाल कर, जातीय गीत गाते, बधाइयाँ बजाते नेपोलियन को नगर में फिराया। नगर की महिलाएँ खिड़कियों से पुष्प बरसाती थीं। प्रजा के आमोद और आनंद की सीमा न रही। नेपोलियन का इटालियन होना उन लोगों के आनंद की बृद्धि में सोने में सुगंध का काम कर गया।

नेपोलियन ने छ सात दिन तक अपनी सेना को यहाँ विश्राम दिया। उसके लिये अन्न वस्त्र की पुष्कल आयोजना की। एक दिन प्रातःकाल एक दूत फ्रांस से पत्र ले कर आया। नेपोलियन ने घोड़े पर चढ़े चढ़े पत्र पढ़ कर कहा कि तुम अभी लौट जाओ। उसने कहा—'श्रम से हार कर मेरे घोड़े ने दम तोड़ दिया, बिना घोड़े मैं नहीं जा सकता।' नेपोलियन घोड़े से उतर कर बोला—'लो, इस पर चढ़ कर जाओ।' वह हिचकिचाया, पर इसने कहा—'यह समय घोड़ों के मोह करने का और उनके लालन का नहीं है, ले लो और जल्दी जाओ।' फ्रांस के शासक-मंडल ने इस तरह नेपोलियन की विजय बड़ाई सारे युरोप में एक मास के भीतर फैली हुई देख कर संदेह किया कि न जाने यह बलप्राप्त वीर युवक क्या कर बैठे? इस लिये डर कर उसने दूसरा संयुक्त प्रधान सेनाधिप कौलरमैन को भेज दिया। नेपोलियन ने पद-त्याग-पत्र भेज कर लिखा—"दो चतुर से एक अनाड़ी प्रधान अच्छा होता है।" हार कर शासक मंडल को अपना प्रस्ताव लौटा लेना पड़ा और नेपोलियन यथापूर्व अधिकारी रहा।

२२ मई को नेपोलियन मिलन से चला और आस्ट्रियन सेना के पीछे लगा। शत्रु सेनाधिप बोली ने तिरल पहाड़ की समाश्रित भूमि पर हो कर नेपोलियन का धावा रोकने के लिये मानतोया के दुर्भेद्य दुर्ग पर पंद्रह सहस्र योद्धा भेज दिए थे। वह समझा कि पहले दुर्ग विजय किए बिना नेपोलियन शत्रुदल के पीछे न झपटेगा। उधर आस्ट्रिया नव दल बल संग्रह कर रहा था क्योंकि नेपोलियन का दर्प दलन परम आवश्यक हो रहा था। इधर नेपोलियन ने पैर उठाया था कि दूसरे ही दिन लोंबार्डी में पोप ने धर्म्मांध अशिक्षितों, ग्रामीणों और किसानों को भरपूर भड़काया। ये सब फ्रांस प्रजातंत्र के विरोधी हो उठे। जो तीन सौ सिपाही और एक सेनानी नेपोलियन छोड़ गया था उन्हे विद्रोहियों ने बंदी कर लिया। नेपोलियन इस विद्रोह का सिर तोड़ना बहुत ही जरूरी समझ लौट पड़ा। बनास्को में पोपीय कुशिक्षा के वशीभूत विद्रोहियों का अड्डा था। लौटते ही नेपोलियन ने काले कबरे का विचार छोड़ एक ओर पकी खेती सा उन्हें काटना आरंभ कर दिया। मार काट करती फरासीसी सेना पाविया नगर के द्वारा पर पहुँची। जब विद्रोहियों को यथोचित दंड मिला, उनके होश ठिकाने आए, तब नेपोलियन ने कहा—"क्षमा माँगो नहीं तो तुम्हारा अच्छी तरह से वही हाल होगा जो बनास्को का हुआ है"। इन्होंने उत्तर दिया—"जब तक पाविया का प्राकार है, हम आत्मसमर्पण न करेंगे।"

इस उत्तर के पाते ही क्रुद्ध नेपोलियन ने बात की बात में प्राकार गिरा कर भूमि में मिला दिया और वह बाजरे की बाल

की भांति विद्रोहियों के मस्तक काटने लगा। नेपोलियन एक भी प्राणी सप्राण न छोड़ता, किंतु उसे ज्ञात हुआ कि उसके ३०० सैनिकों में से एक को भी आंच नहीं आई, इस लिये वह ठहर गया और बोला—"देखो एक भी फरासीसी सैनिक का रक्त पात हुआ होता तो आज मैं पाविया को एकांत धराशायी और निर्जन करके एक स्तंभ पर लिख छोड़ता कि—"इसी जगह कभी पाविया वस्ती थी" इसके बाद अपने सैनिकों को बुला कर उसने कहा—'रे रे कायर कुटिल हीन!! मैंने जो कर्तव्य भार दिया था उसका करना तो एक ओर, तुम इन किसानों के बंदी हो कर रहे और तुमने कुछ भी चूँ न की ? थोड़ी सी तो बाधा डालते। छी:" उसने सेनानी को समर-न्याय के हाथ में सौंपा और वहाँ समस्त सैनिकों के समक्ष वह गोली से उड़ाया गया। सारी सेना को और विशेषत: लोंबार्डी को तथा समस्त युरोप को साधारणत: विदित हो गया कि समुचित पुरस्कार और दंड देना नेपोलियन कैसी अच्छी तरह से जानता है।

लोंबार्डी का विद्रोहानल शांत कर के नेपोलियन फिर आस्ट्रियन सेना की ओर फिरा। अब क्या कहना था, शत्रु दल ने अवकाश पा कर पूरा प्रबंध कर लिया था और फरासीसी सेना को निगलने के लिये मुँह फैला रखा था। संपन्न वेनिस नगरी में तीस लक्ष जनपद था। यहाँ की सेना अड्रियाटिक सागर तक खुली विचरण करती थी। इसका काम वेनिस की रक्षा मात्र था। वेनिस नेपोलियन के अनुकूल न थी, इसीमें हो कर बोली को भागने का मार्ग मिला था। मानतोया में बोली सेना बैठा गया

था, इसी सेना से लड़ने को नेपोलियन जा रहा था। वैनिस की सरकार ने नेपोलियन का सामना करने का साहस न कर, इसके पास सवा लाख डालर घूस भेजा। नेपोलियन ने घृणा के साथ उसे लौटा कर कहा—"मैं धन के लिये नहीं, किंतु फ्रांस के गौरव की रक्षा के लिये आया हूँ। वेनिस के दूतों ने जा कर अपनी सरकार से कहा कि—"नेपोलियन केवल अशिक्षित लड़नेवाला योद्धा ही नहीं है, वह जैसा अद्वितीय सहृदय, महान राज-नितिज्ञ है, वैसा ही धीर वीर, वागीश, कार्य्यदक्ष और निर्लोभ भी है। एक दिन यह नवयुवक अपने देश का अनुपम शासक बनेगा।"

नेपोलियन जो चाहता तो इटाली में आने के पश्चात् करोड़ों रुपया अपने पास कर लेता, पर नहीं, उसने अनुचित धन अपहरण कभी नहीं किया, तो भी फ्रांस से एक कौड़ी नहीं मँगाई, उलटा २० लाख डालर निर्धन फ्रांस सरकार के कोष में पहुँचाया और सेना का सारा व्यय अपने बाहु बल से पूरा किया; तिस पर भी शासक-मंडल उससे ईर्ष्या करता था और डरता था कि कहीं यह अनुचित अधिकार न जमा ले। इसी परस्परिक अविश्वास के कारण इतनी विजय होने पर भी फ्रांस में आंतरिक निर्बलता बनी ही रही। नहीं तो वीर नेपोलियन के समय में ही फ्रांस अटल हो जाता। जिस राज्य में राजा प्रजा में अटल विश्वास नहीं होता उस देश के राजा को निःसंदेह शीघ्र नष्ट होना पड़ता है।

नेपोलियन की राह रोकने के लिये आस्ट्रिया ने एक दल पंद्रह हजार का मानतोया नदी के किनारे छोड़ रखा था। परंतु वह सेतु

का कुछ भाग तोड़ कर भी फरासीसी सेना को न रोक सका। नेपोलियन ने सिर की पीड़ा से व्यथित होने पर भी नदी पार कर के पहले शत्रुदल पर आक्रमण करने का सारा प्रबंध किया और तब निकटवर्त्ती एक दुर्ग के भीतर जा कर गरम जल में पैर डाल कर बैठने का प्रबंध किया। इसने गरम जल के टब में पैर डाला ही था, कि द्वार पर के रक्षक वर्ग ने इसे सतर्क किया—"अस्त्रपाणि, शस्त्रपाणि, आस्ट्रियन सैन्य उपस्थित है।" सतर्क वाक्य सुनते ही नेपोलियन उठ खड़ा हुआ। एक पाँव में जूता पहना दूसरा जूता हाथ में ले कर खिड़की खिड़की कूद फाँद करता दूसरी ओर बाहर निकल, वह घोड़े पर चढ़ अपनी सेना में जा मिला। यहाँ सेना मध्याह्नकाल के भोजन में लगी थी। अपने प्रधान सेनापति को इस रूप में भागते आते देख वह बड़े विस्मय में पड़ गई और खान पान छोड़ झटपट तय्यार हो, शत्रुदल के पीछे दौड़ पड़ी। आस्ट्रियन सेना को पीठ दिखाने के सिवा और कुछ न सूझा। इस समय नेपोलियन की शारीरिक दशा इतनी बिगड़ गई थी कि उसे पाँच सौ चतुर वीर अपनी शरीर रक्षा पर नियत करने पड़े थे। इसीका नाम पीछे से 'इंपीरिल गार्ड' पड़ गया था। इसके पीछे जितने समर हुए सब में इस सैनिक मंडली ने बड़ी बड़ाई पाई।

इस घटना के पीछे फरासीसी सेना मनतोया दुर्ग के सामने पहुँची। इस दुर्ग में बीस सहस्र आस्ट्रियन सेना लड़ने को तय्यार थी। नेपोलियन ने इस दुर्ग को दुर्भेद्य जान इस पर अधिकार करने का बिचार छोड़ केवल इसके अवरोध का संकल्प किया। आस्ट्रि-

यना न बोली को असमर्थ समझ कर उसे अपने पद से हटा दिया और उसके स्थान पर उमजेर नामक सेनापति को नियत किया। इस समय कुछ नई सेना नेपोलियन के पास भी आ गई थी। परंतु इस नई सेना के आने से केवल कमी पूरी हुई थी अर्थात् फिर तीस सहस्र फरासीसी सेना का बल पूरा हो गया था। इससे अस्सी सहस्र शत्रु बल का सामना नेपोलियन को करना पड़ा। तीन तीन शत्रु की बाँट में एक एक फरासीसी आता था। नेपोलियन ने आस्ट्रिया के नए प्रधान सेनाधिप उमजेर के आने में एक मास की देर देखी, इसलिये इसने पहले दक्षिण इटाली के शत्रुदल से निपटने का विचार किया।

इटाली के दक्षिण में नेपल्स है। यह इटालियन राज्यों में से एक समृद्धिशालिनी शक्ति थी। यहाँ इस समय एक बार्बोनवंशीय कदाचारी डरपोक राजा शासक था। उसने नेपोलियन से संधि की प्रार्थना की इसने देखा कि जो इससे मेल हो जाय तो इसकी छ सहस्र सेना की सहायता से आस्ट्रिया वंचित रह जाय, अतः संधि हो गई। इस संधि से फरासीसी सेना को जाने के लिये मार्ग को भी सुगमता हो गई थी। इन भेदों से अजानकार दूर बैठा शासक-मंडल इस संधि के कारण अपने प्रधान सेनापति से कुछ असंतुष्ट हुआ और इसी संधि के कारण नेपल्स से पोप का प्रेम-संबंध भी जाता रहा।

पोप फरासीसी सेना से असीम भयभीत हो रहा था, क्योंकि इसने उनके साथ दुष्टता करने में, उनका बुरा चेतने में, उनके

विरुद्ध प्रजा को भड़काने में और उनको शाप देने में कुछ कमी नहीं की थी। इसीलिये इसे यह आशा भी न थी कि इसकी प्रार्थना पर फरासोसो प्रधान सेनापति मुझसे संधि कर लेगा या किसी तरह पर अभयदान देगा। छः सहस्र सेना ले कर नेपोलियन पोप की अधिकृति में घुसा। इस समय पोप के अधीन ढाई लाख धर्म्मान्ध लोग थे, जो उसके लिये प्राण दे सकते थे, किंतु नेपोलियन की वीरता पर पोप के हाथों के तोते उड़ गए थे, इसका कलेजा धड़कने लगा और इसे सामने आने का साहस न हुआ। निदान पोप ने बड़ी हेठी के साथ नेपोलियन से संधि की। बहुतों ने यही प्रार्थना की कि पोप को बिना अधिकार च्युत किए न छोड़ना चाहिए, लेकिन नेपोलियन इटाली की शासन प्रणाली नष्ट करने नहीं आया था, उसने पोप को दिमाग ठीक करने का अवसर दिया।

टसकनी ने फ्रांस प्रजातंत्र का समर्थन किया था। लेकिन अंग्रेजों ने इस छोटे से राज्य की परवाह न करके लेगहार्न के बंदर पर अपना अधिकार जमा लिया। कई अंग्रेजी जहाज आ कर फरासीसियों से सिर फोड़ने को उद्यत हो गए। यह अनधिकार चर्चा नेपोलियन से देखी न गई और उसने अंग्रेजी पोत पर आक्रमण करके सब माल लूट लिया। अंग्रेजों के जंगी जहाज हट तो गए, पर इंगलैंड-समुद्र की रानी-जो कुछ भी समुद्र पर देखती सब को ही अपनाना चाहती। इस प्रकार की लूट अंग्रेजों ने भी विपक्षियों के जहाजों की की थी। नेपोलियन लेगहार्न में एक दल अपनी सेना का छोड़ कर टसकनी की राजधानी फ्लोरेंस नगर में गया।

यद्यपि यहाँ का ग्रांड ड्यूक आस्ट्रिया के राजा का भाई था, और वह नेपोलियन से द्वेष भी रखता था, परंतु वह प्रीति से मिला और झगड़ा फसाद नहीं हुआ। यहाँ से नेपोलियन मानतोया की ओर फिर झुका। इस तरह तीन सप्ताह के भीतर दक्षिण इटाली के समस्त राज्यों में नेपोलियन का आतंक पूरा पूरा जम गया। नेपोलियन का उद्देश्य आदि से अंत तक अनावश्यक विवाद करना न था, वह केवल फरासीसी राज्य की तथा उसके गौरव की रक्षा करना चाहता था। उसका यही अभीष्ट था कि फ्रांस के राज्यसिंहासन पर बार्बोन वंशीय राजा को फिर से स्थापन करने की जो कोई चेष्टा करे तो वह विफल हो जाय। उसका उद्देश्य आत्मरक्षा था, किसी पर अन्याय धींगाधींगी करना नहीं था।



चौथा अध्याय

मानतोया विजय

ई० सन १७९६ की जुलाई (वि० १८५३ के आषाढ़) के आरंभ में ही सारे युरोप की दृष्टि 'मानतोया' की ओर आकृष्ट हुई थी। इसके दुर्गम गढ़ के चारों ओर जो भयानक युद्ध हुए थे उनमें अंत में इटाली के भाग्य ने जोर मारा था। इसकी बनावट और संरक्षण-चातुरी के कारण इसे सभी दुर्भेद्य जानते थे। इसको सहज में ले लेना संभव न था। नेपोलियन की सेना में से पंद्रह सहस्र घायल और पीड़ित सिपाही औषधालय में थे। उधर अनुभवशील, रण-कुशल, ज्ञान और वयोवृद्ध सेनापति 'उमजेर' ने साठ सहस्र सेना फरासीसी सेना के साथ लोहा लेने को तय्यार की थी। साथ ही मानतोया से तीस कोस पर गार्डा झील के उत्तर में 'टाइरोलियन' नाम की पर्वतमाला के सुरक्षित क्रोड में स्थित ट्रेंट नगर के दुर्ग में बीस सहस्र सेना उमजेर की आज्ञा पाते ही सहचान की तरह फरासीसी तीतरों पर टूटने को कमर बाँधे खड़ी थी। वेनिस और नेपल्स भी अपनी प्रतिज्ञा भूल कर गुप्त रीति से रोम के साथ हो कर आष्ट्रिया की सहायता कर रहे थे। पोप अपनी संधि की प्रकट उपेक्षा करता हुआ कार्डिनेल मैटी को भेज चुका था कि फरासीसियों से मोरचा ले। ये सब बातें नेपोलियन को रत्ती रत्ती ज्यों की त्यों मिल गई थीं। नेपोलियन मन ही मन में सोचता विचारता, घबराता, पर फिर धैर्य्य धर कर प्रसन्न वदन हो जाता। इसे निश्चय हो गया था

कि मेरा अदृष्टाकाश मेघाच्छन्न है। एक मात्र परमात्मा ही सहायक हो तो हो। कहाँ कई राज्यों की सम्मिलित लाखों सेना, कहाँ इसके हारे थके कहने को तीस सहस्र सिपाही। गार्डा झील के दक्षिण में मानतोया और उत्तर में ट्रेंट है। झील पंद्रह कोस लंबी है और सेनापति उमजेर इसके उत्तर साढ़े सात कोस के अंतर पर बिराजते थे। बुड्ढा उमजेर सोचता था कि नेपोलियन, ऐसा न हो कि भारी अजेय सेना के भय से प्राण ले कर भाग जाय, इसीलिये इसने ट्रेंटस्थ साठ सहस्र सैन्य को तीन भागों में विभक्त करके तीन दल बीस बीस सहस्र के बनाए। एक दल इसने 'कोयाड़ानोविच' सेनापति के अधीन झील के पश्चिम में भेज दिया, जिससे मिलन की राह फरासीसी सेना न भागने पावे। दूसरा दल उमजेर स्वयम् ले कर झील के पूर्व में अड़ गया। तीसरा दल 'मेलासे' के अधिगत 'आदिज' नामक पहाड़ की घाटी पर उसने नियुक्त कर दिया।

नेपोलियन तीस के भीतर, उमजेर अस्सी के ऊपर, परंतु रण कौशल में हमारा चरित्रनायक भी बालक न था। ३१ जुलाई को इसे शत्रु दल की गति का पूरा पता मिल गया। सेना को आज्ञा हुई कि मानतोया का घेरा छोड़कर चलना होगा। सेनापतियों न यह आज्ञा उचित न समझी। क्योंकि रसद का ढेर था और वे समझते थे कि अब गढ़ जल्दी हमें मिल जायगा, परंतु प्रधान सेनाधिप की आज्ञा के विरुद्ध बोलने का साहस किसे? रात को साढ़े ग्यारह बजे छकड़े, तोप बारूद, गोला गोली आदि कुछ तो गाड़ी के गर्भ में और कुछ भूगर्भ में समर्पण कर, झील के पश्चिम तीर पर,

तीर की तरह सनसनाती हुई सारी सेना चल खड़ी हुई। कोयाड़ा-नोविच असावधान था। फरासीसी दिन निकलते निकलते मानतोया के बन में पहुँच गए। यहाँ (मानतोया में) लोग देखते हैं तो फरा-सीसियों का पता नहीं, घेरा छोड़ न जाने कहाँ एक दम उड़न छू हो गए। उधर दस बजे नोविच महाशय सेना लेकर धीरे धीरे आगे बढ़े थे, उन्हें क्या खबर कि पचीस कोस के भीतर ही शत्रु दल से मुठभेड़ होगी। इतनेही में फरासीसी सेना बिना रोक टोक झँझावात की तरह झनझनाती सिर पर आ गई। नोविच की सेना अचानक मार से घबड़ा कर भाग खड़ी हुई। पैर तले की धरती निकल गई, कोई इधर कोई उधर, जिसका जिधर मुँह उठा भाग चला। उधर दूसरे दो दल परस्पर मिलने को चल पड़े। नेपोलियन ने सोचा कि इन्हें सम्मिलित होने के पहले ही दाँव में लेना अच्छा होगा, अतः उसने अपने वीरों से कहा—" वीरो ! तुम्हारी तीर की तरह वेगवती गति पर ही जीत निर्भर है, कुछ चिंता न करो, तीन दिन के भीतर आस्ट्रियन सेना का नाश करके छोड़ूँगा।"

तीसरी अगस्त को सेनापति मेलासे ने प्रातःकाल फरासीसी बृहन्नलिका की गरज सुनी। वह पर्वत की पीठ से उतर चला, रास्ते में पाँच हजार सेना उमजेर की ओर आ मिली। इस तरह २५ सहस्र सैन्य से वह नेपोलियन के स्वागत के लिये अग्रसर हुआ। उधर दूरस्थ उमजेर भी पंद्रह सहस्र सेना ले कर सरपट दौड़ा और लोनाट नामक छोटे से ग्राम में आ उपस्थित हुआ। फरासीसी सेना से तुमुल संग्राम हुआ। आस्ट्रियन वीर आत्म-

सम्मान के लिये अधीर हो कर प्राण की आशा छोड़ लोहा चबाने लगे, परंतु विजयलक्ष्मी नेपोलियन की ही ओर थी। आस्ट्रियन सेना में भगेड़ मच गई, बीस तोपें नेपोलियन के हाथ लगीं।

उधर 'कोष्टिगलियन' में उमजेर को मेलासे की भागी हुई सेना मिली, इसे साथ ले कर फिर तीस सहस्त्र दल नेपोलियन की प्रतीक्षा करने लगा। इधर अच्छी तरह प्रभात भी न हुआ था कि फरासीसी सेना चल खड़ी हुई। नेपोलियन चलती सेना को दौड़ दौड़ कर शिक्षा और आदेश देता जाता था। इसे इतना दौड़ना पड़ा कि कुछ घंटों में पाँच घोड़े इसकी रान के नीचे थक कर मर गए। सैनिक अपने युवा प्रधानाधिपका अदम्य उत्साह, अलौकिक साहस, असाधारण रणकौशल और वीरता, धीरता, चातुरी देख कर दूने दून उत्साहित हो उठे। अभी रात्रि की काली यवनिका सूर्य भगवान ने अच्छी तरह से उठा न पाई थी कि दोनों युयुत्सु दलों का साक्षात हुआ। युद्ध होने लगा। यहाँ भी फरासीसी सेना विजयी हुई। आष्ट्रियन दल को रणक्षेत्र छोड़ प्राण बचाने पड़े।

इस हार से रोम, वेनिस, नेपल्स और पोप सब को चेत हुआ कि हम लोगों ने प्रतिज्ञा भंग की है, संधि-पत्र के विरुद्ध आचरण किया है और अब विजयी नेपोलियन की बारी आवेगी। संभव है कि वह हमारे अनुचित कर्तव्यों का प्रतिशोध करे। लेकिन नेपोलियन ने केवल इतना कह कर अपराध क्षमा कर दिया कि—"आगे मुझे तुम विश्वासघातियों पर तीव्र दृष्टि रखनी होगी।" कार्डिनेल मैटी को नेपोलियन ने बुलाया। वह लज्जित

वृद्ध, त्राहिमाम्, त्राहिमाम्, मैं अपराधी हूँ मेरा अपराध क्षमा हो, कह कर युवक नेपोलियन के पैरों पर गिर पड़ा। नेपोलियन ने अपनी आंतरिक घृणा प्रकाश करते हुए इसे भी क्षमा किया और कहा—"इस पाप के प्रायश्चित्त में तुम्हें तीन महीने तक किसी धर्म्म मंदिर में रह कर उपवास, उपासना और अनुताप करना होगा।"

इस युद्ध के पीछे तीन सप्ताह दोनों ओर की सेनाएँ विश्राम करती रहीं। हार पर हार होने पर भी अस्ट्रियन सरकार ने संधि करना अस्वीकार किया। अस्ट्रिया के झंडे पर लिख दिया गया था कि 'फरासीसी प्रजातंत्र विनष्ट करना होगा।' आस्ट्रिया विफल मनोरथ होने पर भी अपने मूल मंत्र की सिद्धि के लिये अटल, बद्धपरिकर बना रहा। नया दल संगठित हुआ। ट्रेंट में पचपन हजार सेना एकत्र की गई। मानतोया में बीस हजार प्रस्तुत थी ही। इस तरह इनकी पचहत्तर हजार सेना थी और नेपोलियन की वही तीस हजार।

पहिली सितंबर को आस्ट्रियन दल ने मानतोया के उद्धारार्थ ट्रेंट से प्रस्थान किया। इसकी संख्या तीस सहस्र थी और मानतोया में बीस सहस्र और थी, यों पचास सहस्र सैन्य आस्ट्रिया की मानतोया में हो जाती, लेकिन इन्हें मानतोया तक आने का कष्ट न उठाना पड़ा, बीच में ही नेपोलियन ने ट्रेंट की तीस सहस्र सेना को परास्त किया। सात सहस्र योद्धा और बीस बृहन्नलिकाएँ फरासीसियों के हाथ लगीं, शत्रुदल के सेनापति डेविंटोविच का सत्यानाश हो गया।

लगे हाथों नेपोलियन ने तीस कोस का धावा मार कर बसानो में सेनापति उमजेर को जा घेरा। इसके साथ भी तीस सहस्र सेना थी। यहाँ भी फरासीसी दल विजयी हुआ। सोलह सहस्र बची हुई सेना ले बुड्ढा उमजेर मानतोया के गढ़ की ओर शरण लेने को भागा। मानतोया से बीस सहस्र सेना नेपोलियन से लोहा लेने को चली थी, बीच में 'उमजेर' मिल गया, यहाँ से दोनों सेनाएँ मिल कर सेंट जार्ज में फिर नेपोलियन के आगे आईं। नेपोलियन इन पर अमोघ बाण सा आ कर पड़ा और सारी सेना को भाग कर गढ़ में छिपना पड़ा। अब तो सारे युरोप में अजेय नेपोलियन का नाम प्रसिद्ध हो गया। सब रजवाड़ों की सेना नेपोलियन का, यम दंड के समान, भय मानने लगी। धन्य है नेपोलियन, और उसके दीक्षित फरासीसी वीर भी धन्य हैं, जिन्होंने अहार. निद्रा को लगातार भूल कर अपने से दूनी तिगुनी सेना पर धावा पर धावा किया और सर्वत्र विजय पाई। संसार को यह बात सिद्ध हो गई कि चतुर सेनापति थोड़ी सी ही सेना से क्या नहीं कर सकता और रणनीति अनभिज्ञ सेनानी के अधीन बहुत सी भी सेना कुछ काम नहीं दे सकती। बसानो के युद्ध तक नेपोलियन को बिना आहार निद्रा पूरे सात दिन निकल गए थे। आठवें दिन एक क्षुद्र सैनिक ने अपनी थैली में से उसे एक टुकड़ा रोटी दी। उसे खा कर नेपोलियन तीन चार घंटे सोया। दस वर्ष पीछे जब नेपोलियन राजा हुआ तो इसी सैनिक ने इस बात की याद दिलाई और अपने पिता के लिये जीविका चाही। नेपोलियन ने तुरंत उसके वृद्ध पिता के लिये जीविका बाँध दी।

आस्ट्रिया फिर भी युद्ध की तैय्यारी करने लगा, फ्रांस के चिर शत्रु इंगलैंड ने उसे अर्थ और सेना की सहायता दी, वायना की मंत्रिसभा को भी फ्रांस के विरोध के लिये प्रोत्साहित किया। आस्ट्रिया का राजकोष खाली हो गया, साम्राज्य के चारों ओर से एक लाख वीरों का बल संग्रह किया गया। इस बार उपत्यका में नहीं किंतु टाइरल की अधित्यका भूमि में, उत्तर की ही ओर सैन्य जमा की गई। यह बल पचहत्तर सहस्र था जिसके द्वारा नेपोलियन का दर्प चूर्ण करने का निश्चय हुआ था। तीन सप्ताह में आस्ट्रिया की सारी तय्यारी हो गई और नेपोलियन को भी लोहा लेने को सामने जाना अनिवार्य्य हो गया। इसे जो कुमक फ्रांस से मिली वह तीस सहस्र बल में जो कमी हुई थी उसके पूरा करने को भी पर्य्याप्त न थी; तो भी कहने को इसके पास वही तीस की तीस सहस्र सैन्य जो प्रथम दिवस थी आज भी थी। नेपोलियन की सेना वर्षा, आँधी, ओस, पाला सब सिर लेती थी, डेरा खेमा रखना बुरा समझती थी। पीछे पीछे नेपोलियन का यह मत सारे युरोप ने ठीक मान कर ग्रहण कर लिया और डेरा खेमा रखना अनुचित माना गया।

इस दशा में फरासीसी सेना घबरा गई थी, प्राय: सैनिक कहने लग गए थे कि—'क्या सारे युरोप के साथ हम ही एक मुट्ठी आदमी संग्राम किया करेंगे। आज तक फ्रांस ने हमारी सहायता करने की कुछ भी सुध नहीं ली, इस तरह असंख्य सेना के सामने सदा कहाँ तक लोहा चबाया जायगा।' इनका कहना भी नितांत

सत्य था। इस बार किसी को आशा न थी कि नेपोलियन विजयी होगा। शत्रु मित्र सभी इस बार नेपोलियन का पतन अवश्यंभावी स्थिर कर चुके थे। नेपोलियन ने भी जब सुना कि इस बार सेना विभक्त न करके आस्ट्रिया चारों ओर से युगपत् आक्रमण करेगा, तो उसने सारा हाल फ्रांस की डायरेक्टर सभा को पत्र में लिख भेजा। उसमें लिखा था कि—"मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है, घोड़े पर सवार होना कठिन हो गया है, सेना की कमी का हाल शत्रु लोग अच्छी तरह जानते हैं, सिवाय साहस के और कुछ भी मेरे पास नहीं है, बिना सहायता पाए इटली की रक्षा अब एक प्रकार असंभव सी है।" इस मनोभाव को नेपोलियन ने अपनी सेना पर प्रकट न किया, उन्हें उलटे उत्साहित करके वह बोला—'भाई! इस बार जीते और इटली सोलह आने हमारी हुई।' इसके साथ ही इटालियन सेना भी चुपचाप नेपोलियन ने भरती करना आरंभ कर दिया। उसने पारमा और टसकनी के दो ड्यूकों को अपने साथ ले लिया, जुदा जुदा विच्छिन्न राज्यों के नायक उसके सहायक हो गए। इटालियन प्रजा आस्ट्रिया के अत्याचारों से दुखी तो थी ही, वह स्वदेशीय नेपोलियन को प्यार करने लगी, चारों ओर उत्साह तथा उद्दीप्ति छा गई।

नवंबर महीने के आरंभ में आस्ट्रियन युद्ध के लिये व्रती हो कर चले। टाइरोल से पहाड़ी राह अतिक्रम करके नवंबर के शीत में यात्रा करना कठिन था, परंतु होता क्या, इटाली में आस्ट्रिया के शासन के जीने मरने का प्रश्न उपस्थित था। इधर समाचार पाते

ही नेपोलियन ने वेरोना नगरस्थ अपनी सेना से सम्मिलित होने के लिये यात्रा की और बारह सहस्र योद्धा दे कर सेनापति भाबो को उसने ट्रेंट के उत्तर कुछ दूर पर पहाड़ों में पहले ही छिपा दिया था। इस से नेपोलियन का अभिप्राय शत्रु दल का मार्ग अवरुद्ध करना था। परंतु महासागर के समान उमड़ी हुई विपुल शत्रु सेना को भाबो क्या रोकता, वह हट गया। यह समाचार पाते ही नेपोलियन के हाथ में जो कुछ सेना थी उसे ले कर अपने विपन्न सेनापति की सहायता के लिये वह आँधी की तरह दौड़ पड़ा। दस सहस्र का बल तो मानतोया के अवरोध (मुहासिरा) पर रखा और अवशिष्ट दल ले कर वेरोना के पास उसने व्यूह स्थापित किया।

उधर शत्रु दल ने टीडी दल की भांति निकल कर आदिज पहाड़ की घाटी की सारी धरती घेर ली। पंद्रह सहस्र फरासीसी सेना के चारों ओर चालीस सहस्र शत्रु दल के घोड़ों की टापों के कोलाहल ने गगन मंडल को भर दिया। जान पड़ता था कि आज फरासीसियों की कुशल नहीं। फरासीसी वीरों ने इस अवसर पर औषधालय की चारपाई छोड़ घावों में पट्टी बाँध देश के निमित्त लड़ने को कमर कस ली थी। नेपोलियन ने देखा कि प्रथम तो शत्रु दल हमसे कहीं अधिक है, दूसरे उसका स्थान भी हमारे से उत्कृष्टतर है, इस दशा में यदि और भी आनेवाली सैन्य ने शत्रु दल को योगदान किया, तो मेरा पल्ला अत्यंत ही हलका पड़ जायगा, इसलिये अब क्षण मात्र की भी देर करना

उचित नहीं। इसलिये पंद्रह सहस्र फरासीसी सेना ने आगे बढ़ कर चालीस सहस्र शत्रु दल पर आक्रमण किया। क्षण मात्र में रणचंडी चेत गई, चारों ओर कोलाहल मच गया। वर्षा की झम-झमाहट, आँधी की सरसराहट और अंधकारपूर्ण रात्रि में प्राणों की ममता छोड़ वीर वृंद लड़ने लगे। सारी रात विषम संग्राम हुआ। दोनों ओर से कितने ही माई के लाल देश माता के हेतु स्वर्गवासी हुए। प्रातः काल जब आस्ट्रियन दल को और सहायता मिली, तब नेपोलियन को हट कर वेरोना नगर के भीतर शरण लेनी पड़ी। यह पहला ही अवसर था कि बीर नेपोलियन ने शत्रु को पीठ दिखालई। यह दिन बड़ी चिंता में कटा, रात होते ही नेपोलियन ने यात्रा के लिये तय्यारी करने की आज्ञा दी। नगर के पश्चिम दरवाजे से धीरे धीरे सर्प की भाँति तेजी से नेपोलियन ससैन्य निकला, थकी हुई शत्रु सेना निद्रा देवी की आनंदमयी गोद में अचेत पड़ी थी। फरासीसी सेना बिना रोक टोक राज पथ पर पहुँच गई, यह सड़क फ्रांस तक सीधी चली गई थी। मारा मार निरुत्साह सेना अवाक नेपोलियन के पीछे लगी चली गई, दो तीन मील जा कर सेनापति ने मार्ग बदला और आदिज पहाड़ की घाटी को जानेवाली सड़क पर वह हो लिया। इस यात्रा का अर्थ न कोई समझा, न किसी को पूछने की हिम्मत हुई। आधी रात तक सात कोस मार्ग तय करके प्रधान सेनापति नेपोलियन नदी पार हो आस्ट्रियन सेना के पीछे जा पहुँचा। यहाँ दूर तक सजल कछार था, जलजात घास लता से भरी जगह में हो कर एक अलि

साँकरी पगडंडी जाती थी। ऐसी जगह जो संग्राम हो तो सेना की अधिकता विजयी होने में काम नहीं देती, यह बात फरासीसी सेना को अब सूझी। सेनापति का रणकौशल देख कर एक बार फिर फरासीसी सेना का हृदय आनंदित हो उठा, विजय की संभावना से सब के मुख कमल की तरह खिल गए। शत्रुदल की जलती अँगीठियों की चमक इस घोर अँधेरे कछार से दीखती थी। एक ऊँची जगह पर खड़े हो कर प्रधान सेनापति ने शत्रुदल के डेरों का यथेष्ट पर्य्यवेक्षण किया। फरासीसी तेरह सहस्र और आस्ट्रियन दल चालीस सहस्र था, किंतु इस समय फरासीसियों को विजय होने का पूरा भरोसा हो गया था। इस कछार में आरकोला नाम का एक छोटा सा ग्राम था, इसके चारों ओर जल भरा था, एक कोट से पतले पुल पर हो कर आने जाने का रास्ता था। इसमें एक अंश शत्रु दल का पड़ा था, नेपोलियन ने पहले इसी पर अधिकार करना आवश्यक जाना। फरासीसी सेना को आते देख शत्रु दल ने रोकना चाहा, परंतु कुछ वश न चला, आस्ट्रिया की सेना को एक दम विनष्ट करके नेपोलियन ने गाँव पर अधिकार कर लिया।

प्रभात होने पर शत्रु सेनापति अलवेंज को सारा हाल सुन कर बड़ा अचंभा हुआ। उसने तुरंत नेपोलियन की ओर कूच किया और थोड़ी ही देर में फिर घोर संग्राम होने लगा। तीन दिन पर्य्यंत रात दिन यह तुमुल युद्ध लगातार होता रहा। अंत में आस्ट्रीयन कटक को समर भूमि छोड़ कर भागना ही पड़ा। नेपोलियन को यह विजय वीरता से नहीं किंतु रणकौशल से प्राप्त हुई थी। विजय हुई परंतु

इस युद्ध में नेपोलियन को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। वह स्वयम् कई बार काल के गाल से बचा। एक बार वह जल में फिसल कर जा रहा, सिपाहियों ने कठिनाई से उसे निकाला। दूसरी बार उसका घायल घोड़ा उसे ले कर दलदल में कूद कर मर गया, तब भी उसे बड़ी कठिनाई से निकाला गया। तीसरी बार एक बम का गोला उसके पास आ कर पड़ा किंतु ' मोरन ' सेनापति ने बीच में कूद कर अपने प्राण दिए और उसे बचाया। घायल सेनापति लेंस ने उसके साथ उसकी रक्षा के लिये फिर कर अपने शरीर पर कई वार लिए और उसे बचाया। यदि यह अपने प्रशस्त आचरणों से छोटे बड़े प्रत्येक सैनिक की आँखों का तारा न बना होता, तो इस युद्ध में निस्संदेह नेपोलियन स्वर्गवासी हो गया होता। उसने अपने उपकारकों के साथ प्रत्युपकार करने में, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशन में, उनके उत्तराधिकारियों की सहायता करने में कभी त्रुटि नहीं की। उसकी वीरता, उसकी उदारता, उसका कौशल शत्रुओं में भी सराहा जाता था।

इस ७२ घंटे के युद्ध में ८००० फरासीसी काम आए; किंतु शत्रु दल के २०००० योद्धा विनष्ट हुए। बहुत सी ध्वजा, पताका, और तोपों को विजय चिह्न स्वरूप ले कर विजय वैजयंती उड़ाता हुआ नेपोलियन पूर्व द्वार से वेरोना नगर में प्रविष्ट हुआ। नेपोलियन के अनेक युद्धों में बड़े महत्व के युद्ध जितने हुए हैं उनमें से लोदी तथा मानतोया के युद्ध ही चिरस्मरणीय रहेंगे। इन दिनों नेपोलियन की प्राण प्यारी पत्नी जोसेफेनी भी इसकी अनुमति से आ गई थी,

इसके रीचद्वारा सदा नेपोलियन को घोर परिश्रम पीछे बड़ी शांति प्राप्त हुआ करती थी।

इतनी बार हार कर भी आस्ट्रिया ने संधि करना लज्जा की बात समझी और वह सैन्य संग्रह करने में फिर तत्पर हो गया। फ्रांस के हार्दिक शत्रु अंग्रेजों ने भी आस्ट्रिया के साथ सम्मिलित हो कर वेनिस, नेपल्स और रोम के शासकों को नेपोलियन के विरुद्ध उभाड़ कर लड़ने को तय्यार किया। इटाली में इस समय राजतंत्रीय और प्रजातंत्रीय लोगों में घोर विवाद खड़ा हो गया था। इसलिये प्रजातंत्रवालों की सहायता नेपोलियन भी आत्मरक्षा के लिये एकत्र करने लगा। पोप को यद्यपि नेपोलियन ने साम दाम दंड विभेद द्वारा बहुत समझाया, परंतु विश्वासघाती पोप ने न माना और वह पुनर्वार नेपोलियन के विरुद्ध षड्यंत्र रचने में लग गया। इसी बीच में फ्रांस शासकमंडल ने पुनः नेपोलियन की जीत से आशंकित हो, क्लार्क नामक सेनापति को नेपोलियन के साथ युक्त-प्रधान-सेनापति हो कर काम करने को भेजा। नेपोलियन ने क्लार्क से स्पष्ट कह दिया कि—"यदि आप मेरे अधीन काम करने आए हैं तो बड़े आनंद की बात है, नहीं तो आप जितनी जल्दी पैरिस लौट जायँ उतना ही अच्छा है।" क्लार्क नेपोलियन से इतना प्रसन्न हो गया था कि उसने उसके अधीन सेनापति हो कर काम करना स्वीकार कर लिया और शासकमंडल को लिख दिया कि—'इटाली की सारी व्यवस्था नेपोलियन के ही द्वारा होने में फ्रांस का कल्याण है।"

पाँचवीं बार फिर नेपोलियन से लड़ने की तैयारी आस्ट्रिया ने की। नेपोलियन ने घोषणा कर दी कि—“ फ्रांस के अधिकृत टाइरोल में यदि कोई व्यक्ति अस्त्र धारण करेगा तो उसे गोले से उड़ा दिया जायगा ”। प्रत्युत्तर में अलवेंज आस्ट्रिय दल के सेनापति ने लिखा कि—‘ जितने टाइरोल वासी गोली से उड़ाए जायंगे उतने ही फरासीसी बंदियों को हम फाँसी पर लटका देंगे। ” नेपोलियन ने कहा कि—‘ जितने टाइरोल वासी गोली से उड़ाए जायंगे उतने ही आस्ट्रियन सेना के उच्च कर्मचारियों को प्राण दंड दिया जायगा।’ इस तरह दोनों वीर एक दूसरे को चिनौती देने लगे।

१२ जनवरी सन् १७९७ ई० को (वि० १८५४ के पूस मास) नेपोलियन को समाचार मिला कि असंख्य आस्ट्रीय दल रिवोली प्रांत में सम्मिलित हुआ है। इसके दो ही मिनट पीछे दूसरे दूत ने आ कर कहा कि आस्ट्रिया का एक दल मानतोया का उद्धार करने को आ रहा है। सुनते ही नेपोलियन की आँखों के आगे अँधेरा आ गया। वह एक मास भी विश्राम करने न पाया था; सेना की संख्या भी कम थी। अनेक अच्छे अच्छे वीर औषधालय में थे; लेकिन नेपोलियन ने क्षण मात्र की देर न की और वह तड़ितवत् शत्रु सैन्य के विरुद्ध चल खड़ा हुआ। पहाड़ की एक तुषारयुक्त चट्टान पर ससैन्य उपस्थित हो कर उसने देखा तो बहुत दूर पर्यंत शत्रु-दल के डेरे ही डेरे दीखते थे, पर सारी सेना नींद में पड़ी खर्राटे ले रही थी। दृष्टि सीमा पर्यंत श्वेत शिविर श्रेणी के देखने से जान पड़ता था कि मानो प्रशांत महासागर सामने आ गया है। इन डेरों

की चमचमाती हुई स्वच्छ लालटनें और गगनवर्ती खंडित चंद्र की धीमी पर निर्मल मरीचिकाएँ स्पष्ट दिखला रही थीं कि शत्रु दल का बिस्तार कितना है। नेपोलियन ने फिर पचास सहस्र शत्रुओं के विरुद्ध अपनी नाम मात्र की तीस सहस्र सेना को ले कर, लड़ने का समय प्रस्तुत देखा और वह कर्तव्य पर गंभोर भाव से विचार करने लगा।

चार बजे तड़के कर्तव्य निश्चय कर, नेपोलियन ने अपनी वृहअलिकाओं की मेघ गर्जना से शत्रु दल की निद्रा भंग की। दोनों कटक में रणभेरियाँ बजने लगीं और तुमुल संग्राम का सूत्रपात हुआ। किंतु इस बार नेपोलियन को सहसा विजय वैजयंती उड़ाने का अवसर प्राप्त हुआ, शत्रुदल ने पीठ दिखाई। यहाँ भी तीन बार नेपोलियन गोलों की मार से बचा, केवल घोड़ों के माथे गई। शत्रुदल भाग उठा। पीछे से फरासीसी सेना शत्रुओं को छिन्नमूल वृक्षों की भाँति भूमिशायी करती जाती थी और आगे आगे शत्रुदल प्राण छोड़े भागा जाता था।

नेपोलियन ने कुछ सेना शत्रुओं का पीछा करने के लिये छोड़ी और आप अवशिष्ट सेना ले उसी समय शत्रु सेनापति प्रोबेरा के समक्ष रवाना हुआ। प्रोबेरा बीस हजार का बल लिए मानतोया के अवरुद्ध लोगों की सहायता के लिये आ रहा था। सारे दिन चल कर तीसरे पहर प्रोबेरा मानतोया के पास पहुँचा और उसने फरासीसी सेना पर आक्रमण किया। इसी समय दैवयोग से आस्ट्रियन प्रधान सेनापति उमजेर भी सेना ले नगर से बाहर निकला और फरासीसी सेना के एक दल पर अग्निवर्षा करने लगा। इतने ही

में नेपोलियन भी सेना ले कर शत्रु दल पर पतझड़ की वायु की भाँति वेग से आ पड़ा और शत्रु दल के सैनिक सूखे पत्तों की तरह धराशायी होने लगे। सेनापति उमजेर ने ज्यों त्यों करके गढ़ी के भीतर घुस कर प्राण बचाए। इस तरह पाँचवाँ मैदान भी नेपोलियन के हाथ आया। छ सहस्र शत्रु दल मारा गया और पचीस हजार नेपोलियन के बंधन में पड़ा, पैंसठ झंडे और साठ तोपें भी फरासीसियों ने अपने हस्तगत कीं। अब तो लोगों को मालूम हो गया कि अजेय दैवी-कला-संपन्न वीर नेपोलियन को जीतना सर्वथा असंभव है।

वृद्ध उमजेर नेपोलियन के सामने पैरों पर तलवार रख कर दंडवत प्रणामपूर्वक शरणागत होने को चला पर नेपोलियन से वृद्ध वीर उच्च पदाधिकारी शत्रु का अपमान न देखा गया गया। यह काम दूसरे को सौंप कर वह आप पोप की ओर चल दिया। यह बात फ्रांस के शासकमंडल को रुष्ट करने का कारण हुई, परंतु नेपोलियन ने यही उत्तर दिया कि—'मैं तो वीर और सम्मानित शत्रु के साथ भी ऐसा व्यवहार करना उचित नहीं समझता। जो कुछ मैंने किया फ्रांस का ही गौरव बढ़ाने को किया है, इसी में फ्रांस प्रजातंत्र का बड़प्पन है।"

सार यह कि मानतोया फरासीसियों के हाथ आया, आस्ट्रिया अपनी कलंकित पताका को कंधे पर धर कर इटाली को त्याग अपने देश को चला गया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया को फ्रांस के साथ संधि करने को वाध्य करने के लिये वायना जाने के पहले ही पोप को

भी शिक्षा देना उचित जाना। पोप ने भी चालीस सहस्र सेना ले कर युद्ध के लिये तय्यारी की थी। नेपोलियन ने घोषणा निकाली थी कि —'फरासीसी सेना पोप की अधिकृति में प्रवेश करेगी किंतु प्रजा के धर्म्म और स्वाधीनता में बाधक न होगी। इस पर भी जो फरासीसियों के विरुद्ध हथियार उठावेगा उसका अपराध कदापि क्षमा न होगा। शांतिप्रिय प्रजा को अभयदान दिया जाता है।' पोप ने प्रजा को भड़काया, और फरासीसियों पर विजय पाने के लिये नाना प्रकार के अधिकार-प्रदान का लालच दिया। नेपोलियन के पास पाँच सहस्र फरासीसी और चार सहस्र इटालियन सेना थी। कार्डिनेल बिस्का❀ की सात सहस्र सेना से फरासीसियों ने पराजित किया। यह युद्ध सिनियो नदी के तट पर हुआ, पोप की बहुत सी सेना मारी गई, और फरासीसियों के बंधन में आई। इसके अनंतर फरासीसी सेना रोम की ओर चली।

रोम के एक अंश में पोप का राज्य है, इस समय यहां 'छठा पायस' नाम का पोप गद्दी पर था। रोम में तहलका पड़ गया। लोरट्टे नामक स्थान में क्षमा प्रार्थना करने के लिये नेपोलियन के पास दूत भेजा गया, तो भी पोप छठा पायस भयभीत हो भागने को तय्यार हुआ, परंतु इतने में फरासीसी दूत ने पहुँच कर कहा कि—'फरासीसी प्रधान सेनापति आप पर कोई अत्याचार करना

❀ पोप की अधिकृति में जो वेलागना, फेरा, फोली व रवाना के शासक थे, इन्हें कार्डिनल कहते थे और सब का योग लिगेशन के नाम से प्रसिद्ध था। वही चर्च गवर्नमेंट कहलाता था।

नहीं चाहते, उनका उद्देश्य केवल शांति स्थापन करना मात्र है।' यद्यपि फराशीसी शासकमंडल बारंबार विश्वासघात करनेवाले पोप पर दया करना नहीं चाहता था, उसका दृढ़ संकल्प था कि पोप को समस्त गौरव से वंचित किया जाय, तो भी नेपोलियन ने शांति रक्षा के लिये और फ्रांस की बड़ाई तथा प्रतिष्ठा के लिये ऐसा करना उचित न जाना और पोप की दुर्गति न करके उससे संधि कर ली। इस तरह नौ दिन के भीतर नेपोलियन ने पोप रूपी सर्प के विषाक्त दाँत तोड़ डाले। इसके उपरांत सेना ले कर प्रधान सेनाधिप, हमारा चरितनायक, वायना की यात्रा को तय्यार हुआ।

नेपोलियन को बहुतों ने बहुत सी झूठी बदनामी उड़ाई, इसे किसी ने मद्यपी, किसी ने लंपट, किसी ने अत्याचारी विख्यात किया; पर नेपोलियन ने कुछ परवाह न की, क्योंकि वह जानता था कि—

'सत्यमेव जयते नानृतम्'



पाँचवाँ अध्याय ।

वायना यात्रा और मिलन का राजपरिषद

आस्ट्रिया ने संधि करना स्वीकार न किया और वह इटाली परित्याग करके अब स्वदेश में ही सेना संग्रह करने लगा । नेपोलियन ने वेनिस के शासक को लिखा कि तुम कुछ शासन प्रणाली बदल कर अपने यहाँ शांति स्थापन कर लो तो तुम्हारा बहुत भला हो; पर उसने न सुना । नेपोलियन यह कह कर चुप रह गया— "अच्छा जी चाहे सो करो, पर फ्रांस के साथ विश्वासघात किया तो अच्छा न होगा ।" मानतोया में महाकवि वर्जिल की जन्म भूमि है, यहाँ इस कवि को अमर करने के लिये नेपोलियन ने उसकी समाधी पर एक स्मारक स्तंभ स्थापित किया और एक उत्सव की भी संस्थापना की ।

इस समय आर्क डयूक चार्ल्स आस्ट्रिया के राजा का भाई आस्ट्रीय प्रधान सेनापति था । इसका युद्धकौशल में बड़ा नाम था । सब नब्बे सहस्र का बल इसके झंडे तले था, इसके द्वारा इसने नेपोलियन को रोकना चाहा । यद्यपि नेपोलियन का अभिप्राय लड़के का न था, वह संधि के लिये जाता था, परंतु इसके साथ फरासीसी और इटाली दोनों को मिला कर पचास सहस्र का बल था, दस सहस्र सैनिक इनके अतिरिक्त वह इटाली के प्रबंध के लिये छोड़ आया था । एल्प्स पर्वत से उतर कर जब ससैन्य नेपोलियन रवाना हुआ, तो चार्ल्स पहले ही से डर कर भागा और पाइवो नदी

के उस पार जा उसने डेरा डाला और लड़ाई का संविधान किया।

नदी किनारे उस पार शत्रु दल को युद्धाकांक्षी देख फरासीसी सेनापति ने चकमा देने के लिये सेना पीछे हटा दी और सब सैनिक खाने पीने का प्रबंध करने लगे। चार्ल्स ने समझा कि थका माँदा नेपोलियन विश्राम किए बिना आगे न बढ़ेगा, अतः उसने भी व्यूह तोड़ कर सब को शारीरिक कृत्य में लगा दिया। इधर नेपोलियन ने देखा कि चकमा चल गया, तुरंत सेना को तय्यार होने की उसने आज्ञा दी। सेना जब आधी नदी पार कर चुकी तब चार्ल्स की आँखें खुलीं, उसने फिर सेना तय्यार की। पार उतर कर घमासान युद्ध हुआ। अंत में शत्रु दल भागा और फरासीसी सेना ने इसका पीछा किया और शत्रु दल के पीछे लगी हुई वह एल्पस पार हुई। फरासीसी सेना को मध्य आस्ट्रिया में पहुँचा जान, राजधानी की रक्षा के लिये शत्रुदल व्यग्र हो दौड़ा।

नेपोलियन ने लूवेन पहुँचने पर दुर्बीन से वायेना नगर देखा और भय का कारण न देख अपनी सेना को एक दिन विश्राम करने की अनुमति प्रदान की। इधर फरासीसी सेना को सिर पर पड़ा देख राजा और धनाढ्य व उच्च वंशियों ने भाग कर हंगेरी के दुर्गम वन में शरण ली। प्रजा दल भी भयभीत हो कर भागने लगा, और यह समाचार नेपोलियन को मिला। नेपोलियन ने तुरंत एक घोषणापत्र निकाला। इसमें लिखा—'मैं प्रजा का शत्रु नहीं, किंतु मित्र हूँ, मेरा उद्देश्य राज्यों का जीतना नहीं, है किंतु शांति संस्थापित करना है। अंग्रेजों के उत्कोच के वशवर्ती हो कर आस्ट्रिया

ने फ्रांस के साथ युद्ध का बीड़ा उठाया, अतः फ्रांस को भी अपना बचाव करने के लिये रणक्षेत्र में उतरना पड़ा।'

इस घोषणा से नगर में कुछ भय घटा और संधि की बातें प्रजा में चलने लगीं। सेनापति चार्ल्स ने भी सम्राट् को समझाया कि संधि करने में ही भला है। सम्राट ने दूसरा उपाय न देख संधि करना स्वीकार कर लिया और संधिपत्र लिखा गया। नेपोलियन ने केवल पहली शर्त पर, कुछ उपयुक्त वचन कह कर बिना पेरिस की स्वीकृति की राह देखे, अपना हस्ताक्षर कर दिया। पहली शर्त में आस्ट्रिया-नरेश ने लिखा था कि आस्ट्रिया ने फरासीसी प्रजातंत्र को मान लिया। नेपोलियन ने कहा—'इसे भलेही निकल दें, इसकी आवश्यकता क्या है? फ्रांस अपने घर का स्वामी है जैसा चाहे करे। सूर्य्यवत् उसका प्रजातंत्र जगद्विख्यात है।' नेपोलियन ने सोच कर ऐसा कहा था कि यदि कभी फ्रांस राजतंत्र शासन-प्रणाली का पक्षपाती हो तो आस्ट्रिया-नरेश कह सकते हैं कि हमने फरासीसी सरकार को प्रजातंत्र शासन-मंडली के रूप के सिवा और किसी रूप में नहीं स्वीकार किया था।'

इस बीच में झूठी खबर फैल गई कि 'नेपोलियन ससैन्य आस्ट्रिया में पकड़ा गया'। वेनिस के शासक ने इस समाचार को झट सत्य मान लिया और फरासीसियों को मारना आरंभ कर दिया। उसने इतनी हत्या और इतना अत्याचार किया कि सुनते ही नेपोलियन का रुधिर उबल उठा और तुरंत ही उसने वेनिस पर धावा कर दिया। वेनिस की सीमा पर आते ही राजतंत्र के

पक्षपातियों और शासकों के छक्के छूट गए, वे गिड़गिड़ाते हुए नेपोलियन की शरण आए और शासक ने एक दूत के द्वारा कई लक्ष स्वर्णमुद्रा (उस समय की वेनिस की अशरफ़ी) नेपोलियन को उत्कोच देनी चाही। नेपोलियन ने दूत को दुत्कार कर निकाल दिया और कहा–'तुमने मेरे पुत्रों का वध किया है, जो तुम मुझे पेरू का सारा धन भांडार भी दे दो, जो तुम अपना सारा देश सोने से मढ़ कर भी मुझे समपर्ण कर दो, तो भी जो विश्वासघात तुमने किया है उसका मार्ज्जन नहीं हो सकता।" वेनिसवालों ने बहुत सा धन दे कर पेरिस के शासनाध्यक्षों को संतुष्ट कर लिया। इन उत्कोचक्रीत धन के दासों ने नेपोलियन को लिख दिया कि वेनिस के शासक का अपराध क्षमा कर दो। इस पत्र का पाना था कि प्रत्युत्तर में क्रुद्ध नेपोलियन ने प्रलय काल के मेघ के समान गर्जना करनेवाली तोपें वेनिस की ओर लगा दीं और पहर दिन चढ़े तक में 'त्राहि' 'त्राहि' होने लगी। इधर प्रजातत्र के पक्षपातियों ने नेपोलियन की सहायता पा आनंद दुंदुभी बजाना आरंभ कर दिया। तीन सहस्र फरासीसी और प्रजातंत्र के सपक्षी लोगों ने वेनिस की कांचन भूमि को भयंकर श्मशान बना दिया। अंत में असमर्थ शासक और राजतंत्री गण नेपोलियन की शरण आए। वेनिस में प्रजातंत्र-शासन प्रतिष्ठित किया गया, वेनिस के राजभवन पर फरासीसी प्रजातंत्र का सुविशाल महत्वपूर्ण झंडा लहराने लगा।

अब इटाली की प्रजा नेपोलियन को अपने देश का उद्धारक समझ कर पूजने लगी और वास्तव में यह वीर फरासीसी प्रधान

सेनाधिप अपने खड्ग के बल संपूर्ण इटाली का भाग्यविधाता हो गया। प्राणप्रिय जोसेफेनी को ले कर नेपोलियन ने मिलन में प्रवेश किया। राजदूत आ आ कर इसको सेवा में अपना गौरव मानने लगे, इसकी हाजरी बजाने में अपनी रक्षा समझने लगे। जो शक्ति भिन्न भिन्न राजशक्तियों में थी वह नेपोलियन के भुज-दंड में विराजने लगो। सारा युरोप नेपोलियन का लोहा मानने लगा, परंतु समुद्र की रानी ब्रिटेन ने इसका प्राधान्य स्वीकार न किया, उलटा अवसर पा कर वह फरासीसी अधिकारसीमा में जहाँ तहाँ लूट मार करने लगी। नेपोलियन ने मिलन के समीपस्थ 'मोंटो-बेलो' के एक सुंदर भवन में रहना आरंभ किया। इन दिनों श्रम से इसका शरीर बहुत क्षीण हो गया था तथा मानसिक चिंता भी इसे बहुत सताती थी। फारसी कवि सादी ने ठीक कहा है कि 'उसकी आँखों में नींद कैसे आए, जिसे सारे संसार की रक्षा करने की चिंता लग रही हो'। नेपोलियन को भी इंगलैंड की धींगा धींगी का बदला लेना आवश्यक जान पड़ता था, लेकिन इसके मन में यह बात उत्पन्न हुई कि इंगलैंड से हमारी इतनी हानि नहीं है जितना लाभ कि मिस्र अधिकार करने में हैं। इसमें दो बातें इसके ध्यान में आई। एक मिस्र का अधिकार करने पर भारत में पदार्पण सहज होगा, दूसरे मिस्र में ही अंग्रेजों का दर्प दलित करने का भी सुयोग मिल जायगा।

नेपोलियन मिस्र यात्रा का मन ही मन में प्रबंध कर रहा था कि इसे आस्ट्रिया नरेश के सैन्य-संग्रह का फिर संवाद मिला। अंत में एक

अत्यंत छोटे से गाँव में सभा हुई। उसमें आस्ट्रियन राजदूतों का दरबार हुआ। इस दरबार में नेपोलियन को यह कहा गया कि आप न मानेंगे तो 'आस्ट्रिया, रूस को अपनी सहायता के लिये निमंत्रित करेगा.'। दूसरे किसी के मुँह से निकला कि ' आस्ट्रिया शांति स्थापन करता है, इस में जो बाधा देगा उसको कठोर दंड मिलेगा '। नेपोलियन को ये थोथे दंभ की बातें अच्छी न लगीं; उस ने एक कांच निकल कर धरती पर पटक कर कहा कि —"महाशयो! जाओ, जो संधि की थी वह रद्द की गई, और अब मैं समर की घोषणा देता हूं। याद रक्खो जैसे यह कांच चूर चूर हुआ है वैसे ही आस्ट्रियन साम्राज्य को भी करके छोडूँगा"। सभा सन्नाटे में आ कर विसर्जित हुई। नेपोलियन ने एक दूत भेज कर प्रधान सेनापति 'आर्कड्यूक' को कहला भेजा कि '२४ घंटे में युद्ध फिर होगा, सावधान हो जाओ'। फिर क्या था, आस्ट्रिया के हाथ पैर फूल गए और फरासीसी सेनापति के इच्छानुसार संधि हो गई। आस्ट्रिया-नरेश ने वेनिस की भाँति इसे एक प्रांत पुरस्कार में देने की अनुमति प्रकट की, किंतु नेपोलियन ने धन्यवादपूर्वक इनकार कर दिया और कहा—'फरासीसी जाति मेरा जो सम्मान करती है मैं उसीसे गौरवान्वित हूँ। मुझे आप के प्रदत्त आस्ट्रिया के एक प्रांत को आवश्यकता नहीं है। इस दानशीलता के निमित्त मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।'

केंपफनियों की संधि हो चुकने पर इसने उसे पेरिस स्वीकृति के निमित्त भेज दिया और आप स्विटजलैंड की ओर राष्टाड की

राजसमिति में सम्मिलित होने गया। इस समिति की ओर से इसे निमंत्रण मिला था। इसका उद्देश्य था फ्रांस तथा जर्म्मनी का संधि संबंध स्थापित करना। जर्मन राजपुत्र इस समिति का संचालक था। नेपोलियन का मत इनसे न मिला, इसलिये वह तुरंत राष्टार्ड छोड़ कर पेरिस को चला गया। पेरिस में इसका बड़ा सम्मान हुआ। यह अपनी वीरता, रणकौशल और दूरदर्शिता के लिये जितना सराहनीय था उतना ही उत्तम वक्ता भी था। इसकी वक्तृता सुनते ही श्रोतागण मुग्ध हो जाते थे। फ्रांस में इसका इतना आदर सत्कार हुआ कि जिसका ठिकाना नहीं। प्रजा के मुख से प्रकट ये शब्द निकल कर फ्रांस में फैल गए, कि हम नेपोलियन को अपना राजा बनाएंगे। डेढ़ वर्ष बाहर रह कर नेपोलियन पेरिस आया था, इसी बीच में प्रजा के भाव इसके प्रति कुछ हो गए। शासक-मंडल कई बार इसके काम वा मत को उचित न समझता, पर तो भी उसे चुपचाप मान लेना पड़ता।

फरासीसी प्रजा चाहती थी कि एक बार नेपोलियन को भेज कर इंगलैंड का दर्पभंजन किया जाय। नेपोलियन भी इंगलैंड से हार्दिक घृणा रखता था। इंगलैंड के समाचार पत्र बड़ी नीचता कर रहे थे। उन्होंने सर्वसाधारण का मन उससे हटाने के लिये उस पर मिथ्या, नितांत मिथ्या, दोषारोप करना अपना प्रधान कर्तव्य बना लिया था। कई नए संवादपत्र इसी नीच बासना को ले कर प्रादुर्भूत हुए थे। लंपट, मद्यपी, भोगलोलुप, लुटेरा, क्या क्या मिथ्या कलंक उस पर इन संवादपत्रों ने न लगाए थे। उन्होंने इसे लुटेरा

डाकू बतलाना, इसके घर को दुराचार का अड्डा जतलाना तो साधारण बात बना रक्खी थी। नेपोलियन जानता था कि झूठों को एक दिन स्वयं लज्जित होना पड़ता है, इसलिये वह इनका प्रतिवाद करना भी घृणित समझता था। एक बार रणक्षेत्र में नेपोलियन के मुँह से निकला था—'अहा कैसा सुंदर दृश्य है।' इस बात के आधार पर अंग्रेजी समाचार-पत्रों ने उसे नरपिशाच, नररक्तलोलुप, आदि क्या क्या न लिख मारा। नेपोलियन कहता था, कि उन्होंने सोलह आना मिथ्या तथा निर्लज्ज दोषारोपण के साथ एक ही बात कुछ सच्ची कही थी, सो भी विकृत सत्य था प्रकृत सत्य नहीं। बात यह थी कि—"मैं एक भयानक युद्धक्षेत्र में सेनापति रेप को प्रबल मृत्युधारा में अचंचल भाव से बैठा देख रहा था, तोपों के धुएँ और रुधिर से उसका मुखमंडल आच्छन्न देख कर मैं आवेग में आकर कह उठा—'अहा कैसा सुंदर दृश्य है' इसी पर मिथ्यावादियों ने न जाने क्या क्या कह मारा।

एक दिन नेपोलियन ने शासक-मंडल से मिस्र यात्रा का विचार प्रकट किया। वे लोग इसे हटाना ही चाहते थे, क्योंकि प्रजा का भाव उसके प्रति असाधारण प्रेमसंपन्न हो रहा था, यहाँ तक कि आवेग में आ कर प्रजा ने उसे अपना सम्राट् बनाने का विचार भी प्रगट कर दिया था। शासक-मंडल ने तत्काल उसे सेना ले कर मिस्र यात्रा की आज्ञा दे दी।



छठाँ अध्याय

मिस्र और केरो विजय

इटाली और आस्ट्रिया को जीतने के पश्चात्, समस्त युरोप नेपोलियन के नाम से थर्राने लगा। नेपोलियन के मन में दिग्विजय की प्रवल बासना उत्पन्न हुई। हम कह चुके हैं कि पेरिसस्थ फरासीसी शासक-मंडल, अब नेपोलियन के पराक्रम, वीरता, तेज, प्रताप और दृढ़ता से और विशेष कर उसकी जनपद-प्रियता से, आशंकित हो गया था, इसलिये उसने इसका जल्दी विदेशगमन अपने सौभाग्य का कारण समझ, उसे दिग्विजय की अनुमति दे दी। नेपोलियन ने अपनी महती इच्छा के रूप के अनुरूप ही अपने अभिनिर्माण पर चलने की तय्यारी भी की। उसने तूलन, जेनोवा, अलचेंद्रिया, सिक्टी, वेक्सिया में बहुत सेना एकत्र की; अस्त्र शस्त्र, अन्न वस्त्र, लादने के लिये बहुत सी नावें, वणिकों के यहाँ से मँगाई गईं, युरोप के उत्तमोत्तम कारीगरों और रोम के विद्यालय से विविध पूर्वीय देशभाषाओं के ज्ञाता पंडितों को एकत्र किया गया तथा बहुत से इंजीनियर, वैज्ञानिक, नाना प्रकार के वैज्ञानिक यंत्र, प्रसिद्ध प्रसिद्ध शूर सामंत साथ चलने के लिये तैय्यार किए गए। इतने प्रत्यत्त प्रबंध होने पर भी किसी को यह नहीं मालूम होने पाया कि नेपोलियन के मन में क्या है, किस अभिसंधि से वह तय्यारियाँ कर रहा है।

पाँच महीने पेरिस में रह कर नेपोलियन ने सारा सामान ठीक किया। ता० ९ मई सन १७९८ ई० (वि० संवत १८५५) को सारा प्रबंध पूरा हो चुकने पर नेपोलियन तूलन नगर में आया और अपनी प्राणवल्लभा जोसेफेनी के साथ मिला। छत्तीस जंगी जहाज, बावत छोटे छोटे स्टीमर, चार सौ भारवाहिनी नावें और चौंवालोस सहस्र सैन्य, सौ से अधिक वैज्ञानिक, कारीगर तथा द्विभाषिये विद्वान और बहुत सा अस्त्र शस्त्र गोला बारूद एकत्र करके दिग्विजय के अभिनिर्माण का सूत्रपात हुआ, किंतु अभी तक किसी को नेपोलियन के हार्दिक भाव का ठीक पता न चला। ता० २९ मई को प्रातःकाल एक सौ बोस वृहन्नलिकाओंवाले ओरियन नामक जहाज पर सवार हो कर नौ कोस तक अपना सेना को विस्तारित करते हुए नेपोलियन ने अपनी प्राणप्यारी पत्नी से बिदा माँगी ! जोसेफेनी मिस्र तक साथ जाने के लिये हठ करने लगी, किंतु नेपोलियय ने विपदों के भय से इसकी प्रार्थना स्वीकृत करने का साहस न किया और जलभरे नेत्रों से दंपति एक दूसरे से पृथक् हुए। जब तक जहाज दीखते रहे जोसेफेनी खड़ी देखती रही, अंत में सारा काफिला दृष्टिके बाहर हो गया, तब उदास मन वह घर को लौटी।

नेपोलियन ससैन्य जेनोवा आदि बंदरों पर ठहरता और वहाँ से अपनी पहले से तय्यार खड़ी हुई सेना को साथ लेता माल्टा टापू की ओर चल पड़ा। अंग्रेज लोगों की ओर से नेपोलियन को बराबर इस बात का भय लगा चला आता था कि वे वश होते निस्संदेह मेरे मार्ग में कंटक होंगे। इधर अंग्रेजों को भी नेपोलियन

की तय्यारी देख कर चिंता हो उठी थी और इस बात के जानने के लिये वे व्यग्र थे कि उसका इससे क्या अभिप्राय है। यद्यपि फरासीसी सेना इंगलैंड पर आक्रमण करने नहीं जाती थी, तो भी इन्हें इसकी गति विधि की खोज करने की चिंता ने पूरा पूरा व्याकुल कर रक्खा था। अंग्रेजी सेनापति नेलसन इसके पीछे दौड़ा कि देखें नेपोलियन का मुँह किधर को उठता है, परंतु कुछ पता उस समय उसे न लग सका।

१६ जून को तूलन से पाँच सौ कोस के अंतर पर फरासीसी सेना माल्टा पहुँची। नेपोलियन से लड़ने का साहस न करके पहले ही माल्टा के हर्ताकर्त्ताओं ने चुपचाप उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। इसी से नेपोलियन ने अपने लोगों से कह दिया था कि जब मैं मानतोया में था, तभी माल्टा को जीत चुका था। माल्टावाले इसके ऐसे भक्त हो गए थे कि अनेक लोग उसकी सहायता के लिये साथ हो लिए। तीन सहस्र सेना मल्टा की रक्षा के लिये छोड़ कर नेपोलियन ने एक सप्ताह के पश्चात् मिस्र की ओर यात्रा की। जब जहाज अफ्रिका के निकट पहुँचे तब सब को ज्ञात हुआ कि हमारे सेनाधिप की क्या अभिसंधि थी। इस यात्रा में एक दिन अंग्रेजी जंगी जहाज फरासीसियों के पास आ पहुँचा था लेकिन दैवयोग से मुठभेड़ की नौबत नहीं आई।

(वि० सं १८५५) ता० २ जुलाई को प्रातःकाल फरासीसी सेना ने अपने देश से एक हजार कोस के अंतर पर मिस्र की रेतीली भूमि पर पैर रखा और पहली बार वहाँ की प्रसिद्ध मीनारों, पोंपी

के विजयचिन्हों और क्लेओपेट्रा के कीर्तिस्तंभों को समुद्र के किनारे रेतीली धरती पर सहस्रों वर्ष से सगर्व खड़े कालचक्र का खेल देखते, आकाश से बातें करते देखा। अलचेंद्रिया से डेढ़ कोस के अंतर पर सैन्य जहाजों से उतरी। अंग्रेजी सेनापति नेलसन दो दिन पहले ही इनकी खोज में यहाँ आ गया था, परंतु इन्हें न देख कर लौट गया था। नेपोलियन ने जहाज से उतरते ही प्रथम तीन सहस्र सेना रण के लिये कटिबद्धखड़ी कर ली, कि कदाचित् मुसलान लड़ने को समुद्यत हों, तो उनका सामना करने में विलंब न हो। तदनंतर अपनी सेना को प्रोत्साहित करके वह कहने लगा—"देखो वीरवरो! आज तुम जिस महत्कार्य की सिद्धि को आए हो, उसी पर भूमंडल की सभ्यता और व्यपार का संप्रसार आधार रखता है। जिन लोगों से आज तुम्हारा संपर्क होगा वे मुसलमान हैं। इनके धर्म्म, रीति, नीति, मानमर्य्यादा की प्रतिष्ठा करना, इनकी स्त्रियों के मान की रक्षा करना, लूट खसोट न करना"। इस प्रकार की शिक्षा से नेपोलियन ने अपने वाग्मित्व द्वारा सब का मन उत्साह, वीरता, सहनशीलता और वीरोचित कर्तव्यपालन के भावों से भर दिया।

सूर्य्योदय के पहले पौ फटते ही तीन सहस्र फरासीसी सेना ने अलचेंद्रिया की ओर प्रस्थान किया। दुर्ग के पास पहुँचते ही गढ़ के ऊपर से मुसलमानों की गोलियों की झड़ी लग गई, मानों शरद् ऋतु के बादल ओले बरसाते हों। लेकिन बीर फरासीसी विजयोन्मत हो, गोलियों को लड़कों का खेल समझते हुए आगे पड़े और गढ़ पर चढ़ने लगे। अंत में दोनों सेनाओं का सामना हो गया,

बाहु युद्ध होने लगा, खटाखट तेगें, छपाछप तलवार, तथा गपा गप संगीनें चलने लगीं। मामलूम लोग ऐसा जी खोल कर लड़े कि जैसा चाहिए। परंतु विजय कीर्ति फरासीसियों के हाथ आई, शत्रु दल सहित सम्राट भागा। प्रजा का यथेच्छाचारी राजा के अत्याचार से पीछा छूटा। फरसीसी विजय वैजयंती दुर्गों पर विराज प्रासादों पर फहराने लगी। नेपोलियन ने जो व्यवहार पराजित मामलूक जाति से किया उससे सारी प्रजा मुग्ध हो कर, उसे अपना उद्धार करनेवाला ईश्वर का भेजा हुआ दूत समझने लगी।

अधिकार पाते ही फरासीसी वीरश्रेष्ठ ने देश के सुधार के निमित्त पाठशालाएँ, धर्म्मशालाएँ, सड़क आदि बनवाना आरंभ कर दिया। दुर्ग और बंदर का संस्कार होने लगा, शासन नीति और धाराएँ बदली गईं और अलक्षेंद्रिया के शासन की लगाम उसके प्रतिष्ठित पुरुषों के हाथ में सौंपी गई। इस युद्ध में केवल तीस फरासीसियों के प्राण विसर्ज्जन हुए थे, नेपोलियन ने इनका स्मारक स्तंभ पोंपी के नीचे स्थापित करके अपने वीरों का उत्साह और भी बढ़ा दिया। नेपोलियन के सहयोगी सेनापति क्लेवार आहत अवस्था में चारपाई पर पड़े थे, इन्हीं को अलक्षेंद्रिया की रक्षा का भार सौंपा गया और तीन सौ सेना इनकी सहायता के लिये दी गई।

इसके अनंतर नेपोलियन ने ससैन्य केरो की ओर यात्रा की। फरासीसी जहाज और स्टीमर यथेष्ट निरापद और सब भाँति सुदृढ़ न थे और समुद्र की रानी इंगलैंड के आक्रमण की पद पद

पर आशंका थी, इसलिये केरो की यात्रा करने के पूर्व ही नेपोलियन ने एडमिरल (जल-सेनाधिप) ब्रोए को आज्ञा दी थी कि तुरंत जहाजों को आबूकर की खाड़ी में हो कर अलचेंद्रिया के बंदर पर ला रक्खो और जिन जहाजों के बंदर में प्रविष्ट होने की संभावना नहीं है, उनको काफूं टापू की ओर रवाना कर दो, किंतु ब्रोए ने नेपोलियन की आज्ञा पालन करने में अवहेलना की जिसका कुपरि--णाम जो कुछ भोगना पड़ा, उसका हाल पाठकों को आगे मिलेगा।

अलचेंद्रिया छोड़ कर जाने के पूर्व ही नेपोलियन ने कई जहाज भी खाने के पदार्थों, अस्त्र शस्त्र, गोला गोली, बारूद, सब सामान से परिपूर्ण-करके, भूमध्य सागर के किनारे नील नद की पश्चिमी शाखा की ओर भेज दिए थे। इसने लेखा कर के निश्चय कर लिया था कि जब तक मैं ससैन्य पैदल चल कर इस रेती के समुद्र के पास पहुँचूँगा तब तक जहाज भी वहाँ पहुँच जाँयगे।

जैसे फरासीसी सेना इस दुस्तर मरुस्थली को पार करके नील नद के पास पहुँची कि उसके प्राणों में प्राण का संचार हुआ, वह सारे दुःखों को भूल आनंद मनाने लगी। उसने वस्त्र खोल कर फेंक दिए और गर्दन बराबर जल के भीतर घुस कर वह अपनी थकावट मिटाने लगी। कई दिन के पीछे मधुर जल का स्वाद और स्नान का पूर्ण आनंद सैन्य-समूह को मिला था कि सामने से घोड़ों की टापों से उड़ती हुई धूलि का गगन स्पर्शी स्तंभ देख पड़ा। देखते देखते घोड़ों की टापों को ध्वनि सुनाई देने लगी। ज्ञात हो गया कि फरासीसी सेना के निगलने के लिये शत्रु दल मुहँ फैलाए

सरपट दौड़ा चला आ रहा है। यहाँ सुशिक्षित सेना के तय्यार होने में क्या विलंब था? सेनापति की सीटी पाते ही इधर सेना बद्धपरिकर हुई कि उधर से एक हजार तेजपूर्ण अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित शत्रु दल आ पहुँचा। विपक्ष दल के योद्धाओं के माथे पर बँधी हुई उष्णीष के लटकते हुए पल्ले हवा में लहराते थे, सूर्य्य के तेजसे तलवारें चमाचम कर रही थीं, चेहरों पर दृढ़प्रतिज्ञता झलक रही थी। इनका आना था कि फरासीसी दल में भी जुझाऊ बाजे बजने लगे। दोनो दोलों के अस्त्रों के धूम से नभमंडल में घोर अंधकार छा गया, प्राण की ममता छोड़ कर विजय कामना से वीर लोग लड़ने लगे। किंतु थोड़ी ही देर में मुसलमानों को बड़ी हानि सह कर भागना पड़ा। इस तरह फरासीसी सेना ने अफ्रीका निवासी मामलूकों और अरबों का स्वागत करके उस समय वहीं विश्रम किया; वह खजूर, ताल और खुरमा से आनंदपूर्वक पेट भर कर (नाइल) नील का मधुर जलपान करने लगी। इतने में नेपोलियन ने अपने जहाजों के आने का समय जान नद के ऊपर दृष्टि डाली तो जहाजों के मस्तूलों की पताकाएँ देख पड़ीं। इससे फरासीसी सेना को और भी आनंद हुआ। इन जहाजों का ठीक समय पर आना आकस्मिक घटना न थी, किंतु वीरवर पंडित नेपोलियन के पांडित्य का प्रतिफल था। नेपोलियन भूगोल, इतिहास और गणित में ऐसा असाधारण विद्वान था कि कभी न तो इसे विदेश जा कर विदेशी की तरह भटकना पड़ा, न रीति व्यवहार की अनभिज्ञता से असुविधा हुई और न यह कोई काम समय पर करने से चूका।

उसने मार्ग का हिसाब करके जिस तरह जहाज भेजे थे, उससे उनका इसके केरो पहुँचने पर आना गणित तथा भूगोलसिद्ध बात थी।

इस स्थान से फरासीसी सेना ज्यों ज्यों आगे बढ़ती थी, त्यों त्यों मामलूक दल अधिक उपद्रव करते थे। इनका आक्रमण क्रमविहीन था। जभी जिधर अवसर पाया मार काट कर के वे चलते बनते, इसलिये नेपोलियन ने साथ की सेना को पाँच दलों में विभक्त कर लिया। प्रत्येक दल को भी छ श्रेणियों में विभाजित करके आगे बढ़ाया और पिछला भाग तोपों से सुरक्षित रखने का बंदोबस्त करके बीच में वैज्ञानिक, पंडित, कारीगरों तथा शिल्पज्ञों को सेनापतियों की रक्षा में रक्खा। इस प्रबंध के पश्चात् कई बार मामलूकों ने मार्ग अवरुद्ध करना और इधर उधर से आक्रमण करना चाहा, पर हर बार वे मुँह की खाते रहे।

केरो के पास पहुँचते ही मामलूकों का अधिनायक मुराद बे दस सहस्र सवार, चौदह सहस्र पैदल ले कर फरासीसियों से सलामी के लिये अग्रसर हुआ। केरो नगर नील नद के पूर्व तट पर है और नेपोलियन पश्चिमी किनारे पर बढ़ रहा था। २१ वीं जुलाई को अरुणोदय के पहले ही फरासीसी सेना ने नगर की ओर मुँह फेरा और सूर्य्योदय होते ही अभ्रचर मीनारों का समूह देख पड़ा। योद्धागण को मीनारों की शोभा से विस्मित देख नेपोलियन बोला—

"हे महावीरो! ये मीनारें सहस्रों वर्षों से तुम्हारे ही महागौरवान्वित अभिमान की प्रतीक्षा कर रही हैं, तुम्हारे शौर्य्य को देखने

की कामना से खड़ी हैं।" इस उक्ति को सुन कर वीर गण उत्साह से भर गए। सामने से मुसलमान योद्धाओं को रण रंग मचाने को खड़े देख उनकी भुजाएँ फड़कने लगीं। चालीस सहस्र फरासीसी वीर करखे गाते और मारु बजाते हुए प्रातःकालीन शीतल समीर से आनंद उठाते मीनारों के आधार (Base) की ओर लोहा लेने के लिये वेग से चल निकले। उधर मुसलमान सेना चींटी दल की भाँति रण-रंग-माती खड़ी थी। दोनों दल के लोगों से समरक्षेत्र परिपूर्ण हो कर हथियारों की झलक से झलमलाने लगा। चारों ओर पताका ही पताका दीखने लगीं। नेपोलियन ने दूर्वीक्षणी से देखा तो दंग रह गया, शत्रुदल में केवल एक त्रुटि उसने यह देखी कि उसकी तोपें धरती पर थीं जिससे उनका मुड़ना कठिन था। नेपोलियन चाहता था कि अपनी सेना को दूसरी दिशा से फेर कर रणसम्मुखीन करे किंतु मामलूकों ने अवसर न दिया तुरंत सेनापति ने आज्ञा दी कि—"इन कुत्तों को जल्दी कद्दू की तरह टुकड़े टुकड़े कर के फेंक दो!" और एकदम मामलूक दल फरासीसियों पर टूट पड़ा। फिर क्या था रणचंडी नाचने लगी। इस समय रणक्षेत्र का दृश्य बड़ा ही भयानक था। चारों ओर से मुसलमान घुड़सवारों ने युगपत् आक्रमण किया था और वे समझते थे कि फरासीसी न ठहरेंगे, किंतु फरासिसीयों के पैर रणभूमि में ऐसे जमे जैसे सती का मन पतिप्रेम में अटल बना रहता है। अब सुशिक्षित फरासीसी गोलंदाजों की बारी आई और मुसलमानी सेना का एकदम नाश होने लगा। थोड़ी ही देर में मुसलमानों के

पैर उखड़े और वे भाग कर नील नदी में कूद पड़े, किंतु फरासीसी सेना ने तैरते हुए मुसलमानों के सिरों को अपनी बंदूकों का लक्ष्य बनाना आरंभ कर दिया। इस युद्ध में केरो की श्वेत रेतमयी भूमि और नील का नीला जल दोनों नररक्त से रक्त वर्ण हो गए। मध्याह्न होते होते रणक्षेत्र श्मशान में परिणत हो गया।

यद्यपि इस युद्ध में दश सहस्र मुसलमान मारे गए, परंतु प्रायः सब ही वीरों की भांति लड़ कर मरे। इनकी वीरता देख कर नेपोलयन कहने लगा कि "यदि मुझे ये मामलूक घुड़सवार मेरी पैदल सेना के साथ काम करने को मिल जाते तो मैं सारे संसार को जीत लेता।" इस युद्ध के जीतने से नेपोलियन मिस्र देश का अकेला स्वामी हो गया और इसी रात को इसने राजसौध पर अधिकार करके उसी में विश्राम किया। इस राजभवन की बनावट, सजावट देख कर फरासीसी लोग दंग रह गए। देश की प्रजा की गाढ़ी कमाई का बृहदंश एक व्यक्ति की अवैध विलासिता में व्यय होने का अप्राकृतिक दृश्य कुछ दिन पहले के फ्रांस से कम न था।

नेपोलियन यहाँ की प्रजा के साथ भी अलक्षेंद्रिया की भाँति बर्ताव करने लगा कि जिससे प्रजा की आँखों का तारा बन गया। मिस्रवासी प्रजा इसे 'सुलतान कबीर' कह कर अपने को आनंदित करने लगी। तीन ही सप्ताह में जो प्रतिष्ठा पूर्व सम्राट को दंडबल से प्राप्त थी, वह नेपोलियन को प्रेम द्वारा मिल गई, उसे प्रजा भय से माथा झुकाती थी, इसे प्रेम से दंडवत करने लगी। राजप्रासाद में जो पराजित हो कर भागे हुए सम्राट् के पुत्र कलत्र थे,

इनके साथ भी फरासीसी बर्ताव बहुत ही सौहार्द और प्रेम का होने लगा, सुयोग्य फरासीसी सेनापति इयोजिन महारानी की रक्षा पर नियत हुए। सम्राज्ञी ने इनके प्रेम के बर्ताव से प्रसन्न हो एक बहुमूल्य हीरे की अँगूठी इन्हें उपहार दी। नेपोलियन को विषयवासनाओं से सर्वथा निर्वेद देख कर किसी ने अचंभा प्रकट किया था। नेपोलियन ने उसे उत्तर दिया कि—"मुझे विषय वासनाओं से कुछ भी प्रेम नहीं है, मैं तो एक राजनैतिक मनुष्य हूँ।"

फरासीसी शासन-प्रणाली के अनुसार यहाँ भी श्रेष्ठ पुरुषों की एक सभा की स्थापना की गई, जिसके द्वारा उत्कृष्ट रूप से राज्य-शासन हो और प्रजा के प्राकृतिक स्वत्व पददलित न हो सकें। नाना भाँति का शिल्प द्रव्य विविध धातुओं से बनने लगा। प्रेस खोल दिया गया, अरबी, फरासीसी भाषाओं के द्वारा अनेक विज्ञान, दर्शन, कला और कौशल इत्यादि के प्रचार के लिये सुंदर ग्रंथ छपने लगे, स्थान स्थान में पाठशालाएँ खोली गईं, शासन-प्रणाली का यथावत् सुधार कर के प्रजा के प्राण, संपत्ति और मान मर्य्यादा को सब भाँति सुरक्षित और निरापद किया गया। देश के प्रतिष्ठित विद्वान् सदाचारी लोगों को शासन दंड सौंपा गया। फरासीसियों और मुसलमानों में इतना मेल जोल बढ़ा कि वे एक दूसरे के घर जाते, दुःख सुख, खान पान, और आमोद प्रमोद में स्वच्छंदता के साथ सम्मिलित होते। नेपोलियन मुसलमानों के साथ एक ही फरशी में तमाकू पीता और उनसे स्वजन आत्मीय की भाँति बर्ताव करता था। एक साधारण कृषक के यहां डाका पड़ा। ज्यों

ही उसे सूचना मिली उसने तुरंत ३०० घुड़सवार और २०० ऊंट सवार डाकुओं को पकड़ कर लाने के लिये रवाना किए। किसी शेख ने कहा—"कि आपका निर्धन ग्रामीण किसान से ऐसा क्या संबंध है ?" नेपोलियन ने कहा—"वह हमारा स्वजन नहीं है, वरन् स्वजन से भी कहीं बढ़ कर है, उसके प्राण और संपत्ति की रक्षा का भार परमात्मा ने मेरे हाथ में सौंपा है।" शेख लोग यह उत्तर सुन कर स्तंभित रह गए और कहने लगे कि—"आपकी महापुरुषता को धन्य है, यह बात आपने वलियों की सी कही है।" नेपोलियन इतना प्रजाप्रिय हो गया कि इसके प्राण हरने के लिये पू शासक और अधिकारियों ने जो गुप्त घातक नियत किए थे, उनमें से किसी की भी कुछ न चली। प्रजा स्वयं उसके प्राण की रक्षा में तत्पर रहती।

फरासीसी जहाजों और स्टीमरों की बाबत हम कह चुके हैं कि फरासीसी एडमिरल ब्रोए ने प्रधान सेनापति की आज्ञा की अवहेलना की थी। अब नेपोलियन को एक पत्र एडमिरल ब्रोए का मिला, इससे उसे ज्ञात हुआ कि फरासीसी नौ सैन्य समूह अबूकर खाड़ी में ही है, और अँग्रेजों के आक्रमण की प्रबल आशंका है। इस समाचार से विस्मित और विरक्त हो कर इसने ब्रोए को एक पत्र लिखा; लेकिन पत्रवाहक मार्ग में किसी मामलूक के हाथ से मारा गया। उधर ज्यों हीं अँग्रेजी एडमिरल नेलसन को पता लगा कि फरासीसी लोग मिस्र में उतरे हैं, वह तुरंत उनके पीछे दौड़ा। १ अगस्त को (१८५५ विक्रमीय) सायंकाल में ६ बजे अँग्रेजी

रणपोतों का बेड़ा अबूकर खाड़ी में प्रविष्ट हुआ। इसने देखा कि फरासीसियों के १३ जहाज और चार अपेक्षाकृत छोटे आयतन (Capacity) वाले स्टीमर किनारे पर चंद्राकार अवस्थित हैं। फरासीसियों के और जहाज बहुत दूर पर लंगड़ डाले हुए थे। जलयुद्ध विशारद नेलसन ने आक्रमण करने का संकल्प किया। ब्रोए समझता था कि हम लोग इतने किनारे के पास हैं कि हमारे जहाजों और किनारे की धरती के बीच में अँग्रेज लोग न आ सकेंगे। यही विचार फरासीसी बेड़े के नाश का और भी प्रधान कारण हुआ।

यद्यपि अंग्रेजों की विजय प्रत्यक्ष थी तो भी फरासीसियों का आतंक इनके हृदयों में बहुत था। किसी साथी की इस बात के उत्तर में—'हम जो विजयी हों तो युरोप में हमारा नाम हो जाय" नेलसन ने कहा था—'जीतने को तो जीतेंगे पर इस बात में संदेह है कि हमारी विजय का समाचार ले जाने के लिये कोई बचेगा भी या नहीं।' युद्ध आरंभ हो गया और पंद्रह घंटे तक लगातार घोर जलयुद्ध होता रहा। दोनों दल खूब लड़े। रात को ११ बजे के लगभग फरासीसी ओरियन जहाज में आग लगी, बेप्रमाण गोले बारूद में आग लगने से आकाश में प्रलय काल की मेघमाला के समान धुआँ छा गया और गोलों के फूटने से कानों के परदे फटने लगे। कुछ काल तक काँपते हुए आशंकित हृदय उभय पक्ष के बेड़े निस्तब्ध खड़े अपनी अपनी कुशल मनाते रह गए, धरती और आकाश हिल गए, सब जहाज मदोन्मत्त की भाँति डगमगाने लगे, गोले फूट फूट कर चारों ओर गिरने लगे, देखते देखते जहाज़

राख हो कर जल निमग्न हो गया। तब फिर युद्ध आरंभ हुआ, ब्रोए चलते गोलों के बीच में खड़ा हो कर बीरों को आदेश देता हुआ कहने लगा—'यहाँ आज एक फरासीसी एडमिरल के बलि होने की आवश्यकता है।' इतने में एक गोला ऐसा आया कि ब्रोए की किरचें उड़ गईं। इस तरह नाईल के जलयुद्ध का अवसान हुआ। चार फरासीसी जहाज माल्टा की ओर भागे, शेष वहाँ ही खेत रहे। अंग्रेजों का बेड़ा भी इतना बेकाम हो गया था कि बिजयी होने पर भी वह शत्रु का पीछा न कर सका और लौट पड़ा।

इस विजय का समाचार जब युरोप में पहुँचा तो स्वतंत्र शासकमंडल और राजकीय पक्ष दोनों दलवालों ने बड़ा आनंद मचाया। इंगलैंड के हर्ष की सीमा न रही। नेलसन को 'बायरन आफ दी नाइल' की उपाधि इंगलैंडेश्वर ने प्रदान की। अन्य राजाओं ने भी इसे भेटें और पारितोषिक भेजे। इधर नेपोलियन के हृदय पर इस पराजय के समाचार से कठोर वज्राघात हुआ। यद्यपि नेपोलियन ने धैर्य्य को हाथ से नहीं जाने दिया, परंतु उसके दुःख की सीमा न रही, उसने अपने मित्र क्लेवार को अपने पत्र में लिखा कि—'न हो तो, हम लोग इसी देश में प्राणत्याग करें और प्राचीन बहादुरों की भाँति निकल खड़े हों।' उधर अंग्रेज और दूसरे युरोपीय राजाओं ने फिर बार्बोन वंशजों को फ्रांस के राज-सिंहासनासीन करने की चेष्टा आरंभ कर दी। नेपोलियन को स्वदेश लौट कर जाने की आशा न रही, इसलिये साहसपूर्वक एकाग्रचित्त हो कर उसने मिस्र की उन्नति साधन का प्रयत्न आरंभ कर दिया।



सातवाँ अध्याय।

नेपोलियन का मिस्र से सीरिया जाना, फिर मिस्र देश होते हुए फ्रांस को लौटना।

जर्जर मुराद बे को यद्यपि फरासीसी सेनापति देशाई ने दो सहस्र सैन्य के साथ उत्तर मिस्र में भी न रहने दे कर उत्तर मिस्र के अधिवासियों को असहनीय तुर्की अत्याचारों से बचाया; परंतु वह फिर दल एकत्र कर के फरासीसियों के विरुद्ध खड़ा होने का प्रयत्न करने लगा। एक ओर अंग्रेज लोग अबूकर के युद्ध में विजयी होने के पश्चात् बहुत सिर चढ़ गए, यहां तक कि लेवेंस की खाड़ी में उन्होंने फरासीसी अधिकार नष्ट कर के अपना आधिपत्य जमा लिया। दूसरी ओर तुर्क लोग भी फ्रांस के विरुद्ध उठे, क्योंकि नेपोलियन ने इनका एक प्रदेश दबा लिया था। साथ ही अंग्रेजों ने भी तुर्कों को अच्छी तरह उभाड़ा। इंगलैंड की अग्निमयी वक्तृता ने रूस को भी फ्रांस के साथ युद्ध करने को प्रोत्साहित कर दिया। सारांश यह कि फरासीसी प्रजातंत्र के विध्वंस करने के लिये रूस और बालेंदु दोनों ने सम्मिलित दलबद्ध झंडा खड़ा किया। रूसी जहाज श्याम सागर में हो कर स्वर्ण शृंग में आ खड़े हुए। कुस्तुंतुनिया, ट्रौल, पेरो और सकूतरी में तुर्की दल ने पदारोपण किया, रूस भी तुर्कों से मिल गया। धर्म और नीति का भेद छोड़ कर नेपोलियन का दर्प दलने के लिये कृस्तान और मुसलमान दूध चीनी की तरह एक हो गए। फरासीसी दल के चारों

ओर शत्रु ही शत्रु दीखने लगे। यही नहीं, तुर्कों की २० सहस्र सैन्य वोडस में एकत्र हुई थी, और सब सैन्य मिल कर तोपों के बल फरासीसी अधिकारों पर आक्रमण करने को मिस्र की सीमा के किनारे किनारे घूमने लगीं। दूसरा दल सीरिया में फरासीसियों पर आक्रमण करने का सुयोग ढूँढ़ने लगा। अंग्रेजों ने बार्बोन वंश का पृष्ठपोषक बन युरोप के राज्यों से बहुत सी सहायता संग्रह कर सीरिया के पास डेरा डाला, और बहुत सी सेना भारत से मँगा कर उन्होंने लाल समुद्र में फरासीसियों के पीछे की ओर भेज दीं। मुराद बे भी तुर्कों के साथ हो लिया। जल और स्थल सर्वत्र फरासीसियों के शत्रु ही शत्रु फैल गए।

२१ अकतूबर को 'केरो' नगर में राजकीय पत्तवालों ने विद्रोह किया, कुछ सेना भेजी गई पर विद्रोह न दबा, तब नेपोलियन स्वयम् जा कर दंड देने लगा। विद्रोही भाग कर मसजिदों में जा छिपे, वे समझे थे कि नेपोलियन धर्म्म भवनों को न छेड़ेगा; परंतु उनके अक्षम्य अपराधों के करण फरासीसी सेना ने कितने ही धर्म्ममंदिर विध्वंस किए और विद्रोह की आग एक दम बुझा दी।

१ जनवरी सन् १७९९ को प्रातःकाल ही नेपोलियन को समाचार मिला कि अंग्रेजों के जहाज की सहायता पा कर सीरिया की सेनाने सीरिया की मरुभूमि के पास आक्रमण करके 'एलआरिस' पर अधिकार कर लिया है। इसने विचार किया कि तुरंत जा कर आक्रमण करूँ और 'रोदिस' में उपस्थित सैन्य के साथ इन लोगों को मिलने न दूँ। नेपोलियन का विचार यह भी था कि मैं अपने झंडे तले

लेबानन के पहाड़ी प्रदेशों से द्रोस लोगों को और सीरिया के विविध संप्रदाय के ईसाइयों को इकट्ठा कर के एक लाख सेना के साथ भारत जाऊँगा और वहाँ से अंग्रेजों को मार भागऊँगा, क्योंकि जलयुद्ध में सर्वोत्कृष्ट बलधारी इंगलैंड स्थाल की ही लड़ाई में हाथ आवेगा, दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसी उधेड़ बुन में १० सहस्र सेना ले कर नेपोलियन एशिया और अफरीका के सीमांत मार्ग से जाने का इरादा कर के चल पड़ा। अंग्रेज इस यात्रा में बाधा डालने के विचार से अलक्षेंद्रिया पर आक्रमण करने को उद्यत हुए। नेपोलियन ने इस आक्रमण पर ध्यान न दिया और एक नया ऊँटों का रिसाला बनाया और एक एक ऊँट पर दो दो आदमी पीठ से पीठ लगा कर बैठाल वह चल दिया। ये ऊँट एक दिन में ४५ कोस बालू पर मंजिल कर के और बिना चारा पानी के कई दिन तक धावा करते चले जाते।

५ दिन पीछे फरासीसी सेना एलआरिस पहुँची। नगर में तुर्की सेना प्रजा को लूट लूट खा रही थी। इनके हाथ से छुटकारा पाने के लिये रात दिन प्रजा ईश्वर से प्रार्थना करती थी। जाते ही नेपोलियन ने सोती हुई तुर्की सेना को जगा कर युद्ध आरंभ किया और थोड़ी ही देर में विजय पाई। २००० शत्रु दल इसके हाथ बंदी हुआ, किंतु इसके पास रसद आदि का यथोचित प्रबंध न होने के कारण इसने उनसे बगदाद जाने की शपथ ले कर उन्हें बगदाद के मार्ग पर छुड़वा दिया। ये लोग फरासीसी सवारों के पीठ फेरते ही जाफ़ा की ओर हो लिए। जाफ़ा में तुर्की सेना पड़ी

थी। यहां का तुर्की सेनापति इसका हाल सुन कर नेपोलियन की मूर्खता की हँसी उड़ाने लगा।

यहां से पुनः जल आदि का कष्ट उठाते ७५० कोस की जंगली भूमि काट कर फरासीसी सेना 'गाजाँ पहुँची। इस जगह भी तुर्कों का एक दल पड़ा हुआ था, लेकिन फरासीसियों की तलवार के आगे वह न ठहर सका और तुरंत भाग निकला। विजयी फरासीसियों को यहां बहुत सा खाद्य पदार्थ और गोला बारूद हाथ लगा। इसी तरह शत्रुओं के चक्र के भीतर हो कर फरासीसी सेना आगे बढ़ने लगी। केरो छोड़ने के २३ दिन पीछे ३ मार्च को फरासीसी दल जाफा पहुँचा, जहाँ पर पहले दो हजार सवार प्रतिज्ञा भंग कर के बगदाद के बहाने तुर्की दल में जा मिले थे। यहां तुर्की सेना बहुत बड़ी संख्या में पड़ी थी। नगर का परिकोटा अच्छा सुदृढ़ था। इसलिये इस पर अधिकार करना गाजाँ आदि की तरह सहज न था। नेपोलियन ने संधि का समाचार दे कर वसीठी भेजा, लेकिन दुष्टहृदय तुर्की सेनापति ने उसे मार कर उसका शव दुर्ग के ऊपर लटका दिया। नगर का परिकोटा पहले ही नेपोलियन ने तोड़ डाला था, इस घटना से क्रुद्ध हो कर उसने गढ़ पर आक्रमण किया। थोडी ही देर में तुर्की दल पराजित हुआ और पुनः दो सहस्र शत्रु सैनिक फरासीसियों के हाथ बंदी हुए। इनकी बाबत तीन दिन लगातार विचार करने पर नेपोलियन ने उन्हें प्राणदंड देने की आज्ञा दी। सुतरां दोनों सहस्र बंदियों को समुद्र किनारे रेती पर खड़ा कर के प्राणदंड दिया गया।

जाफ़ा से ससैन्य फरासीसी महावीर एकार की ओर रवाना हुआ। एकार सीरिया का एक प्रधान सैन्यकेंद्र था, यहां के दुर्ग का सेनापति एकमेत नामक मुसलमान था। एकमेत बहुसंख्यक सेना, अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हो कर फरासीसियों से लड़ने के लिये तय्यार बैठा था। बर्बोन लोगों का एक जासूस कर्नल फिलिप्पो और नेपोलियन का एक फरासीसी इंजिनियर, दुर्ग रक्षा का बड़ा भारी प्रबंध कर रहे थे। एकमेत को नेपोलियन के आक्रमण का इतना निश्चय हो गया था कि उसने अंग्रेजी रणतारियों के परिचालक सर सिड़ने स्मिथ के पास समाचार भेज कर सहायता मांगी थी अतः सर सिड ने स्मिथ दो जहाज और कुछ छोटी रणतारियाँ ले कर दो दिन पहले से ही एकार बंदर पर आ उपस्थित हुआ। सारा दुर्ग चतुर गोलंदाजों, बीरों, इंजीनियरों और नायकों से अथच अस्त्र शस्त्र और सब प्रकार के भांडार से अच्छी तरह परिपूर्ण हो गया था। सेनापति एकमेत, आनंद के मारे अंग में फूला नहीं समाता था। बात भी ठीक थी, अलक्षेंद्रिया से नेपोलियन ने एक छोटे जलयान में दुर्गध्वंसकारी कुछ हथियार भेजे थे, सो भी सर सिडने स्मिथ के हाथ पड़ गए थे। नेपोलियन इस समय एक प्रकार से सब भाँति से बलहीन था, एक मात्र साहस उसका साथी था।

समस्त आगा पीछा देख कर फरासीसी सेनाधिप ने एक दूत भेजा कि ईश्वरीय प्रजा का रक्तपात न कर के यदि आप संधि स्थापन कर लें तो अच्छा हो। लेकिन एकमेत के ऊपर अहंकार का भूत सवार था, उसने तुर्की स्वभावानुसार, जैसे पहले पाठक-

गण जाफा का हाल पढ़ चुके हैं, इस दूत को भी प्राणदंड दिया और उसका मस्तक काट कर दुर्ग की चूड़ा पर लटका दिया। दूत अवध्य होते हैं। जो व्यवहार एकमेत ने किया था वह सर्वथा नीति-धर्म्म-विरुद्ध था, इसलिये नेपोलियन को बड़ा क्रोध आया। उसने संधि का विचार छोड़ कर रण रंग खेलने की तय्यारी की।। परंतु फरासीसी सेना में कठिन संक्रामक महामारी फैल पड़ी। इस कारण फरासीसी सैनिकों के आतंक की इयत्ता न रही। इस संघातक महामारी के भय से लोगों ने परस्पर सहायता करनी छोड़ दी। जो आयुर्वेदज्ञ साथ थे उन्होंने भी अपने कर्तव्यपालन में अवहेलना करना आरंभ कर दिया, किंतु नेपोलियन स्वयम् सब रोगियों की सेवा में तत्पर हो गया।

१०. दिन तक दुर्ग घेरे रहने पर ३० सहस्र तुर्की दल नेपोलियन के सामने आया। इस समय इसके पास केवल आठ हजार दल रह गया था। ३ सहस्र सेना सेनापति क्लेबर के साथ कर के और ३ सहस्र सेना अपने अधीन ले कर नेपोलियन युद्ध के लिये अग्रसर हुआ। १२ सहस्र सवार और कई सहस्र पैदल सेना के सामने केवल तीन सहस्र फरासीसी छाती अड़ा कर खड़े हुए। ६ घंटे तक युद्ध हुआ पर फरासीसी सेना सती के सतीत्व की भांति अटल खड़ी रही। उसकी व्यूह रचना को तुर्क दल न तोड़ सका। इसके अनंतर तीन सहस्र सेना ले कर नेपोलियन आ मिला। इसके आते ही सेना में नया प्राण संचरित हो उठा। चारों ओर 'नेपोलियन' 'नेपोलियन' की ध्वनि गगनमंडल को भेदने लगी।

तीसरे पहर के समय शत्रु दल के पैर उखड़ गए। चारों ओर उसे फरासीसी ही फरासीसी दीखने लगे। इस तरह अंग्रेजों, रूसियों और तुर्की के सम्मिलित रणकौशल को नेपोलियन ने तीन बार परातजित किया और दुर्ग पर घेरा डाला।

२० मई को नगर और दुर्ग का घेरा एक दम उठा कर, नेपोलियन ने केरो लौटने का विचार किया, और शत्रु दल की आँखों में धूल डाल कर वह चल दिया। २५ दिन की कठोर यात्रा कर वह केरो पहूँचा। तीन महीन पीछे नेपोलियन फिर केरो नगर में प्रविष्ट हुआ और सोचता था कि वोडस में मेरे दमन के लिये तुर्की सैन्या एकत्र हो रही है। रूसो और अँग्रेजी सैन्य की सहायता से वह किसी न किसी दिन मिस्र पर आक्रमण करेगी। जव तक मैं इस विरोधी दल को विध्वंस न कर डालूंगा, मेरा लौट कर फ्रांस जाना दुस्तर है।

जैसा नेपोलियन ने सोचा था वैसा ही हुआ, एक दिन नेपोलियन तीसरे पहर ग्राम के बाहर वायुसेवन करने निकला और सूर्य अस्त होने के कुछ पूर्व मीनार के नीचे खड़ा हो कर आकाश की शौभा देखने लगा, कि सामने एक धावन (दूत) पर दृष्टि पड़ी। वह भागता हुआ नेपोलियन की ही ओर घोड़ा दौड़ाते बढ़ता चला आता था। देखते देखते प्रधान सेनापति के समीप आ कर वह कहने लगा कि—"आबूकर की खाड़ी जंगी जहाजों से भर गई है। अठारह सहस्र अस्त्रधारी निर्भीक तुर्की योद्धा सागर तट पर एकत्र हो गए हैं। चतुर अंग्रेज्ञ गोलंदाजों के

साथ बहुत सी तोपें भी हैं। रूस इंगलैंड और तुर्कों की समवेत रणतरीसमूह विपक्ष में उपस्थित है। मुराद बे भी इन में मिलने के लिये बहुत से मामलूक सवार ले कर मरुभूमि को लांघता हुआ आ रहा है। तुर्कों ने आबूकर नगर और वहां का गढ़ हस्तगत कर के स्थानीय संरक्षक सेना को निहत कर डाला है। मिस्र के आकाश में प्रलय का मेघ छाया हुआ दीखता है।" संवाद का पाना था कि नेपोलियन तुरंत डेरे को लौट पड़ा और तीन बजे रात तक सेना तय्यार करता रहा और चार बजे सेना ले कर आगे बढ़ा। फरासीसी सेना मिस्र और सीरिया के विभिन्न स्थानों में अलग अलग फैली पड़ी थी, इस लिये यह आठ हजार से अधिक सेना साथ न ले सका था, परंतु वीर नेपोलियन का साहस असाधारण था। विपुल शत्रु दल के विरुद्ध यह अपनी थोड़ी सी ही सेना ले कर बिजली की तरह कड़क निकला। जिस आबूकर की खाड़ी पर अभी कई महीने पहले फरासीसी जलयानों को विनष्ट कर के अंग्रेज विजय दुंदुभी बजा रहे थे, उसी स्थान पर आज फिर घोर संग्राम की आयोजना हो चुकी है, खाँडा बजने की देर है।

सात दिन और सात रात चल कर फरासीसी सेना ने भी आबूकर को खाड़ी का तट पा लिया। २५ वीं जुलाई सन् १७९९ ई० (विक्रम सं० १८५६) को आधी रात के समय फरासीसी दल शत्रु दल के निकटवर्ती हुआ। क्लेबार दो सहस्र योद्धाओं के साथ पीछे आ रहा था। शेष ६ सहस्र वीर ले कर नेपोलियन ने एक ऊँची

जगह से दुर्बीन लगा कर शत्रु दल के बल का अनुमान किया, तोपें एक एक गिन डालीं और उसके स्थानों का भी मानचित्र हृदय में अंकित कर लिया। शत्रुदल गहरी नींद में पड़ा खर्राटे ले रहा था। सेनापति क्लेबार की बाट न देख कर, वीर नेपोलियन केवल ६ सहस्र के बल से १८००० सम्मिलित तुर्की दल पर आक्रमण करने को उद्यत हुआ। यह समर नेपोलियन के भाग्य की अंतिम व्यवस्था करनेवाला समर था। निकटस्थ सेनापति मोराट से चरितनायक धीरे से बोला—"वीरवर, यही युद्ध भूमंडल का भाग्य परिवर्तन करेगा।" मोराट ने कहा—"जी हां, इसमें संदेह नहीं कि यह समर सम्मिलित सैन्य-मंडल का भाग्य परिवर्तनकारी होगा। लेकिन हम लोग भी तैयार हैं, या तो स्वर्गवास लाभ करेंगे या विजय। जो हमारे पैदलों को तुर्की सवारों से भी लोहा लेना पड़े, तो भी हमारी सेना कदाचित् पश्चात्पद न होगी।"

एक ओर रात्रि ने पैर उठाया, नभ में लाली आई और पटकालियों ने हरस्मरण आरंभ किया था, कि दूसरी ओर क्षुधित सिंह-समूहवत फरासीसी दल तुर्की मृग-वृंद पर अर्रा कर टूटा। फरासीसियों के अमोघ खड्गों से ताडित तुर्क एक दम न ठहर सके, भाग निकले। इधर फरासीसी इसी जगह की अपनी पिछली हार का स्मरण कर क्रोधान्ध हो गए। युरोप के राज्यों को फरासीसी प्रजातंत्र के विध्वंस के निमित्त बद्धपरिकर जान कर और भी अधिक बल वीर्य्य और उत्साह के साथ विजय आकांक्षा वीर हृदयों में तरंगित होने लगी। ६ सहस्र फरासीसी सेना ने पुनः युगपत आक्रमण किया। शत्रुदल भाग कर

पानी में कूदा। फरासीसियों ने तैरते हुए शत्रु दल के मस्तकों को तूँबे की तरह अपनी गोलियों का लक्ष्य बनाया। सारा तट और उपसागर का निकटवर्ती जल रक्तमय हो गया। जल स्थल दोनों में तुर्कों की समाधियाँ बनने लगीं। इस प्रायद्वीप के अंतिम कोने पर से अब तुर्कों ने लड़ना आरंभ किया था, मोराट ने शत्रु-शिबिर के मध्यस्थ शत्रु सेनाधिप मुस्तफा पाशा के माथे पर जा घोड़ा खड़ा किया। मुस्तफा ने करनालिक (तमंचा) चलाया, गोली मोराट को भेद कर निकल गई, पर वीर मोराट ने अपनी असि से मुस्तफा का मणिबंध छेदन किया और उसे पकड़ कर वह नेपोलियन के पास ले गया। अंग्रेजी सेनापति सर सिडने स्मिथ पराजय अवश्यंभावी देख, घोर संग्राम परित्याग, दुम दबा कर बड़ी कठिनाई से एक नाव पर चढ़े और जैसे तैसे अपने जहाज पर छिप कर उन्हों ने प्राण बचाए और 'प्राण बचे मानो लाखों पाए' वाली कहावत उन्होंने चरितार्थ की। १२ हजार तुर्कों के शव आबूकर की खाड़ी में तैरने लगे। यह सारी घटना १२ बजे रात तक हो चुकी। तीसरे पहर २००० सेना ले कर सेनापति क्लेवार आ पहुँचे, और यहां की व्यवस्था देख कर स्तंभित हो गए, दौड़ कर नेपोलियन को छाती से लगा कर वे बोले,—"वीर सेनापति मैं आपको आलिंगन करता हूं, परंतु आप तो भूमंडल की भाँति महान हैं।"

दस महीने से नेपोलियन को देश का कुछ हाल न मिला था, सर सिड़ने स्मिथ ने भागते समय एक मुट्ठा संबाद पत्रों का नेपोलियन के पास भेज दिया था। इसका अभिप्राय नेपोलियन को व्यथित

करने का था, क्योंकि जब सारी रात नेपोलियन ने इनको अक्षरशः पढा, तो फ्रांस की पीड़ित अवस्था के ज्ञान से वह बहुत दुःखी हुआ। इन्हे पढ़ कर नेपोलिएन कहने लगा कि-'जैसा मैंने समझा था वैसा ही हुआ, दुर्बुधोंने मेरा सारा किया अनकिया कर दिया, वे इटाली खो बैठे।' उसका वीर हृदय क्रोध और क्षोभ से उद्विग्न हो उठा परंतु यह असाधारण हृदय का बीर वसुंधरा पर जन्मा था। वह अपना कर्तव्य खूब समझता था। वह अपने संकल्पों को क्षण मात्र में स्थिर कर लेता और सिद्धि के लिये दत्तचित्त हो जाता। प्रान पण से चेष्टा करता, चाहे कितना भी कठिन संकल्प क्यों न होता। एक ओर अपने संकल्पों की सिद्धि के लिये सुख दुख, हानि लाभ, किसी बात की ओर ध्यान न देता; दूसरी ओर अपने संकल्प के स्थिर करने में साधारण लोगों की भांति समय भी अधिक नष्ट न करता। इसपर भी जो यह निश्चय करता उस में बड़े बड़े बुद्धिमानों को भी उंगली उठाने की जगह न मिलती। इसी अपूर्व शक्ति ने इसे महतो महीयान बना दिया था।

संवादपत्रों को पढ़ कर इसने फ्रांस के लौटने का दृढ़ संकल्प कर लिया। यद्यपि इसे अपने कट्टर और चिर शत्रु समुद्र के अधीश्वर इंगलैंड की दृष्टि से बचकर निकल जाना कठिन था, परंतु इसने सबकी आँखों में धूल डाल कर फ्रांस जाने का संकल्प किया सो किया फिर हटना या डरना कहाँ। इसने तत्काल आज्ञा दे दी कि दो जंगी जहाज और चार सौ मनुष्यों की दो महीनों की रसद ले जाने के लिये दो पोत तुरंत अलक्षेंद्रिया बंदर पर तैयार किए जायँ। यह आज्ञा

दी सही, परंतु अपने मानसिक अभीष्ट की छाया भी बाहर नहीं पड़ने दी। किसी को यह ज्ञात न हो सका कि इस आयोजन से सेनापति का उद्देश क्या है। इसके अनंतर १० वीं अगस्त को ससैन्य केरो नगर में फिर इसने चरण रक्खा। चरण रखने की देर थी कि इसने अपने मन की बात को अच्छी तरह गुप्त रखने के अभिप्राय से यह आज्ञा निकाली कि सब दल मिस्र की धरती के अज्ञात प्रदेशों की खोज करने को निकले।

एक दिन सेना को विदित हुआ कि सेनापति खाड़ी के मुहाने पर समुद्र तट की ओर कई दिन के लिये यात्रा करते हैं। किसी के मन में कुछ भी संदेह न होने पाया और नेपोलियन २२ अगस्त को अलक्षेंद्रिया बंदर में जा पहुँचा। यहाँ से आठ साथी और विश्वासपात्र शरीर-रक्षकवर्ग को ले कर संध्या होने के पीछे अँधेरे में छिप कर उपसागर के एक निर्जन स्थान में वह जा खड़ा हुआ। किसी भी साथी को यह ज्ञात न हुआ कि हम सेनापति के साथ कहां जा रहे हैं। यहाँ समुद्र किनारे दो नाँवें प्रतीक्षा कर रही थीं। नाँव पर पदार्पण के समय इससे अपने साथियों को बतलाया कि हम लोग फ्रांस की यात्रा करते हैं। देश का नाम सुन कर सब आनंदित हो गए। नाँव पर सहचरों सहित बैठ कर वह जहाज पर पहुँचा। इनके पहुँचते ही पाल उड़ाए गए और धक् धक् करता जहाज फ्रांसाभिमुख रवाना हो चला।

युरोपीय राजनैतिक गगन प्रबल झंझा से घिरा हुआ था, फ्रांस प्रजातंत्र की नाँव मँझधार में डगमगा रही थी। प्रत्येक फरासीसी

के मुख से यही निकलता था कि आज नेपोलियन होता तो वह इस डूबती नाँव का पार लगानेवाला माँझी बनता। अंग्रेज, रूस, तुर्क और युरोप के अन्यान्य सभी रजवाड़े फ्रांस के प्रजातंत्र को निगलने के लिये अजगर की भाँति मुँह फैलाए खड़े थे। फ्रांस की यह दशा थी जिसका अनुभव कर के नेपोलियन ने समस्त साथियों को छोड़ देशयात्रा की थी। यदि सब सेना को ले कर यह चला होता तो किसी का भी फ्रांस पहुँचना संभव न था, न फ्रांस की स्वाधीनता का ही स्थिर रहना संभव था। २२ अगस्त की रात को अलक्षेंद्रिया बंदर से चला हुआ वीर नेपोलियन मुईरन जहाज द्वारा पांच सौ सुरक्षित सैन्य सहित २० दिन में १०५ कोस पहुँच सका, क्योंकि सारे मार्ग में वायु प्रतिकूल ही मिली। अलक्षेंद्रिया के आस पास, चारों ओर, अंग्रेजों का जंगी जहाज फिर रहा था, सेना और साथी सब घबराते थे, परंतु इसने कहा—'तुम शांत रहो, देखो मैं कैसे सब की आँखों में धूल डाल कर जाता हूँ।' एडमिरल गांथम सीधे मार्ग पड़ना चाहता था, परंतु नेपोलियन ने रोका और अफरीका के किनारे किनारे जहाज ले चलने की अनुमति दे कर कहा—'यदि हमें अंग्रेजों से आक्रांत होने का भय होगा या आक्रांत होंगे तो समुद्र किनारे रेत पर उतर कर कुछ तोपें ले धरामार्ग से चलेंगे और यूनान व ट्यूनिस होते हुए फिर जहाज आरोहरण करेंगे। नेपोलियन की इच्छा-शक्ति बड़ी ही प्रबल थी। इसने एक बार भयभीत साथियों से कहा—'चुप रहो तो रहो, नहीं तो यहाँ कुछ काम नहीं। जो डरता हो जहाज से प्राण बचा कर चला जाय। मैं

कहता हूँ कि कुशल और निरापद मैं देश पहुँचूंगा, फिर भी तुम नहीं मानते ।"

जहाज पर एक दिन नेपोलियन कुछ सोचता सोचता टहलने लगा, इसके साथियों ने ईश्वर सबंधी बिवाद आरंभ कर दिया । एक पक्ष कहता ईश्वर है, दूसरा उसका खंडन करता । खंडन के पक्षपाती अधिक लोग थे । नेपोलियन सब चुपचाप सुनता था, कुछ देर पीछे सहसा उनके पास जा कर नास्तिकों से पूछने लगा—'आप लोगों ने अच्छा विवाद आरंभ किया है, यह तो बतलाइए कि हम लोगों के सिर पर जोइतने नक्षत्र और उपग्रह वर्त्तमान हैं, इन्हें किसने बनाया ? ।' सब चुप हो गए । नेपोलियन फिर टहलने लगा और सैनिक और दूसरी बात करने लगे ।

१ अक्तूबर को 'मोइरन' जहाज कार्सिका पहुँचा । अजेक्सिया बंदर पर सब ने आश्रय लिया । यहाँ के लोग अपने देश के महाप्रतापवान और विक्रमसंपन्न वीर को देखने आए । सारे द्वीप में समाचार फैल गया, सब आनंद के मारे इस के दर्शन के लिये उमड़ने लगे । नेपोलियन यहाँ छ दिन रहा और अपनी आवश्यकता का सारा सामान एकत्र कर के उसने ७ अक्तूबर को फ्रांस की ओर को लंगड़ उठाया । मार्ग में पद पद पर विपद की आशंका बढ़ने लगी । कई बार ऐसा हुआ कि अब अँग्रेजों ने घेरा, अब बंदी किया, अब अँग्रेजों से मुठभेड़ हुई । ८ अक्तूबर को तीसरे पहर कुछ दूर पर एक अग्रेंजी जहाज दीख पड़ा, जहाजियों ने समझा की अँग्रेजी जहाज ने हमें देख लिया और झट कार्सिका

की ओर मुड़ने का विचार किया। नेपोलियन ने रोका, क्योंकि वह जानता था कि इस समय कार्सिका लौटना अंग्रेजों का जान बूझ कर बंदी होना है। वह कहने लगा—"देखो तुमने जो ढंग पकड़ा है इस ढंग से इंगलैंड जाना पड़ेगा; और हमें जाना है फ्रांस। सब पाल तान दो, और कह दो कि सब लोग चुप चाप अपनी अपनी जगह पर बैठ जाँय, और तुम उत्तर पश्चिम दिशा की ओर जहाज चलाओ।" अँधेरी रात में अनुकूल वायु पा कर जहाज फर्राटे मारने लगा। सारी रात डर के मारे किसी ने आँख न मूँदी। प्रातः काल 'मोइरन' ने' फ्रेजुस, बंदर पर लंगड़ डाला। इस समय फ्रांस की शासनप्रणाली अफरीका की शासन प्रणाली के समान थी। ५०० सदस्यों के ५ प्रधान पुरुष राज के हर्ता कर्ता थे, इनमें परस्पर स्वार्थवश विवाद था इससे शासन शृंखला ढीली पड़ कर बिखर रही थी।

जहाजों के फ्रेजुस में प्रवेश करते ही नेपोलियन ने पताका उड़ाई ही थी कि बिजली की तरह नगर में नेपोलियन के आने का समाचार क्षण मात्र में फैल गया। देश में आनंद उत्सव होने लगे। दल के दल नेपोलियन के देखने को दौड़ पड़े। स्थान स्थान पर झंडियों में लिखा था और लोग पुकारते थे— 'नेपोलियन चिरंजीवी हों' ईश्वर नेपोलियन को दीर्घायु करें।' १७ अक्तूबर को हमारे चरितनायक ने अमरावती विनिंदक पैरिस नगरी में पदार्पण किया। मार्ग में फूलों की वर्षा से सवारी भर गई। कुमारियाँ मार्गों में स्वागत के गीत गाती थीं। सड़क पर प्रजा ने

पाँवड़े डाले, घरों में दीपावली मनाई गई। नाट्यमंडलियों, वाटिकाओं आदि में स्थान स्थान पर नाना भाँति से हर्ष प्रकाशित होने लगे। लेकिन हमारे चरितनायक का मुख-कमल कुम्हलाया ही रहा, वह सीधा मार्ग छोड़ वक्रमार्ग से फेर खा कर नगर में आया। सारा देश आनंद उन्मत्त हो रहा है, पर नेपोलियन का हृदय-कमल तुषार पीड़ित कमलिनी की भाँति संकुचित है। इसका क्या कारण है ?

नेपोलियन की प्राण प्यारी जोसेफेनी पति का आगमन सुन अगवानी के लिये बंदर की ओर चल पड़ी। कुछ बुरे समाचारों के पाने पर नेपोलियन ने इसके हृदय पर पत्र द्वारा वज्राघात किया था, उसी से भयभीत पिशुनों को चवाई का अवसर न देने के लिये यह पति-प्रतारिता सुंदरी और भी वेग के साथ रवाना हुई थी। किंतु हा! प्राण प्यारे ने मार्ग बदल कर उसे निराश कर दिया।

जोसेफेनी के चलन की शिकायत सुन कर इसे पतिदेव ने एक पत्र में लिखा मारा कि—'तुम आधे जगत की प्रेमी पात्री हो रही हो, मुझे यह बात ज्ञात है।' नेपोलियन ता० १७ अक्तूबर को घर पहुँचा था, जोसेफेनी को लुई नगर से लौटने में देर होनी ही थी। १९ अक्तूबर को यह भी घर आ गई। जो प्राणवल्लभा के मुख-चंद्र का चकोर था, जो प्यारी का मुख देख कर जीता था, जो अपनी प्रणयिनी के साथ एक प्राण दो देह की भाँति रहता था, उसने आज उसी प्यारी के आने की परवाह भी न की, वह मिलने को भी कमरे से न उठा। १८ महीने के पीछे बिछुड़ों का एकत्र होना

था, पति ही के दर्शन के लिये वह गई, दर्शन से वंचित हो कर मार्ग की मारी हारी थकी जोसेफेनी से दो बातें तो करता ! पर नहीं; रस में विष मिल गया था, प्रेम घृणा में परिणत हो चुका था, क्रोध प्यारी को प्यारी कहने में भी चिढ़ दिखलाता था। हा ! कहाँ इतनी प्रेम ! कहाँ इतनी कठोरता !!

अंत में पति की कठोरता को भूल कर जोसेफेनी नें स्वयम् अपने स्वामी के चंद्रमुख के दर्शनों की लालसा की। क्या हो स्वामी भूल गया, पर दासी तो दासी है। धीरे से चोर की तरह कमरे का किवाड़ खोल कर हाथ जोड़ कर सामने जा खड़ी हुई। देखती है कि पतिदेव दुखी मन दोनों हाथों से कलेजा पकड़े बैठे हैं। मुख पर हर्ष, दया, प्रेम का लेश भी नहीं है। इसने सोचा था कि मैं कहूंगी—'मैं आप की अपराधिनी हो सकती हूँ परंतु अविश्वासिनी नहीं हूँ। मेरा मस्तक आपके समक्ष है, बिश्वास न हो तो इसे छिन्न कर के फेंक दें। किंतु वहाँ बोलना कहाँ, पूछना किसका, मुख देखते ही नेपोलियन क्रोधांध हो कहने लगा—'हे युवती तुम अभी मालमाइसन चली जाओ।' आदेश पाते ही, हार कर वह लौट पड़ी और अपने लड़के को साथ ले आधी रात के समय घर से निकलने को तय्यार हो गई। क्या हो, स्वामी की आज्ञा प्रधान है। आवश्यक कपड़े लत्ते तथा खाने पीने को ले कर मालमाइसन की तय्यारी हो गई।

नेपोलियन को विश्वास न था कि रात को ही जोसेफेनी चल खड़ी होगी, लेकिन जब इयोजिन तय्यार हो कर आँगन में आ खड़ा

हुआ तब तो नेपोलियन को कुछ दया आई। कितना ही हो नेपोलियन विचारवान था, निर्दय बर्बर या तुर्क न था। जोसेफेनी भी तय्यार हो चुकी थी। नेपोलियन उतर कर नीचे आया, और जोसेफेनी से तो न बोला परंतु उसके लड़के इयोजिन को संबोधन कर के कहने लगा—'इयोजिन रात में कहाँ जाओगे, रात को यहाँ ही भोजन करो और निवास करो।' जोसेफेनी ने कभी नेपोलियन की आज्ञा पहले भी भंग न की थी और आज भी नहीं की। उधर वह जा कर सो रही, इधर नेपोलियन ने किसी न किसी भाँति चिंतापूर्ण रात काटी। किसी कवि ने सच कहा है कि प्रेम अंधा है किंतु निर्बल नहीं है, प्रेम का तीर लोह हृदय को छेद डालता है। तलवार कटार सूरमा सह लेते हैं, पर प्रेम का बाण उन से भी नहीं सहा जाता। दो दिन पर्य्यंत नेपोलियन क्रोधांध बना रहा, अंत में विश्वविजयी का मस्तक प्रेम के पैरों पर झुक पड़ा। तीसरे दिन प्रेम ने विषधर की भाँति क्रुद्ध हो कर वीर नेपोलियन के हृदय में ऐसी गहरी चोट की कि फिर उस से रहा न गया। वह जोसेफेनी के कमरे में गया, देखता है कि वह बेचारी मेज़ के सहारे दोनों हथेलियों पर मुँह रखे हुए पड़ी है। रोते रोते उसकी आखें सूज गई हैं, मुख का रंग पीला हो गया है। इतनी निर्बल है कि मानो शरीर परित्याग कर के प्राण पक्षी उड़ना ही चाहता हो। नेपोलियन के पैर की आहट सुन कर आँख ऊपर उठी, स्नेहियों की आँखें चार हुईं कि प्रेम का तीर पार हो गया। नेपोलियन कोच पर बैठ गया और जोसेफेनी ने प्रेम विह्वल हो 'प्राण प्यारे' कह कर अपना सिर उस की गोद में

डाल दिया और वह फूट फूट कर रोने लगी।

पति-प्रेमानुरक्ता जोसेफेनी का सारा दुःख, हार्दिक वेदना, ग्लानि सब पति की गोद में पहुँचते ही पानी होकर आँखों की मार्ग से बह गई। प्राणप्यारा प्राणप्यारा हुआ और प्राणप्यारी प्राणप्यारी। प्रेम की लीला बड़ी विलक्षण हैं। ओ हो! प्रेम क्या नहीं करता, क्या नहीं कर सकता। इसने राजा, योगी, वीर, कायर किसी को नहीं छोड़ा। यह जिसे पकड़ता है नाच नचा छोड़ता है। हे प्रेमदेव! आपको नमस्कार है।



आठवाँ अध्याय

नेपोलियन का फ्रांस प्रजातंत्र का प्रथम कौंसल होना

नेपोलियन मन का बड़ा दृढ़ और अपनी योग्यता पर पूरा भरोसा रखनेवाला था। इसे विश्वास था कि मैं फ्रांस की छिन्न भिन्न शासन कडियों को शृंखलित कर सकूँगा, अतः इसने संकल्प किया कि यथासंभव मैं फ्रांस में फैली हुई आराजकता को दूर करूंगा। इस समय फ्रांस में पंच नायकों में आपाधापी थी, पंचशती और साधारण सभा में मतभेद था, दलबंदियों का भी घाटा न था। नेपोलियन के दो ही प्रबल प्रतिद्वंदी थे, एक बारनाडो दूसरा मोरो। मोरो उद्यमहीन और सेनाधिपत्य का ही प्रेमी था। परंतु बारनाडो की नाड़ियों में सूर शोणित प्रवाहित था, यह सब प्रकार चतुर और नेपोलियन के साथ बराबरी में ठहरने की योग्यता रखता था। इसीसे नेपोलियन को अधिक भय भी था, परंतु नेपोलियन कभी भी कठिनाई के भय से किसी काम में पीछे नहीं हटा, तो अब क्या हटता। 'असंभव' तो इसने गुरु से पढ़ा ही नहीं था। इच्छाशक्ति इतनी प्रबल थी कि उसके बल से आग में भी कूद कर अक्षत निकल जाता। साई नामक एक धर्म्मयाजक ने इसके संबंध में किसी से कहा था कि 'देखो यह दंभिक छोकरा अध्यक्ष सभा के सदास्यों को भी नहीं गिनता, सभा में कर्तव्य-ज्ञान होता तो इसे गोली से उड़ाया जाता।' नेपोलियन ने इसके उत्तर में एक मित्र से कहा—'इस पुरोहित को किसने अध्यक्ष सभा का

सदस्य बनाया और किस गुण के कारण? यह तो प्रुसियों का क्रीत दास है।' इतने से पाठक गण जान सकते हैं कि फ्रांस के नेताओं में इस समय कैसा वैमनस्य फैल रहा था।

इन दिनों फ्रांस में तीन राजनैतिक दल हो रहे थे। प्रथम राज-भक्त (लायलिस्ट)--ये लोग बार्बोन वंश के हाथ में पुनः राज सौंपना चाहते थे; दूसरा रेडीकल डेमोक्रेट दल था, जो प्रजातंत्र चाहता था। इसके नेता 'बोरास' थे; तीसरा दल मोडरेट (नरम) नाम का था, इसका उद्देश्य रिपबलिकन लोगों से कुछ भेद के साथ प्रजातंत्र स्थापन करना था। इसके नेता 'सिये' थे। नेपोलियन ने अंतिम दल का आश्रय ले कर काम करना अरंभ किया। सिये और नेपोलियन में अनुदिन प्रेम बढ़ने लगा। सिये बड़ा धूर्त्त और कुटिलनीति का आदमी था, अर्थ-लोलुपता भी उसमें कम न थी। 'सिये' का इस उपद्रवजनित संकट के विषय में यह कहना था कि इस समय कृतकार्य्य होने के लिये तलवार और माथा दोनों आवश्यक है। नेपोलियन में ये दोनों बातें थीं, जो कि धीरे धीरे प्रकट होने लगीं।

फरासीसी इतिहास में ९ नवंबर १७९९ ई० (वि० १८५६) का दिन चिरस्मरणीय रहेगा। उस दिन सवेरे नगरनिवासी देखते हैं कि विशाल पैरिस नगर में फौजी गाजे बाजे सहित अनेक दल सज सज कर राजपथ को घेर रहे हैं; सवार पैदल बद्धपरिकर सजे बजे रेखा बाँधे चले जाते हैं, साथ में तोपें छकड़ों पर लदी जा रही हैं। पूछने पर प्रजा को ज्ञात हुआ कि इटाली और मिस्र विजयी

वीर नेपोलियन के प्रति सम्मानप्रदर्शन करने के लिये यह समारोह हो रहा है। ८ बजे समय नेपोलियन का लंबा चौड़ा घर सब प्रकार के लोगों से खचाखच भर गया, कहीं राई धरने को जगह न रही। अनेक उच्च श्रेणी के लोगों को स्थानाभाव के कारण मार्ग में खड़ा रहना पड़ा।

इसी समय साधारण सभा के प्रधान ने भीड़ को बीच से हटाते हुए नेपोलियन का लिखा हुआ प्रस्तुत घोषण पत्र आगे बढ़ कर नेपोलियन के हाथ में दे दिया। इस में लिखा था—

'व्यवस्थापक सभा को पैरिस से हटा कर कुछ मील के अंतर पर सेंट क्लाउड में उठा कर ले जाना होगा और जन साधारण में शांति स्थापित रखने के निमित्त नेपोलियन बोनापार्ट को नगर की समस्त सेना की अध्यक्षता सौंपी जायगी।' नेपोलियन ने अपने घर पर समागत राज्य के समस्त श्रेष्ठ और भद्र पुरुषों को बुला कर उनके सामने मेघवत् गंभीर स्वर में इसे पढ़ कर सुनाया। सब ने एक दम मौन हो कर सुना और वे नेपोलियन की ओजस्वितापूर्ण मधुर स्वर लहरी से मंत्रमुग्ध हो गए। घोषणापत्र पाठ करने के पश्चात् इसने उनसे कहा—"भद्र महोदयो! कर्णधार विहीन भग्नप्राय साधारण तंत्र-तरणी की रक्षा करने में क्या आप लोग मेरी सहायता करेंगे?" सहस्रों कंठों से युगपत् यही निकला कि—'हम लोग शपथ करते हैं कि हम आपकी सहायता करेंगे।" सहस्रों चमचमाती तलवारें झर्र से कोश में से उछल पड़ीं और सैनिक समूह ने सरपट उत्थित हाथों को हिलाते हुए अपनी अनुमति

प्रदान की। अब क्या था नेपोलियन पैरिस में सर्वोच्च पदाधिकारी बन गया। घोषणापत्र समस्त सेना में प्रचारित हुआ। सैनिक पहले ही से इसे अपना उपास्य देव समझते थे, चारों ओर जयध्वनि गूँजने लगी।

नेपोलियन ने १५००० सजी सजाई सेना ले कर तुयलेरी के राजमहल की ओर यात्रा की। वह अभिषिक्त सम्राट् की भाँति निर्भय सिंह की तरह प्राचीनों की (साधारण) सभा में जा उपस्थित हुआ। जाते ही खड़ा हो कर बोला—"महोदयगण! आप लोग ही फरासीस जाति के ज्ञान चक्षु हैं, आप ही साधारण तंत्रों को पतन से बचा सकते हैं। हम सब सेनापति इकट्ठे हो कर आप लोगों की सहायता के निमित्त आए हैं। आप लोग जो आज्ञा देंगे विश्वासपूर्वक हम लोग प्रतिपालन करेंगे। पूर्व की किसी भी घटना पर दृष्टि न डालें। वह दृष्टांत नहीं हो सकती। इस अट्ठारहवीं शताब्दी का सा समय पहले कभी नहीं आया, आज का सा दिन अट्ठारहवीं शताब्दी में हुआ ही नहीं।" इसके अध्यक्ष होने के कारण किसी किसी सदस्य ने पद त्याग दिया, क्योंकि वे समझ गए कि नेपोलियन के सामने हमारी चलनी नहीं। बोरास ने असंतुष्ट हो कर एक कर्म्मचारी से कहा कि इसे धमका दो। यह बात सुनते ही नेपोलियन बोल उठा—"कहिए तो अब हमारी प्रसन्नवदना फरासीसी धरती किधर गई? जब मैं विदेश गया था सर्वत्र शांति बिराजती थी, आज चारों ओर विद्रोह की अग्नि धधक रही है। मैं तुम्हें विजय से आल्हादित छोड़

गया था, आज पराजय से कलंकित देख रहा हूँ। मैंने तुम्हें इटाली से अतुल धन भेजा, परंतु आज प्रजा कर से पीड़ित है। चारों ओर भिक्षुकों का आर्त्तनाद हृदय विदीर्ण कर रहा है। जिन्होंने मेरे साथ समर पर समर जीते थे आज वे वीर कहाँ हैं? इस तरह अब समय नष्ट न होगा, इससे यथेच्छाचार की केवल बढ़ती होती है।' बोरास ने भी अगत्या पद परित्याग कर दिया। अब सेनापति मुलिनस सामने पड़ा, इसका भी मुँह नेपोलियन ने झाड़ दिया और कहा—"देखो सिये, डूको, बरोस ने हमलोगों से प्रति योग्यता असंभव जान कर पद त्याग दिया, केवल तुम दो हो, जो अपमानित और अयोग्य होने पर भी अपने पद पर रहने की इच्छा कर रहे हो। अब भी अच्छा है, मेरा कहना मान लो और हमारा विरोध छोड़ दो।" इन्होंने न माना अतः नेपोलियन ने इन्हें पकड़ लिया। ११ बजे तक अध्यक्ष सभा का अस्तित्व लोप हो गया। सैन्यमंडल ने अत्यंत उत्साहित हो नेपोलियन दीर्घजीवी हों' 'नेपोलियन चिरजीवी रहें' की ध्वनि से राजपथ प्रकंपित कर दिया॥

संपूर्ण साधारण सभा और अधिकांश पंचशति सभा ने नेपोलियन की प्रधानता स्वीकार कर ली थी, तथापि कुछ शत्रुओं ने हल्ला मचा दिया—'साधारण तंत्र के शत्रु को मार डालो; स्वेच्छाचारी को प्राण दंड दो, दुष्ट को निर्बल करो। हमारा साधारण तंत्र चिरजीवी रहे।' इस ध्वनि से सभास्थल कंपायमान हो गया। वहां अधिकांश पैरिस के उच्च कोटि के लोग एकत्र थे। प्रस्ताव हुआ कि साधारण सभा बनाए रहने के पक्ष में सब सदस्य शपथ करें।

नेपोलियन का पक्ष ले कर किसी को भी इस प्रस्ताव का प्रतिवाद करने का साहस न हुआ, किसी किसी नेपोलियानाइट को भी शपथ करनी पड़ी। विरोधियों ने नेपोलियन को राजविद्रोह के अपराध में दंड देने की इच्छा की। एक ने कहा कि 'नेपोलियन अब तुम काल की गाल में पैर धरनेवाले हो'। नेपोलियन बोला—'देखा जायगा' और बाहर से उसने अपने साथी सैनिकों को भीतर बुलाया, तब वह ललकार कर गर्जा—'महाशयो, आप लोग सब ज्वालामुखी पहाड़ तले आ पड़े हैं, आपने मुझे साधारण सभा के अत्याचार से अपनी रक्षा करने के लिये बुलाया था, मैंने उसीका अनुकरण किया है। अब मुझे कोई तो 'सीजर' कहता है, कोई अत्याचारी और स्वेच्छाचारी बतलाता है। अध्यक्ष सभा तो मिट चुकी, पंचशति सभा जर्जर व भ्रष्ट-श्रृंखला हो रही है, चारों ओर अराजकता और विद्रोह फैल रहा है। मेरे पास सहस्रों सैन्य है, मैं आपकी रक्षा करूंगा, मैं स्वार्थी नहीं हूँ, मैं स्वार्थ त्याग करके आया हूँ, सर्वस्व खो कर मैं स्वतंत्रता की रक्षा करूँगा।" एक ने जोर से कहा, "राज की प्रचलित प्रणाली।" नेपोलियन ने कहा-कहाँ है प्रचलित प्रणाली ? इन लोगों ने तोड़ डाली है, शासन प्रणाली तो गई; इसका एक कंकाल मात्र पड़ा है। आप सब इस बात को जानते मानते हैं; पर काम करने से आपको विराग है। यह क्या बात है!" इस समय सब चुप हो गए; विपक्ष के भी दो तिहाई लोग इसकी ओर हो गए कि इतने में संवाद मिला-"पंचशति सभा नेपोलियन को राज्यविद्रोही ठहरा कर, दंड

देने की व्यवस्था कर रही है।

यह सुनते ही नेपोलियन सेना ले कर पंचशति सभा में जा पहूँचा। सब समझ ने लगे कि नेपोलियन बिपत्तिग्रस्त हुआ, इसमें संदेह नहीं। नेपोलियन के शरीररक्षक वर्ग साथ थे; वे तो द्वार पर आज्ञा की बाट देखने लगे, यह अकेला सभा में जा उपस्थित हुआ। इसे देखते ही सभा में कोलाहल मच गया—'इसका क्या काम ? यहाँ यह क्यों ? यथेच्छाचारी का बध करो, मार डालो।' शांति पूर्वक यह कुछ बोलना चाहता था, पर कोलाहल में इसकी वाणी डूब गई। लोग मारने दौड़े, एक ने इसकी छाती पर तलवार चलाई, इसके रक्षक ने इसे बचा लिया। अब क्या था सैनिकगण संगीने ले ले कर सदस्यों को विताड़ित करते, चारों ओर से घेर कर नेपोलियन को बाहर लाए। यह बाहर निकला था कि संबाद मिला कि तुम्हारे भाई 'लूसियन, को लोग मारते हैं। इसने तुरंत कर्नल जुमेलिन को आज्ञा दी की एक दल लेकर जाओ और लूसियन की रक्षा करो। लूसियन के आते ही दोनों भाई घोड़ों पर सवार हो कर सेना के आगे आगे हो गए। लूसियन बोला—पंचशति सभा भी गई। घातक लोग सभा में भर रहे हैं, उन्हे ठीक करना होगा।'

नेपोलियन बोला—"सैनिको क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ" ? सेना ने प्रत्युत्तर में 'नेपोलियन दीर्घजीवी हों' कह कर अपने सभापति के वाक्यों का समर्थन किया। मोराट सेनापति की अधीनता में सेना गई, सेनापति ने संगीन चलाने की आज्ञा दी।

तब तो लोग गवाक्षों, खिड़कियों, और द्वारों में हो कर छतों से कूद कूद कर भागने लगे। नेपोलियन, ने बिना एक बूंद रक्तपात किए सब को भगा दिया। इस तरह फ्रांस की साधारण अध्यक्ष सभा और पंचशति सभा दोनों का अंत हुआ।

रात को सभा भवन में दो दल सदस्यों का बैठा और सब ने एक स्वर से नेपोलियन को ही देश शासन के उपयुक्त समझा और अध्यक्ष सभा को मिटा कर नेपोलियन, सिये और डूको को कौंसल की उपाधि प्रदान की। तीन कौंसल नियत होने के पश्चात् शासन नीति निर्धारित करने के लिये २५ सदस्यों की दो समितियां संगठित हुईं। इन्होंने कौंसलों के साथ मिल कर अनुसाशन (कानून) आदि बनाए। रात में फिर नगर में कोलाहल हुआ कि नेपोलियन अकृतकार्य्य हुआ और उसकी सारी चेष्टा निष्फल हुई। इस संबाद ने नगर में बड़ा गोलमाल मचा दिया; लेकिन ९ बजे सच्चे समाचार नगर में पहुँचे। सब प्रकार से प्रजा को शांति हुई। प्रजा का प्रेम नेपोलियन में था, और वह इसे ही चाहती थी, अतः इस समाचार से समस्त प्रजा को बड़ा हर्ष हुआ। रात में नेपोलियन ३ बजे घर पहुँचा होगा। जोसेफेनी बाट देख रही थी, इसने धीरे धीरे सारा सामाचार बतलाया और रात बीताने के समय एक कोच पर लेट कर कहने लगा—"अब मैं जाऊँगा, और अगली रात को 'लेक समबरा' के राजप्रासाद में ही शयन करूँगा।"

प्रभात हुआ, नेपोलियन के कंधे पर फ्रांस के शासन का भार ३० वर्ष की ही युवावस्था में पड़ा, लेकिन तनिक भी इसे चिंता

नहीं हुई; क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि वह अपना कर्तव्य यथा-वत् पालन कर सकेगा। जेकोबिन दल के सिवा समस्त फ्रांस उसके अनुकूल था। यद्यपि नेपोलियन उच्चाभिलाषी, क्षमता और अधिकारप्रिय तथा गौरव चाहने वाला था, इसमें संदेह नहीं किंतु यह अभिलाषा उसमें देशहित साधन के पवित्र भाव से सम्मिलित थी। उसने दया और मनुष्य भक्ति नहीं छोड़ी। दूसरा होता तो सहस्रों मनुष्यों के पवित्र रक्त से मेदिनी को अरुण वर्ण धारण कराता, पर उसने रक्त पात होने नहीं दिया, इतने बड़े भारी भारो राजनैतिक जाल को अपनी चातुरी और बुद्धि बल से क्षण में तोड़ डाला और सिद्धकाम हो बैठा। यह यदि किसी से दूसरा कहा जा सक्ता है तो वह अमेरीका का स्वतंत्र्यप्रदाता महात्मा वाशिंगटन ही है। उसे अधिकार प्राप्त होने पर जब महात्मा वाशिंगटन की मृत्यु के सामाचार मिले तो उसने स्वर्गवासी की बड़ी प्रशंसा करते हुए फ्रांस में आज्ञा निकाल दी थी कि फरासोसी ध्वजदंड पर काली पताकाएँ उड़ाई जाँय।

दूसरे दिन प्रातःकाल नेपोलियन, सिये और डूकस 'लेक-समबरा' के राजभवन में सम्मिलित हुए। सिये का राज काज के काम में बाल पक गया था, वह चतुर कूटनितिज्ञ भी था और अपने को राजसंचालन में सबसे अच्छा लगाता था। वह समझता था कि नेपोलियन सेना का अध्यक्ष हो कर ही संतुष्ट हो जायगा और मैं राज्य के शेष सब गुरुतर भारों को उठाऊंगा। लेकिन वहां हुआ कुछ और, सभास्थल में एक ही आसन सुरक्षित था उस पर नेपो-

लियन जा कर बैठ गया। इससे सिये कुछ रुष्ट हो कर बोला—'इस आसन पर किसका अधिकार हैं ?, डूकस ने सरल भाव से कहा कि—'निस्संदेह नेपोलियन का और वे वहीं बैठे भी हैं। नेपोलियन ही हम लोगों की रक्षा के उपयुक्त भी हैं।'

इतने में नेपोलियन ने उस बात को सुनी अनसुनी करके कहा—"भद्र पुरुषों, सब बात ठीक है, अब आओ राज काज आरंभ कर। सिये लालची था, नेपोलियन प्रताप और बडप्पन का भूखा था। बैठते ही सिये ने पास रक्खी हुई संदूक की ओर उँगली उठा कर कहा—" मैं आप लोगों से एक गुप्त बात कहता हूँ, देखिए इसमें मैंने १० लाख फ्रेंक छिपा रक्खे हैं कि काम पड़ने पर इनको अच्छे काम में लाऊँगा। अब अध्यक्ष सभा तो है नहीं, अतः इस पर हमारा ही अधिकार है।" नेपोलियन समझ गया और बोल उठा—"महाशय, प्रकाश रूप से इन रूपयों का हाल मुझे ज्ञात होता तब तो मैं तुरंत राजकोष में भेज देता, अब मैं कुछ नहीं कहता, अच्छा जाओ तुम दोनों बाँट कर ले जाओ।" सिये डूकस ने झटपट संदूक खोल, रुपया बाँटना आरंभ किया। सिये ने डूकस को कम देना चाहा, डूकस ने नेपोलियन से फरयाद की। नेपोलियन ने कहा कि—'बस तुम्हीं आपस में निपट लो, अधिक गड़बड़ी मचाओगे तो राजकोष में चला जायगा, तुम दोनों प्रसन्नतापूर्वक बाँट खाओ।'

नेपोलियन प्रजा से बहुत प्रेम करता था, क्योंकि वह अपने को भी प्रजावर्ग में से ही एक समझता था। सर्वथा वह प्रजा

के सुख दुःख की ही चिंता में डूबा रहता। एक बार वह भेष (वेश) बदल कर संट हेंनरी की झोपड़ी में गया। वहाँ लोग राज काज की ही चर्चा कर रहे थे। इसने पूछा—' भाई नेपोलियन की बाबत प्रजा का क्या भाव है ?" उत्तर में दूकानदार ने कहा कि—'असाधारण भक्ति'। यह बात सुन कर नेपोलियन ने नेपोलियन के प्रति कुछ अविश्वासता की बात कही, इस पर उसने इसे ऐसा फटकारा कि इसे अपने साथी को ले कर तुरंत भागना पड़ा। इससे नेपोलियन को बड़ी प्रसन्नता हुई। अपनी निर्धनता के समय यह एक क्लब में जा कर पैसा दो पैसा दे कर समाचारपत्र पढ़ा करता था। क्लब की बुढ़िया इसे विद्यानुरागी देख कर प्रसन्न होती और कभी कभी एक प्याला सूप पिला देती। नेपोलियन इस बात को भूला नहीं था, उसने उसके पति को अच्छे काम पर रख दिया। एक बार उस क्लब पर राजनैतिक अपराध की बात उठी, अमात्यों ने राय दी कि इसे उठा देना चाहिए। नेपोलियन ने कहा कि—' यह कभी नहीं हो सकता, मैं जानता हूँ कि इसके द्वारा निर्धन पाठकों को कितना कुछ लाभ पहुँचता है।'

१९ फरवरी १८०० ई० (विक्र० १८५७ की ग्रीष्मऋतु में) को नेपोलियन ने पहले पहल प्राचीन राजकीय सौध में वास करना आरंभ किया। प्रातःकाल से तय्यारियाँ होने लगीं। यद्यपि नेपोलियन आडंबर-प्रिय और दिखावट का पक्षपाती न था, लेकिन वह जानता था—'तुलसी ऐंठ न छोड़िए जहँ तहँ ऐंठ बिकाय'। इस अवसर पर उसने कह भी दिया—'मैं आडंबर का पक्षपाती नहीं

हूँ परंतु इस समय इसकी आवश्यकता है, साधारण प्रजा को इससे आनंद होगा। साधारण सभा बहुत ही निर्धन की भाँति रहा करती थी, इसी से प्रजा की दृष्टि में उसका गौरव न था।' सुतराम् नेपोलियन की सवारी बड़ी धूमधाम से निकली। चारों ओर से प्रजा आनंदित हो कर 'प्रथम कौंसल अमर हों' 'हमारे प्रधान कौंसल दीर्घजीवी हों' 'नेपोलियन चिरजीवी हों।' इत्यादि वाक्यों की ध्वनि से गगनमंडल को गुंजायमान करने लगी।

इसने राजकाज पर कई नए कर्म्मचारी अपनी इच्छा के अनुसार रक्खे। कई बार जब यह किसी को नियत करता तो लोग आपत्ति करते, पर यह किसी की न मानता। सब को निरुत्तर कर देता और कहता कि—'आदमी क्या गढ़े जाँयगे, जो हैं उन्हीं से काम लेना होगा, हम लोग किस लिये हैं, निगरानी करते रहेंगे।' इस तरह सब राजकाज चल रहा था कि लोंबार्डी नामक स्थान में राजकीय पक्षवालों ने फिर विद्रोह आरंभ किया, इसने सब को बुला कर समझाया और क्षमादान दिया। अंत में सब ने तो मान लिया परंतु एक जन कोडोडिल ने हठ किया, वह निकाला गया तो वह इंगलैंड चला गया; परंतु अंत में इस उपद्रवी जार्ज कोडोडिल को राजविद्रोह के अपराध में फाँसी दी गई। यद्यपि राजतंत्र के पक्षपातियों ने नेपोलियन के प्राण लेने की अनेक चेष्टाएँ कीं, परंतु सब निष्फल हुईं। इस तरह फ्रांस में शांति स्थापन हो जाने पर भी आस्ट्रिया और इंगलैंड के साथ भीतरी शत्रुता बनी रही। अतः समयोचित जान कर नेपोलियन ने इंगलैंडेश्वर को एक पत्र

लिखा—"महोदय, समस्त फरासीसी जाति के मंतव्यानुसार मुझे फरासीसी साधारण तंत्र के राज्य-कार्य्य का भार सौंपा गया है, इसलिये मैं यह पत्र लिखना अपना कर्तव्य समझता हूँ। पिछले चार वर्षों में बहुत रक्तपात हुआ है, और अभी तक उसका अंत नहीं हुआ और इस तरह से नरहत्या का अंत होना भी नहीं है। क्या परस्पर में संधि स्थापन करना कोई दुष्कर बात है? युरोप की सर्वापेक्षा ये दो अधिक शिक्षित जातियां सौभाग्य व स्वाधीनता के गर्व से भरकर असार दंभ के पैरों तले वाणिज्य और आभ्यंतरिक समुन्नति, पारिवारिक सुख, सुबिधा तथा शांति के रूँदने को तय्यार हो रही हैं, यह बड़े ही आश्चर्य्य की बात है। क्या ये शांति को जाति-गौरव का प्रधान कारण समझ कर ग्रहण नहीं कर सकतीं? आप भी तो एक स्वतंत्र जाति के स्वाधीन सुख शांति और गौरव की वृद्धि के लिये ही शासन करते हैं, ये बातें नई नहीं है जिन्हें आप न जानते हों। मैं जो प्रस्ताव करता हूँ मुझे आशा है कि आप सरल भाव से इसे स्वीकार करेंगे। इंगलैंड और फ्रांस अपनी शक्ति का दुष्प्रयोग कर के केवल अपनी दुर्बलता और दुःख को ही बढ़ा रहे हैं। मैं समझता हूँ कि इस झगड़े के मिटने पर ही सारे सभ्य संसार का शुभाशुभ निर्भर है।" इंगलैंडेश्वर ने इसका कुछ भी उत्तर देना उचित न समझा। प्रधान मंत्री लार्ड ग्रेनविल ने जो उत्तर दिया वह अत्यंत ही अवज्ञापूर्ण था। उसमें लिखा था—"जो फ्रांस शांति स्थापन करना चाहता है तो उसे राज्य सिंहासन फरासीसी बोर्बेन वंश के हाथ में फिर सौंपना होगा, इत्यादि'।

जब इंगलैंड ने इस प्रकार अनुचित उत्तर में अनधिकार चर्चा की, तब नेपोलियन ने अपने मंत्री तालरिंद को एक पत्र दे कर भेजा। इस पत्र में यह लिखा—"राजविप्लव के आरंभ से आज तक फ्रांस ने कभी भी युद्ध का अनुराग नहीं दिखलाया, किंतु विराग ही दिखलाता आता है; शांतिप्रियता और दिग्विजय की स्पृहा-हीनता द्वारा वह भिन्न भिन्न देशों की स्वतंत्रता के संरक्षण में ही लगा है। युरोप से विवाद करना कभी उसका अभीष्ट नहीं है, उन लोगों की बातों को निर्विघ्न रखना ही उसका आंतरिक अभिप्राय रहा है। किंतु फ्रांस की इस इच्छा में चारों ओर से बाधाएँ उप-स्थित हो गईं, युरोप ने फरासीसी राष्ट्र विप्लव होने के कारण उसे विनष्ट करने का जाल रचा। इस षड्यंत्र को तोड़ कर शांति संस्थापन में बाधा दी गई, राज्य के भीतरी शत्रुओं को विदेशवालों ने उत्साहित करना आरंभ कर दिया। इस तरह फ्रांस अपमा-नित होने लगा और इसकी जातीय स्वाधीनता, सम्मान तथा शांति सब को धूल में मिलाने की चेष्टा की जाने लगी। इस दशा में अपनी स्वाधीनता और सम्मान की रक्षा के निमित्त उसे हथि-यार उठाना पड़ा। इस तरह के संकट में जो फरासीसियों ने साहस के साथ खड़े हो कर धैर्य छोड़ दिया तो उसका दायित्व सब से अधिक इंगलैंड के ऊपर है। घोर शत्रुता के भाव से इंगलैंड ने ही फरासीसी धरती को उच्छिन्न कर देने के लिये बहुत सा धन व्यय किया है। इस पर भी जो इंगलैंडेश्वर की इच्छा फरासीसी साधारण तंत्र के विरुद्ध नहीं है और शांति स्थापन की कामना है तो

इस बात की चेष्टा से विरत होने का कौन सा कारण है ? यह बात नहीं है कि ब्रितानियापति किसी जाति की शासन नीति में हस्तक्षेप करना असंगत न समझते हों। फिर हमारी ही शासननीति में हस्तक्षेप करने के लिये उनके पास कौन सा कारण है सो मेरी समझ में नहीं आता। आपका हमारी शासननीति में हस्तक्षेप करना बड़ी आपत्ति की बात है, ऐसा होगा ही नहीं और हो भी तो क्यों ? आज यदि कोई बाहरी शक्ति इंगलैंड के पहले पदच्युत किसी राजवंश को ला कर इंगलैंड के सिंहासन पर फिर बैठाने की चेष्टा करे, तो क्या यह अनधिकार चर्चा इंगलैंडेश्वर और उनकी प्रजा मान लेगी ? ”

पत्र पाते ही लार्ड ग्रन क्रुद्ध हो उठे। उत्तर में फ्रांस को लिखा गया कि—“ जेकोबिनों से समस्त राज्यों की रक्षा के लिये इंगलैंड ने युद्ध घोषणा की थी, और समराग्नि फिर जल्दी ही भड़केगी ?” नेपोलियन धीर पुरुष था, इसने कहा कि इस उत्तर से फरासीसियों में एकता बढ़ेगी और संसार के निःस्वार्थ लोग अवश्य उससे सहानुभूति करेंगे। और जो इंगलैंड युद्ध माँगता है तो क्या डर है। समर के लिये मैं भी यावज्जीवन प्रस्तुत हूँ। इस तरह अंग्रेजों और फरासीसियों की लड़ाई आपुस में बदी गई। यद्यपि समस्त युरोप के राजा फ्रांस में फिर बार्बोन वंश को राजसिंहासन दिलाने के लिये संकल्प कर चुके थे, किंतु डेढ़ करोड़ अंग्रेज तीन करोड़ फरासीसियों को जीत लेंगे यह संभव नहीं जान पड़ता था।

चारों ओर रणभेरी बजने लगी। टेम्स से डेन्यूब तक सेनाएँ

सजाई जाने लगीं। अनेक फरासीसी बंदर अंग्रेजी नौसेना ने परिवेष्टित कर लिए। जान पड़ता था फ्रांस तथा फरासीसी जाति को अब अंग्रेज धूल में मिला छोड़ेंगे, संकल्प भी उनका ऐसा ही था। फरासीसी सीमाओं पर तीन लाख शत्रु दल एकत्र हुआ और लट्ठ के बल फ्रांस की गद्दी पर बार्बोनवंशीय राजा को बैठाने के लिये व्याकुल हो उठा। नेपोलियन भी आत्मरक्षा के यत्न सोचने लगा।

इंगलैंड के अच्छे अच्छे लोग नेपोलियन का पक्ष समर्थन करते थे, क्योंकि उसकी बात ठीक थी, वह शांति चाहता था और इंगलैंड उच्छृंखलता पर उतारू था। इनका प्रतिवाद इतना बढ़ा कि खुल्लमखुल्ला धुआँधार वक्तृताएँ होने लगीं। फाक्स, शेरिडन, लार्ड एरस्किन, ड्यूक आफ् बेडफोर्ड, लार्ड हालेंड इत्यादि इंगलैंड की इस नीति का विरोध करने लगे। इंगलैंड की महासभा में जितना प्रतिवाद इस युद्ध का हुआ है और किसी बात का इतना प्रतिवाद आज तक देखने में नहीं आया। ३ फरवरी को (वि० १८५७ में) वृटिश पार्लियामेंट में मिस्टर डूंडसे ने इस विषय में सरकार का पक्ष समर्थन किया, और फाक्स प्रभृति उक्त सत्य और शांति के प्रेमियों ने अग्निमयी वक्तृताओं द्वारा घोर विरोध किया, किंतु इनकी कुछ न चली, २६५ मतों से गवर्नमेंट का पक्ष विजयी हुआ।

नेपालियन ने जब इंगलैंड से शांतिस्थापन का प्रस्ताव किया था, तभी एक पत्र आस्ट्रिया को भी लिखा था, लेकिन आस्ट्रिया नरेश ने यही उत्तर दिया कि जब तक मैं अपने साथी इंगलैंडेश्वर से परा-

मर्श न कर लूं कुछ उत्तर नहीं दे सकता। उधर इंगलैंड ने बिलकुल झूठी बातें प्रकाशित कर के नेपोलियन को झगड़ालू सिद्ध करते हुए बदनाम करना आरंभ किया। इंगलैंड का मंत्रि-मंडल अपने दोषों को छिपाने के लिये यह प्रगट करने लगा कि नेपोलियन युद्धप्रेमी और उच्च अभिलाषाओं से प्रेरित हो युरोप की बृहत् भूमि में रक्तपात करने को उद्यत है। पाठक स्वयं देख सकते हैं कि यह अपराध नेपोलियन को लगाना कहाँ तक सत्य और धर्म्मानुकूल था। आस्ट्रिया के आर्क ड्यूक ने भी शांति का पक्ष लिया, उसकी भी इंगलैंड के अंग्रेज धर्म्म-प्रेमियों की भांति हार हुई।

अब नेपोलियन को ज्ञात हो गया कि यूरोप में महाभारत का अभिनय निश्चित है। उधर यूरोप के सब रजवाड़े सेना एकत्र करने लगे। वे समझते थे कि फ्रांस की इतनी धन जन की हानि हुई है कि अब उसे हमारे पैरों तले पगड़ी रखनी होगी। नेपोलियन प्रबंध करने लगा, क्योंकि उसने बिना युद्ध अपना किसी तरह निस्तार न देखा। बार्बोनवंशवालों ने पहले नेपोलियन को धन से मोल लेना चाहा, जब इस काम में कृतकार्य्यता न हुई, तो ऋषितुल्य नेपोलियन को छलने के लिये एक 'डचेस अप्सरा भेजी, लेकिन नेपोलियन इसके वश में न आया और कुछ दिन पीछे पता लगने पर इसने उसे निकाल दिया। इस तिलोत्तमा ने जोसेफेनी से कहा कि यदि नेपोलियन बार्बोन वंश को फिर गद्दी पर बिठा दे तो उसका एक कीर्त्तिस्तंभ निर्माण करके स्तंभ में राजमुकुट के ऊपर नेपोलियन को खड़ा किया जाय। जोसेफेनी ने यह बात नेपोलि-

यन से कही, क्योंकि इसका मन भी राजकीय पक्ष की ओर इसके कथन से लुढ़क गया था, पर नेपोलियन ने उत्तर दिया कि—"जोसे-फ़ेनी ! तुमने यह क्यों न कह दिया कि 'मेरा' शव उसके पैर तले सोढ़ी की भाँति क्यों न बने ?"

इस तरह संवत् १८५७ विक्रमीय में युरोप में घोर संग्राम की आयोजना होने लगी। एक ओर केवल फ्रांस, दूसरी ओर युरोप के प्रायः सभी रजवाड़े हुए। इन सब का नेता इंगलैंड बना और नेपो-लियन का दर्प चूर करके फ्रांस के साधारणतंत्र या यों कहिए कि फ्रांस देश और पेरिस राजधानी को मिट्टी में मिलाने का दृढ़ संकल्प सारे युरोप ने निर्विवाद रूप से कर लिया।



नवाँ अध्याय

मारेंगो की लाड़ई।

जब नेपोलियन ने देखा कि फरासीसी सीमाओं को घेरे हुए शत्रु की जल-थल सेना बकासुर की भाँति मुँह फैलाए खड़ी है; इंगलैंड फ्रांस देश के भीतरी शत्रुओं को भी उत्तेजित करने के अर्थ अस्त्र शस्त्र की सहायता देने में तत्पर हो रहा है; देश के वाणिज्य को घोर आघात पहुँच रहा है; फ्रांस की उत्तरी सीमा पर मार्शल क्रे डेढ़ लाख का बल लिए पड़ा है; और पूर्व दक्षिण सीमा पर आस्ट्रीयन मार्शल मेलास एक लाख चालिस हजार की चतुरंगिणी सेना के संग समर के लिये आकांक्षी खड़ा है; सारांश यह कि फ्रांस के नभमंडल को शत्रु सैन्य घेर रही है, तब हार कर इसने भी समर आयोजना आरंभ कर दी। देखते देखते डेढ़ लाख फरासीसी सेना संगृहीत हो गई और वृद्ध सेनापति मोरो के हाथ में समर्पित हुई। यह सब सुशिक्षित सेना थी। बाकी साठ सहस्र अशिक्षित सैन्य जिनमें दो तिहाई तो नए रंगरूट होंगे, नेपोलियन ने अपने हस्तगत की। इस तरह एक बार फिर घोर समर की तय्यारी दोनों ओर से हो गई।

एक लाख चालीस सहस्र अनीकनी द्वारा मेलास (आस्ट्रियन सेनाधिप) इटाली के सब मार्गों पर नाका रोके पड़ा था, नेपोलियन ने अपनी साठ सहस्र अशिक्षित सेना से इसका सामना करना सहसा उचित न समझ, दूसरे ही मार्ग का अवलंबन किया।

यह आल्पस की पहाड़ी पार करके आस्ट्रिया पर पीछे से आक्रमण करने का व्रती हुआ। इसने पहाड़ पर जा कर सेना के अड्डे, पड़ाव तथा अस्पताल स्थापित किए। बेकाम तोपों और गाड़ियों की मरम्मत करने को पहाड़ी लोहार बढ़ई आदि कारीगर लगा दिए। स्थान स्थान पर रसद और अस्त्र-शस्त्र का भांडार जमा किया। रोटी, मद्य आदि किसी बात की कमी न रखी। ये सब काम इसने ऐंद्रजालिक खेल के समान कुहुक दंड हिला कर झटपट ठीक कर लिया और तब सेना ले कर वह आप आगे बढ़ा। शत्रु दल को ये समाचार मिले, लेकिन पहाड़ी मार्ग ऐसा दुर्गम और दुर्भेद्य था कि उन्होंने विश्वास न किया। विश्वास करने की बात भी न थी। पहाड़ी सघन जंगल; एक मनुष्य के पैर धरने को भी कठिनाई से संकीर्ण मार्गों में जगह न थी। एक ओर सैकड़ों गज ऊँची पहाड़ की भीत तथा दूसरी ओर हजारों फुट नीचा अँधेरा गर्त, बीच में हो कर एक फुट से भी छोटे मार्ग; फिर कहीं चढ़ाव कहीं उतार, कहीं झरने, कहीं नदी, कहीं नाले; मनुष्य तो मनुष्य; वन के पशु भी ऐसे मार्ग में हो कर जाने से आशंकित होते थे। लेकिन नेपोलियन के अदम्य साहस के आगे अनहोनी बात तो कुछ थी ही नहीं।

पहली मई (वि० १८५७) को तूलारी से नेपोलियन ने रणयात्रा की। दो इंजीनियरों द्वारा मार्ग की परीक्षा और यथासंभव उसका सुधार कराया। परंतु सब तो सब, तोपों का उतार चढ़ाव पर होकर, उपत्यका और अधित्यका फलाँगते हुए ले जाना खेल न था। कई जगह घोड़ों के चमक जाने से इसके कई सवार रसातल

में जा रहे, उनकी हड्डी तक देखने को न मिली, पर नेपोलियन हिम्मत नहीं हारा और बराबर अग्रसर होता गया। समस्त सवार पैदल चलते थे, सामान पहाड़ी गधों पर लादा था, तोपों में रस्से बाँध बाँध कर खींचते जाते थे। अंततः बड़े कष्ट के साथ दुरूह मार्ग तय करते करते फरासीसी सेना आयोस्ता नदी की भूमि पर होकर आगे बढ़ी। मार्ग की कठिनाई यहाँ भी कम न थी, परंतु आगे बढ़ कर वे देखते हैं तो नदी के ऊपर प्रकांड पहाड़ की चोटी पर आकाश से बातें करता हुआ एक गढ़ है, इसके चारों ओर चातुरी के साथ तोपें इस तरह सज रही हैं कि आगे बढ़ना कठिन है। घाटी से उतर कर एक शिला की आड़ से दुर्बीन लगा कर नेपोलियन ने देखा तो पहाड़ की चोटी पर गढ़ से भी ऊँची एक ऐसी जगह देख पड़ी जहाँ पर शत्रु का गोला नहीं पहुँच सकता था। चुपचाप नेपोलियन ने इसी स्थान पर अपनी सेना दौड़ा दी। आस्ट्रियनों ने आश्चर्य्य के साथ देखा कि पैंतीस सहस्र सेना उनकी आँखों मे धूल डाल कर निकल गई। नेपोलियन थका था, एक शिला पर लेटते ही अचेत हो कर सो गया।

उधर गढ़ पर से सेनापति ने दुर्बीन लगा कर देखा तो वह विस्मित हो गया। उसने सेनापति मेलासे को संवाद भेजा कि अबारीडो पहाड़ी की चोटी के सामने होकर अनुमान पैंतीस सहस्र फरासीसी पैदल और चार सहस्र सबार आगे बढ़ गए हैं, किंतु तोपें साथ नहीं ले जा सके। तोपों का लाना इस जगह असंभव है। इधर तो वह यह बात लिख रहा था, उधर आधी तोपें और उनका

सामान सुरक्षित स्थल पर आ भी चुका था, रात होने पर खड़का रोकने के लिये पहियों में कपड़ा बाँध मार्ग में घास पात बिछा कर बाकी तोपें सब सामान सहित आ पहुँची। इस मोर्चे को नेपोलियन ने बड़ी जल्दी सर किया। पाँच ही सात दिन में यह फ्रांस के हाथ आया। यह समाचार सुन कर मेलासे को सीमातीत अचंभा हुआ और वह कहने लगा—"नेपोलियन कोई जादूगर या ऐंद्रजालिक है या क्या ? ऐसे दुर्गम स्थान में इतनी जल्दी ससैन्य तोप ले कर पहुँच जाना विचार के बाहर है, जैसे बाजीगर लकड़ी हिलाते ही आश्चर्यजनक कौतुक कर दिखाता है वैसे ही नेपोलियन ने किया है।"

शत्रुदल विस्मित और चिंतित था ही, नेपोलियन भी चिंताहीन न था। अशिक्षित सेना भी बहुत थोड़ी, सामना बलिष्ट शत्रु का, फिर चिंता क्यों न हो। परंतु इसकी चिंता प्रकट न होने पाती थी। इसने अपनी सेना की दलबंदी की, और स्थानांतर में इन दलों द्वारा शत्रु का मार्ग सर्वत्र रूँध लिया। वह जानता था कि तुरंत ही शत्रुदल के साथ तुमुल संग्राम होनेवाला है, अतः उसने सेनापति मोराट को लिख दिया कि—"आठ या नौ तारीख को सोलह या सत्रह सहस्र शत्रु सेना तुम्हारे ऊपर आक्रमण करेगी। इस लिये तुम्हें स्टावेलो नदी के पास अपनी सेना समाविष्ट रखनी चाहिए।" यह बात यथार्थ ही हुई। अट्ठारह सहस्र आस्ट्रियन सेना मांटेवेलो नामक स्थान पर फरासीसी सेनापति लेंस के सामने आई। युद्ध आरंभ हो गया। उस समय लेंस के पास केवल आठ सहस्र नासे

थी, उसी से इसने अठारह सहस्र दल पर आक्रमण किया। आठ बजे रात तक तो ठीक युद्ध होता रहा। तीन हजार फरासीसी सेना मारी गई, परंतु अंत में आस्ट्रियन दल के पैर उखड़ गए, और छः हजार आस्ट्रियन सिपाही फरासीसियों ने बंदी किए। इसी युद्ध-विजय के उपलक्ष में लेंस को 'ड्यूक आफ मांटेवेलो' की उपाधि फ्रांस-सरकार से मिली। यह उपाधि लेंस को वंशानुगत दी गई थी। किंतु आस्ट्रियन दल एक दम हटा नहीं। मेलासे नेपोलियन पर आक्रमण करने के लिये विपुल आयोजना करने लगा और ता० १४ जून को प्रभातकाल में वह सात सहस्र सवार, तेंतीस सहस्र पदाति, और दो सौ तोपें ले कर फरासीसी सेना पर फिर चढ़ दौड़ा। फरासीसियों के पास बीस सहस्र का बल था, उसमें से भी छ सहस्र का एक दल सेनापति देशाई के अधिकार में समर क्षेत्र से पंद्रह कोस के अंतर पर पड़ा था। देशाई तोपों का गर्जन और गगनव्यापी धूम्र देख कर तुरंत चारपाई से कूद पड़ा और सेना तय्यार करके अपने साथियों की सहायता को चल पड़ा; क्योंकि इसे शंका हो गई थी और यह शंका ठीक ही थी। यहाँ युद्ध आरंभ हो गया था। जब तक देशाई पहुँचा तब तक फरासीसियों को बड़ी हानि उठानी पड़ी। एक तरह पर फरासीसियों के पैर उखड़ चले थे। शत्रुदल इन्हें बहुत पीछे हटा चुका था। शत्रुसेनाधिप मेलासे अपनी विजय निश्चय जान अपने निवेश में चला गया और विजय घोषणा का काम अपने साथी 'जैके' के ऊपर छोड़ गया। लेकिन वह जानता

था कि पराजित नेपोलियन शीघ्र ही आक्रमण करेगा।

परंतु हार जीत जिस क्षण में निर्णय होने को थी, उसी क्षण देशाई अपनी सेना ले कर आ पहुँचा और कहने लगा-"हार तो हो चुकी, सिवा हार में सम्मिलित होने के मुझे और कुछ होता नहीं दीखता"। नेपोलियन बोला—"नहीं, निश्चय मैं जीतूँगा। जल्दी आक्रमण करो"। यह कह कर नेपोलियन ने सेनापति कोलरमैन को अपने सवार ले कर आस्ट्रियन सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। इधर वीरों को उत्साह दिया गया। उत्साहवर्द्धक वक्तृता और कुमक से उत्साहित हो फरासीसियों ने फिर एक बार बड़े वेग से आगे पैर बढ़ाया और शत्रुदल को जीत कर छोड़ा। लेकिन इस समय एक गोली सेनापति देशाई की छाती में ऐसी लगी कि वह केवल यह कह कर स्वर्गवासी हो गया कि—"प्रथम कौंसल से कह देना कि मैं एक यही दुखः ले कर इस लोक से जाता हूँ। यात्रा करने के पहले मैं कोई स्मरणीय कार्य न कर पाया।" नेपोनियन को इस सेनापति के मरने का बड़ा दुःख हुआ, लेकिन उस समय बात करने का भी अवसर न था। नेपोलियन ने कहा था—"हा! वीर देशाई। यह विजय बहुत मँहगी पड़ी।"

यह युद्ध बारह घंटे होने पर फरासीसियों की जय और आस्ट्रिया की पराजय हुई। इतने सैनिक आहत हुए थे कि सब चिकित्सालय भी न भेजे जा सके, अनेको वहाँ ही धरती के हवाले किए गए। रात में आस्ट्रियन दल में समर सभा बैठी और नेपोलियन के पास एक दूत भेजा गया कि 'यदि आप हम लोगों को बंदी न करें तो

हम देश चले जाँय।' नेपोलियन ने कहा—'अच्छा, जो तुम इटाली छोड़ कर अपने देश चले जाओ तो हम बाधा न देंगे।' १ मई को पेरिस से नेपोलियन युद्ध के लिये निकला था और उसने १४ जून को शत्रु को एक दम हरा कर इटाली से निकाल दिया।

यहाँ से नेपोलियन मिलन गया। वहाँ दस दिन रह कर उसने राजनैतिक संस्कार किया, पो नदी के किनारे अस्सी सहस्र सेना के ऊपर सेनापति मेसानो को नियत कर के यहाँ का भार उसको सौंपा। २४ जून को नेपोलियन पेरिस को ओर मुड़ा, मार्ग में सेनापति कोलरमैन की पत्नी गाड़ी पर अपने पति के पास जाती मिली, इसने उसके पति की वीरता का बखान कर के उसे बहुत आनंदित किया। मार्ग में नेपोलियन के सहचर बूरे ने इसकी प्रशंसा कर के कहा—"आपने संसार में बड़ा नाम उपार्जन किया है।"

नेपोलियन बोला—'हां, पर ऐसा ही और भी युद्ध जीतूँ तो मेरा नाम आनेवाली संतान स्मरण कर सकेगी।'

बूरे-"आपने बाकी क्या रक्खा है ? आगे आनेवाली संतान के स्मरण करने योग्य गौरव प्राप्ति में अपने कोई कसर नही छोड़ी।"

नेपोलियन—'हां ? आप तो बड़े उदाराशय हैं, पर देखिए, जो कुछ मैंने दो वर्ष में किया है, यदि मैं कल मर जाऊँ, तो यह कीर्त्ति इतिहास के एक पृष्ठ को भी न भर सकेगी।'

विजयप्राप्त नेपोलियन के पेरिस आने पर बड़ा आनंद मनाया गया। 'नेपोलियन दीर्घजीवो हों' की ध्वनि गगन में गूँजने लगी। प्रजा ने इसे अभिनंदनपत्र प्रदान किया। प्रथम कौंसल होने के

पीछे चार ही मास में नेपोलियन ने गिरे हुए फ्रांस को उन्नति के उच्च शिखर पर बिठला दिया।



दसवाँ अध्याय

होहेनलिंडेन का युद्ध, फरासीसी बिजय, इंगलैंड के साथ संधि

मोरेंगो का युद्ध हारने का समाचार वायना (आस्ट्रिया) पहुँचने के दो दिन पहले ही, फ्रांस के साथ समरानल जलती बनाए रहने के लिये इंगलैंड ने प्रयत्न करना आरंभ कर दिया और आस्ट्रिया के साथ नई संधि की। इसके अनुसार पांच करोड़ फ्रैंक इंगलैंड ने आस्ट्रिया को उधार दिए और जब तक युद्ध चलता रहे तब तक का ब्याज भी न लेने की शर्त हुई। साथ ही यह भी शर्त हुई कि आस्ट्रिया बिना इंगलैंड की अनुमति लिए फ्रांस से संधि न कर सकेगा, और न युद्ध ही बंद कर सकेगा। आस्ट्रिया बड़ी कठिनाई में पड़ा, इधर नेपोलियन के वायना पर चढ़ आने का भय, उधर संधि का भंग करना दुस्तर। आस्ट्रियन सम्राट फर्डीनेंड की इगलैंडेश्वर तृतीय जार्ज के साथ इस प्रकार की संधि करने का हाल नेपोलियन से छिपा न रहा, यद्यपि फर्डीनेंड ने यह संधि बहुत गुप्त रीति से की थी। आस्ट्रियन मंत्रिमंडल ने फ्रांस के प्रस्ताव पर उत्तर दे दिया कि फ्रांस को पहले इंगलैंड से संधि करनी चाहिए, बिना उसकी सम्मति के यह सरकार फ्रांस के साथ कोई संधि नहीं कर सकती। नेपोलियन ने कहा—"अच्छा यों ही सही, पहले इंगलैंड के ही साथ संधि करूँगा।" इंगलैंड ने माल्टा और मिस्र में फरासिसियों की रसद तथा सेना के जाने का मार्ग

रोक रखा था। यह समुद्र की रानी बनी हुई थी। फ्रांस को यह बात सह्य न होती थी। संधि की बाबत दो महीने तक व्यर्थ वाक् वितंडा होता रहा, आस्ट्रिया का मन फ्रांस से मेल करने को उत्सुक ही नहीं बरन व्याकुल था, लेकिन ऋण पाश में बँधा हुआ वह बेबश था और इंगलैंड क्रूरता से हटने को तय्यार न था। नेपोलियन ने देखा कि हमें बातों में लगा कर आस्ट्रिया फिर सैन्य संग्रह कर रहा है।

शीतकाल आ गया था, पर नेपोलियन को भरोसा था कि प्राकृतिक प्रतिबंध मेरा कुछ न कर सकेगा, अतः यह भी उद्योग करने लगा। उधर आस्ट्रिया नरेश ने अपने द्वितीय भ्राता आर्कडयूक जान को प्रधान सेनापति बनाया। इधर फरासीसी सेना का बहुत सा अंश बूरे को समर्पण किया गया और यह तय हुआ कि सेना मिलसियो नदी के तट पर इटाली में रह कर आस्ट्रिया पर आक्रमण करे और सीधे आस्ट्रिया पर धावा हो। इस काम में सहायता देने के लिये उसने सेनापति मेकडानल्ड को इस भारी सरदी में ही श्लूगेन गिरिशृंग पर होकर एल्प्स पहाड़ पर भेजा। तीसरा सेनापति मोरो तुरंत ससैन्य राइन नदी के किनारे को रवाना हुआ। अइजर और राईन नदियों के बीच की धरती कई कोसों तक सनोबर और पाइन के सघन पेड़ों से अच्छादित थी। इस सघन जंगल में सिवा दो चार जंगली झोपड़ों के मनुष्य का कहीं नाम न था, इसी जगह का नाम है 'होहेनलिंडेन' है। यहां ही सेनापति मोरो ६० सहस्र सैन्य लेकर ३ दिसंबर को आर्कडयूक जान की ७० सहस्र सेना के सम्मुख हुआ।

म्यूनिच की उच्च अट्टालिकाओं पर आधी रात को एक ओर से सेनाओं ने आक्रमण करने के लिये पैर उठाया। एक लाख तीस सहस्र सेना में घोर संग्राम होने लगा। रात भर समर होता रहा। प्रभात काल में जब चिड़ियाँ परमात्मा के स्मरण में प्रभाती गाने लगीं, आकाश में लालिमा छा गई तब फरासीसियों ने बिजली की तरह झपट कर शत्रु दल पर जोर से टूटना आरंभ कर दिया और आस्ट्रियन सेना के छक्के छूट गए। शत्रु दल डेन्यूब नदी के किनारे किनारे भागता जाता था, फरासीसी सेना पीछे से इन पर प्रहार करती चली जाती थी। इस तरह पीछा करते फरासीसी सेना आस्ट्रिया की राजधानी वायना से ३० कोस पर जा रही। सम्राट् ने संधि की प्रार्थना की। नेपोलियन ने मान लिया। यही राइन की संधि के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस संधि के द्वारा युरोप के समस्त राज्य आवद्ध हो गए, किंतु इंगलैंड सम्मिलित न हुआ। इस संधि के द्वारा फ्रांस की राज्य सीमा निर्धारित हुई; अदिज पहाड़ फ्रांस और आस्ट्रिया का मध्यस्थ माना गया। जितने इटालियन राजनैतिक बंदी आस्ट्रिया के कारागार में थे सब को उसे छोड़ना पड़ा। यह भी शर्त हुई कि नवीन साधारण तंत्र पर कोई हस्तक्षेप न कर सकेगा। जिसका शासन भार होगा उसी के हाथ में रहेगा।

अब तो अकेला इंगलैंड अहंकारपूर्वक सिर उठाए फ्रांस के वाणिज्य को ध्वंस करने लगा। नेपोलियन देश के भीतरी सुधारों में लगा रहा। बेलजियम और फ्रांस का संयोग करने के लिये एम्भहर घाटी खोद कर नहर निकाली गई। सीन नदी पर दो अच्छे

पुल बने, एल्प्स पहाड़ पर हो कर एक सुंदर सड़क निकाली गई। पदच्युत सैनिकों के डाके और उत्पात से प्रजा अत्यंत दुखी थी। नगर के बाहर के मार्ग और ग्रामों के रास्ते सर्वथा अरक्षित थे, अतः कठोर दंड और तीव्र नीरीक्षण द्वारा इन दस्युओं का मूलोच्छेद किया गया। जेकोबिन दल और राजकीय पक्षवालों के गुप्तचर नेपोलियन के प्राण हरने को फिरते थे। २४ दिसंबर १८०० (वि० १८५७) को जब यह एक नाटक मंडली में, जोसेफेनी के साथ, उसके आग्रह करने पर, जा रहा था, मार्ग में एक जगह बहुत सा स्फोटक रखा गया था, वह गाड़ी के पहिए से फूट उठा। इस से आठ मनुष्य मरे, ५० घायल हुए तथा सड़क के दोनों ओर के कई मकान नष्ट हो गए; पर नेपोलियन बच गया। इसके बचने के उपलक्ष में प्रजा ने बड़ा आनंद मनाया। नाटक में इसके पहुँचते ही लगातार करतलध्वनि द्वारा आनंद प्रकाश किया गया। एक बार इसकी चलती गाड़ी को खिड़की में गोली चलाई गई, जिससे गाड़ी चूर हो गई, पर नेपोलियन बच गया। ६३ से अधिक जाल नेपोलियन के मारने के लिये रचे गए थे।

इंगलैंड के कुव्यवहार से प्रायः सारे युरोप के राज्य असंतुष्ट थे, इस ने समुद्र पर अंधेर मचा रक्खा था। सब जहाजों की तलाशी ली जाती, जो आपत्ति करता उसी का सर्वस्व इंगलैंड सरकार के राजकोष का हो जाता। लोगों के कागज पत्र भी देखे जाते, तनिक भी फ्रांस का लगाव छुआव होता तो वह जहाज अवश्य ही इंगलैंड का आत्म स्वत्व हो जाता। फरासीसी मछुओं तक की नावें और

बजरे इंगलैंड लूट लेता था। इन अत्याचारों के कारण सारा युरोप इंगलैंड से रुष्ट हो रहा था। सेनापति नेलसन जहाज लिए समुद्र में फिरा करता और यही सब कौतुक किया करता था। विलियम पिट इस समय इंगलैंड के प्रधान आमात्य थे।

इंगलैंड की अनधिकार चर्चा सब के ही हृदय में सलने लगी। रूस, डेनमार्क तथा स्वीडन ने बाल्टिक सागर में कितने ही जहाज भेजे थे, इन्हें नष्ट करने के लिये अंग्रेजों ने एक बेड़ा रवाना किया था। आबूकर की खाड़ी में नेसनल ने नाम पाया था, अब इन्होंने डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन पर हाथ साफ किया। युरोप की सम्मिलित जल सेना से जो युद्ध उक्त राजधानी के पास हुआ, उस में नेलसन ही विजयी हुआ। इस युद्ध से युरोपीय राज्यों के संधि बंधन टूट गए। इधर रूस का ज़ार नेपोलियन को आदर्श जानने वाला, पोल प्रजा के हाथ से मारा गया और उसका पुत्र अलक्षेंद्र गद्दी पर बैठाया गया। इसने सब से नाता तोड़ इंगलैंड से मैत्री जोड़ी।

नेपोलियन ने इंगलैंड की जनता का अनुकूल मत संग्रह करना आरंभ किया और वह समग्र युरोप की भी सहानुभूति उपार्जन करने में तत्पर हुआ। बोलोन के पास एक लाख फरासीसी सेना जमा हुई। नेपोलियन का विचार इंगलैंड जा कर संधि पर जोर देने का था और काम पड़ने पर उसे अंग्रेजी बेड़ों का सामना करने की भी चिंता थी। इसलिये डोवर की जलयोजक रेखा पार करने के लिये बहुत सी सेना और जहाज इकट्ठे करके वह इंगलैंड के आक्र-

मण की बाट देखने लगा। १८०१ (वि० १८५८) के अगस्त के प्रथम सप्ताह में नेलसन ने फरासीसी नौसैन्य पर आक्रमण किया, सोलह घंटे लगातार गोले बरसाने पर भी नेलसन फरासीसी नौकाओं और जहाजों का बाल बाँका न कर सका और हार कर हट गया, परंतु चुप न रहा। ता० १५ को ही फिर घोर संग्राम हुआ। अंग्रेजी जल-सैन्य परिचालक नेलसन और फरासीसियों में युद्ध आरंभ हुआ। इस बार अंगरेजी सेना चार भागों में विभक्त की गई थी। गोलों से बंदूक, बंदूक से संगीन और संगीन से तलवार की नौबत आ गई। अंततः अँगरेजी सेना को ही मार खा कर भागना पड़ा। अब अँगरेजों के चित्त ठिकाने आए और वे नेपोलियन से संधि करने के लिये प्रार्थना करने लगे। २१ अगस्त को संधि का खाका तय्यार हुआ, अँगरेजी दूत नेपोलियन की सेवा में तत्काल भेजा गया। दोनों ओर से संधि स्थापन की घोषणा होने पर चारों ओर आनंद मनाया जाने लगा और एक प्रकार नेपोलियन कुछ निश्चिंत हुआ। इसी संधि का नाम 'आमेंस' की संधि है। इस संधि से पिट और उसके दल का जी बहुत खिन्न हुआ। इस संधि के अनुसार मिस्र का उपनिवेश फरासीसियों को छोड़ना पड़ा। माल्टा फरासीसियों के ही अधिकार में रहा। यद्यपि अँगरेजों ने बहुत आपत्ति की, पर नेपोलियन ने नहीं माना। माल्टा संटों के और वाइटों के हाथ में सौंपा गया। मिस्टर फोक्स संधि होने के पीछे फ्रांस में स्टुअर्ट घराने के इतिहास के लिये मसाला एकत्र करने आए, इस अवसर पर इनका और नेपोलियन का बड़ा

प्रेम हो गया। नेपोलियन ने सब भाँति इनकी सहायता और खातिर की।

इन्हीं दिनों इटाली में भी, फ्रांस की भाँति तीन दल हो रहे थे। एक राजतंत्री, दूसरा प्रजातंत्री, तीसरा जेकोबिन। नेपोलियन की राय से यहाँ प्रजातंत्र स्थापित हुआ। नेपोलियन के कथनानुसार दस वर्ष के लिये जन साधारण तंत्र का एक सभापति (या अध्यक्ष) और एक सहकारी अध्यक्ष नियत हुआ। आठ सभ्यों की एक समिति संगठित हुई और ७५ प्रतिनिधियों की एक प्रतिनिधि सभा बनी तथा ३०० धराधारी, २०० वणिक और २०० धर्मयाजक तथा विद्वानों की एक साधारण (सप्तशती) सभा बनी। नेपोलियन इस शासन का प्रधान हुआ। इस तरह ३३ वर्ष की अवस्था में नेपोलियन एक साथ इटाली और फ्रांस दोनों का हर्त्ता कर्त्ता हुआ। यह सब प्रबंध 'लियंस' स्थान में हुआ था। यह चुनाव सर्व-सम्मति से हुआ, एक ने भी इस चुनाव के विरुद्ध हाथ नहीं उठाया। ३१ जनवरी को यहां का प्रबंध कर के नेपोलियन फ्रांस को लौट आया।

फ्रांस पहुँचते ही इसने अपने उपनिवेशों को बढ़ाना, सेना वृद्धि करना, जहाजों का बनाना, जल-बल का सुविस्तरित और दृढ़ करना आरंभ किया। शिक्षा का सुधार किया गया, नौ चिकित्सा-लय, एक वास्तु विद्यालय (Engineering College) स्थापित हुआ। उपाधियों, पदकों और सम्मानचिह्नों के देने की व्यवस्था राज के सब विभागों में की गई। लेकिन इसने किसी का गौरव

या सम्मान वंशपरंपरा या धन के कारण नहीं किया। सर्वथा गुण गौरव के ही आधार पर इसने प्रतिष्ठा प्रदान करने का नियम स्थापित किया। यद्यपि नेपोलियन वीरता प्रेमी और स्वयं एक महा-वीर था, परंतु यह पशुबल की अपेक्षा मस्तकबल को सदा अधिक सम्मान प्रदान करता था। ८ मई सन १८०२ (वि० १८५९) को फ्रांस के साधारण तंत्र ने नेपोलियन को फिर १० वर्ष के लिये प्रथम कौंसल चुनने का प्रस्ताव ग्रहण किया। लेकिन कौंसल आफ स्टेट के नाम से एक विशेष राजपरिषद बैठी, इसमें दो प्रस्ताव जनता के समक्ष उपस्थित करना तय हुआ। (१) नेपोलियन आजीवन के लिये प्रथम कौंसल पद पर वरण किया जाय। (२) प्रथम कौंसल को अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार दिया जाय।

नेपोलियन न दूसरे प्रस्ताव का घोर प्रतिवाद किया, क्योंकि वह समझता था कि किसी के उत्तराधिकारी को प्रधान शासक बनाना एक व्यक्तिक यथेच्छाचारी राज्य स्थापन करना है जिसके हटाने के लिये इतना खून खराबा हुआ। नेपोलियन कहने लगा— "तुम किसे मेरा उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहते हो? मेरे भाइयों को? फ्रांस ने मेरा शासन सिर झुका कर स्वीकार किया, पर यह कौन कह सकता है कि लूसियन या जोसेफ को भी इसी प्रकार फ्रांस अपना शासक मान लेगा? मेरा चुना हुआ मेरा उत्तराधिकारी कौन कह सकता है कि सर्वप्रिय होगा या न होगा? चौदहवें लुई की इच्छा के प्रति तो किसी ने सम्मान न दिखलाया

तो अब मेरे मरने पर मेरी इच्छा क्यों सम्मानित होगी ? मुरदे में कुछ भी क्षमता नहीं होती। " पाठक नेपोलियन के सदाशय को इन शब्दों से अच्छी तरह समझ सकते हैं। इस प्रतिवाद पर दूसरा प्रस्ताव परित्यक्त हो कर पहले प्रस्ताव पर मत गिने गए तो नेपोलियन को आजन्म के लिये कौंसल बनाने के पक्ष में पैंतीस लाख उनहत्तर हज़ार मत और इसके विरुद्ध आठ सहस्र से कुछ ऊपर हुए। बस बहुमत से नेपोलियन आजन्म के लिये फ्रांस का प्रधान शासक हुआ। नगर में बड़ा आनंद मनाया गया। इस उत्सव के उपलक्ष में एक नाटक खेला गया। इसमें इसके बहिन भाइयों ने एक बड़ा अश्लील खेल खेला, जिससे नेपोलियन बहुत ही विरक्त हुआ। यवनिका पतन होने पर इसने उनकी कठोर विभर्त्सना की और कहा कि—"मैं देश में सदाचार फैलाने की चेष्टा करता हूँ और मेरे भाई बहिन रंगमंच पर नंगे नाचते हैं यह कैसे अचंभे की बात है।" इससे नेपोलियन का सदाचार प्रेम भी प्रजा के स्वत्वों तथा प्रेम के समान प्रकट होता है।

नेपोलियन की जीवनी में कोई स्वार्थपरायणता या कदाचार का प्रमाण नहीं मिलता। यदि उसे कुछ इच्छा थी तो उच्चस्थान की प्राप्ति की। इस बात को ही जान कर एक दिन जोसेफेनी ने कहा था कि तुम्हें लोग राजा बनाएँ तो तुम राजपद स्वीकार न करना। इसमें जोसेफेनी का कुछ स्वार्थ था, वह जानती थी कि राजा होने पर यह उच्चवंशीया किसी राजकुमारी से व्याह करेगा और मुझे परित्याग कर देगा! स्त्री का परित्याग करना फ्रांस में साधारण बात

थी, पत्नी केवल अन्य अनेक सुख की सामग्री की भांति सुख दुःख में साथ देने के लिये ही एक चीज समझी जाती थी। दांपत्य-बंधन कोई दृढ़ धर्मबंधन न था। परमात्मा भारत को इस दोष से बचावे।



ग्यारहवाँ अध्याय

आमेंस का संधिभंग, नेपोलियन का सम्राट् होना इंगलैंड, रूस, आस्ट्रिया प्रभृति की संयुक्त सैन्य का पराजय

नेपोलियन के एक प्रकार से राजा हो जाने से युरोप के सभी राजा प्रसन्न हुए। इन लोगों ने समझा कि अब नाम का ही प्रजातंत्र रहेगा वास्तव में एक व्यक्तिक राज्य फ्रांस का भी होगा और राज-पद पर कुठाराघात होना बंद हो जायगा। इंगलैंड के प्रधान आमात्य न्यूटन, रूसराज, आस्ट्रिया के आर्कड्यूक और सबसे अधिक नेपिल्स की रानी केथराइन ने आनंद प्रकाश किया और नेपोलियन को बधाई दी। केथराइन ने यहाँ तक अपने पत्र में लिखा था कि—'मैं अपने बच्चों को तुम्हारा जीवनचरित्र अच्छी तरह देखने का अनुरोध करूँगी, जिसमें वे जाने कि कैसे ऊँचा बना जाता है।'

इधर फ्रांस की उन्नति के साथ इंगलैंड का वाणिज्य नष्ट होने लगा। फरासीसी अनुपम नेता की शिक्षा और सहायता से मनुष्य हो गए और गधों की तरह विदेशी पदार्थों का प्रेम करना उनमें से जाता रहा। यह बात इंगलैंड से न देखी गई। उसके 'रूई और लोहे के सामान' की बिक्री की कमी ने उसे विचलित कर दिया। अतः इंगलैंड ने नीतिविरुद्ध, संधि के प्रतिकूल, सत्य और धर्म्म परित्याग कर के फरासीसी स्वार्थों को हानि पहुँचाना आरंभ किया। पहले की भाँति अपने जल बल के अभिमान में उसने दस्युओं की तरह फरासीसियों को समुद्र पर लूटना आरंभ किया। एक बार एक फरासीसी बणिक को बुरी तरह अंगरेजों ने लूटा। यह बात

नेपोलियन से न सही गई। इसने फ्रांसस्थ अंगरेजी दूत को बुला कर बहुत झाड़ा और सब तरह से ऊँच नीच समझा कर कहा कि-'तुम शांति चाहते हो या युद्ध ? सच सच कह दो, यदि समर का प्रेम है, तो बोलो मैं भी तय्यार बैठा हूँ। जो आस्ट्रिया से मेरा युद्ध हो तो तुम्हें वायना का मार्ग खोलना पड़ेगा, माल्टा और अलक्जेंद्रिया तुरंत खाली करना होगा। मेरी और तुम्हारी लड़ाई हो तो तुम अपने सहायक राजाओं को मिला लेना और दूसरी तरह मेरे मार्ग में तुम कंटक होगे तो मैं भी तुम्हारे मार्ग में बाधा डालूँगा। आपका बल बहुत है, आपसे लड़ने में मुझे बड़ी हानि होनी संभव है, यह मैं समझता हूँ; पर आप जो जल के अधीश्वर हैं, तो मैं भी थल युद्ध की शक्ति रखता हूँ। आपके देश के समाचार पत्र हमें व्यर्थ गालियां देंगे और हमारे कुलांगार स्वदेशविरुद्ध वहाँ बैठ कर विष उगलेंगे, यह मुझसे न सहा जायगा।'

इस समाचार को ले कर अंगरेज राजदूत लार्ड ह्विटवर्थ इंगलैंड पधारे, परंतु अर्थलोलुप इंगलैंड ने किसी बात पर ध्यान न दिया। अंगरेज राजदूत फ्रांस छोड़ गया। इंगलैंड में पुकार होने लगी—"कहां है वीर नेलसन! किधर गए वेलिंगटन? सब तय्यार हो कर, घमंडी युवक नेपोलियन के दाँत तोड़ो, जल्दी तय्यारी करो। यह नवाब धरामंडल को नररक्त से सींचने का प्रयासी है, बातों से माननेवाला देवता नहीं है।" पाठकों को विस्तृत इतिहास के पढ़ने से ज्ञात होगा कि इंगलैंड की यह वही बात थी कि 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'। यही नहीं, इंगलैंड ने यह समाचार पा

फरासीसी जहाजों और नावों को फिर पूर्ववत जोर से लूटना आरंभ कर दिया और कुछ फरासीसी वणिकों को बंदी भी किया।

इन बातों को सुनकर नेपोलियन आग बबूला हो गया, और उसने पुलिस के नाम आज्ञा निकाल दी कि 'फ्रांस में जितने अंगरेज हैं सब को पुत्र कलत्र सहित कारागार में डाल दो। यह इंगलैंड की प्रबल दुष्टता का बदला है।' इंगलैंड ने कहा कि—'तुमने निरपराधी अंगरेज पर्य्यटकों और वणिकों को बंदी किया है यह बहुत बुरा काम है'। नेपोलियन ने उत्तर दिया कि—'तुमने निरपराधी फरासीसी वणिकों को लूटा है यह अच्छा नहीं किया'। इंगलैंड ने कहा 'मुझे समुद्र पर इस बात का अधिकार है'। फ्रांस ने कहा 'मुझे स्थल पर वही अधिकार प्राप्त है जो तुम्हें जल पर।' इस तरह वाक्‌वितंडा बहुत बढ़ गया। इंगलैंड ने तो तय्यारी की ही थी, वह नेलसन और वेलिंगटन को गला फाड़ फाड़ पुकारने लगी। इधर फरासीसी सेना की तय्यारी भी बड़ी धूमधाम से होने लगी। फरासीसी तय्यारी इतनी विपुल और विकट हुई कि इंगलैंड का हिया हिलने लगा। रूस के जार ने बीच में पड़ कर शांति स्थापन का प्रयत्न किया। नेपोलियन ने यह बात मान ली, परंतु इंगलैंड का पक्ष ले कर रूस के मंत्रि-मंडल ने जो प्रस्ताव भेजे उन्हें एकांगी होने के कारण नेपोलियन न मान सका।

इधर फ्रांस में २०० जहाज बोलेन में निर्म्माण करके तय्यार रखना स्थिर हुआ, इनके द्वारा डेढ़ लाख पैदल, दस हजार सवार, ४ हजार तोपें इंगलैंड ले जाना ठीक हुआ। फ्रांस के पूर्व विपक्षी

भी अब फ्रांस के झंडे के लिये आ लड़ने को प्रस्तुत हुए। रण प्रबंध के लिये नया कर लगाया गया जिसे प्रजा ने सहर्ष शिरोधार्य्य किया। स्थान स्थान से जहाज और सेना आने लगी। पैरिस ने १२०, लिअंस ने १००, बोरडो ने ८४ तथा मारसेल्स ने ७४ जहाज राज को भेंट किए। इटाली ने ५० लाख फ्रेंक रण-पोत निर्म्माणार्थ भेजे। फ्रांस साधारण तंत्र के बड़े बड़े सभ्यों ने १२० तोपों सहित एक विशाल रण-पोत प्रदान किया। इतनी बड़ी समर आयोजना और फिर उसे वीर नेपोलियन के समान सैन्य परिचालक के अधीन जान कर इंगलैंड ही क्या सारा युरोप काँप उठा। इंगलैंड को अब ध्यान हुआ कि डोवर की जलरेखा, जो केवल १५ कोस चौड़ी है अनुकूल वायु पा कर फरासीसी जब चाहेंगे पार करके इंगलैंड को ध्वंस करने लगेंगे। इसलिये उसने भी अपने यहाँ नया कर लगाया और शत्रु के रूप के अनुरूप आयोजना आरंभ कर दी।

एक ओर इस तरह रण की तय्यारी होती थी, दूसरी ओर इंगलैंडस्थ बार्बोन-वंशीय और फ्रांस के भागे कुलकलंक नेपोलियन के प्राण लेने का घोर षड्यंत्र रचने लगे। इंगलैंड का कोश इनकी सहायता को मुक्त रहने लगा। फरासीसी पुलिस ने इनका पता लगाया और अनेकों को प्राणदंड तथा कारागारवास का दंड दिया गया। फ्रांस का सेनापति मोरो भी इस षड्यंत्र में पकड़ा गया था। इसे दया करके नेपोलियन ने प्राण-दंड न देकर निर्वासित किया। ड्यूक डियंगो भी इस षड्यंत्र में पकड़ा गया, यह बार्बोन-वंशी था और

अभिमानपूर्वक इसने कहा था कि मैं यवाज्जीवन नेपोलियन का विरोध करूँगा। जब इसे प्राणदंड की आज्ञा न्यायालय से हुई, इस ने नेपोलियन से भेंट करने की प्रार्थना की, पर न्यायालय ने यह स्वीकार न की, क्योंकि न्यायालय को ज्ञात था कि जो इसका नेपोलियन से सामना हुआ तो उदारहृदय नेपोलियन क्षमा कर देगा।

ड्यूक डियंगो के प्राण-दंड से युरोप के राजवंशों का क्रोध एक बार फिर नेपोलियन के विरुद्ध घोर तर भयानक रूप धर कर खड़ा हो गया। किंतु फ्रांसवासियों की श्रद्धा भक्ति नेपोलियन के प्रति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जाती थी, यहां तक कि फ्रांस की सारी प्रजा ने नेपोलियन को राजमुकुट से विभूषित करने का प्रस्ताव जोर से उठाया। नेपोलियन ने प्रजा का रुख देख कर युरोप के सब राज्यों में दूत भेज उनका मतामत मँगाया। रूस और इंगलैंड के साथ मनोमालिन्य होने के कारण इनके पास दूत नहीं भेजे गए। जिनके जिनके यहां दूत भेजा गया था सबने एक स्वर से साधारण-तंत्र को हटा कर नेपोलियन के सम्राट होने का प्रस्ताव सहर्ष समर्थन किया। फरासीसी सिनेट सभा के घोषणानुसार (विक्रमीय संवत १८६१) सन् १८०४ की १८ मई को नेपोलियन फ्रांस का सम्राट हुआ। समस्त सिनेट सभा के सदस्य सेंट क्लाउड वाले सौध में इकट्ठे हुए। नेपोलियन ने सब की अभ्यर्थना की। जोसेफेनी पति के पास उपस्थित थी। सिनेट सभा के प्रधान कंबेसियर ने नेपोलियन के सामने खड़े हो कर अभिवादन कर के सम्राटवत् उनका अभिनंदन किया।

तदनंतर समस्त उपस्थित प्रजा पुकार उठी—'सम्राट दीर्घजीवी हों'। 'महाराजा चिरंजीवी रहें'। नगर में भी यही जयध्वनि चारों ओर गूँज उठी।

जयध्वनि बंद होने पर सम्राट् नेपोलियन बोले—"जिससे देश का हित साधन हो उसी में मेरे सुखों का संबंध है। जिस प्रेम और विश्वास से आपने जो पद मुझे प्रदान किया, उसे मैं ग्रहण करता हूँ। आप लोगों ने मुझे और मेरे परिवार को जो सम्मान प्रदान किया है उसके लिये मुझे आशा है कि कभी आप लोगों को पछ-ताना न पड़ेगा। वंश अनुक्रम से राज-शासन विधि के परिवर्तन का अधिकार मैं प्रजावर्ग को ही सौंपता हूँ। जिस दिन हम लोगों में इतनी योग्यता न रहेगी कि हम प्रजा के विश्वास भाजन हों, उसी दिन मेरा संबंध अपने भविष्यत् वंशधरों से टूट जायगा। अतः पर यही सम्मान जोसेफेनी का किया गया, इसकी आंखों से आनंद के आँसू बहने लगे और वह कुछ उत्तर न दे सकी। नगर में आनंद मनाया गया। राज्याभिषेक की पूर्णाहुति रूप पोप का निमंत्रण हुआ। पोप पायस सप्तम, नेपोलियन के सुहृद थे, इनका अधिकार सुरक्षित रखने की चेष्टा नेपोलियन ने की थी, इससे ये और भी प्रसन्न थे। आज तक किसी राजा के अभिषिक्त करने को रोम छोड़ कर कोई पोप न आया था, परंतु पोप पायस सातवें ने अपने मित्र का निमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया। सिनेट सभा की घोषणा के कई मास पीछे रीत्यानुसार रोम के पोप द्वारा नेपोलियन राजगद्दी पर अभिषिक्त हुआ।

अभिषिक्त होने के पहले ही यह अपनी नौसैन्य (जलसेना), रणतरियों, रणपोता और नौकाओं को देखने गया। सारा सामान देखकर प्रसन्न होने पर इसने अपने सैनिक कर्म्मचारियों को लिजियन आफ् आनर (Legion of honour) की उपाधि प्रदान की। इसी दिन यह समुद्र के किनारे बैठे दूरवीक्षण यंत्र से देख रहा था कि इतने में कुछ फरासोसी रणतरियों पर अंग्रेजी नौसैन्य ने आक्रमण किया। परंतु इसकी रणतरियां मोर्चा मार कर बेलोन के बंदर में प्रविष्ट हो गई, इससे इसे बड़ी प्रसन्नता हुई। २६ अगस्त को पुनः अंग्रेजी नौसैनिकों और इसकी रणतरियों की मुठभेड़ हुई, इसमें ६० अंग्रेज घायल हुए और १२ मारे गए किंतु फ्रांस के केवल दो आदमी आहत हुए। इन दो छोटी घटनाओं से फ्रांस का दिल बढ़ने लगा और अंग्रेजों के जी दहलने लगे।

पोप के आने पर इसका गुप्त रीति से धर्म्मानुसार जोसेफेनी के साथ विवाहसंस्कार हुआ। इस पुनर्वार विवाह का कारण यही था कि पहले इसका विवाह धर्म्मानुसार न हुआ था, केवल रजिष्ट्री हुई थी, जैसा हम पाठकों को यथास्थान बतला चुके हैं। २ दिसंबर १८०५ को बड़े समारोह के साथ नेपोलियन का राज्याभिषेक संस्कार हुआ।

फ्रांस में इस तरह नेपोलियन का सम्मान और साधारण तंत्र का परिवर्त्तन देख कर लोंबार्डी का राजमुकुट नेपोलियन के मस्तक पर विभूषित करने के लिये इटालियनों ने उससे प्रार्थना की। तदनुसार २६ मई को मिलन के भजनालय में नेपोलियन का यह अभि-

षेक भी सानंद संपन्न हुआ। मिलन में एक महीना रह कर नेपोलियन ने सब प्रकार के प्रजा के सुख, सुबिधा और समुन्नति के प्रबंध किए और सब प्रकार से निश्चिंत हो कर वह फ्रांस लौटा। फ्रांस आ कर इसने शांति रक्षा के निमित्त एक बार इंगलैंड को पत्र लिखा, लेकिन इंगलैंडेश्वर ने तो कुछ उत्तर न दिया, पर मंत्रिमंडल ने यही उत्तर दिया कि-'महामहिमान्वित' इंगलैंडेश्वर शांति रक्षा के उत्सुक हैं परंतु महाद्वीप युरोप के अन्य राजाओं से, विशेष कर रूस राज्य से, परामर्श किए बिना कुछ उत्तर नहीं दे सकते।" नेपोलियन समझ गया कि युद्ध अवश्यंभावी है, इस लिये उसने यही कहा-'अच्छा एवमस्तु, जो होना है होने दो।'

सम्राट् नेपोलियन इटली से फ्रांस आते समय मार्ग में एक दिन सम्राज्ञी सहित मिलन के पास के किसी ग्राम में पैदल घूमते थे कि उन्होंने एक झोपड़ी देखी। वे उसीमें चले गए। वहां एक दीन दरिद्रा वृद्धा बैठी थी। इससे सम्राट ने पूछा- "तुम बड़ी दुःखिनी हो, भला माता, कितना रुपया हो तो तुम्हारा दिन सुख से कटे?" बुढ़िया बोली--"व्यर्थ की बात में क्या पड़ा है, इतना रुपया कहां धरा है कि मेरा दुःख दूर हो जायगा ?"

नेपो०—"माई, कहो तो सही, कितने रुपयों से तुम्हारा दुःख दूर हो सकता है ?"

वृद्धा—"चार सौ, महोदय, चार सौ। चार सौ फ्रेंक (चांदी का सिक्का) से अच्छी तरह काम चल सकता है।" नेपोलियन ने संकेत किया और निकटवर्ती चाकर ने ३०० मोहरें (सोने के

सिक्के) सामने डाल दीं। बुढ़िया ने कभी इतनी मोहरें देखीं तो थी ही नहीं, झुँझला कर बोली—"महोदय, क्यों हँसी करते हो, क्या तुम्हारे ठट्ठा करने को मैं ही गरीबिनी मिली हूँ। आप सरिस भद्रों का मेरे साथ ठट्ठा करना क्या शोभा देता है ?"

जोसेफेनी—"नहीं जी, ठट्ठा कैसा ? हम आप से क्यों ठट्ठा करने लगे। ये मोहरें तुम्हारी हुईं, तुम इन्हें ले लो और अपने पुत्र कन्या का सानंद पालन पोषण करो।"

पीछे कभी बुढ़िया को ज्ञात हुआ कि सम्राट् और सम्राज्ञी न आ कर उसका दुःखमोचन किया था। इस तरह की बातें नेपोलियन के जीवन में भरी पड़ी हैं।

अंग्रेजों ने फ्रांस के विरोधी राजाओं को मिला ही लिया था। इन सभों की यह सम्मति हुई कि रूस, आस्ट्रिया तथा स्वीडेन, इंगलैंड का पक्ष ले कर पाँच लाख सेना से अलग अलग मार्ग अवलंबनपूर्वक फ्रांस पर इस तरह टूटें कि उसे विकल कर दें। इंगलैंड के ऊपर प्रति लाख सेना पर तीन करोड़ फ्रैंक वार्षिक व्यय देने का भार डाला गया। अंग्रेजी और सहायक राज्यों को मिला कर सब पाँच सौ जहाजों ने फरासीसी बंदरों को घेर लिया। ये सब तैय्यारियां हुईं, परंतु युद्ध की घोषणा नहीं की गई, आस्ट्रिया का राजदूत भी चुप चाप फ्रांस में बैठा रहा। लेकिन नेपोलियन की शार्दूल-दृष्टि से इनकी गुप्त कार्रवाइयाँ छिपी नहीं। आस्ट्रिया का सेनापति जनरल मैकी चुपचाप अस्सी सहस्र सैन्य लेकर फरासीसी सीमा की ओर चल पड़ा। एक लाख सोलह सहस्र

वाहिनी ले कर साम्राट अलचेंद्र पोलैंड की समतल धरती पर आस्ट्रियन सेना से सम्मिलित होने को चला। ये सब समझते थे कि फ्रांस हमारी गति विधि से अनभिज्ञ है, परंतु नेपोलियन को रत्ती रत्ती हाल मिलता था। आस्ट्रिया के दल ने फ्रांस के मित्र राज्य बब्बेरिया पर आक्रमण कर के म्यूनिच तथा उल्म पर अधिकार कर ब्लैक फारेस्ट नामक जगह पर राइन नदी के किनारे डेरा डाला। रूसी सेना भी इनके मिलने को बढ़ी आ रही थी। नेपोलियन यह समाचार सुनकर कर कब चुप बैठनेवाला था, बड़े वेग के साथ सिंहवत् गरजता हुआ डेन्यूब नदी पार कर के राइन पार हुआ और उसने शत्रु दल को चारों ओर से ऐसा घेरा कि रूसी सेना से मिलने और आस्ट्रिया को संवाद भेजने आदि की शत्रुदल की सारी आशा मिट्टी में मिल गईं, और भाग कर प्राण बचाने का भी रत्ती भर रास्ता न मिला। यदपि शत्रु दल पाँच लाख था, परंतु नेपोलियन की सैन्य संख्या पौने दो लाख से अधिक न थी। हां ३४० बृहन्नलिकाएं और साथ थीं। शत्रु दल में इस समय ५० सहस्र अंग्रेजी और ढाई लाख आस्ट्रियन सेना थी। शेष दो लाख रूसी सेना पीछे से इनमें मिलनेवाली थी। दोनों दलों में मार्गों पर हलकी लड़ाइयां हूई जिनमें ८० सहस्र आस्ट्रियन सेना विनष्ट हुई और ३० सहस्र फरासासियों के हाथ बंदी हुई। कुछ सेना प्राण ले कर भागी, कुछ पहाड़ी घाटियों में जा छिपी, शेष ३६ सहस्र उल्म में फरासीसिया से परिवेष्टित पड़ी रही। यह घिरी हुई शत्रु सेना ऐसी किंकर्तव्यबिमूढ़ हो गई

थी कि ५-७ फरासीसी सिपाहियों के हाथों एक सौ आस्ट्रियन सैनिकों ने एक रात में आत्मसमर्पण किया।

एक दिन नेपोलियन कई दिन की नींद और भूख का सताया कीचड़ पानी में सना शत्रुदल के बंदी योद्धाओं के पास हो कर निकला, तो वे आश्चर्य्यान्वित हो गए। नेपोलियन ने उन्हें उत्तर दिया—"आप लोगों के स्वामी ने मुझे यह कष्ट उठाने के लिये बाध्य किया है। वे लोग इस बात को जान लें कि सम्राट् होने पर भी मैं अपना सैनिक व्यवसाय भूला नहीं हूँ।" इसके अनंतर वह घोड़े पर चढ़ कर योंही खेत का रंग देखने निकला था कि इसके कान में एक स्त्री के रोने की ध्वनि पड़ी। बढ़ कर इसने देखा तो पालकी के भीतर बैठी हुई एक स्त्री रो रही है। नेपोलियन ने पूछा—"आप क्यों रोतीं हैं ?

महिला—"एक सैनिक-दल ने मुझे लूट लिया और मेरे साथियों को मार डाला। आप के समाट् से मेरा निवेदन है कि मुझे एक प्रहरी मिले। वे मेरे परिवार से परिचित हैं।

नेपो०—"हे भद्रे, क्या मैं जान सकता हूँ कि आप कौन हैं ?"

महिला—"मैं भूतपूर्व कार्सिकानरेश मूसो मारवे की पुत्री हूँ।"

यह सुनते ही नेपोलियन ने उसका बहुत आदर सत्कार किया और उसकी जो कुछ हानि हुई थी सब पूरी कर दी और चौकी पहरा साथ देकर उसको इच्छानुसार यथास्थान पहुँचा दिया।

सेनापति मैकी ने अपने बचाव का उपाय न देख कर राजकुमार मोरिसो को दूत बना कर भेजा। इसकी आँख में पट्टी बाँध

कर यह नेपोलियन के सामने उपस्थित किया गया। दूत ने कहा यदि आप आस्ट्रियन दल को निर्विघ्न स्वदेश यात्रा करने की आज्ञा दें तो हम लोग आत्मसमर्पण के लिये प्रस्तुत हैं।"

नेपोलियन ने कहा कि—"कई बार मुझे ऐसा अवसर पड़ चुका है, फिर फिर आपके सेनापति ने मुझे प्रतारित किया है, इस बार भी छोड़ कर मैं पुनः प्रतारित होना नहीं चाहता। आपकी प्रार्थना स्वीकार करने की कोई भी राह मैं नहीं देखता। आप लोगों को बंदी हो कर रहना होगा और जो आत्मसमर्पण में विलंब होगा, तो समय नष्ट करने को मैं तय्यार नहीं हूँ, आप लोगों को ही यहाँ सीमातीत दुःख भोगना पड़ेगा।"

दूसरे दिन स्वयं सेनापति मैकी नेपोलियन से मिले। निपोलियन ने इनका सत्कार सम्मान कर के इन्हें बैठाया इन्होंने आत्मसमर्पण स्वीकार कर लिया और छत्तीस सहस्र सेना ने उठ प्रभात अपने अस्त्र शस्त्र सब नेपोलियन के पैर तले डाल दिए। नेपोलियन ने कहा-"देखो न जाने तुम्हारे स्वामियों ने मुझे क्यों सता रखा है। क्या विवाद है और मैं क्यों लड़ रहा हूँ ? यह भी मैं नहीं जानता। मैं केवल अपने पोत और अपने उपनिवेश तथा अपना वाणिज्य चाहता हूँ और कुछ नहीं; इसमें केवल मेरी ही सुविधा नहीं है, किंतु आप लोगों को भी सुभीता है।" इतने में एक सैनिक ने बंदियों की बावत कुछ कठोर वाक्य प्रयोग किए। नेपोलियन ने रुष्ट हो कर उसे रोका और वह कहने लगा-"चला जा, तू नहीं जानता कि आत्मसम्मान क्या है? दुखी को अपमानित करना कायरता और नीचता है। जो

तुझमें आत्मसम्मान का ज्ञान होता तो तू इन्हें अपमानित न करता।" इससे नेपोलियन का कैसा हार्दिक बड़प्पन प्रकट होता है, पाठक समझ सकते हैं।

१३ नवंबर को वायना में प्रजा को अभयदान देते हुए फरासीसी सेना अस्तरलिज पहुँची। १ दिसंबर को नेपोलियन ने शत्रु दल देखा, तथा दूरवीक्षण यंत्र द्वारा निश्चय कर लिया कि कल ही इनका पतन मेरे हाथों से होना है। रात को सारी सेना निवेशों में रही, प्रभात होते ही लड़ाई का प्रबंध होने लगा। इस समय इसको हृदय से पूजनेवाला सत्तर हजार का बल इसके झंडे के तले था। प्रभात के पूर्व अँधेरे में ही नेपोलियन ने जाना कि रूसी सेना हमारे ऊपर चढ़ कर आ रही है, इसने भी संकेत शृंगी बजाई और विद्युत वेग से सेना अपने विस्तरों से कूद रण के लिये सज कर तैयार होने लगी। सेना एकत्र हुई। व्यूह रचा गया। इतने में सूर्य्य देव ने अपनी स्वर्णमयी किरणों द्वारा संसार को विभासित कर दिया। नेपोलियन ने मार्शल सूट को नियत किया कि जब शत्रु दल व्यूहरचना में भूल करे तभी धर दबाओ और भूल सुधारने का अवसर न दो।

इतने में तोपों की घोर गर्जन से ज्ञात हुआ कि रूसी दल फरासीसियों के दक्षिण अंग पर झपट करनेवाला है और वह आग उगलना आरंभ कर चुका है मार्शल सूट बढ़े, नेपोलियन बढ़ कर आगे पहुँचा और बोला—"वीर सैनिको! देखो तो मूर्ख शत्रुओं ने तुम्हारे लिये आक्रमण करने की सुविधा कर दी है। वज्रवत् शत्रु

दल पर टूट कर समर जीत लो, अब क्या देखना है।" फरासीसी सेनापति सूट पूर्वप्रदर्शित मार्ग से बढ़ ही चुका था, इधर नेपोलियन का प्रचालित सेना से आक्रमण करना था, कि शत्रु दल भाग उठा पर भागकर जाय तो किधर? फरासीसी 'राजरक्षि' नामक दल (Imperial guard regimen) भागनेवालों के पीछे लग कर अहेर करने लगा। शत्रुदल का दक्षिण सेनांग वामभागवर्ती विपन्न साथियों की सहायता को असमर्थ देख, नेपोलियन ने कई तोपें ले शत्रु के वाम भाग पर भी धावा कर दिता और बात की बात में सेना की पंक्ति की पंक्ति एक साथ मिटाता चल गया। अब पलट कर यही सेना दाहिने भाग पर पड़ी और उसके भी पुर्जे पुर्जे उसने बखेर दिए। सायंकाल का अंधकार अग्निचूर्ण के धुएँ से और भी गंभीर रूप धारण कर रहा था। शत्रु दल के पैर सब ओर से उखड़ गए।

इस युद्ध में रूस और आस्ट्रिया के १५ सहस्र वीर मरे तथा २० सहस्र बंदी हुए। १८० तोपें और ४५ झंडे और बहुत सी गाडियाँ व छकड़े रसद सहित फरासीसियों के हाथ पड़े। केवल ४५ सहस्र सेना से ८० सहस्र शत्रु दल को फ्रांस ने जीता, शेष फरासीसी सेना को लड़ना ही नहीं पड़ा। इस दशा को देख कर दोनों विपक्षस्थ राजा घबड़ा गए और संधि की बात चीत करने लगे। यहां नेपोलियन अपने आहत वीरों की सुध लेने, औषधादि की व्यवस्था करने, मरतों के मन की बात पूछने और सांत्वना देने में लगा हुआ था। यह बात देख कर बंदीभूत शत्रु दल का एक एक सैनिक

आश्चर्य्य में आकर नेपोलियन की सराहना करता था।

यद्यपि नेपोलियन का जी संधिस्थापन करना न चाहता था, लेकिन चारों ओर की स्थिति देख कर उसे सेना में घोषणा करनी पड़ी कि—'वीरो आप विजयी हुए, और अब संधि में बिलंब नहीं है।" किंतु दूसरे दिन प्रातःकाल आस्ट्रिया नरेश रक्षक दल सहित रूस राज की ओर से भी संधि का अधिकार ले कर नेपोलियन से मिले। नेपोलियन आस्ट्रियापति की छकड़ी (६ घोड़ों की गाड़ी) का संवाद पा कर मिलने को तय्यार हुआ और बड़े आदर के साथ मिला। दो घंटों तक युद्ध के विषय में बात चीत होती रही। नेपोलियन ने इसे बार बार संधि के विरुद्ध आचरण करने के कारण बहुत लज्जित किया, परंतु इसने सब दोष अंग्रेजों के माथे मढ़ा और यह बात अधिकांश में बिल्कुल सत्य भी थी।

अंततः रूस और आस्ट्रिया के साथ फ्रांस की संधि हुई, और हारी थकी सेनाएँ अपने अपने देश को चलीं। इस समय का हाल सुन कर विलियम पिट की छाती पर साँप लोट गया, और असह्य मानसिक वेदना से दुखी हो कर ३ जनवरी ई० सन् १८०६ को ४७ वर्ष की अवस्था में वह मर गया। इधर फ्रांस में इस विजय का बड़ा आनंद मनाया गया।



बारहवाँ अध्याय

फ्रांस साम्राज्य का विस्तार और जेना तथा इलाव का महासमर।

फ्रिडलैंड यात्रा और टिलसिट की संधि।

इस विजय के उपरांत नेपोलियन ने राजधानी में आ कर हिसाब किताब कागज पत्र की जांच पड़ताल और देख भाल करना आरंभ किया। विक्रमीय सवत १८६३ (सन् १८०६ की जनवरी) तक नेपोलियन पैरिस में रह कर राज-काज का प्रबंध करता रहा।

इस समय जेनोवा प्रदेश अपीनाइन पहाड़ी के दक्षिण में था। इसकी जनसंख्या अनुमान ५ लाख थीं, शासन प्रजातंत्रावलंबी था। इसने फ्रांस में मिलने की प्रार्थना की। नेपोलियन ने यह प्रार्थना स्वीकार कर के इसे फ्रांस में मिला लिया। इसके अनंतर नेपल्स भी फ्रांस में मिल गया था। जब फ्रांस से अस्तरलिज में युद्ध हो रहा था नेपल्स के राजा ने इंगलैंड को सहायता से फिर सिर उठाया। इसी लिये चौथी बार नेपोलियन इसका गर्हित आचरण न सह सका और उसने घोषणा कर दी कि अब इसे शासन न करने दिया जायगा और अपने सहोदर जोसेफ को भेज कर कहा कि एक महीने में नेपल्स के राज-भवन में फरासीसी ध्वजा उड़ाई जाय, लेकिन प्रजा के अस्त्र शस्त्र की स्वतंत्रता न छीनी जाय। बार्बोन वंश के हाथ में हम अब शासन नहीं देखना

चाहते और जो तुम राज कर सको तो मैं तुम्हें वहाँ का शासक बनाना चाहता हूँ। नेपल्स की जनसंख्या अस्सी लाख थी। फरासीसी सेना ले कर जोसेफ पहुँचा ही था कि अंग्रेज और बार्बोन वंशी दुम दबा कर भागे और नेपल्स का मुकुट जोसेफ के शिर का आभूषण हुआ। इस बात से युरोप के राजागण बड़े कुपित हुए। अतः नेपोलियन को फिर फरासीसी राज्य की गौरव रक्षा की चिंता उठ खड़ी हुई। हालैंड, योरोप की बहुत (नीची) धरती में है, इस की जनसंख्या इस समय पाँच लाख थी। समुद्र जल को बंदों के द्वारा रोक कर इसमें लोग वास करते है। यहां की भी प्रजा उच्च वंशीय बननेवालों के हाथ से अधिकार छीनने की चेष्टा कर रही थी। इंगलैंड उच्चवंशज नामधारियों की सहायता पर खड़ा हुआ। बली इंगलैंड ने हालैंड का सर्वस्व लूट कर अपना लिया, तब इन्होंने फ्रांस से सहयता मांगी। फ्रांस ने इसे भी बचाया और प्रजा की प्रार्थना पर नेपोलियन के दूसरे भाई लूई वोनापार्ट को इसका नृपति बना कर इनकी इच्छा पूरी की। यों हालैंड भी फ्रांस का एक अंग हो गया।

सिस-अलपाइन का साधारण तंत्र भी नेपोलियन के ही बाहुबल से बना रह गया था, नहीं तो आस्ट्रिया ने उसको कभी का निगल लिया होता। इसकी जन संख्या साढ़े तीस लाख थी। यह इटाली के नाम से अभिहित था। इसी वर्ष जाड़े में शत्रुओं से संतापित सिस-अलपाईन के साढ़े चार सौ गण्य मान्य सज्जनों ने एल्प्स पहाड़ पार कर के फ्रांस में पदार्पण किया और नेपोलियन की

सहायता चाही। साथ ही उसे फ्रांस में सम्मिलित कर के नेपोलियन को शासन करने के लिये जोर दिया। नेपोलियन ने इसे भी फ्रांस में सम्मिलित कर के इयोजिन को यहां का सिंहासन सौंपा।

नेपोलियन में यह बड़ा गुण था कि जिन जिन देशों को उसने जीता और जिन्हें उसने फ्रांस में मिलाया, जैसा कि ऊपर कहा गया है, उनमें से किसी की भी प्रजा को वह दुःख नहीं भोगना पड़ा जो कि दूसरे युरोपीय राजाओं की पराजित प्रजा को भोगना पड़ता था। इस बात का निष्पक्ष इतिहासकार एलिसन निम्न लिखित शब्दों में समर्थन करता है—"युरोप के दूसरे विजेता राजाओं के अधीन पराजित देश की प्रजा को जो दुःख झेलने पड़ते हैं वह लोंबार्डी की प्रजा को नहीं झेलने पड़े, पराधीनता की चक्की में वे पीसे नहीं गए उल्टा उनके जातीय धन, राष्ट्रीय संपात्ति की वृद्धि हुई। ये लोग दिनों दिन दरिद्र और कलाकौशल हीन होने के बदले सब तरह अपनी उन्नति का द्वार खुला पाते थे। देशीय शिल्प और वाणिज्य की उन्नति हो रही थी। उच्च पद, राज सम्मान और गौरव सब में ही इटालियन लोगों का अधिकार था, विजेता और विजित का नीच भेद यहां नहीं देखा जाता था। न्यायालय के दीवानी, फौजदारी और कर आदि विभागों में उच्च पदों पर कहीं भी विदेशी नहीं मिलता था। देशोन्नत्ति के निमित्त नित्य नए तथा अतुल प्रयत्न होते थे।"

पीडमोंट (इटली में है) भी फ्रांस में सम्मिलित हुआ। नेपोलियन का विचार था कि इटाली प्रायद्वीप के दक्षिण में जो अनेक

छोटे छोटे राज्य हैं, जो अपने पैरों पर खड़े होने की सामर्थ्य नहीं रखते और 'नाई की बरात में जने जने ठाकुर' होने की कहावत चरितार्थ कर रहे हैं, इनको मिला कर एक बलिष्ठ राज्य स्थापित हो और रोम उसकी राजधानी हो। परंतु राजनैतिक प्रतिबंधों ने इस विचार को व्यक्त न होने दिया।

फ्रांस साम्राज्य का विस्तार, नेपोलियन के प्रताप से बहुत बढ़ा। जेनोवा पीडमोंट की उपत्यकाएँ और राइन नदी के तटस्थ कई स्थान तो फ्रांस के अंग ही हो गए, इसके अतिरिक्त इटाली, स्वीजरलैंड, बेवेरिया, हालैंड और भी कई छोटे छोटे राज्य फ्रांस की छत्रछाया में आश्रय लेते थे। इस तरह पर जनपदनिर्वाचित राजाओं को शासन करते देख वंशपरंपरा के यथेच्छाचरी राजन्य-वर्ग बहुत ही दुखी और क्रुद्ध हो कर ओठ चबाने लगे। इसमें एक आश्चर्य्य की बात यही थी कि इंगलैंड का शासन यथेच्छाचारयुक्त न होने पर भी इंगलैंड ने नेपोलियन सदृश देवता की शत्रुता साधन में कुछ भी उठा न रक्खा था। सच तो यह है कि सत्रहवीं सदी के अंतिम पाद से अठारहवीं के पहले पाद तक के भीतर समस्त युरोप में प्रजा के पवित्र स्वत्वों के संरक्षण की विजय भेरी यदि किसी ने पूरे बल से निनादित की थी तो वह नेपोलियन ही था।

इन बातों से युरोप के स्वतंत्र शासकों को डाह हुई। विशेषत: इससे इंगलैंड को बड़ा दुःख हुआ। इंगलैंड और रूस ने मिल कर फ्रांस को दमन करने की सलाह की। प्रशिया का राजा भी

इनसे सम्मत हुआ और दो लाख सेना ले कर प्रशिया का राजा फ्रेडरिक विलियम सेक्सनी में आ धमका और पोलैंड में हो कर पैरिस की ओर बढ़ने लगा। अंगरेजों ने भी भूमध्य सागर से इंगलिश समुद्र तक अपने रणपोत और रणतरियों को फैला दिया।

फरासीसी सेना इंपीरियल गार्ड को भेज कर नेपोलियन ने भी २५ सितंबर १८०६ (वि. १८६३) को यात्रा की। टीलारी से मियेंस तक सम्राज्ञी भी साथ आईं। यहां से राज्ञी को विदा कर के चला चल कई दिन में नेपोलियन ने आगे बढ़ कर पहले आस्ट्रियन सेना के भागने के मार्गों को अवरुद्ध किया। फिर फ्रांस की ओर से प्रशिया नरेश को समझाया कि 'व्यर्थ मनुष्यों का रक्तपात करने से क्या लाभ, अकारण युद्ध में प्रवृत्त होना ठीक नहीं।' यह पत्र जेना के युद्धवाले दिन प्रभात में प्रशिया नरेश ने पाया। परंतु कुछ फल न हुआ। १३ अक्तूबर को तीसरे पहर दोनों पक्ष की सेनाओं का संघर्ष हुआ। नेपोलियन ने प्रशिन सेना पर लैंड-ग्रेफन-वर्ग के पहाड़ी स्थान पर आक्रमण किया। प्रशियन सेना भागी। जेना से छ कोस के अंतर पर अरष्टड में बहुतसी प्रशियन सेना पड़ी थी। नेपोलियन ने 'शोल' और 'बून' दो सेनानियों को शत्रु दल के भागने की राह रोकने के लिये भेज कर रात में 'मेडम कायां' की पाठशालाओं की नियमावली बनाई; रात एक पहर से कम रही होगी कि वह गरम कपड़े ले कर धरती पर सो रहा। नींद कहाँ, युद्ध की चिंता में ही प्रभात हुई, चिंता भी ठीक थी एक ओर

रूस, प्रशिया और इंगलैंड, दूसरी ओर केवल फ्रांस। टफलगार के युद्ध के पीछे बर्बोन वंशीय स्पेनराज भी अंग्रेजों के साथ भीतर मिल गया था, इसकी भी सेना पेरीनीज गिरि श्रेणी के पास अंगरेजों में आ मिली और फरासीसियों पर आक्रमण करने को यह सम्मिलित सेना भी आगे बढ़ी। छः बजे प्रातःकाल फरासीसी सेना भी हथियार बाँध कर उठ खड़ी हुई; और सम्राट् की आज्ञा पाते ही तीर की तरह शत्रुदल पर जा टूटी। आठ घंटे तक तुमुल युद्ध हुआ, दोनों दल अडग्ग पादप की भाँति रणभूमि में यह रोपे खड़े रहे, इसी बीच में विजय का विश्वास कर प्रशियन सेनापति ने बीस सहस्र ताजी सेना और ले कर युगपत् आक्रमण करने का आदेश दिया। इससे फ्रांस की बड़ी हानि हुई पर वीर फरासीसी तिल भर भी पीछे न हटे, 'या विजय या स्वर्ग' के सिद्धांत पर वे अटल जमे रहे। अवसर देख नेपोलियन ने सेनापति मोराट के अधीन बारह सहस्र सेना को एकदम शत्रु दल पर झपटने का आदेश किया, फिर क्या था घोर नारकी दृश्य रणक्षेत्र में फैला गया। वीर, वीभत्स, रौद्र, भयानक रसों का सम्मिलित दृश्य सूर्य्य भगवान् से न देखा गया, उन्होंने सायंकाल की काली यवनिका डाल कर अपना मुँह छिपा लिया। इधर प्रशियन भागे। आगे आगे प्रशियन पीछे पीछे फरासीसो—यह हाल तो जेना में हुआ और आगे बढ़ कर अरेष्टड में भी प्रशियन सेना को भयानक पराजय का मुँह देखना पड़ा।

इस युद्ध में प्रशिया की हत तथा आहत संख्या अनुमानतः

बीस हजार को पहुँची। युद्ध अंत होने पर नियमानुसार नेपोलियन ने आहतों की सेवा करनी आरंभ की। शत्रु दल का भी आहत सामने आता तो उससे भी वही बर्ताव किया जाता जैसा अपने सैनिक आहतों से। इस विजय के लिये सेनापति दोमो को 'ड्यूक आफ् अरष्टड' की उपाधि दी गई और नेपोलियन ने सब से पहले इसी को प्रशिया की राजधानी में पदार्पण करने का अधिकार दिया। फ्रांस छोड़ने के पीछे एक मास के ही भीतर नेपोलियन ने दो लाख शत्रुदल को हत आहत और बंदी किया था। प्रशिया की राजधानी बर्लिन में पहुँच कर ससैन्य फ्रांस-सम्राट् विश्राम करने लगे। सेक्सनी के नरेश भी प्रशिया के साथ युद्ध में सम्मिलित थे, नेपोलियन ने सब सेक्सनी के कर्म्मचारियों को जेना के विश्वविद्यालय में बुला कर अभयदान दिया और कहा कि—'मैं शपथ करता हूं कि मैं तुम्हें स्वतंत्रता दूंगा, पर तुम भी शपथ करो कि फ्रांस के विरुद्ध तुम हथियार न उठाओगे। सेक्सनी वालों ने कृतज्ञतापूर्वक शपथ की। मुक्ति लाभ करके ड्रेसडन नगरी में इन्होंने नेपोलियन को सूचना दी कि तीन दिन के भीतर फ्रांस और सेक्सनी का प्रीतिबंधन सुदृढ़ हो जायगा।

इधर प्रशिया का राजा हार कर पोलैंड में भाग कर जा रहा और बड़ी चेष्टा से उसने फिर २५ हजार का बल संग्रह किया। रूसराज नेपोलियन की वीरता से स्तंभित तो हुआ परंतु प्रशिया के राजा को शरण देने से विरत न हुआ वरन वह प्रशिया को सहायता करने को और दृढ़ हो गया। दो लाख रणविशारद सेना

के साथ रूस तय्यार तो था ही पर युद्ध में समय पर सम्मिलित न हो सका था। अब इसने सेना को और आगे बढ़ने की आज्ञा दी। नेपोलियन ने बर्लिन राज-भवन में रहना आरंभ किया। बर्लिन प्रशिया की राजधानी थी। नेपोलियन ने यद्यपि राजघराने वालों के साथ अत्याचार नहीं किया, तो भी प्रशिया की रानी डर कर भाग गई। इसका विशेष कारण यही प्रतीत होता है कि इस वीर वामा ने स्वयम् सेनापतित्व पर आरूढ़ हो फरासीसियों से लोहा लिया था।

इसी बीच में इंगलैंड ने एक मंतव्य प्रकाशित किया कि 'कोई जाति फरासीसियों और उनके राज्यों से वाणिज्य-संबंध न रख सकेगी।' यह भी विधान हुआ कि शत्रु पक्ष के जहाजों को पकड़ कर इंगलैंडराज्य श्री-भुक्त किया जायगा और शत्रुपक्ष के लोग बंदी किए जाँयगे चाहे वे कहीं के भी हों। इसके अतिरिक्त इंगलैंड ने समुद्र पर और भी अन्याय करना आरंभ कर दिया। फ्रांस के मंत्रिमंडल ने इसका प्रत्युत्तर रूप एक घोषणा-पत्र लिख कर नेपोलियन के पास स्वीकृति के लिये भेजा, परंतु इसने इसे अलग कर स्वयम् एक विस्तृत घोषणा जारी की, जो कि पीछे से 'बर्लिन डिक्री' के नाम से प्रसिद्ध हुई। नेपोलियन की यह आज्ञा, ऐतिहासिक महत्व रखती है और अंग्रेजों के तत्सामयिक उन कामों पर प्रकाश डालती है जिनके कारण उसे यह तुर्की बतुर्की उत्तर देना पड़ता था; अतः हम उसे अक्षरशः नीचे उद्धृत करते हैं—

फरासीसी जाति के राजेश्वर और इटाली के अधीश्वर महा-

राज नेपोलियन को ज्ञात हुआ है कि—

(१) इंगलैंड का सभ्य राज-मंडल अनुमोदित पथ पर चलने को प्रस्तुत नहीं है।

(२) विपक्ष जाति के व्यक्तियों को भी वह शत्रु समझता है; शत्रु पक्ष की नावों और जहाजों तथा उसके परिचालकों को ही बंदी करता हो सो नहीं, वाणिज्य के लिये समुद्र यात्री वणिकों को भी यह ग्रास करने को तय्यार है, इनका भी निस्तार नहीं है।

(३) जो अधिकार शत्रु से जीते हुए राज्य पर होता है, वही अधिकार इंगलैंड व्यक्तिगत संपत्ति पर भी जमाता है।

(४) सभ्य राज-मंडल में जो अधिकार केवल अवरुद्ध नगरों पर माना गया है, वही अधिकार इंगलैंड वाणिज्य के प्रधान नगरों (मंडियों), बंदरों और जल-मार्गों पर स्थापन कर रहा है।

(५) जहां कोई अंग्रेजी जहाज नहीं है, उस स्थान को अव-रुद्ध मानने की उसने घोषणा की है।

(६) जिन स्थानों को अंगरेज अपनी सारी सेना ले कर भी अवरुद्ध कर सकेंगे, उन्हें भी उन्होंने अवरुद्ध माना है। जैसे अन सम्राज्यों की समस्त उपकूल भूमि।

(७) इंगलैंड की इन बातों का यही मतलब है कि जिन देशों में अंग्रेजी स्वार्थ नहीं है वह पारस्परिक संसर्ग बंद कर दें और सिवा अंगरेजों के युरोपीय महाद्वीप में और सब का उद्योग शिल्प व वाणिज्य विनष्ट हो जाय, केवल इंगलैंड का व्यवसाय

और उसकी कारीगरी समुन्नत हो।

(८) इस दशा में युरोप में जो कोई जाति अंगरेजी पराय (बिक्री की) चीज बर्तेगी वही जाति अंगरेजी उद्देश्यों की सहायता द्वारा इंगलैंड को आश्रय देनेवाली समझी जायगी।

(९) यह बात अंगरेजों के प्राथमिक जंगलीपन के समय में शोभा पा सकती थी, वर्तमान समय में उन्हें चाहे इससे जितना सुभीता हो परंतु इससे औरों की बड़ी हानि है।

(१०) शत्रु जब सामाजिक सभ्यता से मुख मोड़ कर न्याय धर्म्म व उदारता को परित्याग करता है तब असि द्वारा उसे रोकना ही कर्तव्य हो जाता है, यही प्राकृत नियम है।

अतः जो नियम इंग्लैंड ने हमारे विरुद्ध चलाए हैं उन्हीं को हमने भी उसके प्रतिकूल प्रचलित किया है।

सुतराम् निश्चय हुआ कि—

(१) बृटिश आईल (द्वीप) को अवरुद्ध किया जा कर घोषणा की जाती है।

(२) बृटानिया के साथ वाणिज्य व संवाद का आदान प्रदान बंद किया जाता है। अतएव ब्रिटानिया को जानेवाले जो पत्र, पैकट-व पुलिंदे होंगे, या जो किसी अन्य देशवासी अंगरेजों के ही नाम के होंगे, यहाँ तक कि जिन पत्र पैकट व पुलिंदों पर अंगरेजी में पता सिरनामा भी लिखा होगा वे सब ही जब्त कर लिए जाँयगे।

(३) इंगलैंड का कोई रहनेवाला क्यों न हो, चाहे कितनी भी ऊँची कक्षा का वह हो फ्रांस-व फ्रांस के मित्र राज्यों की सीमा में पदा

र्पण करते ही बंदी कर लिया जायगा।

(४) इंगलैंड के उपनिवेशवासियों की जो संपत्ति व कारीगरी के पदार्थ होंगे सब लूट लेनें योग्य समझे जाँयगे।

(५) इंगलैंड की विक्रेय चीजों का वाणिज्य रोका जाता है। इंगलैंड और उसके उपनिवेशों की उत्पन्न चीजें लूट लेने के योग्य समझी जाँयगी।

(६) इस प्रकार का जो सामान लूटा जायगा उसका आधा दाम क्षति पूरी करने के लिये उन लोगों को दिया जायगा जो अंगरेजों के हाथ से लूटे जाँयगे।

(७) इन नियमों के प्रचलित होने के समय से लेकर आगे इंगलैंड और उसके उपनिवेशों का कोई पोत किसी बंदर में न घुसने पावेगा।

(८) जो कोई पोत छिप कर इन नियमों को तोड़ेगा या तोड़ने की चेष्टा करेगा वह सरकारी संपत्ति-भुक्त किया जायगा, चाहे वह अंगरेजी पोत हो वा किसी दूसरी जाति का।

(९) हमारे राज्य में या किसी दूसरे राज्य में या जिस किसी राज्य में हमारी सेना स्थित होगी जो कोई इन नियमों के साथ मत-भेद करेगा उसका पैरिस के 'प्राइज-कोर्ट' नामक विचारालय में मीमांसा के लिये चालान किया जायगा। इसी प्रकार के इटाली के देशों लों का विचार मिलन के प्राइज-कोर्ट में होगा।

और (१०) हमारे पर-राष्ट्र-सचिव इन नियमों की सूचना स्पेन, शिल्प व हालैंड आदि राजाओं को और अन्यान्य सहयोगियों तक

पहुँचा देंगे। क्योंकि उनकी प्रजा के साथ भी हमारी ही भाँति, इंगलैंड बर्बरता का व्यवहार और अत्याचार कर रहा है।

(११) हमारे समस्त सैनिक, वैदेशिक, सामुद्रिक, राजस्वसम्बन्धी, शांतिरक्षासंबंधी मंत्रियों को और डाक आदि विभाग के अध्यक्षों को सूचना दी जाती है कि इन विधानों का यथेष्ट पालन हो।

राज-शिविर, बर्लिन
२६—११-१८०६ ई०
} (अक्षरित) **नेपोलियन।**

इसके दूसरे ही दिन नेपोलियन ने जूनों को एक पत्र लिखा उसमें भी निम्न बातें थीं—

"ध्यान रखना कि आपके घर की महिलाएँ स्वीजरलैंड की चा को काम में लावें, यह चीन की चा से किसी तरह बुरी नहीं है, चिकारी का कहवा अरब के कहवे से मंद नहीं है, इस बात का भी ध्यान रहे कि घर में नौकरों तक का कोई वस्त्र परिधेय अंगरेजी कपड़े का न बने। जो हमारे प्रधान कर्मचारी ही हमारे पथ पर न चलेंगे तो और कौन चलेगा।"

वास्तव में १६ वीं मई १८०६ (वि० १८६३) को इंगलैंड ने यह नियम जारी किया था कि "इस समय से एल्बा से वेष्टा तक प्रत्येक बंदर व नदी के मार्ग अवरुद्ध किए जाँय।" इसी का उत्तर 'बर्लिन डिक्री' थी। १८०७ की १ जनवरी को पुनः अंगरेजों ने एक और नियम निकाला—" कोई फरासीसी या फ्रांस के सहयोगी का जहाज वाणिज्य के लिये एक बंदर से दूसरे बंदर पर न जाने

पावे ।" अंगरेजी जहाजों के कप्तानों को आज्ञा दे दी गई कि—'किसी निरपेक्ष जाति का जहाज एक बंदर से दूसरे बंदर को जावे या आवे तो उसे रोक लो। जो वह कप्तान की आज्ञा न माने तो जहाज जब्त कर लो।' १८०७ की ११ नवंबर को फ्रांस और उसके सहयोगियों के अधिकृत सब बंदरों को घेर लिया गया और आज्ञा दी गई कि उसका और उसके उपनिवेशों का कोई विक्रेय पदार्थ चालान न होने पावे और जो मिले उसे जब्त कर लो।"

अंगरेजों व फरासीसियों की भीतरी शत्रुता रूपी अग्नि में मानों घी पड़ गया और वह प्रकांड रूप से धक धक कर के जलने लगी। इन सब बातों को ले कर नेपोलियन ने बर्लिन से अपने मंत्रियों को लिखा था कि सदा से अधिक दृढ़ता के साथ अब मैं काम करने को तैयार हुआ हूँ, क्योंकि मैं १८०५ में एक से लड़ा, १९०६ में दूसरे से। इस दशा में जब तक जल थल में सर्वत्र शांति स्थापित न हो लेगी, तब तक आगे जिन्हें जीतूँगा अपने ही अधिकार में रखूँगा।

अब रूस नरेश की दो लाख सेना और प्रशिया की २५-३० सहस्र सेना से लड़ने के लिये फिर नेपोलियन को तय्यारी करनी पड़ी। शत्रुदल बर्लिन से अनुमानतः दो सौ कोस के अंतर पर पोलैंड प्रदेशांतर्गत (Warsaw) वारसा नामक स्थान में एकत्र हो रहा था। इसके उत्तर विस्तुला नदी के दोनों किनारों पर सवा लाख शत्रु सेना के एकत्र होने की संभावना थी। पोलैंड को निर्जीव समझ कर रूस और प्रशिया ने आस्ट्रिया के साथ मिल

कर उसे आपस में बाँट लिया था। जो भाग रूस के हाथ में आया था उसी में नेपोलियन उपस्थित हुआ और यहां की प्रजा इसके झंडे तले हर्ष से आ खड़ी हुई। पोलैंडवालों ने नेपोलियन से प्रार्थना भी की कि उन्हें फ्रांस में मिला लिया जाय और कोई नेपोलियन का ही आदमी शासक बनाया जाय, परंतु अनेक राजनैतिक कठिनाइयों के कारण यह बात फ्रांस सम्राट् ने स्वीकार न की। नेपोलियन की अवस्था भी शोचनीय थी; वह देश से बहुत दूर पड़ा हुआ, चारों ओर हिमावर्त पहाड़ी जगह, ऊपर से कठिन शत्रु-मंडल, उत्तर में रूसराज अगणित सेना लिये पड़े थे, दूसरी ओर आस्ट्रिया नरेश अस्सी सहस्र वाहिनी के साथ डटे थे। सब से कठिन शत्रु अंग्रेज थे, जो किए कराए पर एक साथ पानी फेरने के लिये अवसर ढूंढते थे।

अंततः सोच भाल कर नेपोलियन ने विस्तुला नदी की ओर ससैन्य यात्रा की। दिसंबर का महीना आ गया था, सरदी खूब जोर शोर से पड़ने लगी थी, परंतु फरासीसी सेना युरोप की सम्मिलित राज--शक्ति पर एक और कलंक का टीका लगाने के लिये बड़े उत्साह से बढ़ती जाती थी। १ जनवरी को नदी किनारे के घोर जंगल में फरासीसी पहुंच गए। युद्ध पर युद्ध होने लगा, एक ओर अगणित सेनासमूह, दूसरी ओर हरे थके फरासीसी। कई दिन पर्य्यंत खूब घमासान युद्ध हुआ। दोनों दल डटे रहे, हार जीत का निपटारा न हुआ। अंत में फरासीसी लोग शत्रु दल को एक सौ पच्चीस कोस पीछे हटा ले गए। १ फरवरी १८०७ को इलाव की समतल भूमि में समर छिड़ा। दोनों दलों की सेना और तोपों से सारा स्थान कई

मील तक ऊपर नीचे परिपूर्ण हो रहा था। मूसलधार पानी बरसता था पर नेपोलियन दौड़ दौड़ कर सेना को युक्ति से युद्ध में नए नए उत्साह के साथ प्रवृत्त कर रहा था। सांयकाल होते होते नेपोलियन ने गिरजाघर पर दखल कर लिया। इस समय तक तीस सहस्र रूसी सेना मृत्यु का ग्रास हुई और दस सहस्र फरासीसी भी मरे। धीरे धीरे रात के दस बजे, बाईस घंटे घोर युद्ध होते हो गया; तब एक नया फरासीसी दल जो बचत में था नए उत्साह से आया और अपने सहयोगियों के साथ हो रणरंग खेलने को समुद्यत हुआ। इसका आना था कि शत्रुदल के पैर उखड़ गए।

१४ जून को जिस दिन 'मोरंगे' का युद्ध फरासीसियों ने जीता था, रूसियों के साथ नेपोलियन का अंतिम युद्ध हुआ। फरासीसी सेनापति लेंस ने बीस सहस्र बल से अस्सी सहस्र रूसियों का सामना किया। इधर घोर संग्राम हो रहा था, उधर नेपोलियन दूरवीक्षण यंत्र से दांव घात खोजता था, अंत में नेपोलियन ने 'ने' का हाथ पकड़ कर कहा—"देखो! वह फ्रेडलैंड नगरी दीखती है, तीर की तरह तुम इसी की ओर हल्ला बोल दो और किसी ओर मत देखो। तुम्हारे दाहिने बांए पीछे कुछ भी हो, चिंता न करना, फ्रेडलैंड पर सीधे जाना, इधर मैं अपनी सेना से सब ठीक करूँगा। ने ने ऐसा ही किया। चारों ओर की प्रचालित सैन्य से, धरती हिलने लगी। नेपोलियन ने सैन्य प्रचालन आरंभ किया, प्रलय के मेघ के समान तोपें घनघोर गर्जना करने लगीं। देखते देखते रूसी हारे और छत्रभंग रूसी सेना निमेन नदी पार हो कर भागी और रूस के मध्य

प्रांत में जा कर उसने शरण ली।

अब तो रूस की आंख की पट्टी खुली और संधि के लिये खलबली उठने लगी। नेपोलियन ने कहा--"हम संधि करने को तय्यार हैं, परंतु संधि स्थायी होनी चाहिए।" रूसी सम्राट् और फ्रांस सम्राट् दोनों निमेन नदी के वक्ष पर मिले। फिर कई दिन साथ रह कर परस्पर की मित्रता में आबद्ध हो संधि स्थापन की। इसी का नाम टिलसिट की संधि है।

इस संधि के अनुसार रूस की जीती हुई आधी भूमि फ्राँस ने फेर दी। पोलैंड का जो अंश रूस ने ग्रास लिया था, उस में नया राज्य--'डची आफ़ वारसा' के नाम से स्थापित हुआ। पोलैंड को नपोलियन स्वतंत्र करना चाहता था, पर जार ने नहीं माना। एल्बी नदी के बाएँ किनारे की सारी रूसी धरती पर 'वेष्ट फेलिया' नाम का राज्य संगठित किया गया। यह राज्य जेरोम बोनापार्ट को सौंपा गया। २१ जुलाई को विजयी नेपोलियन ने फिर पैरिस में पदार्पण किया।



तेरहवाँ अध्याय

स्पेन दमन, एक साल का युद्ध, वायना की विजय और संधि

अंग्रेजों ने धींगा धींगी कर अपने मित्र डेनमार्क से उसके जहाज और रणतरी छीनने के किये अकारण युद्ध किया और राजधानी कोपेनहेगन को बरबाद कर डाला। हारने पर डेनमार्क ने फ्रांस की शरण ली। फ्रांस ने रक्षा के लिये कुछ सेना वहाँ भेज दी। लेकिन इस धींगा धींगी से प्रायः सभी युरोपीय रजवाड़े रुष्ट हुए और मन में अंगरेजों से जलने लगे। यहां तक कि इंगलैंड के ही अनेक विद्वानों ने मंत्रि-मंडल के इस अनुचित काम का घोर विरोध किया। कोपेनहेगन की विजय का सेहरा ड्यूक आफ़ वेलिंगटन के सिर बंधा था। विरोध करनेवाले पार्लमेंट के सदस्यों में से प्रधान लार्ड ग्रेनविल, एडिंगटन, शेरिडन और ग्रे आदि सज्जन थे।

उधर टिलसिट की संधि के समय नेपोलियन और अलक्षेंद्र (रूस के जार) ने सलाह की थी कि एक दूसरे की सलाह और सहायता से जो चाहेंगे वही युरोप में कर सकेंगे। जार ने कहा था कि मैं फ्रांस और इंगलैंड का मध्यस्थ बनूंगा, जो इंगलैंड न मानेगा तो युद्ध होगा तथा रूस और फ्रांस मिल कर इंगलैंड से लड़ेंगे। इसी तरह नेपोलियन ने तुर्क और रूस का मध्यस्थ बनना स्वीकार किया था और तुर्कों के हठ करने पर मिल कर चढ़ाई करना तथा जीती हुई तुर्की भूमि का बांटना तय कर लिया था। नेपोलियन ने

यह भी कहा था कि इंगलैंड ने मेल न किया तो स्वीडन, डेनमार्क, पुर्तगाल आदि को बुला कर कहेंगे कि अंगरेजों की कोई चीज युरोप के किसी बंदर में न उतरने पावे और हम सब इस बात पर कमर कस कर खड़े हो जांयगे। किंतु जार और नेपोलियन दो में से एक को भी मध्यस्थता में सफलमनोरथ होने का सौभाग्य न हुआ। तुर्कों न सलेम को बंदी कर के मार डाला और फ्रांस के साथ जो संधि थी उसे भी तोड़ दिया।

अंगरेजों के भड़काने से तुर्क फ्रांस के विरुद्ध हो कर इंगलैंड से मिल गए और रूस के विरुद्ध भी अस्त्र ले कर उठ खड़े हुए। रूस फ्रांस और आस्ट्रिया ने आपस में विचार किया कि तीनों महाशक्ति मिल कर भारत में प्रवेश करें और वहां अंगरेजों पर आक्रमण किया जाय। परंतु रूस का मंत्रि-मंडल और राजकीय वर्ग के लोग नेपोलियन के विरोधी थे, जार की चलती क्या थी। साथ ही नेपोलियन समझता था कि रूस ने यदि कुस्तुंतुनिया को अपने वश में कर लिया तो मेरे लिये शुभ न होगा। आस्ट्रिया सोचता था कि जो रूस और फ्रांस मिले तो फिर इनके सामने कोई न ठहर सकेगा, अंगरेजों से मिल कर तो संभव है कि मुझे गई हुई इटाली फिर मिल जाय। सार यह कि स्वार्थपरायणता ने किसी को भी सच्चे मन से मिलने न दिया। आस्ट्रिया फ्रांस से सीमातीत भय और ईर्ष्या करता था, इस लिये वह इंगलैंड और फ्रांस दोनों नावों पर सवार रहा।

आस्ट्रिया ने प्रकाश रूप से यह प्रस्ताव ले कर एक दूत इंगलैंड ना कि—'रूस, फ्रांस और आस्ट्रिया के उचित प्रतिबंधों (शर्त्तों)

पर संधि हुई है, इसमें इंगलैंड बाधक होगा तो ऊसके विरुद्ध सारे युरोप की शक्तियां अस्त्र धारण करेंगी ' और गुप्त रूप से यह कहलाया कि—' आस्टिया, फ्रांस और रूस की सम्मिलित शक्ति का सामना करने में असमर्थ है, किंतु वह सबसे पृथक रहेगा। ' साथ ही यह भी बतला दिया कि इंगलैंड ने जो बर्ताव डेनमार्क के साथ किया है उससे युरोप के सभी रजवाड़े बहुत असंतुष्ट हुए हैं।

संवत् १८६४ (ई० १८०७) की १६ वीं नवंबर को सम्राज्ञी सहित नेपोलियन ने इटली की यात्रा की और वेनिस, मानतोया मिलन प्रभृति अपने अधिकृत देशों को देखता और उनकी समुन्नति के साधनों को बतलाता हुआ १ ली जनवरी १९०८ ई० को वह परिस लौट आया। मिलन में ही जो राजकाज संबंध की डाक मिली थी, उससे इसे अवगत हुआ था कि इसकी ' बर्लिन डिक्री' द्वारा अंगरेजों को बहुत हानि पहुँची है,जिसे उन्होंने कुछ फरासीसी व ,उसके मित्रों के जहाजों की लूट से और कुछ निरपेक्ष जातियों के जहाजों पर २५) सैकड़ा धींगाई का कर ले कर, थोड़ा बहुत पूरा करना आरंभ किया है। इस प्रतिद्वंद्विता से छोटे छोटे राज्यों और नगरों का वाणिज्य बंद हो गया, अमेरिका ने भी अपना माल भेजना इसी झगड़े के कारण बंद कर दिया।

मिलन से नेपोलियन ने एक और विधान किया, जो 'मिलन डिक्री' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके अनुसार स्थल भाग में अंगरेजी जहाजों के लूटने की विधि हुई, क्योंकि जल पर अंगरेज फरासीसी जहाज लूटते थे। अंगरेजों की यह घोषणा थी कि जो

जहाज इंगलैंड के बंदर में उपस्थित होंगे और २५) सैकड़ा कर न देंगे वे लूट लिये जांयगे।

पैरिस लौटने पर नेपोलियन ने स्पेन और पुर्तगाल की राजनैतिक स्थिति पर दृष्टि डाली। इस समय पुर्तगाल की जन संख्या तीस लाख थी। पुर्तगाल अंगरेजों की अधीनता में रह कर मूर्ख व दुर्मत हो गए थे। इसके बंदर अंगरेजी जहाज और अंगरेजी माल से भरे रहते थे। नेपोलियन ने पुर्तगाल शासक को एक पत्र लिखा कि तुम्हें प्रकट रूप से एक ओर होना होगा, चाहे फ्रांस की ओर हो वा इंगलैंड की। हमारे पक्ष में होने से अंगरेजी जहाजों का वहां आना बंद करना होगा और जो हैं उन्हें जब्त कर लेना होगा। पुर्तगाल ने यह पत्र अंगरेजों को सौंप दिया। इस पर नेपोलियन ने सेनापति जूनो को पुर्तगाल पर आक्रमण करने के लिये भेजा। पुर्तगाल जर्जर तो हो ही रहा था, बिना लड़ाई झगड़े के फरासीसियों ने उस पर अधिकार कर लिया। राजा रानी और राजवंशीय लोग अंगरेजों की सहायता से पुर्तगाल छोड़ कर अटलांटिक लांघ ब्रेजिल में जा रहे। यह घटना २१ नवंबर १८०७ की है। केवल पंद्रह सौ वीरों से ही पुर्तगाल फरासीसियों ने ले लिया और किसी ने न पूछा कि तुम्हारे मुंह में कितने दांत हैं।

पुर्तगाल लेने के पीछे फ्रांस की दृष्टि स्पेन पर पड़ी। जब नेपोलियन मिलन में था वहां उसे संवाद मिला था कि जिब्राल्टर अंगरेजों ने स्पेन से ले लिया है। स्पेन का राजा वृद्ध बिलासी और मूर्ख था, रानी भी लंपटता निरत थी, ऐरे गैरे पंच कल्यान शासन करते

थे, प्रजा असंतुष्ट थी। स्पेन में इस समय बार्बोन वंशीय चतुर्थ चार्ल्स राजा थे व लुईशा मेरी रानी थी। स्पेन नरेश व युवराज फर्डिनेंड में राज्य के लिये वैमनस्य फैला। पिता को हटा कर पुत्र राजा हो गया, और अनेक आंतरिक झगड़े अशांति के कारण उपस्थित हो गए। राजा तथा युवराज दोनों ने नेपोलियन की शरण ली तथा सहायता मांगी। नेपोलियन ने दोनों को शासन के अयोग्य समझ स्पेन में अपने भाई जोसेफ को जो नेपल्स का राजा था राजा बनाया। चार्ल्स को मेवार की जागीर तथा युवराज को इटोरिया दे कर राजी कर दिया और स्पेनराज्य के शेष दो पुत्रों की चार लाख फ्रैंक वार्षिक की जीविका बाँध दी। इस तरह स्पेन भी फ्रांस के अधीन हुआ। यह ऐतिहासिक निर्णय नेपोलियन ने १८०८ ई० के जून में वियाना नाम के स्थान में किया था। यहां सब प्रबंध करके अगस्त महीने में नेपोलियन लौट कर पैरिस पहुँचा।

नेपोलियन में एक बड़ा गुण यह था कि वह सब कामों को बिना निज के देखे तथा जांच पड़ताल किए न करता था। स्पेन से लौटते समय मार्ग में बिनि नदी पर एक पुल बनाने की वह आज्ञा दे आया था, तयार होने पर वह उसे स्वयम् देखने गया और बात करने पर उसे ज्ञात हुआ कि यह पुल उसके प्रधान इंजीनियर ने नहीं बनवाया किंतु वह उसके किसी थोड़े वेतन भोगी निम्न सहकारी के कौशल का परिणाम है, अतः इसने उस ख्यातिहीन इंजीनियर को पैरिस का सर्व प्रधान इंजीनियर नियत किया। इस प्रकार के अनेक प्रमाण नेपोलियन के जीवन में मिलते हैं। इसे उचित आदर उचित व्यक्ति को

देना स्वभाव से ही पसंद था। खुशामदी और चापलूसों का कभी इस पर वश नहीं चला। चाटुकार इसे तनिक भी नहीं भाता था।

बार्बोन वंशजों के हाथ से स्पेन निकल जाने से आस्ट्रिया को बड़ा दुःख हुआ और सहस्र प्राण से वह नेपोलियन की अशुभ चिंता में संलग्न हुआ। सात लाख का बल फिर आस्ट्रियाधिप ने नेपोलियन का सामना करने के लिये तैयार किया, तथा जहां तहां फरासीसियों का अपमान भी करना आरंभ कर दिया। किंतु जब नेपोलियन ने फ्रांसस्थ आस्ट्रियन दूत से पूछा तो वह बिल्कुल नकार गया और कहने लगा—'महाशय, केवल आत्मरक्षा के लिये सेना सजाई जा रही है।' नेपोलियन ने कहा—'मैं सब जानता हूँ, मैं भी अपने दुर्गों का जीर्णोद्धार करता हूँ और तैयार रहूँगा, कोई मुझ पर अचानक झपट नहीं सकता। जो आप समझते हों कि रूस आप के साथ होगा तो यह भी भूल है। मुझे ज्ञात है कि उसका मत क्या है और वह किसका पक्ष लेगा। आपके सम्राट् असंतुष्ट जर्मनी के उच्च वंशियों के बहकाने से बहके हैं।" आस्ट्रिया में फरासीसी राजदूत रहता था, उसे भी नेपोलियन ने सब बातें लिखीं और यह भी लिखा कि 'सब बातें नरेश से कह कर, कहो कि उन्हें जोसेफ को स्पेन का नृपति स्वीकार करना होगा।' उधर राइन के युक्त राज्य को रण के लिये तयार होने को भी इसने समाचार भेज दिए।

इन दिनों स्पेन में प्रजाविद्रोह आरंभ हो गया था। पुर्तगाल में शांति स्थिर न रह सकी। दोनों राज्यों की प्रजा ने आक्रमण किया और बोलोन में बहुत सी सेना को घेर लिया, अंत में इस फरासीसी

सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा और स्पेन के राजा जोसेफ बोनापार्ट ने एब्रो के गढ़ में आत्मरक्षा का प्रयत्न किया। इस तरह चारों ओर से फ्रांस के सिर पर विपद सूचक घनघोर घटा फिर घिर आई। उत्तर में आस्ट्रिया और प्रशिया, दक्षिण में इंगलैंड, पुर्तगाल तथा स्पेन ! रूस फ्रांस का मित्र होते भी बेबस था, क्योंकि मंत्रिमंडल और श्रेष्ठि गण को राज-माता ने बहका दिया था। सारा राज्य नेपोलियन के रुधिर का प्यासा था, ज़ार बेचारा क्या कर सकता था।

नेपोलियन ने रूस के ज़ार और अन्य मित्र राज्यों, राजकुमारों, भद्रों व विद्वानों को एरफर्थ में निमंत्रित कर के २७ सितंबर १८०८ को एक दरबार किया। आस्ट्रिया नरेश को निमंत्रण नहीं दिया गया था क्योंकि उनके भाव फ्रांस के विरुद्ध थे। तथापि उन्होंने अपना दूत भेजा, नेपोलियन ने और सब तरह इस दूत का सत्कार किया परंतु मंत्रणा में उसे सम्मिलित न होने दिया, इसलिये वह जल्दी ही लौट गया। इस सम्मिलन में राजा गण, राजकुमार वृंद, याजक-समूह, उच्च सैनिक पदाधिकारी, कवि-कोविद और अच्छे अच्छे जमींदार साहुकार सब आए थे। बीस दिन पर्य्यंत यह सम्मिलन रहा। रूस के ज़ार और फ्रांस सम्राट् तथा इनके एक एक अमात्य-चार व्यक्तियों ने बैठ कर एक दिन विशेष विचार किया। इस दरबार से रूस व फ्रांस की मित्रता और भी घनिष्ट तथा सुदृढ़ हो गई। सुप्रसिद्ध स्विस इतिहासकार मूलर भी इसमें आया था। इसने अपनी पुस्तक में नेपोलियन की बड़ी प्रशंसा की है। कई दिन तक

नाच रंग हुआ, क्योंकि ज़ार विलासताप्रिय थे, पर नेपोलियन ऐसे कामों में सम्मिलित नहीं हुआ।

रूस ने पुर्तगाल और स्पेन में नेपोलियन कृत कामों का तथा जोसेफ को स्पेन का नृपति बनाने का अनुमोदन किया और फ्रांस ने ज़ार के किंगलैंड, मालडोविया और वालाचिया ले लेने का समर्थन किया। इन दोनों ने मिल कर इंगलैंड को संधि के निमित्त एक पत्र लिखा, इस पर दोनों ने अपने अपने हस्ताक्षर किए। १४ अक्तूबर को सम्मिलन उठा और रूस तथा फ्रांस के दूत दोनों सम्राटों की सम्मति ले कर इंगलैंड गए। बड़ी कठिनाई से ये इंगलैंड में प्रविष्ट हुए क्योंकि शांति तथा संधि के झंडे ले कर भी कोई जहाज बंदर में न जाने पाता था। जैसे तैसे इंगलैंड पहुँचने पर भी फ्रांस का दूत रोका गया, पहले केवल ज़ार का दूत गया, किंतु पीछे से उसे भी जाने की अनुमति मिली। पत्र पढ़ कर इंगलैंडेश्वर ने अपनी लेखनी से कुछ न लिख कर सचिव द्वारा यह उत्तर दिया कि पत्रोत्तर पीछे दिया जायगा। पीछे से मंत्रियों द्वारा यह उत्तर दिया गया कि— "इंगलैंडश्वर ने स्वयम् इस कारण से पत्र नहीं लिखा कि वह आपमें से एक को (नेपोलियन से अभिप्राय था) राजा नहीं स्वीकार करते। संधि का प्रस्ताव शुद्ध हृदय से किया हुआ प्रतीत नहीं होता। जो संधि होगी तो क्या इसी दशा में होगी जो कि स्पेन में हो रही है?" इस प्रकार का उत्तर पृथक् पृथक् रूस और फ्रांस को मिला था। संधि संबंध में एक पत्र आस्ट्रिया को भी दिया गया था, लेकिन उसका भी कुछ फल न हुआ।

२९ अक्तूबर १८०८ को नेपोलियन को स्पेन की ओर यात्रा करनी पड़ी। यह पैरिस से बेयोनि हो कर बेटेविया पहुँचा। यहां सब सेना पहले से एकत्र थी, अतः इसने दो लाख सेना को एक साथ कूच करने को आज्ञा दी। उधर अंगरेजों के बल से सम्मि-लित स्पेनियर्ड थोड़ी सी फरासीसी सेना देख कर अकड़ रहे थे। नेपोलियन ने एक दल शत्रु के बाँए और एक दहने भेज कर आप केंद्रस्थ सेना पर युगपत् आक्रमण करने को तैयार हुआ। पाँच लाख स्पेनियर्ड फरासीसी आक्रमण से विचलित हुए और बर्गेस नामक स्थान में जाकर ठहरे। ११ वो नवंबर को यहां पर दूसरा घोर युद्ध हुआ। यहां से भी शत्रुदल हार कर भागा, और एस्पी-नोजा में फिर तीसरा तुमुल संग्राम हुआ। यहां तीस सहस्र स्पेनियर्ड लोगों ने छ सहस्र फरासीसियों को दबा लिया था, किंतु इसी बीच में बारह सहस्र फरासीसी सेना और आ मिली। तब तो अठारह सहस्र फरासीसी बाहिनी ने तीस सहस्र स्पेनियर्ड किसानों की अशिक्षित भीड़ को यहां से भी भगाया। आगे आगे स्पेनियार्ड भागे जाते थे पीछे पीछे फ्रेंच खदेड़ते जाते थे। नदी किनारे, मार्गों और जंगल में सर्वत्र स्पेनियर्ड-रुधिर से धरती लोहित वर्णा हो गई। 'ट्रोयस' नदी के छोटे से पुल पर हो कर शत्रुदल भागने को था। किंतु इतनी बड़ी सेना इस छोटे से सेतु पर हो कर पार न हो सकी। निदान, एक बार फिर स्पेनियर्ड और फ्रेंचों का युद्ध हुआ। स्पेनवालों ने गोला बरसाना आरंभ ही किया था कि नेपोलियन ने पोलिस सवारों के दल को आक्रमण करने के लिये उत्साहित किया। ये

लोग शत्रुओं की तोपों पर ऐसे पड़े जैसे चीता मृगझुंड पर पड़ता है। सुतराम् शत्रु दल प्राण ले कर भागा, तोपें और सब सामान फरासीसियों के हाथ आया।

एक ओर अंगरेज सेनापति सर जान मूर पुर्तगाल के उत्तर से झपटा आ रहा था, दूसरी ओर नेपोलियन, स्पेनियार्डों को जीत कर, इनके साथ भी दो दो हाथ करने के लिये आगे बढ़ा। २ दिसंबर को प्रातः काल राजधानी मेडरिड के नगर के प्राकार (चारदीवारी) के पास नेपोलियन ससैन्य पहुँच गया। नगर पर आक्रमण करने के पहले दो बार नेपोलियन ने समझाया, किंतु हठी शत्रु कब माननेवाले थे, अगत्या तीस वृहन्नलिकाओं की युगपत् बौछार से नगर का परिकोटा तोड़ दिया गया और फिर दूत भेज कर समझाया गया कि—'अब भी यदि तुम द्वार न खोलोगे और आत्मसमर्पण से हटोगे तो नगर को विध्वंस कर दिया जायगा।' जब प्राण बचने का कोई दूसरा मार्ग न दीखा, और न विजय की अद्धी भर भी आशा रही, तब नगर का कपाट खोल दिया गया। स्पेन की राजधानी पर अधिकार करने पर नेपोलियन ने घोषणा कर दी—'हम सब भाँति तुम्हारे हित की कामना रखते हैं। तुम्हारे यहाँ का शासन सुशृंखलित कर के तुम्हारे दुःखों को दूर करना ही हमारा अभीष्ट है। पुराने राजाओं ने तुम्हें जो दुःख दिए हैं उनसे तुम्हें मुक्त किया जायगा।'

अंत में ज्ञात हुआ कि अंगरेजी सेनापति सर जान मूर तीस सहस्र का बल लिए हुए पूर्व प्रोषित सेनापति सर डेविड के साथ

योग देने के लिये आ रहे हैं। सर डेविड दस सहस्र सैन्य ले कर राजधानी की ओर दौड़े थे। नेपोलियन चुप रह गया, और जब अंगरेजी दल जल से दूर थल पर निकल गया तब उसने इन्हें खदेड़ लिया। ये पुर्तगाल और स्पेनी सहायताविहीन नेपोलियन की अजय शक्ति से भयभीत हो कर भागे। २२ दिसंबर को चालीस सहस्र फरासोसी सेना अंगरेजी सेना पर आक्रमण करने चली और २ जनवरी को इसने स्तर्गा नामक स्थान पर इंगलैंडीय सेना को जा लिया। यहाँ पर नेपोलियन को हरकारे ने आ कर कुछ आवश्यक कागज पत्र दिया। नेपोलियन इन्हें पढ़ कर चिंताकुल हो उठा, क्योंकि नेपोलियन को घर से दूर गया जान कर आस्ट्रिया ने अंगरेजों से मिलकर छेड़ छाड़ आरंभ कर दी थी। इसलिये नेपोलियन ने अंगरेजी सेना का पोछा करने पर अपने सेनापति मार्शल सेंट को छोड़ा और आप वह मैड्रिड को लौट पड़ा। मार्ग में वह सोचता जाता था कि अब बिना घोर संग्राम किए प्राण न बचेंगे, या तो मरना होगा या फ्रांस को छोड़ बैठना पड़ेगा। अतः डन्यूब नदी के किनारे अंगरेजों तथा आस्ट्रियावालों से युद्ध करना ही पड़ेगा। यह निश्चय कर के नेपोलियन मेड्रिड लौट आया।

उधर सेंट का इंगलैण्ड की सेना से गहरा समर हुआ। अंगरेजी सेनापति मूर मारा गया और बहुत सो अंगरेजी सेना नष्ट हुई, शेष भाग खड़ी हुई। इनका बहुत सा सामान फरासोसियों के हाथ लगा। कहते हैं कि सब छ सहस्र अंगरेजी सैनिक फरासोसियों के हाथ से इस जगह पर हताहत अथवा बंदी हुए और उपयुक्त चार

युद्धों में चौव्वन सहस्र स्पेनियर्ड भी काम आए।

नेपोलियन ने मेड्रिड का प्रबंध आरंभ किया, सब के पहले अपने दो सैनिकों को इस अपराध में उसने फाँसी दी कि उन्होंने एक स्पेन की स्त्री पर बलात्कार किया था, और नेपोलियन प्रजा पर अन्याय किया जाना कदाचित नहीं पसंद करता था। अन्य बारह बागियों को फाँसी दी गई। एक फरासीसी यहां भाग कर आया था, इसने स्वदेश के विरुद्ध हथियार उठाया अतः इसे फाँसी की आज्ञा दी गई थी, किंतु उसकी पुत्री ने नेपोलियन को राज-पथ पर घोड़े पर जाते देख घुटने के बल हो क्षमा प्रार्थना की। सारा हाल जानने पर भी बालिका का रुदन उससे न देखा गया और उसने मारक्वीस आव सेंट सीमोना को अपने राजकीय दया के अधिकार से क्षमा कर दिया।

इस तरह उसने दूसरी बार स्पेन को विजय कर के फिर जोसेफ को सौंपा और आप पाँच घंटे में पचासी मील लगातार घोड़े पर सवार बेयोनि पहुँचा। मार्ग में सिवा घोड़ा बदलने के एक क्षण भी नेपोलियन ने कहीं आराम नहीं किया। बेयोनि से गाड़ी पर सवार हो २२ जनवरी सन् १८०९ ई० को वह पैरिस में दाखिल हुआ। इस समय नेपोलियन के निगलने को राजा लोग मुँह बाये बैठे थे। यद्यपि उसने भी कभी संधि करने में आना काना नहीं की थी, जिस शर्त पर जिसने चाहा उसने संधि की, वह सदा शांति का पक्षपाती रहा, तो भी अभाग्य से शत्रुओं की कमी न थी। उसका बल भी सहज का न था, दो ही महीने में उसने

स्पेनिश सैन्य को ऐसा उखाड़ कर फेंका जैसे प्रबल आँधी पुराने विशाल वृक्षों को तोड़ फेंकती हैं, साथ ही उसने महाबली अंगरेजों को भी स्पेन से अर्द्ध चंद्र दे कर निकाला तो भी किसी ने इसका विरोध न छोड़ा। पैरिस पहुँचते ही इसे समर का साज फिर सजाना पड़ा।

ईन नदी आस्ट्रिया और बेवेरिया दोनों राज्यों में हो कर बहती थी। इसी नदी के किनारे दो लाख आस्ट्रियन सेना एकत्र हुई थी। १० अप्रैल १८०९ ई० को आर्क ड्यूक चार्ल्स अगणित सैन्य ले कर ईन नदी के पार उतरा और बेवेरिया की राजधानी म्यूनिच की ओर चला। उसने यह प्रगट किया कि मैं बेवेरिया भूमि का उद्धार करूंगा और जो मुझे रोकेगा उसे मैं शत्रु समझूंगा। यद्यपि यह काम आस्ट्रिया ने संधि की शर्त के विरुद्ध जैसा विचार था आरंभ कर दिया, किंतु आस्ट्रिया के बुद्धिमान भद्रों ने इसका घोर विरोध किया। काउंट लूई वान, मैन फ्रे डिस और काउंट वालिस ने प्रत्यक्ष रूप से इस चढ़ाई का विरोध किया था। वालिस ने यहां तक कह डाल कि जिस तरह दारा सिकंदर से लड़ कर पछताया वैसे ही आस्ट्रिया को पछताना होगा।

इधर नेपोलियन रवाना हो कर स्ट्रासबर्ग पहुँचा। यहां राज्ञी को छोड़ कर राइन नदी पार कर के वह सेना में सम्मिलित होने चला। एक रात को बरटेमबर्ग में एक राज-कर्मचारी के यहाँ रहा। इस निर्धन को बेटी के विवाह करने की बड़ी चिंता थी। भोजन करते समय उसके घर के हाल पूछने पर जैसे यह बात

नेपोलियन को ज्ञात हुई, उसने उसके विवाह का यथेष्ट प्रबंध करा दिया और प्रातःकाल फिर घोड़े पर चढ़ कर वह चल निकला और अकेला मारा मार चल कर गंभीर रात में डिलेनजेन पहुँचा। बेवेरिया नरेश म्यूनिच से भाग कर यहां ही आ रहे थे। नेपोलियन ने इनकी सांत्वना की, इन्होंने अपना युवराज नेपोलियन के साथ भेजने की इच्छा की। नेपोलियन ने सेनापति पद पर तो अनुभवहीन बालक को लेना अनुचित बतला कर नायक पद पर लेना स्वीकार किया। यहां से फिर सवार हो कर नेपोलियन बंदी नामक स्थान पर जाकर अपने सेनापतियों से मिला।

शत्रुदल में पाँच लाख की भीड़ थी, फरासीसी सेना पूरी एक लाख भी न थी, फिर जो मार्ग फरासीसी सेनापतियों ने अवलंबन किया था ठीक न था। तुरंत नेपोलियन ने सेना को यथास्थान नियत करने की आज्ञा दी तथा सेनापति दामो की सेना की स्थिति देख कर, उसकी बहुत भर्त्सना की। उसने सेनापति मेसाना और एसवार ने की पीडित सेना को, दो हजार जर्म्मन सेना के साथ डेन्यूब की ओर यात्रा करने की आज्ञा दी तथा दामो को रेटिसवान का पुल तोड़ने की आज्ञा दी। और नब्बे हजार सेना अपने झंडे तले एकत्र कर, तीन दीन के भीतर बीस हजार शत्रु योद्धाओं को हताहत और बंदी किया। बेवेरिया युवराज की वीरता से प्रसन्न हो कर नेपोलियन ने उसकी पीठ ठोंकी और कहा—"देखो जो तुम विलासी होगे तो तुम्हारे लोग भी विलासी होंगे और जो तुम श्रमशील और बहादुर बने रहोगे तो तुम्हारे लोग भी साहसी, वीर तथा

श्रमशील होंगे। मुझे आशा होती है कि तुम बेवेरिया नरेश की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रख सकोगे।"

इस तरह पर लगातार तीन बार फरासीसी सेना ने अपने से दूनी तिगुनी सेना को पराजित किया। रेटिसवान अधिकार करने के समय जो युद्ध हुआ था, उसमें नेपोलियन के पैर में गोली लगी लेकिन इसने उसकी कुछ परवाह न की। पैर में पट्टी बांध घोड़े पर सवार हो वह सेना परिचालन में लग गया। किंतु चोट पूरी लगी थी, केवल सेना के साहसहीन हो जाने के भय से इसने तत्काल अश्वारोहण किया था। जब सेना निश्चिंत हो युद्ध में निमग्न हुई तब यह एक कृषक के झोपड़े में अचेत हो कर पड़ गया। कुछ समय उपरांत सावधान होने पर फिर घोड़े पर चढ़ सेना में पहुँचा। युद्ध होते छः दिन हो चुके थे, इस बीच में चालीस सहस्र शत्रु सेना मारी गई, बीस सहस्र आहत व बंदी हुई, ६०० गाड़ी, ४० झंडे व १०० तोपें भी फरासीसियों के हाथ लगीं। अंतिम दिन लगातार पंद्रह घंटे पीछे घोड़े की पीठ से उतर कर नेपोलियन डेरे में घुसा था।

जब आस्ट्रियावाले हार कर भागे तो नेपोलियन ने आस्ट्रियन राजधानी वायना की ओर मुँह फेरा; क्योंकि बारंबार संधि भंग करनेवाले दुर्वृत्त आस्ट्रियानरेश को शिक्षा देना इसने बहुत ही जरूरी समझा। विजयोन्मत्त फरासीसियों को आतंकित आस्ट्रीय दल रोक न सका और फरासीसी सेना ने वायना पर अधिकार कर लिया। वायना से आस्ट्रियापति ने संधि के लिये बड़ी नम्रता और

खुशामद का पत्र लिखा था, लेकिन पत्र नेपोलियन के हाथ में पहुँचने के पहले ही राजा सपरिवार वायना छोड़ कर भाग निकला।

१० वीं मई को नेपोलियन ने ससैन्य वायना की सीमा में पदार्पण किया था। वायना उस समय डेन्यूब नदी की एक शाखा पर स्थित था। डेन्यूब नदी नगर से दो कोस पर बहती थी। नगर की बनावट गोलाकार थी, जिसकी परिधि डेढ़ कोस के अनुमान होगी। नगर के चारों ओर रक्षा के लिये दृढ़ प्राकार ईंट और पत्थर के बने थे, जनसंख्या एक लाख के लगभग थी तथा चारों ओर की बस्ती मिला कर नगर की परिधि दस मील होगी। नेपोलियन ने वायना प्रवेश के पूर्व एक दूत भेजा था कि बिना रक्तपात नगर मिल जाय तो अच्छा हो, किंतु दूत को एक चमार ने मार डाला और सारी प्रजा ने उस चमार को बड़ी निष्ठा के साथ शिखर पर चढ़ा नगर में फिराया। इससे नेपोलियन का क्रोध और भी भभक उठा। १० घंटों में तीन सौ गोले चला कर फरासीसियों ने नगर का परिकोटा विनष्ट कर डाला। जब आर्क ड्यूक मैकमिलियन ने देखा कि अब वचाव की बिल्कुल आशा नहीं है तब वह भाग खड़ा हुआ।

नेपोलियन की भद्रता का एक बड़ा भारी प्रमाण इस युद्ध में यह पाया जाता है कि जब इसने सुना कि राजा का बीमार पुत्र उसी महल में है, जहां कि गोला चल रहा है, तो तुरंत इसने गोला बरसाना बंद कर दिया; और वह सेना को दूसरी ओर हटा ले गया।

लेकिन वायना लेने से ही नेपोलियन को छुट्टी न मिली। इंग-

लैंड, आस्ट्रिया और स्पेन तीनों इसके पीछे पड़े थे। नेपोलियन ने प्रशिया का कुछ अंश तोड़ कर वारसा का राज्य स्थापित किया था और उसे सेक्सनीवालों को सौंपा था। इसे आस्ट्रिया नृपति फ्रांसिस के भाई ड्यूक फर्डीनेंड ने लूट लिया। रूस ने यह काम दुनिया को देखाने के लिये किया था, पेट में रूसनरेश की माता और मंत्रिमंडल फ्रांस के शत्रु थे। एक दूत के पकड़े जाने पर उस के पास एक पत्र मिला। इस में लिखा था कि शीघ्र ही आस्ट्रिया के साथ मिल कर फ्रांस पर चढ़ाई होगी। यह पत्र फर्डीनेंड के हाथ का था, नेपोलियन ने इसे रूसराज के पास भेज दिया।

सार यह कि आस्ट्रियानरेश राजधानी से भाग कर भी रण में प्रवृत्त हुए और फरासीसियों को बड़ी कठिनाई से इनको कई स्थानों पर दमन करना पड़ा। अंत में १४ अक्तूबर १८०९ को आस्ट्रिया नरेश ने चौथी बार फ्रांस के साथ संधि स्थापित की।



चौदहवाँ अध्याय

पत्नि परित्याग । दूसरा विवाह । रूसी संग्राम ।

घोर विपत्ति का आगम ।

अभी तक नेपोलियन को कोई पुत्र या पुत्री न थी । जोसेफेनी के रज और उसके प्रथम पति के वीर्य्य से एक पुत्र इयोजिन था, जिसे इटाली का राज्य नेपोलियन ने सौंप रखा था, और एक कन्या हेरीतेन थी, जो नेपोलियन के सहोदर लुइ बोनापार्ट को ब्याही थी । लुइ बोनापार्ट को हालैंड का राज्य सौंपा गया था । नेपोलियन को इस बात की बड़ी चिंता थी कि मेरा उत्तराधिकारी कौन होगा । इयोजिन के उत्तराधिकारी होने में अनेक विघ्न देख पड़ते थे । जोसेफेनी के साथ नेपोलियन ने विवाह तो किया था, पर फ्रांस के उच्च वंशज ऊर्द्धतन कर्म्मचारी प्रसन्न न थे, यहां तक कि इसके भाई बहिन और माता सभी लोग अप्रसन्न थे । इसने देखा कि यदि मैं इयोजिन के लिये कुछ करूँगा भी तो मेरे कुटुंबी मुझे क्षमा न करेंगे; फिर सारा युरोप तो शत्रु हो रहा है, यदि किसी राजघराने से संबंध होता तो आत्मीयता का बंधन कम से कम एक राज्य से तो हो जाता । सुतराम् नाना प्रकार की बातों को सोच कर नेपोलियन ने निश्चय कर लिया कि जोसेफेनी को त्याग कर मैं किसी राज-कन्या से विवाह करूँगा और जोसेफेनी की जीविका नियत कर दूंगा, जिससे वह सुख से जीवन बिता सके ।

ई० सन् १८०९ के नंवबर मास में नेपोलियन ने अपना अभिप्राय अपनी प्यारी जोसेफेनी को सुना दिया। इसने समझाया कि मैं राजकीय कर्तव्यों से बाध्य हो कर ऐसा करता हूँ किंतु दुखिया जोसेफेनी को कैसे संतोष हो सकता था, पर वह यह समझ कर चुप रही कि जब मुझ निरपराधिनी को यह त्यागते हैं, तो मेरा भाग और इनकी इच्छा, यह जानें और इनका काम जाने। नेपोलियन ने इटाली से इयोजिन को बुलाया, किंतु वह सारा हाल सुन कर बिगड़ा और कहने लगा कि मैं राज्य छोड़ता हूँ और अपनी माता के साथ निर्वाह करूंगा। माता राज्ञी होने के योग्य तो नहीं उसका पुत्र राजा होने के योग्य कैसे ?

किंतु इसे नेपोलियन ने समझाया और कहा—'क्या तुम मेरी संतान की सुधि न लोगे ? उन्हें कौन पढ़ायगा और पालेगा ? मुझे तुम से बड़ा भरोसा है। मैं यह काम कर्तव्य के वशीभूत हो कर करता हूँ। अंत में इसकी माता ने भी इसे समझाया और यह मान गया। १५ दिसंबर को विवाह संबंधी त्यागपत्र लिख कर हस्ताक्षरित हुए। माल माइसन का सुंदर सजा सजाया सौध परित्यक्ता पत्नी को रहने के लिये दिया गया, तीस लाख फ्रेंक वार्षिक रोकड़ी का प्रबंध किया गया और विवाह बंधन टूटने पर भी वह सम्राज्ञी के ही नाम से पुकारी जाने लगी।

इन्हीं दिनों लुई बोनापार्ट ने बर्लिन डिक्री को भंग किया। जब नेपोलियन ने बिरक्त हो कर पत्र लिखा तो उसने राज्यपद परित्याग कर हालैंड को भी त्याग दिया और हेरीतेन को दोनों पुत्री

सहित पैरिस भेज दिया और आप पैरिस भीं न आया। राजनैतिक मतभेद से मनोमालिन्य पहले से चलता ही था अब बिल्कुल ही अनबन हो गई। नेपोलियन को अपने छोटे भाई की इस करतूत से बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि इसने पिता के मरने पर इसे पाला पोसा और पढ़ाया लिखाया था, साथ ही राजा भी बना दिया था।

२१ जनवरी १८१० को सम्राट् ने तुईलेरी के महल में दरबार किया, इसमें कई प्रधान पुरुषों ने अस्ट्रिया की राजकुमारी के साथ विवाह करने की सम्मति दी किंतु राजनैतिक कारणों से नेपोलियन ने रूसराज की दुहिता से विवाह करना उचित समझा क्योंकि रूस जैसा बृहत् साम्राज्य यदि फ्रांस के साथ विवाहसंबंध द्वारा मिल जाता तो क्या न हो सकता था। यही प्रधान विचार नेपोलियन के हृदय में तरंगित हुआ। तदनुसार ही एक दूत सेंटपीटर्सबर्ग भेजा गया। रूस राजमाता ने मन में तो बड़ा आनंद किया कि ऐसा विश्वविजयी दामाद मिले तो फिर क्या चाहिए, किंतु अपना गौरव जताने के लिये यह उत्तर दिया कि–'सोचने बिचारने के पश्चात् पक्का उत्तर दिया जा सकता है। रूसराज की कन्या किसी सामान्य ग्रामीण की कन्या तो है ही नहीं; कि 'चट मंगनी पट विवाह,' बात होते ही सब काम तय हो जाय।'

नेपोलियन ने इस बात से अपनी हेठी समझ तुरंत आस्ट्रिया को दूत भेज दिया। आस्ट्रियानरेश मानों तय्यार ही बैठे थे, झट प्रस्ताव ग्रहण कर लिया गया। नेपोलियन स्वयं तो न गया परंतु उसने अपने प्रबल प्रतिद्वंदी आर्क ड्यूक चार्ल्स (आस्ट्रियानरेश के भाई

और प्रधान सेनापति) को अपना प्रतिनिधि निर्वाचित किया। इधर नेपोलियन के प्रिय मित्र वार्थर पहले से ही नाई ब्राह्मण का काम दे रहे थे। राठौरों की तरह नेपोलियन के लिये भी आस्ट्रिया राजकुमारी का डोला आया और सेंट क्लाउड के सौध में न्यायसंगत विवाह अर्थात् सिविल मेरेज हुई। सारे फ्रांस में सधारणतः और पैरिस नगर में विशेषतः बड़ा आनंद गान और भोजों की धूम मच गई। इस अवसर पर सिवा हतभागिनी जोसेफ़ेनी के और ऐसा कोई फ्रांस में न था जो आस्ट्रियानरेश की पुत्री मेरिया लुइसा और फ्रांससम्राट् नेपोलियन के विवाह से प्रसन्न न हुआ हो।

किंतु इस विवाह से रूस की रूसता बढ़ गई, उसे कुस्तुनतुनिया मिलने की आशा गई, नेपोलियन सा बीर बहनोई तो हाथ से निकल गया, अब तो रूस कुढ़ कर नाना प्रकार के व्यंग्य बोलने लगा। इंगलैंड को भी यह अच्छी न लगी। नव विवाहिता राज्ञी और सम्राट् में घनिष्ट प्रेम हो गया था। १८११ ई० की २० वीं मई को मेरिया लुइसा के रज और नेपोलियन के वीर्य्य से एक पुत्र हुआ। उधर नेपोलियन को दूसरा विवाह करने का जो कलंक था वह भी कुछ कम हुआ, क्योंकि पुत्र न होने के कारण विवाह करना आवश्यक है और हिंदुओं की भांति ईसाई धर्म्म में ऐसी रीति है नहीं कि एक पत्नी के होते दूसरा विवाह कोई कर ले।

नेपोलियन न्याय का अंकुश इतना मानता था कि एक बार इसने एक नया राजप्रासाद बनाने का हुक्म दिया था। उसके लिये राज्य से जो धरती ली गई उसके पास एक निर्धन का घर था जो

१००० फ्रांक से अधिक का न होगा। उसने इस धरती का दस सहस्र फ्रेंक मांगा और समझाने से वह न समझा। नेपोलियन के पास बात गई तो उसने कहा 'बापुड़ा घर बार छोड़ कर हटेगा फिर लाभ क्यों न चाहे, दे दो दस सहस्र दे दो।' जब उसे चुपके दस सहस्र मिलने लगे तो उसने तीस सहस्र के लिये मुँह फैलाया। सम्राट ने तीस ही सहस्र देने की आज्ञा दी, तब तो उसने पचास हजार लेने को हाथ बढ़ाया। तब नेपोलियन ने कहा—"जाने दो उस धरती को छोड़ दो मकान बाँका ही सही। यह शैतानपन पर उतर आया है तो रहने दो।"

रूस के सम्राट् अलक्षेंद्र ने नेपोलियन से आशा की थी कि वह पोलैंड राज्य की पुनः स्थापना न करे और वारसा को सहायता न दे। प्रथम तो यह बात इसने न मानी। साथ ही विवाह की बात चीत के कारण भी मनोमालिन्य बढ़ गया। रूस ने फिर लिखा कि डेन्यूब नदी के दक्षिण की भूमि सब की सब मुझे दे दो और मालडेविया तथा वालरिया स्थानों को भी मुझे सौंप दो। यह रूस की अनधिकार चर्चा थी। तुर्की और आस्ट्रिया के स्वार्थों को मटिया मेट करना भी नेपोलियन को उचित न दीखा। इसलिये नेपोलिअन ने टकासा उत्तर दे दिया। इस बात से रूस रहा सहा और चिढ़ गया। ऊपर से अंगरेजों ने उसकी पीठ ठोंक दी, फिर क्या था, चढ़ाई का प्रबंध होने लगा। जल पर तो इंगलैंड ने आग लगा ही रखी थी, स्थल पर भी दक्षिण में स्पेन और पुर्तगाल, तथा उत्तर में रूसराज खड्गहस्त हो कर फ्रांस के पीछे पड़ गए। यद्यपि चारों ओर

से शत्रु ही शत्रु दीखते थे, परंतु साहसी वीर नेपोलियन घबड़ाया नहीं, यही समझता रहा कि 'हरा देगा या जान लेगा'। जो हो इंगलैंड की प्रजातंत्र नीति दुर्बल थी, उच्च पाँच के पंजे में ही प्रजा के प्राण थे, रूस में अभिजात संप्रदाय खुल्लम खुल्ला सर्व सर्वा थी, फिर इनके मिल बैठने में अचंभा ही क्या ?

फ्रांस ने प्रशिया, आस्ट्रिया, इटाली, बेवेरिया, सेक्सनी और वेस्टरफेलिया आदि को अपनी सहायता के लिये बुलाया। ये सब ही फ्रांस के झंडे तले आए, किंतु इनमें से प्रशिया और आस्ट्रिया ये दो राज्य फरासीसी शासन प्रणाली के पक्षपाती न थे। आस्ट्रिया केवल नातेदारी से बँधा हुआ था, यह बात पाठक स्वयं समझ सकते हैं। इन सब राज्यों की मिला कर पाँच लाख सेना फ्रांस के सामने थी, परंतु अपने मन से सहायता देने के लिये पौलैंड भी उद्ग्रीव हुआ, क्योंकि उसे आशा हुई कि नेपोलियन प्रत्युपकार में उसकी रक्षा करेगा। पर पोलैंड का उद्धार कर के वह आस्ट्रिया को रुष्ट नहीं करना चाहता था, न वह रूस को ही जान कर रुष्ट करने की इच्छा रखता था। तथापि रूस खड्गहस्त था। नई संधि की कोई आशा न दीखी। तब नेपोलियन ने अपनी सेना में सम्मिलित होने के लिये ९ मई को प्रस्थान किया। रूसी सेना निमेन नदी के किनारे जमा हो रही थी। नेपोलियन ससम्राज्ञी को ड्रेसडेन पहुँचा अपने अधीन राजाओं से मिला। यहां आस्ट्रियानरेश पत्नी सहित आए थे। प्रशिया,सेक्सनी, नेपल्स, बवेरिया वर्टेमबर्ग, बेस्टरफेलिया आदि के नरपतिगण भी वहां थे। एक पखवाड़े तक यहां नेपोलियन ठहरा। उसने युद्ध की

सामग्री ठीक की और सेना को निमेन नदी पार जाने की आज्ञा प्रदान की। उधर से रूससम्राट् भी अपनी सेना परिचालन के लिये आप ही आए थे, इधर से फ्रांससम्राट् भी स्वयं चले।

२९ मई को नेपोलियन प्रेग पहुँचा। यहाँ से सम्राज्ञी को गले लगा कर उसने बिदा किया और आप जेंजिफ की ओर चला। यहां सेना का समस्त संबल व संभार—समुच्चय था। इसे देख भाल कर ११ वीं को चला और १२ जून को वह कानिग्सबर्ग पहुँचा और अपनी सेना की उसने दलबंदी की।

(वि० १८०८) ई० १८१२ की २७ वीं जून को सांयकाल में फरासीसी सेना नदी के किनारे पहुँची और नेपोलियन भी अपना अग्रयान लिये ‘ कोवनो ’ नगर में जा उपस्थित हुआ। रूस ने शत्रु-दल दमन के लिये एक विचित्र नीति सोची और मन में ठान लिया कि ‘ हम कभी हार न मानेंगे ’। इसी नीति के अनुसार इन्होंने तीन लाख का दल इस लिये छोड़ दिया कि नेपोलियन के सामने न पड़े, आगे पीछे रह कर नदियों के पुल तोड़ता और ग्रामों में आग लगाता रहे, जिसमें कभी फरासीसियों को अन्न जल तथा दाना घास न मिले। नेपोलियन कोवनो, विलना, ड्रीसा तथा विटेस्क नामक नगरों में हो कर गया था। रूस ने दिन घुलाने के निमित्त छल से संधि का प्रस्ताव ले कर एक दूत भेजा। नेपोलियन समझ गया, उसने कहा— ‘ संधि पत्र पर आप हस्ताक्षर कर देंगे तब मैं सेना निमेन पार ले जाऊँगा, नहीं तो विलना के खेत में निबटारा होगा।’ विलना से रूस के राज्य का भीतरी भाग ड्रीसा नगर लगभग १५० मील था।

१६ जुलाई को विलना छोड़ कर फरासीसी लोग जैसे तैसे हानि सहते हुए ड्विना (Dwina) नदी पार हुए। वाइटेस्क के पास मुठ भेड़ होते ही रूसी भागे, परंतु फरासीसियों ने जा कर नगर देखा तो राख का ढेर जला पड़ा था, मनुष्य का नाम भी नहीं। इसी तरह दूसरा युद्ध १७ अगस्त को स्मोलेंस्क में हुआ। यहां भी यही दशा हुई। तीसरा घोर समर मास्को में हुआ। इस युद्ध में नेपोलियन को बहुत हानि पहुँची। अनेक सैनिक भूख प्यास से बेमौत मरे।

रूसियों ने जिस निर्दयता से अपने ग्राम जलाए, अपनी प्रजा को नष्ट किया उसे जान कर कहना पड़ता है कि रूसियों में मनुष्यता का लेश भी नहीं है। नेपोलियन के मुख से भी एक बार यही निकला था कि–' ये लोग पक्के राक्षस हैं '।

इधर तो नेपोलियन इस दुःख में था ही, उधर मास्को युद्ध के कुछ पहले इसे देश से पत्र मिला जिस में लिखा था। कि अंगरेजों ने मैड्रिड पर दखल कर लिया। इस समय जो दशा नेपोलियन की थी उसे उसका जी जानता होगा। वह पचासों सहस्र सेना, सहस्रों घोड़े, कई वीर सेनापति खो चुका था, फिर खाने पहरने की कौन कहे, कई बार इसे स्वयम् भूख प्यास की यातना सहनी पड़ी थी। अब भी इस दुःख का अवसान न था, कि दूसरी ओर से शत्रुदल इसे स्पेन, पुर्तगाल आदि में सताने लगा। रूसनरेश तो मास्को समर के पहले ही भाग कर सेंटपीटर्सबर्ग पहुँचे थे और अपनी जीत का झूठा हल्ला करके नगर में उत्सव करा रहे थे, यहां उनकी प्रजा उनकी सेना के हाथों, उन्हीं की आज्ञा से लूटी और जलाई जाती थी।

किसी समय नेपोलियन दुखी हो कर कहता—" समर केवल पैशाचिक कृत्य है और कुछ नहीं।"

इस युद्ध में फरासीसियों के अस्सी अति पराक्रमी रणपंडित साहसी सेनापति और तीस सहस्त्र सेना हत वा आहत हुई, उधर पचास सहस्त्र रूसी मारे गए। इतने व्यय श्रम और सैन्यहानि करने तथा विजयी होने पर भी नेपोलियन की विजय न थी, क्योंकि वह पराजित स्थानों को अपने अधिकार में ले कर उनका प्रबंध करने में असमर्थ था और रूसराज ने न हार मानी थी, और न संधि की। फरासीसी सेना इतनी घबड़ा गई थी कि आगे बढ़ना दुस्तर हो गया। समर सभा बैठी। उसमें निश्चय हुआ कि अब देश को ही लौटना ठीक है। इसी परामर्श के अनुसार फरासीसी लौटे, लेकिन बिना अन्न जल चारा भूसा के, २५०० मील का जंगल तय करना, सीतकाल में खेल न था। बहुत सी सेना बेमौत मरने लगी। फ्रांस लौटते समय भी तीन लाख सेना जो रूसियों ने वहाँ जंगलों में फरासीसियों के सताने को छोड़ रखी थी, मौजूद थी। इसने जगह जगह पर आक्रमण करना, धावा मारना, लूट खसोट करना, पुलों को ध्वंस करना अथवा मार्गवर्ती ग्रामों और शरणस्थलों को जलाना पूर्ववत् ही प्रचलित रखा। पराजित हो कर जंगलों में वे छिप जाते और अवसर पा कर फिर सर पर आ खड़े होते।

इस तरह दुख सहते, हानि उठाते, लड़ते भिड़ते, जैसे तैसे बची खुची फरासीसी सेना नीयार नदी के पार हुई। यहाँ इसे अन्न

जल मिला और जीवन की आशा हुई। यहां पर नेपोलियन की पैंतीस सहस्र सर्वोत्कृष्ट रक्षक सेना में से केवल ६००० बाकी बची थी, इयोजिन की बयालीस सहस्र में से अठारह सहस्र, दामो की सत्तर हजार में से केवल चार हाजर, बची थी। इस समय भी सारी सेना पीछे थी, और संग्राम करने योग्य केवल १२००० सेना नेपोलियन के साथ थी। जब मास्को से फरासीसी सेना देश को लौटी, मार्ग में उसने रूसी सेनापति 'कुटुस्फ' पर 'कालोग' नामक स्थान पर आक्रमण किया था। उस समय बाँई ओर ३०० मील के अंतर पर दूसरा रूसी सेनापति 'वीट जेस्टन' अगणित सैन्य लिये पड़ा था। और पास ही अनुमानतः तीन कोस के अंतर पर एक तीसरा रूसी दल सेनापति 'चिगाकफ' तुर्की युद्ध को परि-समाप्त कर के ६० सहस्र सैन्य के साथ पहुँचा था। ये तिनों दल मिल कर 'बेडेसिना' नदी के किनारे नेपोलियन पर आक्रमण करने को दौड़े। रूस जाते समय नेपोलियन ने 'बारसफ' नगर में, जिस को शत्रुदल से निपातित होने की संभावना न थी, कुछ सेना छोड़ी थी। यह दल एक सेनापति की भूल से शत्रुओं के हाथ में पड़ा, इस बात का नेपोलियन को बड़ा ही दुःख हुआ। जब नेपो-लियन वहां आया तो उसे ज्ञात हुआ कि इसके समीप की बेरोसिना नदी का पुल शत्रुओं ने तोड़ डाला। जैसे तैसे पेड़ों को काट कच्चा सा सेतु बाँधा गया। तौ भी उतरना दुःसाध्य जान पड़ा और शत्रुदल के आक्रमण का भी भय था। सब ने कहा कि—'श्री महाराज पार हो जाँय, अन्नदाता की ही रक्षा में हम सब की रक्षा है'। नेपो-

लियन ने क्रोध कर के कहा—"क्या ? क्या अपनी प्राणप्यारी सेना को विपद् में छोड़ कर मैं अपने प्राणों की रक्षा करूँ ?"

सेना पार होने लगी, कुछ सेना ले कर नेपोलियन उस पार गया था और कुछ इसी पार थी कि उस पार घात में लगे शत्रु दल ने अनुसंधान पा कर नेपोलियन पर आक्रमण किया। इस पार से वेग से सेना सहायता को चली तो तोपों और अतुल मनुष्यों का भार न सह कर पुल टूट गया। बहुत सी सेना नदी में गिर पड़ी और शत्रुदल के अग्नि बाणों का लक्ष्य बनी। सम्राट् की विज्ञान-दक्षता और इनजीनियर की सहायता से सेतु का जीर्णोद्धार झट-पट हुआ और सेना पार गई। इसी बीच में फ्रांस के मंत्रीमंडल का फिर पत्र मिला कि प्रशिया और आस्ट्रिया इस विपद् का पता पाकर मित्र से शत्रु बन गए और वे फ्रांस पर चढ़ाई के लिये उद्ग्रीव हो रहे हैं। नेपोलियन ने उपस्थित सेनापतियों की सम्मति ली तो यही निश्चय हुआ कि सम्राट् तत्क्षण फ्रांस को पधारें। तदनुसार नेपोलियन सेना का भार सेनाधिपों पर ही छोड़ आप एक दम फ्रांस को ओर दौड़ा और चला चला १९ दिसंबर १८१२ को पैरिस पहुँचा।

इधर राजा इयोजिन के प्रधान सेनापति होने से मुराट ने डाह के मारे दुष्टता आरंभ की। इसपर नेपोलियन ने लिख था—"यह मत समझना कि सिंह मर गया, जो ऐसा समझेगा उसकी भूल जल्दी मिटाई जायगी।" नेपोलियन के बाहर जाने पर एक बार झूठ मूठ उसकी मौत का हल्ला मचा कर रूस की सहायता से मोराट ने गद्दी लेनी चाही, किंतु इसका

सिर तोड़ा गया और उपद्रव दब गया। इस प्रकार की बातों से नेपोलियन को निश्चय हो गया था और उसने प्रगट रूप से अपने सहचरों से कह भी दिया था कि–'मेरे मरने पर मेरा किया अनकिया हो जायगा'। फ्रांस की वर्तमान प्रतिष्ठा, सुख शांति मेरे ही जीवन पर निर्भर है। इस बात का मुझे बड़ा दुःख है। जब मेरी अनुपस्थिति में ही राज्य को यह दशा हो, तो मेरी क्षमता ही क्या? जो दो चार दुष्ट इतना उत्पात कर सकते हैं, तो इस क्षणभंगुर राज्य का क्या बनना ?।" जो कुछ भी हो, इन बातों को जान कर और रूसी यात्रा में फरासीसी सेना की सीमातीत हानि सुन कर, प्रशिया और आस्ट्रिया की खोपड़ी फिर गई। सच कहा है कि 'जिसकी धन धरती छीन ली हो उससे निश्चिंत कभो न रहे, चाहे वह कैसी भी मित्रता का दम क्यों न हो।' १ मार्च १८१३ को प्रशियाधिप फ्रेडरिक ने रूस से एक संधि की और ब्रेसिल्स में जर्म्मनी के सब रजवाड़ों को कहा कि जो फ्रांस के विरुद्ध हमारे साथ न उठेगा उसका राज जब्त कर लिया जायगा। सेक्सनीवाला नेपोलियन का मित्र था, उसे राज छोड़ कर भागना पड़ा।

इस दशा में नेपोलियन क्या करता, संधि की आशा तो कुछ भी उसने न देखी, उसने फरासीसी जाति से ही सहायता मांगी, सब ने अपने अपने पुत्र युद्ध के लिये सौंप दिए, छोटा मोटा कोई स्थान ऐसा न था जो देशमाता के हित तप्त रक्तदान करने को उत्फुल्ल न हुआ हो। अप्रैल महीने में ही तीन लाख सेना जर्म्मन

पर चढ़ दौड़ी। १५ अप्रैल को नेपोलियन प्रधान सेनापति से मिला। प्रधान सेनापति एरफोर्थ २५ अप्रैल को सेना में जा मिले। युद्ध होने लगा। इस युद्ध में ही वीर सेनानी बोशायर को छाती में एक भारी गोला खा कर स्वर्गवासी होना पड़ा और वह 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहता प्रसन्न चित्त परम पद आरूढ़ हुआ। धन्य है वह जिसका देह देश के हित अर्पण हो और अक्षरदेही स्वर्ग-भोग भोगने का भागी बने। २ री मई को लूजेन प्रांत में वृह-न्नलिकाएँ मुहर्मुहः गर्ज्जन करने लगीं। सेना का ह्रास होने लगा। तब केवल चार सहस्र घुड़सवार ले कर स्वयं नेपोलियन रणक्षेत्र में गया। फिर भी फरासीसी हटे। तब साठ तोपों सहित इसने अपना इंपीरियल गार्ड दल आगे बढ़ाया। शत्रुदल भागा। इस युद्ध में ८० सहस्र फरासीसी सैन्य में केवल ४ सहस्र घुड़सवार थे। शत्रुदल में से सब रजवाड़ों को मिला कर २० सहस्र सेना ने प्राण दिए।

शत्रुदल ने संधि न की और आस्ट्रियन सेना की वाट देखता रहा, पर वह बहाना करके देर करती रही। शत्रुओं की ओर से जो दावे किए गए उन्हें नेपोलियन ने फ्रांस के अगौरव का कारण समझ कर और यह निश्चय कर के कि इनको मान लेने पर शांति न होगी, अस्वीकार किया। अब पुनर्वार युद्ध की आयोजना आरंभ हुई। २२ मई को दूसरा युद्ध सामने आया। बप्री नदी पर युद्ध हुआ। इस के दाहिनी तरफ रूसी और बाँई प्रशियन थे। फरासीसी सेनापति वडिनो बाएँ और 'ने' दाहिने और सेंटो तथा सम्राट् बीच में हो कर सेना परिचालन करने लगे। यद्यपि इस युद्ध में पाँच हजार

फ़रासीसी सेना खेत रही और वीर सेनापति डोरो मारा गया, परंतु फरासीसो जीते। अब तो राजाओं ने समय पाने के लिये संधि का प्रस्ताव ले कर दूत भेजा। नेपोलियन ने कहा—'जो रूसराज स्वयं आ कर मिलें तो हम युद्ध बंद रख सकते हैं,' परंतु अलक्षेंद्र ने यह स्वीकार न किया।

आस्ट्रिया ने मध्यस्थ हो कर प्रस्ताव किया कि–'फरासीसी हमें ईकेरिया, विनिशिया तथा लोंबार्डी छोड़ देवें, हालैंड, पोलैंड, उडार तथा एल्बा नदी के किनारे के सब गढ़ सम्मिलित राज्यों के लिये छोड़ दे, स्पेन, पुर्त्तगाल से अपनी सेना हटा लें; साथ ही राईन के सम्मिलित राज्यों की अध्यक्षता छोड़ दें और हलडीशियन प्रजातंत्र का संबंध तोड़ दें।' शत्रुदल की बढ़ती हुई शक्ति देख कर मंत्रीमंडल भी सम्राट् से कहने लगा कि 'ये शर्तें मान लो'। नेपोलियन ने भी अगत्या अपनी अनुमति प्रकाश कर दी। परंतु जब शत्रुओं ने सुना कि मिटोरिया के युद्ध में फरासीसी हारे, स्पेन विजयी हुआ और इंगलैंड के सेनाधिप ड्यूक आफ वेलिंगटन एक लाख का बल लेकर फ्रांस पर चढ़े आ रहे हैं, तब तो ये फूला अंग न समाए और संधि की उपेक्षा कर के युद्ध के लिये फिर उपस्थित हुए। सेनापति मोरो, जिसे विश्वासघात के अपराध में पकड़े जाने पर नेपोलियन ने क्षमा किया था, जा कर शत्रुदल में मिल गया। सब राजाओं ने भारी चढ़ाई की। ११ अगस्त को आस्ट्रिया ने भी खुल्लमखुल्ला रणघोषणा कर दी।



पंद्रहवाँ अध्याय

असीम विपद् का सामना, सिंहासन त्याग, एल्बावास, नेपोलियन की हार और उसका निर्वासन।

सच कहते हैं कि 'कुसमय मीत काको कौन।', आस्ट्रिया ने दामाद के विरुद्ध रणघोषणा की ही थी, इसके सेनापतियों ने भी शत्रुपक्ष ग्रहण करना आरंभ कर दिया, सेनापति योमिन जा कर आस्ट्रिया में मिल गया। स्वोडन भी विरुद्ध हो गया। 'वार्नावोट' स्वदेश के विरुद्ध सैन्य एकत्र करने लगा। सेनापति मोरो भी शत्रुदल की शोभा बढ़ाने लगा। परंतु इस तरह की घनीभूत विपद् में भी नेपोलियन ने हिम्मत नहीं हारी। इसकी जीत पर जीत होने पर भी असंख्य सेना का नाश हो चुका था, तथापि बल बूते के अनुसार इसने भी रण की तय्यारी की। २५ अगस्त १८१३ ई० को ड्रेसडन (सेक्सनी की राजधानी) के चारों ओर शत्रुदल चींटी के समान भर गया। २६ को युद्ध आरंभ हुआ। कई दिन तक युद्ध चला, फरासोसी सेना विजयी होती रही। इस अवसर पर नेपोलियन को उदर वेदना हो गई। इन्हीं दिनों उसकी चिंता भी असीम हो गई थी। इसके बीमार होने पर सेनापति 'ने' को एक मोर्चे से भागना पड़ा। यह सुन कर यह उसी रुग्न अवस्था में घोड़े पर सवार हो पहुँचा और उसने तुरंत मोर्चा मार लिया।

इस समय अन्य साथी राजाओं की सेनाएँ भी इसके साथ से हट कर शत्रुदल में मिलने लगीं और सब तरह शक्ति का अनुदिन ह्रास होने लगा। वेस्टरफेलिया के राजा को प्रजा विद्रोह के कारण राइन की ओर भागना पड़ा, सेक्सनी का राजा फ्रेडरिक अगस्टस् जिस से नेपोलियन की दांत काटी रोटी थी अपने प्राण बचाने को शत्रु पक्षावलंबी हुआ, बोटर्सवर्ग के राजा को भी शत्रुओं ने धमका कर अपना कर लिया। इस तरह पर युरोप के क्या छोटे क्या बड़े प्रायः सभी रजवाड़े एक हो गए। नेपोलियन के पास इस अवसर पर एक लाख से अधिक सेना न थी। यह बर्लिन जाना चाहता, परंतु बुरा समय बुरा होता है। सेना राजी न हुई। अतः १५ अक्तूबर को वह लिपजिक नगर के समीप ससैन्य उपस्थित हुआ। नेपोलयन ने अपना दुर्दिन जान और सेना की कमी और साहसहीनता का ज्ञान कर उससे शपथ कराई। सेना ने 'सम्राट् दीर्घ जीवी हों' कह कर प्रतिज्ञा की कि हम फ्रांस का अपमान जीते जी न देखेंगे और शत्रु से लोहा लेंगे।

कुछ क्यों न हो १० लाख शत्रु सैन्य के सामने लाख पचास हजार की कहाँ तक चल सकती है, फिर जब उस में भी अनुदिन कमी ही होती जाती हो। १२ अक्तूबर को फिर युद्ध हुआ, दिन छिपे जान पड़ा कि गोला बारूद अब केवल दो घंटे को ही शेष है, तब इसने समर सभा बुलाई। कई दिन का थका, कुरसी पर बैठते ही यह सो गया और बुरे स्वप्न देखने लगा, पाव घंटे में नींद खुली और परामर्श होने लगा। अगत्या यही निश्चय हुआ कि यहां से

हटो और शत्रु दल को ज्ञात न हो। सुतराम कुछ लोग छोड़ दिए गए कि स्थानांतर पर रात में आग जलाते रहो जिसमें शत्रुदल समझे कि सेना अभी यहां ही पड़ी है और नेपोलियन आप मय सैन्य एलस्टर नदी के पार हुआ। परंतु लिपजिक की रक्षा न कर सका। २५ हजार सैन्य और २०० तोपों की हानि फ्रांस को सहनी पड़ी। सेनापति पनियाटस्की मारा गया। सेनापति मोराट विश्वासघाती हो कर शत्रु में जा मिला। इस समय तक भी सब मिल मिला कर ८० सहस्र सैन्य नेपोलियन के हाथ तले थी।

इधर तो यह युद्ध में लगा था, उधर शत्रुओं ने फ्रांस की ओर मुँह किया। सम्राज्ञी लुईसा मेरिया को 'कुमार नेपोलियन' को साथ ले कर भागना पड़ा क्योंकि फ्रांस में शत्रुदल घुस पड़ा था। इधर नेपोलियन सब प्रकार हीन हो कर कोंटरब्लोन में फ्रांस के समीप आ ठहरा। यह फ्रांस को बचाने की इच्छा रखता था किंतु सैनिकों तथा कर्म्मचारियों ने साहस छोड़ कर इसे ठहरने की ही सम्मति दी। अंत में इसने अपने दुःख में विश्वास करने योग्य परम बंधु केलोन कोर्ट को संधि के लिये भेजा। यहां फ्रांस को शत्रुदल घेरे पड़ा था, पैरिस नगर के भीतर विपक्षी राजा लोग निवास कर रहे थे, नेपोलियन के दूत को भीतर घुसने की भी मनाही थी। परंतु रूसराज के भाई ग्रांड ड्यूक से भेट हो गई। पहले 'केलोन कोर्ट' रूस में फ्रांस का दूत हो कर रहा था। उस समय की इसकी ड्यूक से मैत्री थी। इसने इसे रूसी वेश में बंद गाड़ी के भीतर ले जा कर रूसराज से मिलाया।

ज़ार अलचेंद्र यद्यपि शत्रुदल में एक प्रधान स्तंभ थे, परंतु नेपोलियन के प्रति इनके प्रेम इनकी श्रद्धा में कुछ कमी न थी। बहुत वाद विवाद के पश्चात् रूसराज ने यथासाध्य सहायत करने का वचन दे कर केलोन कोर्ट को अपने निवास में छिपा रखा और राज कदंब की सम्मिलित सभा में कूट नीति द्वारा यह विचार कराया गया कि नेपोलियन राज्यपद त्याग दें और फ्रांस का शासन उनके पुत्र को दिया जाय तथा कुमार की माता उनकी अभिभाविका रहें।

यह समाचार ले कर केलोन कोट नेपोलियन के पास पहुँचा। नेपोलियन को इससे जो दुःख हुआ वह पाठक स्वयं अनुमान कर सकते हैं, किंतु सेना साथ देने को तैयार न थी, अपने पराए हो रहे थे, कुछ उपाय न था, नेपोलियन ने निम्नलिखित त्यागपत्र दे कर केलोन कोर्ट को सेनापति 'ने' तथा मैकडानल्ड के साथ भेजा। "युरोप की सम्मिलित शक्तियों ने घोषणा की है कि सम्राट् नेपोलियन ही युरोप की शांति में एकमात्र बाधक है, अतः सम्राट् नेपोलियन सशपथ स्वीकार तथा प्रतिपन्न करता है कि वह अपने देश के कल्याण के निमित्त सिंहासन तथा पैरिस नगर क्या अपना प्राण भी त्यागने को तैय्यार है। अतःपर सम्राज्ञी के प्रतिनिधित्व में उसके पुत्र को राजसिंहासन मिले, और साम्राज्य की व्यवस्था सुरक्षित रहे। कंटेन सौध ता० ४ अप्रैल १८१४ को हस्ताक्षर किया गया—

(हस्ताक्षर) "नेपोलियन बोनापार्ट"

इधर ये लोग त्यागपत्र ले गए उधर समाचार मिला कि सेनापति 'मोरमेंट' बारह हजार सेना ले कर शत्रु पक्षावलंबी हो गया।

इसी प्रकार के अनेक विपद्जनक संवादों से नेपोलियन के हृदय पर चोट पड़ने लगी। उधर नेपोलियन के भय से राजा लोग कांपते थे, उन्होंने नेपोलियन को एक दम मिट्टी में मिलाने का दृढ़ संकल्प किया। रूसराज नेपोलियन के भक्त थे, जब इन्होंने देखा कि त्यागपत्र में नेपोलियन ने अपने लिये कुछ नहीं चाहा तो वे और भी नेपोलियन के स्वार्थ त्याग से मुग्ध हो कर उसका पक्ष लेने को कटिबद्ध हो गए। किंतु राजा लोगों ने नहीं माना और कहा कि इस त्यागपत्र से काम न चलेगा, बिना किसी प्रकार के प्रतिबंध के त्यागपत्र होना चाहिए। इस दुःख दायिनी खबर को ले कर फिर केलोन कोर्ट नेपोलियन के पास गया।

नेपोलियन से यह अपमान सहा न गया, वह क्रोध से उबल उठा और उसने युद्ध की तैयारी करनी चाही, किंतु सेनाधिपों से पूछने पर सिवा मौन्य के कुछ उत्तर न मिला। इधर उसके परम बंधु ड्यूक ने समझाया कि इस समय रण की चेष्टा करना अपनी घोरतम विपद को सीमातीत करने के सिवा और कुछ फल नहीं है। सुतराम् उस दिन तो वह चुप रहा। दूसरे दिन उसने नीचे लिखे अनुसार दूसरा त्यागपत्र दे कर ड्यूक को फिर पैरिस की ओर रवाना किया। दूसरा त्यागपत्र यों था—

युरोप की समस्त राजशक्तियों ने घोषित किया है कि युरोप की शांति में एकमात्र नेपोलियन ही कटक है अतः सम्राट् नेपोलियन शपथ करके स्वीकार करता है कि मैंने स्वयं तथा अपने उत्तराधिकारियों की भी ओर से पैरिस, फ्रांस और इटाली का राज्य छोड़ा।

सम्राट् फ्रांस के कल्याण के लिये सर्व प्रकार के त्याग को प्रस्तुत हैं, यहां तक कि प्राण दान भी करने को तैयार है—६ अप्रैल १८१४।

यद्यपि बार्बोन वंशीय और अंग्रेज इसके बहुत विरुद्ध थे तो भी रूसराज के आगे किसी की न चली और समस्त राजशक्तियों ने ११ अप्रैल को निम्नलिखित फैसला किया। निश्चय हुआ कि—

१—सम्राट् नेपोलियन और सम्राज्ञी मेरिया शेष जीवन भर सम्राट् और सम्राज्ञी ही कहावेंगे। नेपोलियन के कुटुंबियों की भी पदवी ज्यों की त्यों रहेगी, किसी को पदवी से वंचित न होना पड़ेगा।

२—यावज्जीवन नेपोलियन एल्बा टापू के स्वामी रहेंगे और फ्रांस राजकोष से उन्हें २॥ लाख फ्रैंक नकद प्रति वर्ष मिला करेगा।

३—पार्मा प्लेस्टिया व गंटेला का स्वामित्व सम्राज्ञी मेरिया को मिलेगा। इसी संपत्ति के उत्तराधिकारी कुमार नेपोलियन भी हो सकेंगे।

४—नेपोलियन की माता को वार्षिक ३ लाख फ्रैंक, जोज़ेफ़ तथा उसकी पत्नी को ५ लाख फ्रैंक और उसकी बहिन लुइया को २ लाख फ्रैंक, राजकुमारी एलिजा को ३ लाख फ्रैंक की वृत्ति प्रति वर्ष मिला करेगी।

५—जोसेफेनी को नेपोलियन ने ३० लाख की वृत्ति दी थी वह कम कर के १० लाख ही कर दी जायगी।

६—नेपोलियन की सर्व संपत्ति राजकोष में जब्त होगी, सब राजपरिवार के लोग अपनी अपनी संपत्ति के अधिकारी होंगे।

इस समय अंगरेजों का राज-दूत न था, नहीं तो स्यात् यह

फैसला भी न होने पाता, क्योंकि इंगलैंड का विरोध बहुत प्रबल था, उसने अभी तक नेपोलियन को सम्राट् कर के माना ही न था, जैसा कि पाठक ऊपर पढ़ चुके हैं और आगे भी देखेंगे।

११ अप्रैल को केलोन कोर्ट पत्र ले कर सम्राट के पास कंटेन क्लोन में पहुँचे। एक बार नेपोलियन को क्रोध हुआ पर ड्यूक ने समझा बुझा कर शांत किया। नेपोलियन सम्मिलित राजों की व्य-वस्था पर कैसे रुष्ट न होता। गगनविहारी दिवाकर को लताओं में फिरनेवाला जुगनू बनाया जाय तो उसे कैसे बुरा न लगेगा। परंतु 'बिधि करतब कछु जाय न जाना।' सोच का मारा नेपोलियन बहुत ही रोगग्रस्त हो गया और रात ही रात में एक बार उसके जीने की आशा जाती सी रही। किंतु दूसरे दिन वह सावधान हुआ और उसने अपने हितैषी ड्यूक की बात मान ली। नेपोलियन में सहि-ष्णुता भी बहुत थी। प्राय: महान वीरों में देखा गया है और अब भी देखा जाता है कि वे बड़े ही सहिष्णु होते हैं। इसने कहा था कि "प्रीति बंधन में पड़ा जो मनुष्य अकृत्कार्य्य हो कर अपघात कर लेता है वह मूर्ख है। कोई धन खोने पर प्राण दे देते हैं; ये बड़े ही का-पुरुष हैं, अपमानित हो कर भी जो प्राण देते हैं वे भी दुर्बल हृदय ही हैं, हम तो इतना बड़ा विशाल राज्य खोकर भी जी सकते हैं। जो विपत्तियों के कटाक्ष और अपमान से विचलित मन नहीं होता वही सच्चा साहसी है।"

अंततोगत्वा इसने एल्बा की तैयारी की और जल भरे नेत्रों से वह सबसे बिदा हुआ। समस्त सेना,सेनापति और अनेक लोग इसे

प्राणों से अधिक चाहते थे। वे उसके साथ जाने को तैयार हुए लेकिन उसे इस बात का बड़ा दुःख था कि वह केवल चार सौ ही आदमी साथ ले जा सकता था। रानी ने साथ जाना चाहा था और उसने अनुमति भी दे दी थी पर वह समय पर साथ न हो सकी। नेपोलियन की यात्रा २० अप्रैल को निश्चित हुई थी। नेपोलियन बड़ा देशभक्त और उदारहृदय था, चलते समय उसने अपने कर्म्मचारियों तथा मिलने आनेवालों को जो शिक्षा दी है वह पढ़ने योग्य है।

नेपोलियन कहता है—"सेनापति वर्ग, कर्म्मचारीगण और सैनिक मंडली। मैंने २५ वर्ष तक तुम्हारे द्वारा विजय तथा गौरव लाभ किया है। तुम्हारे द्वारा मैं चाहे जिसे लड़ कर जीत लेता। इससे फ्रांस का बड़ा अपकार होता अतः फ्रांस भूमि के कल्याण के लिये मैंने आत्मस्वार्थ को त्याग दिया है। मैं आप लोगों को भी छोड़ता हूं। प्रिय बांधव! जिस नए राजा के हाथ में फ्रांस का शासन समर्पित हुआ है आप लोग उसके प्रति अनुरक्त रहें। फ्रांस का ही कल्याण मेरा एक मात्र लक्ष्य था और सदा यही मेरा लक्ष्य रहेगा। आप लोग मेरे दुःख से दुखी न हों। बांधव! हे पुत्र! विदाई!! विदाई!! आप सब को मैं गले से भेटता हूं। आपको, आपके सेनापति और आपके झंडे को छाती से लगा कर जी की जलन मिटाता हूं।" यह कह कर वह फ्रांस का झंडा 'ईगल' मँगाता है और उसे आलिंगन करता है तथा उसकी चांदी की आंखों को चूमता है और फिर छाती पर रख कर कहता है "—प्यारे ईगल! मेरा यह अंतिम

आलिंगन है। तुम हमारे सैनिकों के हृदयों में निवास करो। हमारे प्यारे साथियो ! सहयोगियो ! चलो, बिदाई लो। बिदाई लो ! बिदाई ! बिदाई !!"

२० अप्रैल को दो पहर के समय नेपोलियन ने जहाज पर पैर रखा। २१ तोपों की ध्वनि से उसका सम्मान किया गया। एक बार्बान पताका धारी पोत था, उस पर बैठने को कहा गया परंतु वह नहीं बैठा और एक अंगरेज और एक आस्ट्रियन दूत के साथ अन्य जहाज पर बैठ कर वह एल्बा की ओर रवाना हुआ।

२७ अप्रैल का चला हुआ जहाज २८ को बीच समुद्र में अठखेलियाँ करने लगा और ४ मई को एल्बा के समीपवर्त्ती हुआ। अंगरेजी जहाज से तोपध्वनि हुई। प्रत्युत्तर में एल्बा द्वीप ने अपने नए राजा के सम्मानार्थ सौ तोपों की सलामी उतारी। इधर विरह-दुःख कातरा जोसेफेनी ३ मई को तीसरे पहर अपने पुत्र इयोजिन तथा पुत्री हेरीतेन के देखते देखते नेपोलियन का चित्र छाती से लगाए हुए-"एल्बा द्वीप, "नेपोलियन" कह कर शांत हो गई। इसके साथ राजा प्रजा सब बीस सहस्र की भीड़ समाधि स्थल तक गई थी।

जून मास में नेपोलियन की माता लेटीशिया और भगिनी पालिन भी एल्बा पहुँचीं। इनसे नेपोलियन के अत्यंत पीड़ित हृदय की वेदना कुछ घटी। नेपोलियन ने शांत चित्त एल्बा की समुन्नति में मन लगाया। यह नेपोलियन के जीवन नाटक में मानो एक अभिनय दृश्य था। यहां भी इसने अपने प्रबंध और प्रजा-भक्ति से सब का मन मोह लिया था। वह सब के साथ मिलता,

प्रेम भरे खुले दिल से बातचीत करता, उनके आमोद और उत्सवों में योग दान करता। पोर्टोफी राजभवन के पास इसने एक कृषि कार्य्यालय खोला। प्रजा के पढ़ाने और कौशल सिखाने का प्रबंध किया। इस लिये प्रजा भी इसे प्राणवत् प्यार करने लगी। यह सदा ही रात दिन श्रम करता, रात को बहुत ही कम सोने की इसकी सदा से ही आदत थी, उषःकाल में उठ कर शारीरिक व्यायाम किया करता और शांति के साथ अपने नित्य के काम में लग जाता। इसने कभी अपने शत्रुओं की निंदा स्तुति नहीं की, न उनका बुरा चेता तो भी सब इससे सशंकित रहते थे। बार्बोन वंशियों ने कई बार इसे विष आदि द्वारा मार डालने की चेष्टा की, लेकिन यह बड़ा सचेत था, कभी उनके दाँव में नहीं आया।



सोलहवाँ अध्याय ।

एल्बा से प्रस्थान, प्रसिद्ध वाटरलू संग्राम, पराजय और बहिष्कार ।

बार्बोन वंशीय शासन से प्रजा संतुष्ट न हुई। राज्य को सेना और प्रजा में तथा सेना और प्रजा को राज्य में विश्वास न रहा। स्थान स्थान पर कलह और विद्रोह फैल गया, खाली कोष को प्रजा के रक्त से भरने की चेष्टा होती थी, और यह धन एक स्वेच्छा-चारी के सुख साधन में व्यर्थ जाता था। अंगरेज लोग भी फ्रांस के प्रबंध से प्रसन्न न थे। वायना में फ्रांस को बाँट खाने के लिये नरेशों की महा समिति बैठी थी। सारी बातों को सुनते सुनते बीर नेपोलियन की छाती पक गई, वह दस महीना एल्बा में रहते ऊब भी गया था, साथ ही इसकी बहिन पालिन ने युरोप खंड की यात्रा कर के एल्बा पहुँचने पर नेपोलियन को संबाद दिया कि— 'लोग कहते हैं कि जिन सेनापति आदि कर्म्मचारियों ने आपका पक्ष छोड़ा था वे अब बार्बोन के अधीन रह कर पछताते हैं और आप को स्मरण करते हैं। प्रजा आप को फ्रांस के सिंहासन पर देखने को तरसती है तथा साथ देने को तैयार है। लुई १८ वें का नाम 'शूकर लुई' प्रजा में प्रचलित था। बार्बोन वंश ' शूकर वंश ' के नाम से प्रसिद्ध हो रहा था। नेपोलियन के मन में भी आई कि एक बार फ्रांस का उद्धार करना ही उत्तम है। २६ फरवरी १८१५ को पालिन ने विदेशीय भद्र पुरुषों और एल्बा के प्रसिद्ध श्रेष्ठ

व्यक्तियों को एक भोज दिया, वहां सम्राट् नेपोलियन भी उपस्थित थे। यहाँ इसने किसी से कुछ कहा सुना नहीं, परंतु जान पड़ता है इसने अपने आंतरिक्त संकल्प को जो कई दिनों से इसके मन में चक्कर खा रहा था, इसी दिन दृढ़ किया। सांयकाल में ही सेनापति बोंडर्ट तथा डोयट को उसने कहा कि कल हम एल्बा से प्रस्थान करेंगे।

आज्ञानुसार एक 'इनकांसटेंट' नाम का छोटा सा जहाज और तीन सौदागरी जहाज लिए गए। चारों पर सवार होकर कर्म्मचारी, सेनापति तथा सैनिक सब मिलाकर १००० प्राणी चले। किसी को यह साहस न हुआ कि पूछता कि हम कहाँ और क्यों जाते हैं। धीरे धीरे एल्बा की पहाड़ी चोटियाँ आँखों से ओझल हुईं, जहाज बीच समुद्र में पहुँचा, तब नेपोलियन ने अपनी यात्रा का पता ठिकाना साथियों को बतलाया। उन लोगों ने सानंद हथियारों पर सान धरना और वर्दी ठीक करना आरंभ कर दिया। 'चिरजीवें सम्राट हमारे' की ध्वनि होने लगी, क्योंकि यही सैनिकों की ओर से राज्य की आज्ञा पालन करने की स्वीकृति का व्यक्तकारी संकेत बन गया था वा यों कहें कि यह अंगरेजों की 'हियर' 'हियर' व ताली बजाने का रूपांतर था।

मर्ग में 'जेफिर' नाम के एक जहाज को आता देखा शंका तो हुई पर करते क्या! जेफिर पास आया, झंडियों से बातें हुई। उसने पूछा महाराजाधिराज की बाबत क्या समाचार है। सम्राट ने झट कप्तान के हाथ से झंडी छीन ली और कह दिया कि—'सम्राट

सीमातीत कुशल मंगल से हैं।' इस से पीछा छूटा, दूसरा जहाज मिला किंतु उसने ध्यान न दिया और अपने रास्ते बह गया। नेपोलियन ने मार्ग में बहुत से घोषणा पत्र नकल करवा लिए। सैनिकों के लिये था कि-'सैन्य मंडल! सुनो, अस्त्र धारण करो, रणभेरी गरजने लगी है, हमने संग्राम के लिये यात्रा की। आओ, हमारा साथ दो-देखो तो, जो हमारे हथियारों को देख कर भागते थे, वे ही हमसे लड़ने की हिम्मत करते हैं! अपने तप्तरक्त दान करने और रण संगीत गाने का समय इससे अच्छा और कब मिलेगा?" अनेक सेनाओं, सेनापतियों का नाम दे कर और उनकी पिछली कीर्ति से उन्हें उत्साहित करते हुए घोषणापत्र समाप्त कर के उसने जहाज पर अपने साथियों से कहा—'फ्रांस पास आगया है, अब मैं अपने देश का त्रिवर्णांकित राष्ट्रीय चिन्ह धारण करता हूँ।' सुनते ही सेना हर्ष के मारे फूली न समाई। सैनिक बहुत दिन नीचातिनीच जीवन बिताने पर अब सचेत हुए थे, स्वर्ग विनिंदक मातृभूमि के निमित्त प्राण हवन करने का साहस पराक्रम और माहात्म्य उनके मनों में उमड़ उठा। नया उत्साह उत्पन्न हुआ। आज ये अपनी माता की प्रतिष्ठा संरक्षण के निमित्त और अपने माथे से कलंक का टीका समुद्र में धो बहाने के लिये, दृढ़संकल्प हो रहे थे। इनके मनों में जो सच्चा प्रेम, जो उमंगें, जो स्वर्गीय प्रकाश था, क्रीत दासवत् जीने में सुख माननेवालों अधमों को तो उसका अनुभव भी करना कठिन है, अनुभव करने वालों का हाल लिपिबद्ध करना असंभव है। सम्राट् ने ससैन्य त्रिवर्णांकित

मातृभूमि का चिह्न धारण किया और एल्बा के चिह्न को जल में विश्राम दिया। १ मार्च १८१५ को एक निर्जन स्थान में सब जहाज से उतरे। यहां से गांव ३—४ कोस पर था, एक ग्रामवासी पहले फरासीसी सेना में रह चुका था, इसने नेपोलियन को पहचान लिया और फिर वह सेना में भरती हो गया। यहाँ से मानों नई सेना की भरती आरंभ हुई। रात को ११ बजे यह आगे बढ़ा, चाँदनी रात में सेना आनंद से अग्रसर होने लगी। मार्ग में इसने घोड़े खरीद खरीद सेना को दिए। एक दिन और एक रात चल कर उसने साठ मील का मार्ग काटा, अब इसके पास इतनी सेना हो गई कि बार्बोन शांतिरक्षक प्रहरियों का भय न रहा। ग्रासि नगर में पहुँचने पर बार्बोन शासनकर्त्ता भय से भाग गए और प्रजा ने सम्राट् का बड़ा सम्मान किया। यहाँ से नेपोलियन ग्रेनविल नगर की ओर चला, यहां मार्चेंट सेनापति छ हजार सेना से राह रोकने को आया। ७ मार्च को मुठभेड़ हुई।

नेपोलियन निःशंक अकेला आगे बढ़ा और उसने अपनी सेना को पीछे रोक दिया। आगे बढ़ कर वह बोला—" सैनिकगण यह लो मैं छाती ताने खड़ा हूँ गोली मारो। " यह अपनी सदा की सी सैनिक वर्दी में था, सेना ने पहिचान लिया और सेनापति की बारंबार आज्ञा पाने पर भी एक गोली न चली, सब को बंदूकें हाथ से छूट पड़ीं। सब सैनिकों ने एकसंग ध्वनि की—' सम्राट् नेपोलियन चिरजीवी हो '। फिर क्या था, सेनापति भाग गया और सेना नेपोलियन के पक्ष में हुई। जिस सैनिक ने पहले बंदूक तानी थी

उसे बुला कर सम्राट् ने कहा—'क्यों तुमने अपने छोटे सेनापति को मारने के लिये बंदूक तानी थी ?' उसकी आंख से आंसू गिर पड़े, उसने बंदूक दिखलाई तो खाली थी। देखने से ज्ञात हुआ कि सब की ही बंदूकें खाली थी। इन्हें साथ ले कर नेपोलियन ने लियंस की ओर यात्रा की।

नेपोलियन के आने का संवाद लुई को मिल गया था। लियंस पैरिस से दो सौ पचास मील पर है, यहाँ दो लाख फरासीसी प्रजा थी। ५ मार्च को संवाद मिलने पर सेनापति कौंट अटे् सामना करने के लिये चला। बीस हज़ार स्थानिक सेना थी और दो दल सवार और पैदल के काउंट लाया था। स्थानीय सेना में लुई के नाम से स्वास्थ्य पान करने को मद्य बाँटी गई, सेना ने काउंट को सेनापति ही न माना और 'सम्राट् नेपोलियन की जय' बोल कर नेपोलियन का स्वास्थ्य पान किया। इस पर सेना भी, जैसी ऊपर एक घटना दी जा चुकी उसी तरह, नेपोलियन से चार आँखें होते ही, बार्बोन पक्ष छोड़ अपने सम्राट् के पक्ष में आ गई। सेनापति के कहने पर सैनिकों ने यह उत्तर दिया कि—'हम में ऐसा कोई नहीं है जो पुत्र हो कर अपने पिता की हत्या करे।' पाठक समझे होंगे कि पिता से अभिप्राय नेपोलियन से था। इस तरह पर इसे सेना प्यार करती थी। यह भी सेना को पुत्रवत् ही मानता था।

१० मार्च को नेपोलियन रात को ९ बजे राजप्रासाद में पहुँचा। इसके अधीन रहनेवाले मार्शलगण इसे इतना प्यार करते थे कि एक बार की बात है कि जब इसने सिंहासन त्याग किया था, मार्शल

ली इसके पास रह गया था। पीछे जब वह पैरिस आया तो रूस के ज़ार ने उससे पूछा कि—'मैं पेरिस पहुँचा तब तुम यहाँ नहीं थे ?' मार्शल ने उत्तर दिया कि—'दुर्भाग्य से हम लोग उस समय न आ सके।' ज़ार ने हँस कर कहा—'दुर्भाग्य से! तब तुम हमारे आने से दुखी हुए।' निष्कपट मार्शल ने उत्तर दिया—"जिन्हों ने वीर हो कर कर्तव्यबुद्धि और विजय गौरव को सुरक्षित रखा है वे निस्संदेह मेरे प्रेमभाजन हैं; परंतु हमारे देश में विदेशी विजेता का पदार्पण निस्संदेह हमारे दुःख का ही कारण है, सुख कैसे माना जा सकता है ?" यह भाव नेपोलियन की शिक्षा के प्रताप से प्रत्येक फरासीसी सैनिक में भरा हुआ था। महल में पहुँच कर नेपोलियनने अपने लेखक बैरन को बुला कर अनेक बातें पूछीं। बैरन के मुख से अपने प्रति प्रजा का प्रेम सुन कर सम्राट् नेपोलियन ने कहा—"मैं समझता हूँ बार्बोन के शासन से प्रजा असंतुष्ट रही। देखो किसी महती जाति को सुख स्वाधीनता देने में आनंद और गौरव दोनों ही है। मैं किसी की स्वाधीनता में बाधक नहीं होने का। राज्यशासन के लिये जितना अधिकार आवश्यक है उससे अधिक मैं नहीं चाहता। अधिकार और स्वाधीनता में प्रतिद्वंद्विता नहीं है। जब क्षमता पूर्ण रूप से विराजती है, तभी स्वाधीनता का पूर्ण विकास होता है। दुर्बल की स्वाधीनता में शांति का अभाव रहता है। जब स्वाधीनता में शक्ति का मेल हो जाता है तब स्वाधीनता प्रशांत रूप से वास करती है। स्वाधीनता के नाम पर उच्छृंखलता अलबत्ता बुरी चीज है उसे मैं नहीं पसंद करता।"

जोसेफेनी का हाल और अपनी सम्राज्ञी तथा कुमार बोनापार्ट का हाल उसने पूछा। सम्राज्ञी सपुत्र पीहर में थीं।

बैरन ने कहा—"मार्शल लोगों ने आप के साथ पिछली बार फाटेनब्लोन में जो बर्ताव किया था, उस से वे भीत होंगे, आप उनका अपराध क्षमा करें।" नेपोलियन ने कहा कि—'मैं स्वयं प्रचलित हो कर कुछ न करूंगा।' "सेनापति 'ने' कहां हैं?" बैरन—"मैं समझता हूं, घर पर हैं, किंतु वे स्त्री की ओर से दुखी हैं। आज कल सेना उनके अधीन नहीं है।" फिर नेपोलियन ने नए सिक्के का कथन किया। बैरन ने एक सिक्का निकाल कर दिया। इसकी एक ओर पहले तो था—'परमात्मा फ्रांस की रक्षा करें'। इसे निकाल कर लुई ने छपाया था कि–'ईश्वर लुई की रक्षा करें।' इस पर नेपोलियन ने बड़ी तीव्र आलोचना की और कहा—'जो देश के आगे एक व्यक्ति की भलाई ईश्वर से चाहता है वह फ्रांस के लिये कुछ भी करने की इच्छा नहीं रख सकता।'

लुई ने नेपोलियन को लुटेरा चोर कह कर घोषणा निकाली, लोगों को उसका साथ देने से रोका और उसका सिर लानेवाले के लिये पुरस्कार नियत किया और 'ने' को सेनापति कर के नेपोलियन के विरुद्ध भेजा। पाठक समझ सकते हैं कि 'ने' कब नेपोलियन से लड़नेवाला था, समीप आते ही सम्राट के नाम की जयजयकार सेना से होने लगी। 'ने' के साथ नेपोलियन गले लग कर खूब मिला, और अब नेपोलियन फाटेनब्लोन से पैरिस चला और लुई भागकर फाटेनब्लोन की ओर चला। फाटेनब्लोन के पास नेपोलियन

ने भाग्य-परीक्षा के लिये मार्ग रोका। ड्यूक डी बेवेरिया के अधीन एक लाख सेना थी, सामना पड़ने पर इसने भी सम्राट् नेपोलियन के चिरजीवी रहने की हाँक मारी। शत्रुदल भागा। ला मार्टन ने सच कहा था कि—'नेपोलियन सृष्टा की श्रेष्ठतम सृष्टि है।'

नेपोलियन पैरिस जा कर फिर गद्दी पर बैठा और उसने लुई के नियमों को रद्द कर के अपने पुराने सब नियम चलाए। प्रजा में आनंद बधावे बजे और उत्सव होने लगे। एल्बा के पिंजड़े से अजेय केसरी नेपोलियन के छूट निकलने का समाचार इधर उधर फैलने लगा। इधर राजा लोग वायना में कांग्रेस कर रहे थे कि बिना धनी धोरी के फ्रांस का कितना कितना टुकड़ा कौन कौन डकारेगा। इसी स्वार्थपरायणता के कारण परस्पर वाक् युद्ध हो रहा था। राजा लोग आस्ट्रियन नरेश के अतिथि थे, इनके सत्कार में सवा लाख फ्रेंक प्रति दिन आस्ट्रिया का व्यय होता था। नेपोलियन के पहुँचने पर आस्ट्रियन दूत फ्रांस छोड़ चला गया, जाते समय बहुत कहने से वह सम्राट् का पत्र सम्राज्ञी लुई मेरिया और कुमार बोनापार्ट के लिये ले गया। हम कह चुके हैं कि सम्राज्ञी पीहर में थीं। आस्ट्रियानरेश ने नेपोलियन का पत्र तो दबा लिया और अपनी पुत्री दोहते को कह दिया कि वह तो तुम्हें भूल गया और रात दिन कुलटाओं को लिये महलों में पड़ा रहता है। साथ ही उसने इन्हें दुर्ग के भीतर कड़े पहरे में कर दिया कि कहीं ऐसा न हो कि नेपोलियन इन्हें किसी तरह से ले जाय। सम्राज्ञी ने इन बेहूदा बातों पर विश्वास न किया, परंतु कुछ हो, इसको पुत्र के

साथ लेकर पति के सुदर्शन का सौभाग्य न हुआ। जिस दिन नेपोलियन के आने का समाचार वायना पहुँच, वहां नाच का प्रबंध हो रहा था, रंग में भंग हो गया, नर नारी सब के कलेजे काँप उठे। नाच तमाशा सबको भूल गया, अभी सम्मिलन का प्रधान उद्देश भी स्थगित रखा गया। सब राजाओं ने मिल कर पहले नेपोलियन का सिर तोड़ने का फिर बीड़ा उठाया। उसके पीछे इस युद्ध में जो लोमहर्षण कांड हुआ उसको पढ़ कर ऐसा कौन है जो दाँतों तले उँगली न दबावे।

एक ओर महान साहसी वीर नेपोलियन का ईगल साधारण स्वत्वों का एक मात्र रक्षक, गगनमंडल में लहराता था, दूसरी ओर अर्थलोलुप जनपद स्वत्वापहारी युरोपीय रजवाड़ों का समवेत दल था। एक ओर धर्मबल और साहस, दूसरी ओर पशुबल। युरोप के नरेशों ने यथेच्छाचार को चिरकाल के लिये स्थापित रखने के निमित्त खजाने खोल दिए और विपुल बल दल से फ्रांस पर धावा किया। साढ़े तीन लाख का बल आस्ट्रियन राजकुमार स्वार्ट जेन-वरा के अधीन चला, और ज़ार ने सवा दो लाख सेना के साथ कूच किया। इंगलैंड और प्रशिया ने वेलिंगटन तथा ब्लूचर के आधिपत्य में ढाई लाख सैन्य भेजी। छोटे मोटे राजाओं ने भी जोर लगाया और दस लाख रणोन्मत्त सैन्य उमड़ चली। अंग्रेजी जहाजों के बेड़ों तथा रणतरियों ने फ्रांस उपकूल को ऐसा घेरा जैसे एकाकी धनी को जंगल में असंख्य अर्थलोलुप डाकू घेर लेते हैं। विश्वविजयी अंगरेजो सैन्य तथा जल के अधीश्वर इंगलैंड का

महत्पराक्रम, एक देशभक्त सम्राट को प्रजावृंद के हृदय-सिंहासन से च्युत करने के लिये कृतसंकल्प हो उठा। वाटरलू के युद्ध को युरोपीय महाभारत कहना तनिक भी अत्युक्ति नहीं कही जा सकती। इसी युद्ध में नेपोलियन के भाग्य के साथ साथ फरासीसी प्रजा के भाग्य का भी निपटेरा होना था। पाठकों को इस युद्ध का विवरण पढ़ने से ज्ञात होगा कि नेपोलियन के विजयी होन में उसके एक सेनापति की विश्वासघातकता बाधक हुई, तो भी जो वीरता धीरता नेपोलियन से प्रकाश में आई वह आज सौ वर्ष होते हैं किसी दूसरे व्यक्ति की बात न सुनी या देखी गई।

इतिहासकार 'सार्टो' लिखता है—'यदि नेपोलियन की टोपी और कोट किसी लड़की को पहना कर उसे खड़ा कर दे तो भी सारे युरोपी यशासक एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलकर युद्ध की तय्यारी करने लग जाते।' इतना आतंक नेपोलियन का युरोप पर था। यदि धर्म्म से काम लिया जाता तो कोई उसे जीतनेवाला न था। उसकी तरह यदि दूसरी शक्ति को अपनी मान मर्य्यादा तथा देश गौरव के लिये एकाकी लड़ना पड़ता तो उसके नाम का चिह्न एक दिन में ही विलुप्त हो गया होता। नेपोलियन का विरोध करने में अंगरेजों का एक वर्ष में जो धन खर्च हुआ था उसे सुन कर पाठक दंग रह जांयगे। चार अरब पचास करोड़ फ्रैंक जल विभाग की सैन्योन्नति में, छ अरब पंचानबे करोड़ समर-विभाग का व्यय, दो अरब पचहत्तर करोड़ दूसरे राजाओं की सहायता में, इसके अतिरिक्त छ लाख सेना और अट्ठावन रणपोत युद्ध के लिये हर दम

तय्यार रहते थे। यह अनौचित्य तत्सामयिक टोरी गवर्नमेंट का कीर्तिस्तंभ था, जो किसी से छिपा न था। इधर नेपोलियन अपनी साधुता पर ही डटा रहा, प्रजा के सुख स्वतंत्रता की चिंता और शांति स्थापन की चेष्टा बराबर करता था। नेपोलियन ने हरितेन को रूस के जार के पास भेजा कि जिसमें संधि हो जाय और रक्तपात न हो, परंतु कुछ फल न हुआ। राजाओं ने घोषणा कर दी कि हमारा अहंकारी नवाब नेपोलियन के साथ संग्राम है, फ्रांस और फ्रांस की प्रजा के साथ नहीं, तो भी नेपोलियन को प्राणाधिक प्यार करनेवाली फरासीसी प्रजा ने अपने सम्राट् का प्रेम न छोड़ा और फ्रांस में भी युद्ध की तय्यारियां होने लगीं। 'स्वर्गादपि गरीयसी मातृभूमि की गौरवरक्षा के लिये माताएं पुत्रों के हाथों में रणकंकण बाँध, तलवार बंदूक से सुसज्जित कर देशमाता के लिये रण में जा कर विजयी होने या स्वर्ग प्राप्त करने का महदुपदेश देने लगीं, वृद्ध पिता धर्म्म-मंदिरों में जा कर फ्रांस की मर्य्यादा सुरक्षित रखने के लिये परमपिता से प्रार्थी होने लगे। वाहरे वीर नेपोलियन! 'प्राण जांहि वरु धर्म्म न जाही'। वह कहने लगा कि—"यदि मैं चाहूं तो खड़े खड़े कल १७९२ वाला प्रजाविद्रोह खड़ा कर दूं जिससे ये रजवाड़े अपनी आई आप मरें, लेकिन नहीं, मैं ऐसा न करूंगा।"

अंततः दो लाख अस्सी सहस्र सैन्य नेपोलियन के झंडे तले एकत्र हुई, परंतु यह केवल सवा लाख से दस लाख शत्रु दल के सामने न हुआ। शत्रु-वाहिनी कई विभिन्न दलों में विभक्त हो फ्रांस की ओर दौड़ी। नेपोलियन भी विचारने लगा कि कहाँ मोर्चा लूं,

राजधानी के पास, सीमांत पर वा बेलजियमस्थ अंगरेजी सेना की ही पहले अभ्यर्थना करूं। ११ जून को रात भर सलाह होती रही, १२ को नेपोलियन ने नैराश्य भरे नेत्रों से राजभवन की ओर दृष्टि डाली और वह सवार होकर चल दिया। १३ को पैरिस से १५० मील पर आव्ससे नामक स्थान पर वह पहुँचा। यह फ्रांस सीमांतस्थ ग्राम था। यहाँ ही वीर नेपोलियन न अपनी सेना एकत्र की। उत्तर में अनुमान २५ कोस पर थोड़े थोड़े अंतर पर वेलिंगटन और ब्लूचर अनुमान सवा सवा लाख सेना लिये पड़े थे। दो लाख रूसी सेना और आ कर इनमें मिलनेवाली थी। नेपोलियन ने कहा कि इन पर इस तरह आक्रमण हो कि तीनों दल एक न होने पावें और अलग अलग जीते जाँय। परंतु विश्वासघाती नमकहराम कुलांगार दुष्ट बोरमेंटो ने नेपोलियन की यात्रा की सूचना वेलिंगटन को दे दी। तो भी पहली पराजय शत्रु दल की १४ जून को 'शार्लरय' में हुई। दो हजार साथी खो कर शत्रु दल तीन सौ कोस पर ब्रूसल्स को भागा। नेपोलियन ने सेनापति 'ने' को चालीस हजार का बल दे कर भेजा कि दस मील पर 'कायारटर ब्रास' पर आक्रमण करे। नेपोलियन ने सोच कि अलग अलग सबको ही मार लेंगे। यह पता न था कि बिश्वासघाती ने सूचना दे दी है, और 'ने' की सेना मार्ग में विश्राम ले रक काम बिगाड़ देगी। 'ने' ने समझा कि 'कायारटर ब्रास' खाली है वह लेही लेंगे। उसने झूठसूठ सम्राट् को लिख दिया कि स्थान अधिकार में आ गया। सम्राट् सानंद लिगनी की ओर चल पड़ा। लिगनी 'कायारटर' और 'नामूर' के बीच में थी। यहाँ अस्सी

सहस्र सेना के साथ ब्लूचर खड़ा था। सम्राट् से न रहा गया पर क्या हो प्रशियन साठ हजार सेना थी उसीसे शत्रु पर बाज की भाँति वह टूटा। दस हजार बंदी हुए और बहुत से मारे गए, बाकी भाग खड़े हुए।

यदि 'ने' ने असावधानी न की होती और वोमेंटो ने विश्वास-घात न किया होता तो युद्ध का नक्शा और ही हो गया होता और वाटरलू युद्ध को इतना महत्व ख्यात् न मिलता, न सेंट हेलना ही इतना प्रसिद्ध होता। परंतु विधाता की गति किसी से जानी नहीं जा सकती। नेपोलियन की शक्ति के ह्रास का समय आ गया था, इसे मौत सेंट हेलना जैसी गंदी जगह में खींच कर ले जाने को कटिबद्ध हो रही थी। जब 'ने' मार्ग में ससैन्य विश्राम कर रहा था, तब वेलिंगटन ठुमुक ठुमुक कर नाचने की तय्यारियाँ कर रहा था। फरासीसी सेना का संवाद पाते ही पेशवाज उतार कर वह दूसरा ही काम करने लगा। सेनापति 'ड्यूक आफ ब्रोंसविक' तो ऐसा घबरा कर उठा कि उसे गोद में लिये बच्चे की भी सुध न रही और वह धड़ाम से धरती पर गिर कर चुटीला हुआ। रणभेरियाँ एक ओर बजने लगीं, दूसरी ओर बादल ने भी अपना दमामा कूटना आरंभ किया और बहत्तर घंटे लगातार वर्षा हुई। इस दशा में भी सेना अपने काम में बराबर अग्रसर होती रही। कारटर ब्रास को 'ने' के देखते देखते वेलिंगटन ने अपने अधिकार में कर लिया। तब 'ने' की आँखें खुलीं कि हमने कतिपय घड़ियों का विश्राम कितने भारी दामों में खरीदा है। पर हो गया सो हो गया, युद्ध के समय हृदय में अति

लज्जित 'ने' चाहता था कि किसी तरह मेरे प्राण चले जांय तो अच्छा हो, मैंने झूठ बोल कर और काम में त्रुटि कर बड़ी नीचता की है, इस जीवन से मरना अच्छा। परंतु नेपोलियन ने कुछ नहीं कहा, उल्टा साहस और धैर्य्य अवलंबन करने को पत्र लिखा, क्योंकि नेपालियन अवसर और मनुष्य को बहुत पहचानता था, वह समझा कि जो हो गया अब बदल नहीं सकता, अब 'ने' क्या कर सकता है। १६ वीं जून को नेपोलियन बेवर की ओर ब्लूचर की राह रोकने दौड़ा तथा बीस हजार के बल के साथ मार्शल ग्रेट को भागी हुई प्रशियन सेना के पीछे भेजा। अंत में 'ने' के साथ मिल कर अंगरेजी सेनापति वेलिंगटन को नेपोलियन ने भगाया और क्वाटर ब्रास पर अधिकार कर लिया। अंगरेजी सेना ने वाटरलू की ओर भाग कर चौड़ी जगह में डेरे डाले।

धीरे धीरे पानी और कीचड़ से लथपथ फरासीसी सेना दिन छिपे वाटरलू के पास पहुँची। इस अवसर पर अठारह घंटे तक नेपोलियन भोजन विश्राम तो कैसा जल तक नहीं छू सका था। गरीब भी ऐसे दुर्दिन में झोपड़े में सुख से सोता होगा, परंतु सम्राट् को चैन नहीं था। सच है राजाओं का जीवन देखने में चाहे सुखमय हो परंतु सच्चा सुख इन्हें स्वप्न होता है। शत्रुदल दो लाख से कुछ कम होगा और फरासीसी दल अर्ध लक्ष से कुछ अधिक। १८ जून रविवार को फरासीसियों ने आक्रमण किया; इस युद्ध में फरासीसियों की बड़ी हानि हुई, पर दोनों ओर के वीर जोश में भरे लड़ते रहे। रणक्षेत्र का पैशाचिक दृश्य वर्णन करते हृदय काँपता

है। मुरदों का ढेर, किसी की आंते खिंची पड़ी हैं, किसी की जाँघें पेट में गड़ी हैं, मुरदों पर पैर धरते हुए पैदल, घोड़ों की टापों से गिरों को हुए कुचलते सवार दौड़े जाते हैं। सैनिक के अंग रुधिर और बारूद के धूएँ से रँगे हैं, घायल हाहाकार कर रहे हैं, वीर 'मार मार' पुकार रहे हैं। अंग्रेजी सेनापति वेलिंगटन के पर फिर उखड़े और फिर वह ब्रुसेल्स की ओर भागा। ब्लूचर को पीछे रख कर उसका सहयोगी बूले वेलिंगटन की सहायता को आ रहा था, इस-से मिल कर वेलिंगटन की हिम्मत बँधी। इस समय नेपोलियन के पास कुल साठ सहस्र से अधिक सेना न बची होगी। वह समझता था कि ग्रेट की सेना आकर मिल जायगी तो मैं विजयी हूँगा, पर दुष्ट ग्रेट बुलाने पर भी न आया और उसने नेपोलियन का सत्यानाश कर दिया। ग्रेट के पक्ष तथा विपक्ष में इस संबंध में बहुत मत हैं, परंतु मैं ग्रेट की निर्दोषिता के समर्थकों की भूल समझता हूँ, वह आना चाहता तो जब उसे कठिन स्थिति का संवाद मिला था तभी आकर सम्राट् का सहायक होता, परंतु इसका मन काला था। नेपोलियन को लड़ना ही पड़ा। दोनों दल समझते थे कि इसी युद्ध में हार जीत का अंतिम फैसला होना है, इसी में जी खोल कर लड़ें। एक फरासीसी तीन शत्रु के साथ लड़ता था। एक एक करके फ्रेंच मरने लगे पर हारे नहीं, अंत में नेपोलियन ने सदा समर-विजयी इम्पीरियल गार्ड को अपनी विनष्ट और मुट्ठी भर बची हुई सेना की सहायता को भेजा और वह आप ललकारता रहा। इससे किसी ने कहा कि महाराज हट जाँय;

गोले आ रहे हैं। उसने उत्तर दिया मुझे मारनेवाला गोला ढल कर तैयार ही नहीं हुआ।

जब नेपोलियन ने देखो कि रक्तकदल भी एक एक करके मारा गया, तब उसके हृदय में निराशा का निबिड़ अंधकार छा गया। देखते देखते इंगलैंड और प्रशियन पताकाएँ एक हो गईं और दोनों ओर फरासीसी सेना का ध्वंस होने लगा। सूर्य्य देव वीर नेपोलियन को भागते न देख सके और उन्होंने अपना मुँह छिपा लिया, विजयी ब्लूचर और वेलिंगटन छाती से छाती मिला कर मिले और नेपोलियन हार कर भागने के पहले चाहता था कि बची हुई एक मुट्ठी सेना के साथ जा कर जूझ मरें पर सेनापति ने ने उसे रोका और उसने स्वयं भी समझा कि यह एक प्रकार की आत्महत्या है, वीरोचित काम नहीं। सुतराम् उसकी बची हुई सेना ने जा कर 'सम्राट् की जय' बोलते हुए एक बार फिर आक्रमण किया और बहुत से शत्रुदल को मार कर अपने प्राण दिए। तब नेपोलियन ने समझ लिया कि फरासीसी प्रजा के छुटकारे की आशा अब बिलकुल नहीं तब वह पैरिस की ओर चला। जब कुछ सेना बची थी तब शत्रुदल ने कहला भेजा था कि तुम प्राण मत दो आत्मसमर्पण करने से हम तुम्हें अभयदान देंगें। वीर फरासिसीयों ने इसका यही उत्तर दिया था कि-'हम मारना मरना जानते हैं, हमें आत्मसमर्पण करने का आभ्यास ही नहीं है।"

यही सुप्रसिद्ध वाटरलू की लड़ाई है जिसके साथ साथ महावीर नेपोलियन का सौभाग्य-सूर्य्य अस्ताचलावलंबी हुआ। इसने फिर

एक बार लड़ने का विचार किया पर फ्रांस धन जन से हीन हो गया था, सेनापतियों ने सम्मति न दी। तब इसने अमेरीका जा कर दिन काटना विचारा, परंतु जहाज का अंगरेजों की दृष्टि से बच कर जाना कठिन था, उनकी अनुमति माँगी तो न मिली। हार कर जब यह जहाज करके उस पर सवार हुआ तो अंगरेजों के भय से कई दिन जहाज न छूटा क्योंकि इसने राज्य त्याग कर उसे मंत्रिमंडल के हाथ में सौंप दिया था। त्यागपत्र में इस बार इसने अपने पुत्र को ही उत्तराधिकारी नियत किया था, किंतु शत्रुदल ने फिर बार्बोन वंशजों को ही राज्य दिया।

जब बार्बोन ने इसका जहाज घेरना चाहा तो यह अंगरेजी जहाज में चला गया और कहने लगा कि मैं अंगरेजी शासन-धारा की शरण लेता हूँ।



सत्रहवाँ अध्याय

सेंट हेलना वास और स्वर्गारोहण

यद्यपि बहुत से मत इसकी इंगलैंड यात्रा के विरुद्ध थे परंतु इसने दूसरा उपाय न देखा। ११ जुलाई १८१५ को प्रातःकाल 'डयूक ऑफ रेविंगा' और लासकसस संधि-पताका लिए हुए नेपोलियन से फ्रांस परित्याग का अनुमति पत्र लेने आए। यह अंगरेजी रणतरी 'वेलेरोफाने' पर सवार था। कप्तान ने कहा कि जो पोत बंदर छोड़ कर दूसरी जगह जायगा पकड़ा जायगा, यही आज्ञा निकली है। कई दिन जहाज पर रह कर १४ को फिर इसने कप्तान से चलने को कहा। कप्तान ने कहा श्रीमान कहें तो इंगलैंड चल सकता हूँ। तब इसे हारकर इँगलैंड की यात्रा करनी पड़ी।

बिदा होने के समय प्रजा ने बड़ी प्रतिष्ठा और प्रेम दिखलाया। अच्छे अच्छे लोगों ने भेंट बिदाई भेजी। जब तक जहाज दीखता रहा महिलाएँ और पुरुष आबाल वृद्ध प्रेम भरे रूमाल हिलाते रहे। नेपोलियन भी डेक (खुली जगह लकड़ी की पाटन) पर खड़ा रहा। जहाज पर नेपोलियन के साथ जो भद्र बर्ताव हुआ उससे वह बहुत प्रसन्न रहा और समझने लगा था कि इंगलैंड उसके साथ कोई नीचता का बर्ताव न करेगा। परंतु राज्यशासन की ओर से उसका यह अनुमान असत्य सिद्ध हुआ, यद्यपि प्रजा ने उसके साथ उसकी आशा से अधिक प्रेम प्रदर्शन किया और

अपने हार्दिक प्रेम का व्यावहारिक उदाहरण देने में भी त्रुटि तथा कमी नहीं की।

सेनापति 'ने' फ्रांस पहुँचने पर तोप से उड़ाया गया। इस संबंध में ड्यूक आफ् वेलिंगटन की नेकनामी संसार में महा प्रलय तक बनी रहेगी। यह काम धार्मिक वीरों के योग्य न था। वेलिंगटन अपनी स्वाभाविक, कृष्टानी भद्रता के अनुरोध से वीर नेपोलियन को भी तोप के मुँह पर उड़ाने का ही पक्षपाती था। एबट कहता है कि जो मत सन् १८१५ की २४ और २५ तारीख के 'टाइम्स' पत्र में प्रकाशित हुआ था, वह वेलिंगटन का मत था, यह बात प्रमाणित हो चुकी है। परंतु ड्यूक आफ एसेक्स की दौड़ धूप से इंगलैंड की सरकार पिघली और उसका अंचल इस अमिट कालिमा के लगने से बच गया और यावज्जीवन के लिये सेंट हेलना में उसे बंदी करने का मत स्थिर किया गया।

इतनी अंगरेजी प्रजा नावों, बजरों और तरणियों पर आई थी कि समुद्रतल भर गया था। सरकार डरी कि कहीं प्रजा लट्ठ के बल नेपोलियन को छुड़ा न ले जाय। सब को बहुत कड़ाई के साथ हटाया गया। 'बेलरोफने' की चौकसी पर दो ज़हाज नियत किए गए। ३० जुलाई को इंगलैंड की अंतिम व्यवस्था, बिना किसी के हस्ताक्षर के, नेपोलियन को जहाज पर आडमरिल केइथ सहित वृटिश अंडर-सेक्रेटरी सर हेनरी द्वारा सुनाई गई। इसमें लिखा था—'वृटिश सरकार ने सेनापति बोनापार्ट की बावत जो निश्चय किया है सो उसको गोचर कीजिए—

"प्रधान सेनाधिप बोनापार्ट यदि फिर सिर उठावें और युरोप की शांति भंग करें तो हमारा और युरोप के राज्यों का अभीष्ट अधूरा रह जायगा, इसलिये ऐसे व्यक्ति को बंधन में रखना बहुत ही जरूरी हो गया है। भविष्यत् में उनके रहने के लिये सेंट हेलना का स्थान मनोनीत हुआ है। यहां का जलवायु स्वास्थ्यकर है और यहाँ पर और स्थानों से अधिक दया का बर्ताव किया जाना संभव है। इनकी चौकसी में किसी प्रकार त्रुटि नहीं हो सकती, इसी कारण से उतना अच्छा बर्ताव जितना यहाँ हो सकता है दूसरी जगह नहीं हो सकता।" एक वैद्य चिकित्सा के लिये छोड़ कर तीन साथी और बारह नौकर ये अपने साथ ले जा सकते हैं। पर इन्हें भी (साथिया को) बंदी की ही भाँति रहना पड़ेगा। सर कुकबर्न इन्हें साथ ले जा कर सेंट हेलना में छोड़ आवेंगे।'

सर जार्ज को आज्ञा हुई कि वह नेपोलियन को राजा की दृष्टि से न देखें, सेनापति की दृष्टि से देखें और वैसा ही बर्ताव करें। जो धन इनके पास अंग-वस्त्र खोज में निकलेगा उसी के ब्याज से इनका गुजर होगा। मरने पर जिसके नाम ये विल (मृत्युपत्र) कर जायँगे उसे इनकी संपत्ति दे दी जायगी।

नेपोलियन ने ऐसे दृढ़ मन से यह सब सुना कि लोग दंग रह गए। इसकी आकृति, मस्तक, आँख आदि से या वचन द्वारा तनिक भी नहीं ज्ञात होता था कि इसका मन दुखी हुआ है। सब बात सुन कर नेपोलियन ने निम्न अकाट्य उत्तर दिया, पर कौन सुनता था, अलबत्त: जन साधारण की भक्ति उसमें और बढ़ गई।

नेपोलियन—" मुझे अंगरेजों ने पकड़ कर बंदी नहीं किया, मैंने अंगरेजों का आतिथ्य अंगीकार किया है और मैं अंगरेजी न्याय और शासन धारा की शरण आया हूँ, परंतु बृटिश गवर्नमेंट ने अपने देश की व्यवस्था को भंग किया। अंगरेज जाति का न्याय टूट गया, आतिथ्य के पवित्र व्रत का असम्मान हुआ। मैं बृटिश जाति की न्यायपरायणता के सामने इस बात के विचार करने की प्रार्थना करता हूँ।"

जब दोनों कर्म्मचारी चले गए तब नेपोलियन ने अपने मित्रों से कहा कि—सेंट हेलना जैसी गंदी तथा रोगजनक जगह तो तैमूरलंग के लोहे के पिंजड़े से भी बुरी और भयानक है। इससे तो बार्बोन के हाथों मरना अच्छा था।

कई दैनिकपत्रों ने वीर सम्राट् का पक्ष ले कर लिखना आरंभ किया था। नपोलियन को जिस नार्थंबरलैंड नामक जहाज पर एडमिरल कुकबर्न के साथ जाने की आज्ञा हुई थी, वह जहाज मरम्मत होता था। इस बीच में कई अंगरेज भद्र पुरुषों ने नेपोलियन का पक्ष ले कर अपील की परंतु कुछ सुनाई न हुई। क्योंकि बृटिश गवर्नमेंट तथा बृटिश-मंत्रि-मंडल दोनों का अस्तित्व अलग न था। जहाँ पर दोषारोपक ही न्यायकर्त्ता हो वहाँ न्याय का यही हाल होता है।

ग्रांड मार्शल बार्ट्रांड, काउंट मांथोलन, काउंट लासकासस तीन सहचर चुने गए थे। सेनापति गगार्ड भी जाना चाहते थे किंतु तीन से अधिक न जा सकने के कारण नेपोलियन ने

इन्हें अपना लेखक बना कर साथ लिया। अगस्त को नार्थांबरलैंड आ कर दो रणतरियों सहित 'बेलरोफने' से मिल कर खड़ा हुआ। तलाशी आदि नियमानुसार हुई, एक लाख मुहरें सम्राट् के संदूक में निकली, इसमें से बारह सौ पचास छोड़ कर बाकी सब ब्याज उपजाने के लिये रखी गईं। अंत में इंगलैंड के आज्ञानुसार नेपोलियन के हाथ की तलवार लार्ड क्विथ ने माँगी। यह काम मानो सोते सिंह या सर्प को जगाने के समान था। तुरंत तलवार माँगते ही वीर का हाथ तलवार पर गया, यद्यपि वह कोष से निकाली नहीं गई किंतु जान पड़ता था कि यहाँ रंग भंग की परवाह नहीं है और कौतुक होना चाहता है। साथ ही उसकी दृष्टि में ऐसी शक्ति थी कि लोग सामने नहीं पड़ सकते थे। सार यह कि एडमिरल चुप लौट गया।

९ अगस्त १८१५ को नार्थंबरलैंड ने लंगर उठाया। कई छोटे जहाज और रणतरियों के साथ नार्थंबरलैंड के बिदा होते ही नेपोलियन बोला—"हे वीर फ्रांस! तुझको मेरा प्रणाम है। माता फरासीसी भूमि, आज तुझसे बिदा होता हूँ, बिदाई लो। आजन्म के लिये मेरी बिदाई लो।" इस दुःख भरे वीरोचित शब्दों में बिदाई माँगना था कि सबकी आँखों में पानी भर आया, अंगरेजों के भी दिल हिल गए।

मार्ग में नेपोलियन के स्वाभाविक भद्र आचार व्यवहार ने सब को मुग्ध कर लिया। यह मनुष्य मात्र को समान दृष्टि से देखने वाला था। अंगरेज उच्च कर्म्मचारीगण खलासियों और छोटे कर्म्म-

चारियों के साथ एक मेज पर खाना न खाते थे। एक दिन इसने एक खलासी से प्रसन्न हो कहा—"आज तुम हमारे साथ भोजन करना" उसने उत्तर दिया कि—"जहाज के कप्तान आदि मेरे साथ में भोजन करना स्वीकार न करेंगे"। नेपोलियन हँस कर बोला—"अच्छा, वे न करें तो तुम मेरे साथ भोजन करना।" अंत में औरों ने भी सम्राट् को उसके साथ भोजन करते देख, कुछ आपत्ति न की और भोजन किया।

१५ अक्तूबर को दोपहर के समय जहाज सेंट हेलना पहुँचा। जगह अच्छी न थी। यहाँ पाँच सौ अंगरेज रहते थे। दो सौ सैनिक और तीन सौ क्रीत दास। नाव पर चढ़ कर नेपोलियन सहचरों सहित किनारे पहुँचा और जहाजवालों से बिदा होकर जेम्स टाउन की ओर सारा संघ चला। एक लोहे की चारपाई और एक कोठरी और दो एक आवश्यक चीजें जहाज से मंगा कर दी गईं। यह अस्थायी स्थान था, क्योंकि कारागार वाली कोठरी दुरस्त की जा रही थी। यह अयोर्स नमक स्थान बहुत छोटा और कष्टप्रद था। इसमें स्नान आदि की भी जगह न थी। निगरानी की कठोरता का तो कहना ही क्या? १० दिसंबर को लांग-उड नामक स्थान तय्यार हो गया और नेपोलियन का डेरा वहाँ हटाया गया। नेपोलियन के (सहचरों सहित) खर्च के लिये तीन लाख फ्रेंक अंगरेज सरकार लेती थी, परंतु अराम कौड़ी भर भी न था, जैसा आगे कहा जायगा। सहचरों के वास्ते भी एक एक तुच्छ झोपड़े तय्यार किए गए थे। नेपोलियन का शरीर दिनों दिन खराब होने लगा।

१८१६ की १५ वीं जनवरी को 'गोल्ड स्मिथ' की लिखी हुई एक पुस्तक नेपोलियन को मिली। नाम को तो यह इतिहास था, लेकिन सिर से पैर तक यह मिथ्या और नेपोलियन तथा उसके कुटुम्ब की बाबत अश्लील बातों से भरी थी। इसने इस झूठ से भरी पुस्तक को दुःख के साथ फेंक दिया। १६ अप्रैल को चंगेजखां के अवतार सर हडशन लो नए गर्वनर हो कर आए। इनके पास 'सम्राट् नेपोलियन' नाम की पुस्तक नेपोलियन को भेंट करने के लिये 'हाबहाउस' ने इंगलैंड से भेजी थी, परंतु सम्राट् शब्द के कारण 'लो' ने इन्हें न दी। एक दिन 'लो' के साथ इसकी बात चीत हुई, जिसका परिमाण यह हुआ कि 'लो' ने इन्हें मन भर कर सताना आरंभ किया। कुछ तो 'लो' के बर्ताव से और कुछ सेंट हेलना के जल वायु से नेपोलियन को असीम कष्ट होने लगा और इसका स्वास्थ्य दिनों दिन गिरता ही गया। इसी घोर यंत्रणा में पांच वर्ष जैसे तैसे बीते। इसे जननी और जन्मभूमि दोनों की नित्य याद आती थी। इनके प्रति इसका प्रेम मरने तक ज्यों का त्यों बना रहा।

जो अन्याय, अत्याचार तथा अनुचित व्यवहार इसने सहन किया, दूसरा होता तो न सह सकता और आत्म-घात कर लेता। लेकिन नेपोलियन अदृष्टवादी और सच्चा वीर था। ५ अप्रैल की रात को इसका रोग बढ़ा और दुःख के मारे यह कहने लगा—"हे परमात्मन्! यों ही मारना था तो क्यों एक तोप के गोले से ही मेरा काम तमाम न किया, क्यों इतने समरों में से मुझे बचा

लाया ।" १५ अप्रैल को इसने जीवन की अधिक आशा न देख एक विल लिखाया । वह यह है—

"पचास वर्ष से अधिक हुए कि जब मेरा जन्म रोमन धर्म्म में हुआ था। उसी धर्म्म पर विश्वास रखता हुआ मैं शरीर त्याग करता हूँ । मेरी कामना यह है कि मेरा शरीर मेरी प्रियतमा फारासीसी जाति के वासस्थान में सीन नदी के किनारे भूमि को समर्पित हो । मेरा जो प्रेम महिषी सम्राज्ञी मेरिया लुइसा के प्रति था मरण पर्य्यंत वही प्रेम मेरे हृदय में विराजता है । मेरा अनुरोध है कि वह मेरे पुत्र का पालन पोषण करे, वह जिस विपद् में पड़ा है उससे उसकी रक्षा करे । मैं अपने पुत्र से अनुरोध करता हूँ कि वह इस बात को न भूले कि वह फ्रांस का राज-पुत्र हो कर जन्मा था, उसे युरोप की उत्पीड़क तीन महाशक्तियों के हाथ में पुतली की तरह नाचना उचित न होगा । वह फ्रांस के विरुद्ध हथियार न उठाए, फ्रांस देश का कोई अपकार न करे, फ्रेंच जाति के लिये मेरी ही नीति का अवलंबन करे ।"

अंत में उसने अपने साथियों को धन संपत्ति बाँटी । वह किसी को भूला नहीं, उसने यथोचित सब के श्रम का प्रतिफल दान किया । इसके पीछे उसने सम्हाला लिया, लोग समझे कि अच्छा हो चला है पर वह जानता था कि मौत के पहले एक बार मनुष्य सम्हाला लिया करता है । उसने कहा भी था कि—"मैं स्वर्ग में जा कर अपने साथी क्लेबर; देशाई, डोरो, ने, मोराट, मेसानो, बार्थियर आदि से मिलूँगा, वे मेरी इधर की बातें सुनेंगे । मुझे देख कर वे

एक बार उत्तेजनापूर्ण हो उठेंगे।"

नेपोलियन ने मरने के पहले ही एक पत्र गवर्नर सेंट हेलना के नाम बिना तारीख का लिखा दिया कि जो उसके मरने के पश्चात् काउंट मांथोलन ने अपने हस्ताक्षर से दिया था। पत्र यह था—

महाशय, गवर्नर सेंट हेलना

...... तारीख को बहुत दिनों तक रोगग्रस्त रह कर सम्राट् ने प्राणत्याग किया। आप को मैं यह समाचार देता हूँ। आप से वह अंतिम इच्छा जताने का आदेश कर गए हैं, वह यह है कि उनका शव फ्रांस भेजा जाय और उनके सहचरों को स्वदेश लौटा दिया जाय। इसके बंदोबस्त की सूचना दे कर मुझे अनुगृहीत कीजिएगा।

आपका अनुगृहीत

काउंट मांथोलन।

२९ अप्रैल से सम्राट् का शरीर बहुत ही गिरने लगा। अचेत हो कर वह बक भी उठने लगे, दवा पीने से घृणा हो गई थी। एक बार डाक्टर ने दवा पीने और प्लास्टर लगाने के लिये आग्रह किया, सम्राट् ने कहा—'कुछ लाभ नहीं है, व्यर्थ है, मौत पास आ चुकी है। आपने मेरी जो सेवा सुश्रूषा की है उससे मैं बाध्य हूँ और आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। लगा दो प्लास्टर।' ४ मई को मृत्यु पास जान कर सम्राट् के बाल बच्चे मिलने आए थे। इन्होंने सम्राट् की दशा देख कर बहुत दुःख किया, लेकिन ईश्वराज्ञा बड़ी बलवती है, सिवाय दुःख करने के किसीका कुछ बस नहीं चलता।

—:०:—